अस्तित्व

काल का रहस्य

वह 31 अक्टूबर 1994 की तूफानी रात थी। हालांकि बारिश बंद हो चुकी थी, किन्तु वातावरण की नमी से लिपट कर सर्द हो चली हवायें अभी भी उग्र थीं।

"हेल्प! एनीबॉडी हेल्प प्लीज....!"

पत्तों की सरसराहट के मध्य वातावरण में किसी का खौफजदा स्वर गूंजा।

वह लगभग पच्चीस साल का दुबला-पतला इंसान था। अधिक भाग लेने के कारण उसकी सांसें उखड चुकी थी, फिर भी वह थमना नहीं चाहता था। शायद आज की रात भागते रहना उसके लिये उतना ही जरूरी था जितना कि जीवन के लिये ऑक्सीजन।

अचानक उसके कदम लड़खड़ाये। बारिश के कारण सड़क पर हुयी फिसलन से वह खुद को इस बार नहीं बचा पाया और अंततः धरातल से जा टकराया। ठीक उसी पल, उससे लगभग सौ मीटर पीछे नजर आ रहे चार टॉर्च तुरन्त ऑफ हुये।

चारों ओर स्याह अंधेरा व्याप्त था। भीषण बारिश के कारण समूचा क्षेत्र जलमग्न हो चुका था। जिस सड़क पर वह इंसान औंधे मुंह पड़ा था, वह इस क्षेत्र की सबसे कम इस्तेमाल होने वाली सड़कों में से एक था। और इस वक्त,

यानि कि रात के दस बजे वहां इंसान तो क्या किसी वाहन के भी नजर आने की कल्पना मूर्खतापूर्ण थी। इंसान के हांफने का स्वर वातावरण को रहस्यमयी बना रहा था।

लगातार भागने के बाद जब उसके पैर ठहरे तो फिर उसने दोबारा उठने की कोशिश नहीं की। नियति को स्वीकार करके उसने चेहरे के पसीने को आस्तीन से पोंछा और साँसों की गति को नियंत्रित करने का प्रयत्न करते हुये किसी आहट के उत्पन्न होने की प्रतीक्षा करने लगा। उसकी कल्पना में नजर आया कि पीछा करने वाले हत्यारे सधी हुयी चाल से आकर उसके ठीक पीछे खड़े हो गये हैं और इस वक्त धरातल पर पड़ा उसका जिस्म उनमें से प्रत्येक की रिवाल्वर की नाल का केंद्रबिंदु बना हुआ है।

कई क्षण गुजर गये। कोई आहट नहीं उत्पन्न हुयी।

वातावरण की घोर निस्तब्धता जब लम्बे समय तक भंग नहीं हुयी तो वह हौले से चौंका। उठकर बैठा। गर्दन पीछे घुमायी। स्याह अंधेरे के सिवाय कुछ नहीं नजर आया।

'इ-इसका मतलब....व...वे पीछे छूट गये। मैं उनसे दूर निकल आया।'

उपरोक्त ख्याल के दस्तक देते ही वह तेजी से उठा। पीछा करने वालों की पदचाप और उनके टॉर्च की रोशनी नदारद पाकर उसने अनुमान लगाया कि वह दुश्मनों से काफी दूर निकल चुका है। उसने एक बार फिर आस्तीन से चेहरे का पसीना पोंछा और हाथ में मौजूद टॉर्च को ऑन कर लिया। भागने के दौरान दुश्मनों से अपनी स्थिति

छुपाने के लिये उसने टॉर्च से अभी तक कोई काम नहीं लिया था।

"मेरे पास वक्त बहुत कम है।" वह बदहवास लहजे में बड़बड़ाया- "मैं रुक नहीं सकता। आई हैव नॉट टू स्टॉप। मुझे जल्द से जल्द सन्त थॉमस चर्च पहुँचना होगा। कविता मेरा इंतज़ार कर रही होगी।"

मकसद को अंजाम देने के लिये उसने पहला कदम आगे बढ़ाया ही था कि अचानक खौफनाक अंधेरे ने एक शोला उगला, जो देखते ही देखते उसके कंधे में पैवस्त होता चला गया।

"आ..ह।"

हलक से दर्दनाक चीख उगलते हुये वह पीछे पलटा। लगभग पचास मीटर के फासले पर चार टार्च ऑन हुये थे। स्थिति छुपाने के लिये जो पैंतरा उसने अपनाया था, वही पैंतरा हत्यारों ने भी अपनाया था; इसके आगे वह कुछ नहीं सोच पाया, क्योंकि अगले ही पल अँधेरे के गर्भ से निकले अनगिनत शोलों ने उसके जिस्म को छलनी कर दिया। वह कटे पेड़ की भाँति लहराकर जमीन पर गिरा, थोड़ी देर तड़पा और शान्त हो गया। वातावरण का खौफनाक सन्नाटा, जो फायरिंग की गूंज से भंग हुआ था, फिर से व्याप्त हो गया।

चारों टार्चधारी मृत जिस्म के करीब आये। प्रत्येक के टार्च की रोशनी का दायरा मृत जिस्म पर केन्द्रित हो गया। मरने वाले की रंगत सांवली थी, जो तीक्ष्ण प्रकाश के कारण फिलहाल उजली नजर आ रही थी।

“किस्सा ख़त्म हुआ आर्यन!” चारों में से एक ने कहा।

आर्यन नाम से संबोधित साया विचलित नजर आ रहा था। उसके साँसों की रफ़्तार तेज थी और लाश पर ठहरी निगाहों में अविश्वास का भाव था। कई क्षण गुजर जाने के बाद जब उसे यह अहसास हुआ कि वह एक हत्या काण्ड में अपनी सहभागिता दर्ज करा चुका है, तो भयमिश्रित लहजे में कह उठा- “य...ये मर तो गया है न?”

“चलो ये भी कन्फर्म कर लेते हैं।”

कहने वाले ने बेजान लाश पर पूरा का पूरा चैम्बर खाली कर दिया। लाश अनगिनत झटके खाने के बाद निश्चल पड़ गयी। आर्यन ने व्यथित होकर चेहरा दूसरी ओर घुमा लिया।

“मर चुका है।”

“हमें यहाँ ज्यादा देर नहीं रुकना है। आखिरी काम भी अभी पूरा करना है।” आर्यन ने पूर्ववत घबराये हुये लहजे में कहा।

एक ने लम्बे फल वाला चाक़ू निकाला और लाश के करीब बैठ गया। अगले ही पल वह लाश की गर्दन पर चाकू फिरा रहा था। आर्यन का हृदय एक बार फिर द्रवित हो उठा। पत्तों की सरसराहट का शोर तेज हो गया था। वातावरण भी शायद इस हत्याकाण्ड पर चीत्कार कर उठा था।

□□□

डोरबेल की आवाज़ सुनकर ड्राइंग हाल में मौजूद उस शख़्स की निगाहें वालक्लॉक की ओर उठ गयीं, जो सोफे पर बैठा कुछ लिखने में व्यस्त था।

"दस बजकर चालीस मिनट। इतनी रात गये कौन हो सकता है?"

मन में उठे सवाल को नजरअंदाज करते हुये उसने राइटिंग पैड सोफे पर रखा और दरवाजे की ओर बढ़ा। दरवाजा खोलते ही जमाने भर का आश्चर्य उसके चेहरे पर सिमट आया।

"तुम? इतनी रात गये? सब कुछ ठीक तो है?"

आगन्तुक उसे परे धकेलते हुये आँधी-तूफान की भाँति अन्दर प्रविष्ट हुआ। वह अकेला नहीं था। उसके साथ एक छोटा बच्चा भी था, जिसकी सूजी हुयी आँखें संकेत कर रही थीं कि वह लम्बे समय तक अनवरत रोया था।

"दरवाजा बन्द कर लीजिये प्रोफ़ेसर।"

केवल इतना ही कहने के बाद आगंतुक यूं हांफने लगा, जैसे मीलों की दौड़ लगा कर आया हो।

'प्रोफ़ेसर' संबोधन से सम्बोधित, साठ साल की अवस्था वाले मेजबान ने दरवाजा बन्द किया। चेहरे पर हैरत के भाव लिये हुये आगन्तुक के करीब आया और छोटे बच्चे पर दृष्टिपात करते हुये एक बार फिर पूछा- "आखिर बात क्या है? सब खैरियत तो है? और तुम्हारे साथ ये बच्चा किसका है?"

"कुछ..कुछ भी...खैरियत....नहीं..।" साँसे संयत न होने के कारण आगंतुक

ढंग से बोल न सका।

"तुम पहले सांस ले लो।" प्रोफ़ेसर ने इत्मीनान भरे लहजे में कहा। और आगंतुक को सोफे पर बैठाने के बाद पानी से भरा कांच का ग्लास उसकी ओर बढ़ाते हुये कहा- "शायद तुम्हें पानी की भी जरूरत है।"

आगंतुक ने ग्लास झपट लिया और उसे एक ही सांस में खाली करने के बाद;

प्रोफ़ेसर के कुछ कहने से पहले ही कह उठा- "कुछ भी खैरियत नहीं है प्रोफ़ेसर। एक शैतान अपने मकसद में कामयाब हो गया है। क्षितिज लापता हो चुका है।"

"साफ़-साफ़ कहो कि आखिर हुआ क्या है?" प्रोफ़ेसर का लहजा थोड़ा उद्विग्न हुआ।

"वही हुआ है, जिसका अनुमान शायद क्षितिज पहले ही लगा चुका था।"

"पहेलियों में बातें करना बंद करो।" प्रोफ़ेसर झुंझला उठे- "ऐसा क्या होने वाला था जिसका अनुमान क्षितिज पहले ही लगा चुका था।"

"मुझे नहीं मालूम प्रोफ़ेसर कि उसके साथ क्या हुआ था। उसकी और मेरी आखिरी मुलाकात आज शाम हुई थी। उसी दौरान उसने कहा था आज रात दस बजे उसकी हत्या हो जायेगी।" हैरान प्रोफ़ेसर कुछ कहने ही वाले थे कि आगंतुक ने उन्हें मुंह खोलने का अवसर दिये बिना ही आगे कहा- "जो सवाल आपके जेहन में आ रहे हैं, वही सवाल मेरे जेहन में भी आये थे, लेकिन उसने मेरे किसी सवाल का जवाब ढंग से नहीं दिया था। उसने केवल इतना

कहा कि कविता के घर में आग लगायी जाने वाली है। उस आग में जलकर उसके पिता की मौत होगी, लेकिन उसका भाई बच जायेगा और उसे बचाने वाला मैं होऊंगा।”

“तो क्या यह बच्चा उसी लड़की का भाई है?” प्रोफ़ेसर ने आगंतुक के साथ खड़े लड़के पर दृष्टि डाली।

“उसने ये भी कहा कि तान्या के पास उसकी थीसिस है।” आगंतुक ने प्रोफ़ेसर के सवाल को नजरअंदाज करते हुये कहा- “उस थीसिस को हासिल करके आप तक पहुँचाने का आदेश भी मुझे उसी ने दिया था।”

“तुम लाये हो वह थीसिस?”

प्रत्युत्तर में आगन्तुक ने शर्ट के अन्दर छुपाया हुआ एक फाइल निकालकर

प्रोफ़ेसर की ओर बढ़ा दिया। विचित्र तरद्दुद में उलझे प्रोफ़ेसर ने फाइल थामा। इधर वे फाइल के अवलोकन में व्यस्त हुये, उधर आगंतुक कहता चला गया।

“उसने इस बच्चे और थीसिस को आप तक पहुंचाने के लिये कहा था। जब

मैंने उससे पूछा कि भावी घटनाओं से वाकिफ होने के बाद भी वह उन्हें घटने क्यों दे रहा है, तो उसने कहा कि यदि उसने होनी को टालने की कोशिश की तो कालचक्र में बहुत बड़ा बदलाव हो जायेगा और मानव जाति द्वारा विज्ञान के क्षेत्र में अर्जित की गयी समस्त उपलब्धियां दांव पर लग जायेंगी। मेरे हर सवाल के जवाब को दरकिनार करके उसने केवल इतना ही कहा कि जब मैं कविता के

भाई और उसके थीसिस को आप तक पहुंचा दूंगा तो आप खुद-ब खुद समझ जायेंगे कि आगे क्या करना है।"

प्रोफ़ेसर के चेहरे पर नजर आता सस्पेंस पल-प्रतिपल गहरा होता गया, जबकि निगाहें थीसिस के पन्नों पर फिसलती रहीं।

"क्षितिज घबराये हुये लहजे में ये भी कह रहा था कि बीते दिनों में उसके साथ जो कुछ भी हुआ है, उस पर यकीन करने और उसे समझने में विज्ञान को अभी बहुत समय लगने वाला है।"

इस दफे भी प्रोफ़ेसर ने कुछ नहीं कहा। पन्नों को पलटने के दौरान उनके चेहरे पर नजर आती उलझन क्षण-प्रतिक्षण सुलझती जा रही थी। चेहरे के बदलते भाव इंगित कर रहे थे कि वे उन घटनाओं का अनुमान लगा चुके थे, जो क्षितिज नाम के किसी लड़के के साथ घटी थीं।

"क्षितिज ने ठीक कहा था।" प्रोफ़ेसर फाइल बंद करते हुये मंत्रमुग्ध अवस्था में बोल पड़े- "उसके साथ वास्तव में ऐसी घटनायें घटी हैं, जिनकी व्याख्या संसार के नियमों को बदल सकती हैं।"

"क्या आपको कुछ क्लियर हुआ प्रोफ़ेसर?"

प्रोफ़ेसर ने कुछ नहीं कहा। दीवार घड़ी पर ठहरी उनकी निगाहों में किसी महान आश्चर्य के सम्मुख नतमस्तक होने जैसा भाव था।

"यदि आपको कुछ क्लियर हुआ हो तो अब भी वक्त है, हम क्षितिज की जान बचा सकते हैं।" आगंतुक का लहजा बदहवास था।

“अब कुछ नहीं हो सकता।” प्रोफ़ेसर ने रहस्यमयी स्वर में कहा- “कालचक्र को बदला नहीं जा सकता। ग्यारह बज चुका है। क्षितिज का कत्ल हो चुका है।”

□□□

वे चार थे। तीन टेलीफोन बूथ के बाहर खड़े थे और एक अन्दर था। अन्दर वाले ने कोई नम्बर डायल करने के पश्चात रिसीवर कान से लगाया। थोड़ी देर तक रिंग जाने के बाद कॉल रिसीव कर ली गयी।

“हैलो!” दूसरी ओर से आवाज़ आई।

“हैलो तान्या! आर्यन ऑन दिस साइड।”

“ह.. हाँ आर्यन। मैं सुन रही हूँ।” दूसरे सिरे से आये नारी-स्वर में घबराहट का पुट था।

“आर यू ओके?” लड़की की घबराहट भांप कर आर्यन का आशंकित हो उठा।

“क्षितिज की थीसिस कहाँ है?” किसी अन्य का सर्द स्वर सुनते ही आर्यन के हाथ से रिसीवर छूटते-छूटते बचा।

“त.. तुम कौन हो?”

“मैंने..पूछा...क्षितिज...की...थीसिस...कहाँ...है?” दूसरी ओर से एक-एक हर्फ़ को उगलने से पहले चबाया गया।

आर्यन अवश्यम्भावी घटनाक्रम को भांप गया।

“मेरी बात सुनो। हम नहीं जानते कि तुम किस थीसिस...?”

आर्यन बात पूरी भी नहीं कर पाया था कि फोन डिसकनेक्ट होने का टोन उसके कानों में पड़ा। जवाब देने के लिये अब लाइन पर कोई नहीं था।

"डैम इट।" बुरी तरह झल्लाते हुये वह बूथ से बाहर आ गया।

"क्या हुआ?" बाकी तीनों के होठों से अस्फुट सा स्वर निकला।

"तुममें से कोई थीसिस के बारे में जानता है?"

"थीसिस....कैसी थीसिस? किसकी थीसिस?" तीनों ने समवेत स्वर में पूछा।

"क्षितिज की; और किसकी?" आर्यन क्रोध में बिफर उठा।

"प्लान के मुताबिक़ हमें तो केवल क्षितिज का काम तमाम करना था, अब ये थीसिस का चक्कर बीच में कहाँ से आ गया?"

आर्यन बदहवास था, इसलिये उसने किसी बहस में पड़ना जरूरी न समझकर व्यग्र लहजे में कहा- "फ़ौरन तान्या के घर चलो। अभी इसी वक्त।" प्रतिक्रिया की प्रतीक्षा किये बगैर वह सड़क के किनारे स्ट्रीट लाइट की रोशनी में खड़े दो बाइकों में से एक की ओर दौड़ पड़ा। अन्य तीनों ने भी उसका अनुसरण किया।

□□□

बीस साल बाद

मार्च 2015, शिकागो।

मांस के सर्वाधिक निर्यात के कारण संसार का कसाईखाना कहा जाने वाला अमेरिका का एक प्रसिद्ध शहर।

शैल नाम के उस लड़के ने एक नजर रिस्टवॉच पर डाली, जो होटल के लॉन में पड़ी कुर्सी-मेज में से एक पर मौजूद था। सेंट्रल टाइम जोन के मुताबिक दोपहर के बारह बज रहे थे। नई दिल्ली के लिये उसकी फ्लाइट दो बजे की थी, और इस प्रकार उसकी तीन दिवसीय शैक्षणिक यात्रा के ख़त्म होने में अब मात्र दो घंटे ही शेष रह गये थे। टेबल पर मौजूद जूस के ग्लास को उसने अभी-तक होठों से नहीं लगाया था। उसकी मुखमुद्रा गंभीर थी। और जेहन विचारों के सागर में गोते लगा रहा था।

वह पीजी फाइनल सेमेस्टर का भौतिकी का छात्र था। ब्राइट एकेडेमिक रिकॉर्ड के कारण उसे पहली दफा अंतरराष्ट्रीय स्तर के सेमिनार में शिरकत करने का मौका मिला था। शिकागो यूनिवर्सिटी की ओर से आयोजित किये गये उक्त सेमिनार का मुख्य उद्देश्य विज्ञान के क्षेत्र

में उड़ान भरने हेतु पंख फैला रहे युवाओं को शोध-क्षेत्र में पनप रही नई संभावनाओं से अवगत कराना था।

यहाँ आने के बाद शैल के हाथ निराशा लगी थी, क्योंकि इस तीन दिवसीय शैक्षणिक परिचर्चा में भौतिकी से जुड़ा कोई उल्लेखनीय व्याख्यान नहीं हुआ था। जेनेटिक इंजीनियरिंग में हो रहे आधुनिक शोधों पर विस्तृत चर्चा जरूर की गयी थी, किन्तु पृष्ठभूमि से इतर प्रकरण होने के कारण शैल खुद को उस चर्चा से जोड़ नहीं पाया था। फिजिक्स या किसी अन्य साइंटिफिक सब्जेक्ट को लेकर जो कुछ कहा गया था, वह शैल के नजरिये से कोई रिसर्च थीम नहीं, वरन उन्हीं सिद्धांतों का मिला-जुला रूप था जिन्हें वह स्कूल से कॉलेज तक पढ़ता आया था। हिग्स-बोसॉन पार्टिकल की प्रारम्भिक जानकारी के अलावा उसे अपने काम की कोई और चीज नहीं मिली थी।

"हैलो फ्रेंड। आर यू इंडियन?"

दो बजने का बेसब्री से इंतज़ार कर रहे शैल की तन्द्रा को उपरोक्त वाक्य ने भंग कर किया, जो बेहद प्रभावी अंदाज में ध्वनित हुआ था।

उसने चेहरा ऊपर उठाया। सामने खड़े शख्स को वह पहचानता था। उसकी
उम्र पच्चीस साल थी। छः फिट लम्बे कसरती जिस्म पर कीमती नीला सूट और कलाई में रॉलैक्स की रिस्टवॉच थी। सेमिनार के दौरान ही शैल इस शख्स की पहचान से वाकिफ हो चुका था। सुर्ख होठों पर मुस्कान लिये हुये सामने खड़े उस शख्स का नाम यथार्थ था। शैल की भाँति

वह भी इंडिया से था। फर्क केवल इतना था कि शैल ने सेमिनार में एक परम्परागत छात्र के रूप शिरकत किया था, जबकि उसने जेनेटिक इंजीनियरिंग के रिसर्च स्कॉलर की हैसियत से एक शोध पत्र प्रस्तुत किया था। उसने 'मल्टिपल ब्रेन डेवलपमेंट' नाम की एक परिकल्पना प्रस्तुत की थी, जिसमें क्लोनिंग और क्वांटम फिजिक्स के एक रहस्यमयी सिद्धांत का सहारा लेकर किसी इंसान के ब्रेन की ज़ेरॉक्स कॉपी तैयार करने जैसी अजीबोगरीब बात की गयी थी। किसी साइंस फिक्शन का प्लाट लगने वाली उसकी परिकल्पना को अमेरिकी प्रोफेसर्स ने बकवास कहकर नकार दिया था।

"यस।" शैल ने संक्षिप्त उत्तर दिया।

"यथार्थ। रिसर्च स्कॉलर इन जेनेटिक्स, इंडियन इंस्टिट्यूट ऑफ़ टेक्नोलॉजी, मद्रास। मैं भी तुम्हारी तरह एकेडेमिक टूर पर यहाँ आया हुआ हूँ। मेरे पेपर प्रेजेंटेशन के दौरान तुम भी सेमिनार में जरूर मौजूद रहे होगे। मैं थोड़ी देर के लिये तुम्हारे साथ बैठना चाहता हूँ।" यथार्थ ने होठों पर पूर्ववत मुस्कान लिये हुये, दाहिना हाथ हैण्ड शेक के उद्देश्य से उसकी ओर बढाया।

"यस ऑफकोर्स।" शैल ने भी मुस्कुराने की औपचारिकता निभायी और जब यथार्थ बैठ गया तो उसने कहा- "वुड यू लाइक टू हैव समथिंग......।"

"थैंक यू! लेकिन फिलहाल तो मुझे कुछ नहीं चाहिये।" यथार्थ होठों पर शालीन मुस्कान लिये हुये

बोला- "सिवाय तुम्हारी कंपनी के। मैं बस टाइम पास करना चाहता हूँ। मेरी भी फ्लाइट दो बजे है।"

"आपके रिसर्च आर्टिकल के साथ अकडू किस्म के अमेरिकन्स ने जो बदसलूकी की, उसका रंज मुझे भी है। आखिरकार आप मेरे हमवतन हैं।"

"लेकिन मुझे इस बात का रंज नहीं है।" यथार्थ ने लापरवाही से कंधे उचकाते हुये कहा- "एक शोध-छात्र जीवन में ऐसी घटनायें आम बात होती हैं। उनका कांसेप्ट कभी सीनियर प्रोफ़ेसर्स की उपेक्षा का शिकार होता है, तो कभी यूनिवर्सिटी की डिपार्टमेंटल पॉलिटिक्स का।"

"आपने अपने लेक्चर में जिस कांसेप्ट को रिप्रजेंट किया, उसकी व्यवहारिकता पर तो मैं कोई टिप्पणी नहीं कर सकता, लेकिन न जाने क्यों मुझे ऐसा लग रहा है कि आपके कांसेप्ट पर एक अच्छी-खासी थ्रिलर साइन्स फिक्शन लिखी जा सकती है।"

"अगर ऐसा हो गया....।" यथार्थ फिर मुस्कुराया- "....तो मैं समझूंगा कि बकवास लगने वाली मेरी परिकल्पना ने विज्ञान के क्षेत्र में उचित सम्मान प्राप्त कर लिया।"

"आप शायद ऐसा मानते हैं कि विज्ञान के क्षेत्र में साइंस फिक्शन की परिकल्पनायें सम्मानजनक स्थान रखती हैं।"

"बेशक मैं ऐसा ही मानता हूँ।" नीली आँखों वाला शख्स एक बार फिर मुस्कुराया और बोला - "मेरे ऐसा मानने के पीछे कई ठोस दलीलें भी हैं।"

"मुझे लगता है कि टाइम पास करने के लिये हमें एक अच्छा टॉपिक मिल गया है, अगर आप वे ठोस दलीलें मुझे भी सुनायें तो।"

"तुमने एच. जी. वेल्स का नाम तो सुना होगा न?"

"जरूर। मैं उनके उपन्यास 'टाइम मशीन' का फैन हूँ।"

"अगर उन्होंने टाइम मशीन का कांसेप्ट उपन्यास के बजाय किसी सेमिनार में दिया होता तो क्या होता?"

"शायद उनके साथ भी वैसा ही होता जैसा आपके साथ हुआ।"

"करेक्ट!" यथार्थ ने मेज पर हौले से मुक्का मारा- "लेकिन आज ये बात निर्विवाद रूप से सच है कि समय यात्रा का सर्वप्रथम जिक्र मि. वेल्स ने ही किया था। कहीं न कहीं उनकी कल्पना की ही देन है कि आज 'काल-यात्रा' साइंस-फिक्शन के दायरे से बाहर निकलकर वैज्ञानिकों के बीच चर्चा का विषय बन चुका है। सिर्फ टाइम मशीन ही नहीं, साइंस फिक्शन की दुनिया में ऐसे कई उपन्यास हैं, जो शुरु में तो काल्पनिक लगे किन्तु आज या तो वे कल्पनायें साकार हो उठी हैं, या फिर उन्हें साकार बनाने की दिशा में प्रयास चल रहे हैं।"

"क्या आप मुझे कुछ और ऐसे साइंस फिक्शन्स का नाम याद दिला सकते हैं?"

"ऑफ़कोर्स!" यथार्थ अचानक उत्साहित नजर आने लगा- "ऐसे कई लेखक हैं जिनके उपन्यासों को प्रौद्योगिकी का भविष्यवक्ता कहा जा सकता है। कैरेल केपेक के प्रख्यात नाटक 'आर-यू-आर' में वर्णित मशीनी

मानव आज रोबोट के रूप में हमारे जीवन का अभिन्न अंग हैं। एडवर्ट एवरेट हैले द्वारा 'द ब्रिक मून' में की गयी अंतरिक्ष स्टेशन की कल्पना भी आज साकार हो उठी है। कोई भी वैज्ञानिक परिकल्पना कल्पना के गर्भ से अंकुरित होती है और फिर अनगिनत परीक्षणों और प्रयोगों से गुजरकर सिद्धान्त का रूप लेती है। खुद आइंस्टीन भी कल्पना को ज्ञान से ज्यादा महत्वपूर्ण मानते थे। कई विद्वानों की धारणा है कि आइंस्टीन की महानता के पीछे उनकी कल्पना का बहुत बड़ा हाथ था। उनके द्वारा स्थापित किये हुये जो सिद्धांत आज आधुनिक भौतिकी के मजबूत आधार स्तम्भ बन हुये हैं, वे सर्वप्रथम उनकी कल्पना में ही उपजे थे और गणितीय समीकरणों की सहायता से स्थापित हुये थे।"

"हो सकता है आपकी बातें तर्कसंगत हो, लेकिन आपके जिस कांसेप्ट को यहाँ अमेरिका में कल्पना कहकर खारिज कर दिया गया, उसका भारत में क्या हश्र होगा ये आप सोच भी नहीं सकते।"

"अमेरिका जैसी उन्नत सोच वाले देश में मजाक का विषय बन जाने के बाद दुनिया के किसी लैब में मेरे कांसेप्ट पर रिसर्च शुरू हो सकती है, ऐसी सोच रखना मूर्खता है। इसलिये मैं कुछ ऐसा करने की सोच रहा हूँ, जो दुनिया वालों को सीधे मेरे शोध के परिणामों से रूबरू कराये। मुझे किसी लेबोरेटरी में धक्के न खाना पड़े।"

"क्या करने की सोच रहे हैं आप?" शैल उत्सुक हुआ।

यथार्थ थोड़ी देर रुका, फिर उसने शैल के चेहरे पर दृष्टिपात करते हुये कहा - "तुम भारतीय मूल के अमेरिकी वैज्ञानिक डॉ. शक्तिस्वरूप सिंघानिया के बारे में कुछ जानते हो?"

"हाँ! मैंने उनके बारे में सुना है। अमेरिका में ह्यूमन ब्रेन पर व्यक्तिगत रूप से रिसर्च कर रहे थे। इसके साथ-साथ वे तात्कालिक 'ह्यूमन जीनोम प्रोजेक्ट' का भी हिस्सा थे। अज्ञात कारणों से वे अपना रिसर्च अधूरा छोड़कर अचानक इंडिया आये थे और फिर लापता हो गये थे। इस घटना को घटे इक्कीस साल हो गये।" कुछ याद करने के प्रयास में शैल के माथे पर सिलवटें उभरीं।

"तुमने बिल्कुल ठीक कहा। बहुत कम लोग इस बात को जानते हैं कि 'मल्टीपल ब्रेन डेवलपमेंट' नाम की परिकल्पना सबसे पहले डॉ. सिंघानिया के जेहन में ही उपजी थी।"

"अच्छा?" शैल थोड़ा हैरान हुआ- "लेकिन आपको कैसे पता?"

"ऐसा मेरी यूनिवर्सिटी की लाइब्रेरी में रखी रिफरेंस बुक में दर्ज है। अगर उन दिनों डॉ. सिंघानिया की रिसर्च पूरी हो गयी होती, तो आज मेडिकल साइंस की टर्मिनोलॉजी में ब्रेन डेथ को लाइलाज करार नहीं दिया जाता।"

"विश्वास नहीं होता। अमेरिकी वैज्ञानिक ने ही इस परिकल्पना को जन्म दिया और आज अमेरिकी प्रोफ़ेसर

ही इसका मजाक उड़ा रहे हैं।" शैल के लहजे में हैरत और अफसोस का मिला-जुला भाव घुल गया।

"डॉ. सिंघानिया की यह परिकल्पना सिर्फ परिकल्पना ही रह गयी थी, क्योंकि इस पर रिसर्च शुरू करने से पहले ही उन्हें अचानक इंडिया जाना पड़ा। जहाँ से वे रहस्यमयी ढंग से लापता हो गये। आज तक उनका पता नहीं चल पाया। तुम्हें क्या लगता है; क्या हुआ रहा होगा उनके साथ?"

"इस बारे में मैं नहीं कुछ कह सकता। उस घटना के वक्त शायद मैं माँ के गर्भ में रहा होऊंगा।"

"मेरे कांसेप्ट को लेकर तुम्हारी क्या व्यक्तिगत राय है?"

"मेरा बैकग्राउंड जेनेटिक्स नहीं है, इसलिये मैं इस बारे में कोई टिप्पणी नहीं कर सकता। आप मेरे हमवतन हैं, इसलिये आपके प्रोजेक्ट को किसी बड़ी लेबोरेटरी में जगह मिल जाये, इसके लिये ईश्वर से दुआ करूँगा।" शैल ने मुस्कुराते हुये कहा।

"मैंने अपने जीवन में हमेशा दुआओं के बजाय खुद के प्रयासों पर भरोसा किया है। दुआओं की जरूरत उन्हें होती है जिन्हें या तो खुद भर भरोसा नहीं होता या फिर वे जीवन से निराश हो चुके होते हैं। मैंने सोच लिया है कि अब मैं अपने प्रपोजल को लेकर किसी सेमिनार या लैब में नहीं जाऊँगा। मैं खुद इस प्रोजेक्ट पर काम करूंगा। खुद ही इन्वेस्ट भी करूंगा और दुनिया के सामने सीधे रिजल्ट रखूंगा।" यथार्थ का लहजा अचानक दृढ़ हो उठा।

“आपके इस प्रोजेक्ट पर करोड़ों रूपए खर्च होंगे और साथ ही साथ एक अत्याधुनिक लेबोरेटरी की जरूरत होगी। कैसे मैनेज करेंगे आप ये सब कुछ?”

शैल की बातों का जवाब देने के बजाय यथार्थ ने जेब से एक फोटो निकालकर उसके सामने रख दिया। फोटो में नजर आ रहे सांवली रंगत वाले शख्स के चेहरे पर मुस्कान थी। उसकी उम्र यथार्थ की उम्र के आस-पास लग रही थी। मुस्कराहट के कारण उसका चेहरा आकर्षक हो उठा था।

“क्या तुम इनको पहचानते हो?”

“नहीं।”

“ओके।” यथार्थ ने कंधे उचकाए।

“आपको ऐसा क्यों लगा कि मैं इस इंसान के बारे में जानता होऊंगा।”

“बस ऐसे ही, अपना एक डाउट दूर करने के लिये पूछ लिया।” यथार्थ रहस्यमयी अंदाज में मुस्कुराया-“मुझे लगता है कि शायद मेरे सपनों को मंजिल तक पहुँचने का रास्ता मिल गया है, जो तुम्हारी जिन्दगी से होकर गुजरता है।”

इससे पहले कि शैल कुछ समझता यथार्थ उठ खड़ा हुआ, किन्तु जाने से पहले शैल की आँखों में आँखें डालकर कहता चला गया- “तुम्हारी जिन्दगी में एक रहस्य करवटें लेने वाला है।”

तीन महीने बाद

जुलाई 2015, वाराणसी

उस अपार्टमेंट के कंस्ट्रक्शन का काम चल रहा था, जिसके पांचवे माले पर खड़े यथार्थ की उंगलियाँ सेलफ़ोन के स्क्रीन पर थिरक रहीं थी। उसके जिस्म पर वाइट शर्ट था, जिसे उसने अपने शौक के कारण 'हाफ स्लीव' कर रखा था। इच्छित नंबर डायल करने के बाद उसने सेलफोन कान से लगाया और कॉल पिक किये जाते ही कहा- "तुम्हें अपना काम तो याद है न?"

दूसरी ओर से जवाब आया।

"वैरी गुड! वे अब से ठीक पांच मिनट बाद मकबूल आलम रोड पर होंगे। बाइक का नंबर मैं तुम्हें पहले ही एसएमएस कर चुका हूँ। उसे स्विफ्ट राइडिंग की जानलेवा बीमारी है, इसलिये तुम्हारा काम अधिक मुश्किल नहीं होगा। पुलिस थोड़ी बहुत रूटीन इन्वेस्टीगेशन करेगी, जैसा कि वह हर नार्मल एक्सीडेंट में करती है, लेकिन तुम्हें डरने की जरूरत नहीं है। बाइक की रफ़्तार को लेकर जो पब्लिक स्टेटमेंट्स होंगे, उनके बेस पर तुम्हें आराम से क्लीनचिट मिल जायेगी।"

दूसरे सिरे की बात सुनने के बाद उसने आगे कहा- "एडवांस के बाद की बाकी रकम तुम्हें मिल जायेगी। अब मैं कॉल डिसकनेक्ट कर रहा हूं। फिर कभी मुझे फ़ोन मत करना।"

संबंध-विच्छेद करने के बाद यथार्थ ने आस-पास देखकर ये सुनिश्चित किया कि किसी ने उसकी बात नहीं सुनी थी।

□□□

“थोड़ी तेज चला यार। हम लेट हो रहे हैं।” शैल, विजय पर पांचवी बार झल्लाया।

वे शहर के आबादी वाले इलाके से गुजर रहे थे, इसलिये विजय ने बाइक की रफ्तार धीमी रखी थी।

“लेट हो नहीं रहा है बल्कि हो चुका है। वी आर अबाउट टू मिस फर्स्ट पीरियड।”

“अगर तू बाइक को साइकिल की रफ़्तार से चलाएगा तो हम जरूर अपना पहला पीरियड मिस कर देंगे।”

“तो कर देते हैं न। अपनी या राह चलते लोगों की जान जोखिम में डालने से
बेहतर ऑप्शन तो यही है कि पीरियड ही मिस कर दिया जाये।”

“डोंट बी फूल विजय। अगर हमने आज थर्मोडायनामिक्स की क्लास मिस कर दी तो कल का लेक्चर सर के ऊपर से निकल जायेगा।”

“कुछ भी हो। मैं बाइक की स्पीड फोर्टी से ऊपर नहीं ले जाना वाला।”

“तो फिर मुझे आगे आने दे। मैं ले जाता हूँ फोर्टी के ऊपर।”

"नहीं! नहीं!" विजय ने सख्त विरोध किया- "मैं ये भी नहीं करूंगा। मुझे मालूम है कि बाइक हाथ में आते ही तुम खुद को द रफ़ नेशन का टॉम क्रूज समझने लगते हो।"

"इट्स टू मच यार!" शैल झुंझलाया- "तू अपने मोरल लेक्चर अपने पास रख और चल बाइक साइड लगा।"

"मैं ऐसा नहीं करूंगा। इस जन्म में तो बिल्कुल भी नहीं।"

"मैंने कहा बाइक साइड लगा।" शैल ने उसका कंधा झकझोरा।

संतुलन बिगड़ जाने के भय से विजय को घुटने टेकने पड़े। उसने अनमने भाव से बाइक साइड लगाया। और हेलमेट उतारकर शैल की ओर बढ़ाते हुये कहा- "इसे तो लगाएगा न?"

"तीन किलोमीटर से पहले कोई चेकपोस्ट नहीं है। जरूरत क्या है इसकी?"

"और अगर...!"

"तू उसकी चिंता छोड़ यार। मेरे वॉलेट में पांच सौ का नोट है। चल अब बैठ।"

विजय समझ गया कि शैल ने 'पांच सौ के नोट' का जिक्र क्यों किया था? आज सुबह से ही उसका दिल किसी अनहोनी की आशंका के कारण जोरों से धड़क रहा था। ऐसे में जब रफ़्तार के शौक़ीन शैल ने बाइक संभाली तो उसका हलक सूखने लगा।

"प्लीज संभाल कर यार!"

"तू बैठ या फिर यहीं खड़े होकर किसी ऑटो के आने की राह देख।"

शैल की डांट सुनकर विजय सीट के पिछले भाग पर इस कदर सवार हुआ मानो पहली बार बाइक की सवारी कर रहा हो। उसके जेहन में करवटें ले रहे तूफान से बेख़बर शैल ने बाइक स्टार्ट की और अपनी पुरानी आदत के अनुसार बन्दूक से निकली गोली की मानिन्द सड़क पर दौड़ा दी। बाइक सड़क पर लहराती हुई अत्युच्च वेग से दौड़ती रही। शैल ने रफ़्तार पर अंकुश लगाने की कोशिश तब तक नहीं की, जब तक कि उसके मस्तिष्क को एक तेज झटका नहीं
लगा और वह रफ्तार की दुनिया से निकलकर यथार्थ की दुनिया में नहीं आ गया।

उसका कलेजा उछलकर हलक में आ फंसा, जब उसने पाया कि तीव्र मोड़ को पार करने के बाद बाइक एक मिनी ट्रक के ठीक सामने आ गयी थी। बाइक की रफ्तार अधिक थी और ट्रक से फासला भी इतना कम था कि ब्रेक लगाने की दशा में भी उसका अनियंत्रित होकर ट्रक से टकराना तय था। भयानक टक्कर का संयोग बन चुका था। शैल के पास इतना वक्त नहीं था कि वह देख पाता कि मौत को अचानक सामने पाकर विजय की क्या प्रतिक्रिया है।

"विजय जम्प।" चीखते हुये उसने बाइक को उसके हाल पर छोड़ा और एक सेकंड से भी कम समय में सीट से उछला।

बाइक अपने तयशुदा अंजाम तक पहुंची।

इसके बाद का मंजर दिल दहला देने वाला था। विजय का सर ट्रक के निचले हिस्से से टकरा कर क्षत-विक्षत हो गया, जबकि बाइक रोड पर फिसलते हुये ट्रक के अन्दर चली गयी। विजय की मौत और भी दर्दनाक हुई, क्योंकि ट्रक के रुकते-रुकते भी आगे का पहिया उसके धड़ को कुचलता चला गया।

विजय कूद पाया या नहीं, ये शैल नहीं देख पाया था क्योंकि ज्यों ही उसका जिस्म धरातल से टकराया था, सर में तीव्र पीड़ा की एक लहर उठी थी और आँखों के आगे अँधेरा छा गया था।

□□□

“क्या हुआ डॉक्टर? शैल बच तो जायेगा न?”

डॉक्टर के आपरेशन थियेटर से बाहर निकलते ही एक अधेड़ महिला उनके पीछे बदहवास सी भागती हुयी चीखी।

“अभी कुछ कहा नहीं जा सकता। आप हमसे थोड़ी देर बाद हमारे केबिन में मिलिये।”

“ल...लेकिन डॉक्टर।”

“प्लीज!” डॉक्टर ने अपना हाथ छुड़ाया और फ्रेशर रूम की तरफ बढ़ गये।

“डोंट वरी शारदा! एवरीथिंग विल बी ओके।” महिला के पीछे खड़े वृद्ध ने उसके कन्धे को हौले से दबाते हुये कहा।

□□□

घाट की सीढियों पर बैठा यथार्थ आई फ़ोन-7 की स्क्रीन को घूर रहा था। डिस्प्ले पर उसका मेल अकाउंट खुला हुआ था, और निगाहें इनबॉक्स के एक पुराने ई-मेल के टेक्स्ट पर थिरक रही थीं। उसके चेहरे पर व्याप्त भावों को देखकर लगता था कि वह या तो गहरी चिंता में था, या फिर अपराधबोध से ग्रस्त था।

थोड़ी देर बाद उसने डिस्प्ले से निगाहें हटायीं और गंगा में नौकारोहण कर रहे पर्यटकों को देखने लगा। अस्ताचलगामी सूर्य की लालिमा जल में उतर गयी थी और लहरें सिंदूरी हो उठीं थीं। सेलफोन के वाइब्रेशन से उसकी तन्द्रा भंग हुई। उसने डिस्प्ले पर उभर रहे नंबर को देखा और काल रिसीव कर लिया।

“यथार्थ आन दिस साइड।”

“आपको जिन अलग-अलग आई-पी एड्रेसेज से ई-मेल मिल रहे हैं, हम उनकी लोकेशन्स को ट्रैक नहीं कर पा रहे हैं सर। आई-पी एड्रेसेज से केवल यही कन्फर्म हो पा रहा है उन मेल्स का सर्वर इंडिया में है, लेकिन इंडिया में कहाँ है? इस बाबत हमें अभी कोई जानकारी नहीं मिल पायी है”

यथार्थ ने आंखें बंद करके एक गहरी सांस ली। अमूमन वह ऐसा तभी करता था, जब उसे गुस्सा या झुंझलाहट रोकने की जरूरत महसूस होती थी।

“आप हमें सुन पा रहे हैं सर?”

“हां। सुनाई दे रहा है मुझे।” झुंझलाहट पर पूरी तरह काबू पा जाने के बाद ही उसने मुंह खोला।

"आपको जिन अलग-अलग आई-पी एड्रेसेज से ई-मेल मिल रहे हैं, हम उनकी लोकेशन्स को ट्रैक नहीं कर पा रहे हैं सर।" दूसरे छोर पर मौजूद शख्स ने अपनी बात दोहराई।

"कोशिश जारी रखो।"

"ओके सर।"

"और सुनो....।"

"यस सर।"

"आगे से ऐसे निराशाजनक समाचार मेल के जरिये देना।"

"ओके सर।" दूसरी तरफ से शालीन स्वर में कहा गया।

ध्वनि तरंगो के उस पार मौजूद शख्स को आभास हो गया था कि उसके बॉस का आज का दिन उदासी भरा रहा था। यथार्थ ने कॉल डिसकनेक्ट किया ही था कि एक बार फिर सेलफोन वाइब्रेट हुआ। इस बार डिस्प्ले पर कोई नंबर नहीं उभर रहा था। वह समझ गया कि फ़ोन किसका था।

"क्या तुम्हें पता है कि तुम्हारी बात मानकर मैं अनजाने में ही क्या कर बैठा
हूँ।" कॉल पिक करते ही यथार्थ का वह क्रोध बाहर उबल पड़ा, जिसे उसने पहली कॉल के दौरान आंखें बंद करके और गहरी सांस लेकर नजरंदाज कर दिया था।

"जानता हूँ।" दूसरी तरफ से लापरवाह स्वर में कहा गया- "लेकिन इसमें नाराज होने जैसी क्या बात है?"

"बकवास बंद करो, और ये बताओ कि तुम हो कौन?"

"एक इंसान, जो शैल के भूत और भविष्य दोनों से वाकिफ है।" दूसरे सिरे से आया स्वर रहस्यमयी था।

"तुम्हारे इसी बकवास पर यकीन करके मैं विजय नाम के एक निर्दोष लड़के के मौत की वजह बन गया।"

"रिलैक्स यथार्थ।" दूसरी तरफ से समझाने वाले अंदाज़ में कहा गया- "जीवन नश्वर है। इसके खो जाने पर विलाप करना बुद्धिजीवियों का काम नहीं है, ऐसा हजारों साल पहले श्रीकृष्ण ने कहा था। मैं तुम्हें पहले भी बता चुका हूँ कि जिस केस की फाइल तुम्हें सौंपी गयी है, उसका एक-एक सिरा मेरे सामने सुलझा पड़ा है। तुम्हारे पास करने को कुछ भी नहीं है, सिवाय मेरे स्टेप्स को फॉलो करने के। शैल के जीवन में जो कुछ होने वाला है, वह एक सुपर इंटेलीजेंट माइंड के जरिये पहले से ही प्रोग्राम्ड किया हुआ है।"

"तुमने मुझे फोन क्यों किया है? अगला स्टेप बताने के लिये?"

"नहीं। तुम्हें ये बताने के लिये कि अब हमारे बीच लम्बे समय तक कोई बात नहीं होगी। आग लग चुकी है, अब बस धुयें का रुख देखना है। कई लोगों की ज़िन्दगी में भूचाल आने वाला है। जस्ट वेट एंड वाच।"

कॉल डिसकनेक्ट कर दिया गया।

"हैलो..मेरी बात सुनों..!"

सुनने के लिये लाइन पर अब कोई नहीं था। यथार्थ के चेहरे पर काबिज झुंझलाहट पहले से कई गुना ज्यादा बढ़ गयी।

□□□

मेज पर बिखरे पड़े शैल के अनगिनत मेडिकल रिपोर्ट्स में से एक डॉ. रेहान सिद्दीकी के हाथ में था। रिपोर्ट का अवलोकन करने के बाद उन्होंने उसे एक तरफ रख दिया। उनके चेहरे पर चिन्ता झलक रही थी। लम्बी साँस छोड़ते हुये उन्होंने चश्मा उतारकर मेज पर रखा और रिवॉल्विंग चेयर की पुश्त से सर टिकाकर, आँखें बंद करके कुछ सोचने लगे। आहूजा और उनकी पत्नी शारदा के दाखिल होने की आहट पाकर उन्होंने आँखें खोली।

"प्लीज कम! मैं आप लोगों का ही वेट कर रहा था।"

"शैल अब कैसा है डॉक्टर?" पहला सवाल आहूजा ने पूछा।

"मैंने उसकी हालत के बारे में जानकारी देने के लिये ही आप दोनों को बुलाया है।"

"वह ठीक तो हो जायेगा न?" शारदा ने अधीर लहजे में पूछा।

"एक्सीडेंट के कारण उसके ब्रेन स्टेम पर गहरा आघात पहुंचा है।"

"मतलब?" किसी अनहोनी की आशंका से शारदा का लहजा कांपा।

"ब्रेन स्टेम दिमाग के उस छोटे हिस्से को कहते हैं, जो रीढ़ की नस का ऊपरी भाग होता है। यह सेंट्रल नर्वस सिस्टम और व्यक्ति की चेतना का केंद्र होता है। ब्रेन स्टेम को आघात पहुँचने का मतलब होता है, सम्बंधित व्यक्ति की श्वसन प्रक्रिया में व्यवधान उत्पन्न हो जाना। जिसके

कारण आगे चलकर ऑक्सीजन के अभाव में उसके सभी अंगों की कार्यप्रणाली ठप्प पड़ने लगती है। यही अवस्था ब्रेन डेथ या न्यूरोलॉजिकल डेथ कहलाती है।"

"शैल के केस में क्या हुआ है?" आहूजा का लहजा संदेह से परिपूर्ण हो उठा।

"वही हुआ है, जो नहीं होना चाहिये था।" रेहान ने अफसोसजनक लहजे में कहा।

"साफ़-साफ़ कहिये डॉक्टर।"

"गहरे आघात के कारण शैल के ब्रेन स्टेम की सूजन इस हद तक बढ़ चुकी है कि मैं ऑपरेशन के जरिये भी उसे कम न कर सका।"

"यानि....यानि कि वह ब्रेन डेथ की अवस्था में पहुँच चुका है।"

"संभावना तो इसी बात की है। फिलहाल चार डॉक्टर्स की टीम ने कन्फर्मेशन के लिये कुछ टेस्ट किये हैं, जिनमें एप्निया टेस्ट भी शामिल है। छः घंटे बाद वे टेस्ट फिर से किये जायेंगे। उन टेस्ट्स की रिपोर्ट आने के बाद ही आधिकारिक रूप से कुछ कहा जा सकता है।"

"और...और अगर ब्रेन डेथ कन्फर्म हो गया तो?" मिस्टर आहूजा की वाणी लड़खड़ायी जरूर थी, किंतु उन्होंने अपना धैर्य संभाला हुआ था। जबकि मिसेज आहूजा इस सीमा तक विचलित हो उठी थीं कि रेहान को असुविधा होने लगी थी।

"तो हमारे पास केवल यही ऑप्शन होगा कि हम उसका वेंटीलेटर ऑफ

करके उसकी डेडबॉडी आपको सौंप दें।"

"नहीं! ऐसा नहीं होगा।" शारदा हलाल होते बकरे की तरह चीख उठीं- "ऐसा नहीं होना चाहिये।"

"आई होप सो। लेकिन अगर ऐसा हो गया तो आप लोगों को धैर्य से काम लेना होगा। ब्रेन डेथ कन्फर्म होते ही हम आपकी सहमति से वेंटीलेटर ऑफ कर देंगे, क्योंकि वेंटीलेटर के जरिये ऑक्सीजन सप्लाई करके शैल के दिल को केवल दो या तीन दिन ही धड़काया जा सकता है। इसके बाद उसके हृदय की कार्यप्रणाली स्वत: ही रुक जायेगी। ऑक्सीजन के अभाव में यही हाल उसके बाकी अंगों का भी होगा।"

"लेकिन डॉक्टर....!"

आहूजा ने कुछ कहना चाहा, किन्तु रेहान उनकी बात काटकर कह उठे- "फ़िलहाल हमें बगैर कोई बहस किये रिपोर्ट्स के आने का वेट करना चाहिये।"

□□□

"एक्सक्यूज मी मिस।" आवाज सुनकर रिसेप्शन पर मौजूद लड़की ने चेहरा ऊपर उठाया। सामने लम्बे कद और प्रभावशाली व्यक्तित्व वाला एक आदमी खड़ा था।

"यस।" रिसेप्शनिस्ट की मधुर आवाज।

"मुझे शैल आहूजा नाम के एक पेशेण्ट से मिलना है।"

"आपकी तारीफ।"

"ओह सॉरी। मेरा नाम यथार्थ है। मैं शैल का फ्रेण्ड हूं।"

"हैव यू एनिथिंग मोर अबाउट द पेशेण्ट।"

"या श्योर। हिज केस बिलांग्स टू अ रोड एक्सीडेण्ट व्हिच वाज हैपेण्ड एट मकबूल आलम रोड ऑन ट्वेन्टी फर्स्ट ऑफ जुलाई।"

"जस्ट अ मिनट प्लीज।" कहने के बाद रिसेप्शनिस्ट ने कुछ देर तक कीबोर्ड के साथ छेड़खानी की और डेक्स्टॉप पर नजर आ रहे डिटेल्स को पढ़कर यथार्थ को सुना दिया- "थर्ड फ्लोर। डिलक्स वॉर्ड नं. ट्वेंटी थ्री"

"थैंक यू।" यथार्थ रिसेप्शनिस्ट का 'योर मोस्ट वेलकम' सुने बगैर ही वहां से आगे बढ़ गया।

□□□

रेहान नर्स के साथ शैल के वार्ड में थे। उनके चेहरे पर नासमझी के भाव थे।

घंटे भर पहले ईसीजी मॉनिटर पर फ्लैट नजर आ रहे हार्ट वेब में अब हलचल थी। वे बार-बार पैनल की ओर से भेजे गये उन टेस्ट्स की रिपोर्ट्स को देख रहे थे, जो शैल के ब्रेन डेथ की पुष्टि के लिये दोबारा किये गये थे।

"ये तो ऑलमोस्ट नॉर्मल साइनस रिदम शो कर रहा है सर।" पास खड़ी नर्स ने ईसीजी ग्राफ पर नजर डालते हुये कहा।

"हार्ट रेट, कार्डियक एक्सिस और बाकी कैलकुलेशंस कहाँ है?"

नर्स ने फाइल का वह पेज रेहान की ओर बढ़ा दिया, जिस पर उसने उनके आने से थोड़ी देर पहले ही वे सारे कैलकुलेशंस किये थे।

"ये आंकड़े शो कर रहे हैं कि हिज हार्ट फंक्शन्स आर नॉर्मल।" रेहान ने मानो खुद से कहा- "बट हाउ कैन इट पॉसिबल?"

"ऐसा एक ही कंडीशन में पॉसिबल हो सकता है सर....।"

"कि इसकी ब्रीदिंग लौट आयी है।" रेहान ने नर्स के अधूरे वाक्य को पूर्ण किया।

"यस सर!"

"सेकेण्ड एप्निया टेस्ट की रिपोर्ट दिखाओ।"

नर्स ने आदेश का पालन किया।

"पहले सायकल के एप्निया टेस्ट और दूसरे सायकल के एप्निया टेस्ट में डिटेक्ट हुये सीओटू लेवल में काफी अंतर है।" रेहान ने रिपोर्ट में इम्प्रैशन के अंतर्गत लिखे हुये बिन्दुओं पर नजर डालते हुये कहा- "इसका मतलब कि दूसरे सायकल की कन्फर्मेशन डाईग्नोसिस होने तक इसकी ब्रीदिंग लौटने लगी थी।"

नर्स ने कुछ नहीं कहा।

रेहान ने कुछ देर तक शैल का मुआयना किया और फिर प्रेस्क्रीप्शन पेपर पर पेन चलाते हुये कहा- "इसकी न्युरोलॉजिकल एक्टिविटीज पर नजर रखो। चार घंटे बाद फिर से एप्निया टेस्ट कराओ और हेड का सीटी स्कैन भी।"

एडवाइज लिखने के बाद उन्होंने फाइल नर्स की ओर बढ़ाया और वार्ड से बाहर निकल गये। रेहान के जाते ही नर्स ने फुर्ति से बेड के सिरहाने रखा फोर एमएल का सिरिंज उठाया। शैल का नस ढूँढ़ा। थोड़ी देर बाद ही

उसकी सिरिंज ब्लड से भरी हुई थी। उसने एक सतर्क निगाह दरवाजे पर डाली और फिर शीघ्रता से ब्लड को वायल (शीशी) में ट्रांसफर करने के बाद सिरिंज को डस्टबिन में फेंक दिया। उपरोक्त कार्य को अंजाम देने के दौरान नर्स का अंदाज ऐसा था जैसे उसे
किसी के द्वारा देख लिये जाने का भय हो।

□□□

रेहान को सीटी स्कैन की फिल्म देखते हुये काफी वक्त गुजर चुका था। इस दौरान आहूजा दम्पत्ति पहलू बदलते हुये उनके मुंह खोलने का इंतजार कर रहे थे। अवलोकन से संतुष्ट होने के बाद रेहान ने फिल्म को वापस रैपर में डाला और इण्टरकॉम पर उस नर्स को केबिन में आने का आदेश दिया, जो शैल को अटेंड करती थी। उसके आने तक आहूजा दम्पत्ति गहरी उत्कंठा में डूबकर केवल रेहान का चेहरा देखते रहे।

"क्या रिपोर्ट है?" नर्स के केबिन में दाखिल होते ही रेहान ने पूछा।

"नतीजे हैरान करने वाले हैं सर। पेशेंट के तीसरे एप्निया टेस्ट की रिपोर्ट नार्मल है।" नर्स के लहजे में हैरत थी।

"कोमा के सिम्प्टम्स?"

"नो सर!" नर्स ने कंधे उचकाए- "हम एक्स्पेक्ट कर सकते हैं कि पेशेंट को कुछ घंटों के अन्दर ही होश आ जायेगा।"

नर्स का आख़िरी वाक्य सुन कर आहूजा दम्पत्ति के चेहरे पर सुखद आश्चर्य के भाव आये, किन्तु रेहान के चेहरे के भावों में कोई तब्दीली नहीं हुई।

"तुम जाओ। किसी एब्नार्मल सिचुएशन या फिर पेशेंट के होश में आने पर इन्फॉर्म करना।"

"श्योर सर!"

"क्या सचमुच शैल को होश आने वाला है डॉक्टर?" नर्स के जाते ही शारदा ने व्यग्र लहजे में पूछा।

"हां! और ऐसा शायद कुछ ही घण्टों में होने वाला है। लेकिन...।"

"लेकिन क्या डॉक्टर?" आहूजा बीच में ही बोल पड़े।

"शैल के रिसेन्ट डायग्नोसिस भले ही ये शो कर रहे हैं कि उसके ब्रेन ने अचानक काम करना शुरू कर दिया है लेकिन सीटी स्कैन की रिपोर्ट अब भी वही है, जो पहले थी, यानि कि ब्रेन स्टेम की सूजन कम नहीं हुई है।"

"तो इसमें हैरान होने की क्या बात है? शैल नॉर्मल है, इससे बढ़कर खुशी की बात हमारे लिये और क्या हो सकती है।"

रेहान ने लम्बी सांस ली। पेशेण्ट को होश आने वाला था, ये जानने के बाद भी उनके चेहरे पर खुशी या उत्साह का कोई लक्षण नहीं था।

"मेडिकल साइन्स में ये घटना साधारण नहीं है। ब्रेन स्टेम की सूजन में लेशमात्र भी कमी नहीं आयी है, बावजूद इसके शैल के ब्रेन फंक्शन्स स्टार्ट हो गये हैं, ये घटना एक्सप्लानेशन के दायरे से बाहर है।"

"वी डोन्ट नीड एनी फरदर एक्सप्लानेशन।" शारदा का निर्णायक लहजा- "शैल नॉर्मल है; यही हमारे लिये सबसे बड़ा एक्सप्लानेशन है।"

रेहान ने कुछ नहीं कहा। मन में चल रहे द्वंद्व के कारण शायद उन्होंने मिसेज आहूजा की बातों पर ध्यान नहीं दिया था।

"क्या शैल ब्रेन स्टेम में सूजन के साथ नॉर्मल लाइफ नहीं जी सकता डॉक्टर?" जब रेहान ने लम्बे समय तक कुछ नहीं कहा तो आहूजा ने पूछा।

"कोई भी इंसान शरीर में किसी गंभीर अनियमितता के साथ सामान्य जीवन नहीं व्यतीत कर सकता है।"

"तो क्या शैल भी सामान्य जीवन नहीं जी सकेगा?"

"फिलहाल कुछ कहा नहीं जा सकता। बिस्तर से उठने के बाद उसके जीवन में क्या-क्या परिवर्तन आयेंगे? इस सवाल से कहीं ज्यादा अहम सवाल मेरे लिये ये है कि गम्भीर दिमागी सूजन के बावजूद अचानक किसी का दिमाग फिर से काम करना कैसे शुरु कर सकता है?"

आहूजा ने बगैर कुछ कहे अपनी पत्नी की ओर देखा। शारदा का मुखमण्डल तनावरहित था। उन्हें रेहान के जेहन में मचल रहे सवालों से कोई सरोकार नहीं था। उन्हें तो इस बात की खुशी थी कि शैल को जल्द ही होश आने वाला था।

□□□

"दादी!" शैल के होठ कांपे।

"मेरे बच्चे!" शारदा की खुशी का ठिकाना नहीं रहा। उन्होंने शैल के चेहरे को हथेलियों में भरकर उस पर चुम्बनों की झड़ी लगा दी।

उसे थोड़ी देर पहले ही होश आया था। जब उसने आँखें खोली थी तब वार्ड में कोई नहीं था, सिवाय उस नर्स के, जो डॉक्टर को सूचित करने के उद्देश्य से शीघ्र ही बाहर निकल गयी थी। और फिर जब वह वापस कमरे में आयी थी तो अकेली नहीं थी, उसके साथ डॉ. रेहान और आहूजा दम्पत्ति थे।

"मैं कितने दिन बेहोश रहा?" सहज होने के बाद शैल ने रेहान को लक्ष्य करके पूछा, लेकिन रेहान ने कोई जवाब नहीं दिया। उनकी पैनी निगाहें शैल की गतिविधियों का जायजा ले रही थीं।

"तुम्हारा रोड एक्सीडेंट हुआ था।" जवाब आहूजा ने दिया- "सर पर गंभीर चोट आयी थी। लेकिन ईश्वर का शुक्र है कि डॉक्टर रेहान के कौशल ने तुम्हें मौत के गहरे अँधेरे में गुम होने से बचा लिया।"

शैल ने रेहान की ओर देखा। उनके गौरवर्ण चेहरे पर काबिज गंभीरता ने उसे प्रभावित किया।

"थैंक्स अ लॉट डॉक्टर।"

"ये मेरा फ़र्ज़ था; ऐसा कहकर मैं कोई फ़िल्मी डायलॉग नहीं दोहराना चाहता।" रेहान ने मुस्कुराते हुये कहा- "क्योंकि मुझे मालूम है कि तुम्हारे साँसों के लौटने के पीछे मेरे हुनर से कहीं ज्यादा तुम्हारा ईश्वर जिम्मेदार है।"

"ये आपका.....।"

"अगर तुम बेटर फील कर रहे हो तो क्या मैं तुमसे कुछ पूछ सकता हूँ?" रेहान ने जानबूझकर शैल का वाक्य काट दिया, क्योंकि वे उसकी औपचारिक बातों से बोर नहीं होना चाहते थे।

"ऑफकोर्स डॉक्टर।"

"क्या एक्सीडेंट के ठीक पहले की बातें तुम्हें याद हैं?"

"हाँ! मैं सोलन के एक नर्सिंग होम गया हुआ था।" शैल की बात सुन वहां मौजूद हर शख्स चौंका, किन्तु वह इसे नजरअंदाज करके आगे कहता चला गया- "क्यों गया था, ये मुझे याद नहीं आ रहा है। दगशाई लौटते वक्त मुझे ये डर सता रहा था कि कोई मेरा पीछा कर रहा है, जो शायद मुझे जान से मार देना चाहता था। मैं टैक्सी ड्राईवर के बगल में बैठा था। मेरा सारा ध्यान विंडस्क्रीन पर था कि....।"

"एक मिनट शैल!" रेहान ने बीच में ही कहा- "इस वक्त तुम बनारस में हो और तुम्हारा एक्सीडेंट सोलन में किसी नर्सिंग होम से लौटते वक्त नहीं बल्कि यहाँ यानि कि बनारस में उस वक्त हुआ जब तुम तेज बाइक चलाते हुये कॉलेज जा रहे थे।"

"आर यू जोकिंग डॉक्टर?" शैल ने उपहास भरे स्वर में पूछा।

"बिल्कुल भी नहीं। तुम्हारा एक्सीडेंट बनारस में ही हुआ। इस बात की तस्दीक अट्ठारह जुलाई की हर अखबार में छपी तुम्हारे एक्सीडेंट खबर भी कर सकती है।"

"ऐ...ऐसा कैसे हो सकता है?" रेहान के आत्मविश्वास ने शैल को विचलित किया- "मैं तो सोलन में था। शाम का अँधेरा फैलने लगा था, मुझे किसी से मिलने की जल्दी थी इसलिये मैं एक लोकल टैक्सी से दगशाई की ओर आ रहा था।"

"डॉक्टर ठीक कह रहे हैं शैल।" आहूजा ने कहा- "तुम बनारस में हो। तुम्हारा एक्सीडेंट भी यहीं हुआ। सोलन तो तुम आज तक कभी गये भी नहीं।"

अब शैल के लिये कुछ कहना आसान नहीं था।

"ऐसा..ऐसा कैसे हो सकता है मेरे साथ?"

उसने सर थाम लिया। उसके हाव-भाव ने दर्शाया कि वह कुछ याद करने की कोशिश कर रहा था। आहूजा और शारदा चेहरे पर घबराहट का भाव लिये हुये, पाषाण-प्रतिमा की मुद्रा अख्तियार किये हुये, उसे किसी अज्ञात द्वंद्व से जूझते हुये देखते रहे। उसके प्रयासों का परिणाम जानने की उत्सुकता में रेहान ने भी उसकी दशा में हस्तक्षेप नहीं किया।

अंततः शैल ने खुद ही चेहरा ऊपर उठाया। उसकी सांसें लोहार की धौंकनी की मानिंद तीव्र हो उठीं थीं और माथे पर पसीने की बूँदें छलछला आयी थीं। रेहान भांप गये कि वह बीती हुई घटनाओं को याद करने के प्रयास में विफल हो चुका है।

"मैंने जो कहा वही सच है। मैं सोलन में ही था।"

"तुम सोलन के नर्सिंग होम क्यों गये थे? तुम्हें नर्सिंग होम में क्या काम आ गया था? दगशाई लौटते वक्त तुम्हें

किससे मिलने की जल्दी थी? तुम्हें ये भय क्यों सता रहा था कि कोई तुम्हारी जान लेना चाहता है?”

“मैं यही सब तो याद करने की कोशिश कर रहा था डॉक्टर, लेकिन मुझे कुछ याद नहीं आया। मेरे साथ क्या हुआ है? मुझे अपना दिमाग नया-नया सा क्यों लग रहा है? मुझे ऐसा क्यों लग रहा है कि मैं लम्बे समय बाद सोकर उठा हूँ?”

बदहवास शैल के सवालों का जवाब रेहान के पास भी नहीं था।

“क्या तुम्हें याद है कि तुम्हारे साथ टैक्सी में और कौन था?” आख़िरकार आहूजा से भी खामोश नहीं रहा गया।

“मेरे साथ टैक्सी में ड्राईवर के अलावा कोई नहीं था।”

“ठीक है! हम तुमसे बाद में बात करेंगे। फिलहाल तुम्हें आराम करना चाहिये।”

इससे पहले कि आहूजा दम्पत्ति कुछ कहते या उन दोनों में से कोई विजय का

जिक्र करता, रेहान उन्हें लेकर बाहर निकल गये।

शैल ने भी एक लम्बी साँस लेते हुये आँखें बन्द कर ली।

□□□

“ये हमने अभी-अभी क्या देखा डॉक्टर?”

“शैल अपनी जिन्दगी से हाथ धो बैठा था।” रेहान ने आहूजा दम्पत्ति को बैठने का इशारा करते हुये कहा- “किस चमत्कार के तहत उसे नया जीवन मिला है, ये मैं अभी तक नहीं समझ पाया हूँ।”

आहूजा और शारदा की निगाहें आपस में टकरायीं। उन्हें एक-दूसरे की आँखों में प्रबल चिन्ता की लकीरें नजर आयीं। उनके मन में उठते सवालों को भांप चुके रेहान ने अपना वक्तव्य आगे बढ़ाया- "शैल शायद मेमोरी डिसऑर्डर का शिकार हुआ है।"

"मेमोरी डिसऑर्डर मतलब कि स्मृति में व्यतिक्रम?"

"जी हाँ! मुझे लगता है कि दुर्घटना के बाद शैल की यादें कुछ साल पीछे चली गयी हैं।"

"ऐसा कैसे संभव है? शैल न तो कभी सोलन या दगशाई जैसी जगहों पर गया है और न ही वे घटनायें कभी उसके साथ घटी हैं, जिनका वह जिक्र कर रहा है। ऐसे में इस तर्क पर कैसे आश्रित हुआ जा सकता है कि उसकी यादें कुछ साल पीछे जाकर ठहर गयी हैं?"

आहूजा ने रेहान को निरुत्तर कर दिया।

"वास्तविकता क्या है; ये समझने के लिये मुझे वक्त चाहिये। मेडिकल साइंस की हिस्ट्री में आये इस तरह के केसेज की स्टडी करनी होगी।"

"तब-तक शैल का क्या होगा डॉक्टर?" शारदा ने व्यग्र लहजे में कहा- "दिमागी अनियमितता के साथ क्या वह सामान्य जीवन जी सकता है?"

"आने वाले दिनों में शैल जिस मानसिक व्यतिक्रम से जूझने वाला है, उसके विषय में हमें कोई अंदाजा नहीं है। यहाँ तक कि हमें ये भी नहीं मालूम कि उसकी स्मृति ऐसी घटनाओं पर क्यों ठहरी, जो कभी उसकी जिन्दगी का हिस्सा ही नहीं थीं।"

"तो फिर अब शैल के लिये आपकी क्या एडवाइज है डॉक्टर?"

"बहत्तर घण्टे के ऑब्जर्वेशन के बाद हम उसे डिस्चार्ज करने वाले हैं। ट्रीटमेंट के तौर पर मैं उसे ब्रेन स्टेम की सूजन कम करने वाली कुछ मेडिसिन्स प्रेसक्राइब्ड करूंगा, जिन्हें उसे नियमित रूप से लेनी होगी। यदि उसके मेमोरी डिसऑर्डर की वजह दिमागी सूजन होगी तो उन दवाओं का सकारात्मक परिणाम सामने आयेगा और सम्भव है कि उसकी मेंटल कंडीशन नार्मल हो जाये।"

"और यदि नार्मल नहीं हुआ तो?"

"देखिये..।" रेहान ने समझाने वाले अंदाज में कहा- "शैल का केस बेहद अनकॉमन है। इसलिये हम किसी भी ट्रीटमेंट प्लान के आउटकम्स को लेकर कोई प्रेडिक्शन नहीं कर सकते। फ़िलहाल हम केवल प्रयास कर सकते हैं, और उन प्रयासों के परिणामों के आधार पर ही कोई राय कायम कर सकते हैं। शैल को सायकोलॉजिकल ट्रीटमेंट की भी जरूरत पड़ सकती है। जिसमें उसकी गुम हो चुकी यादों से जुड़ी फेक सिचुएशन्स क्रियेट की जायेंगी और कोशिश ये होगी कि उन सिचुएशन्स से दोबारा गुजरने के बाद उसकी वास्तविक याद्दाश्त लौट आये। किन्तु ये सभी तरीके तभी कारगर साबित हो सकते हैं, जब आप लोग भी को-ऑपरेट करें।"

आहूजा और शारदा को रेहान की बातें प्रासंगिक लगीं।

□□□

शैल की स्मृति में उत्पन्न हुआ व्यतिक्रम अजीबोगरीब था। याद्दाश्त सामान्य होने के उपरान्त भी उसे याद नहीं था कि विजय नाम का उसका कोई दोस्त था, जो उसके स्विफ्ट राइडिंग के शौक की भेंट चढ़ गया था। ब्रेन डेथ के बाद उसके फिर से जी उठने की घटना के अलावा कई अन्य तथ्य भी थे, जो उसके मामले को पेचीदा और रहस्यमयी बनाते थे। उन्हीं तथ्यों में से एक तथ्य ये भी था कि वह केवल आंशिक स्मृतिलोप का ही शिकार नहीं हुआ था, बल्कि उसकी स्मृति से कुछ ऐसी घटनायें भी जुड़ गयीं थीं, जो कभी उसके जीवन का हिस्सा नहीं थीं। वह अभी भी उन्हीं बातों पर अडिग था, जो उसने रेहान के सामने कही थी। हालांकि ये बात जुदा थी कि उसके विचित्र बयान के बाद जितने भी सवाल खड़े हुये थे, उनमें से वह किसी का भी जवाब नहीं दे पाया था।

मंगलवार की शाम थी।

टैरेस पर रेलिंग के पास खड़ा शैल अस्ताचलगामी सूर्य को देख रहा था, जिसे विहगों का समूह मधुर स्वर लहरियों से विदा कर रहा था।

"क्या सोच रहे शैल? तुम्हारी चाय ठण्डी हो जायेगी।" शारदा ने कहा, जो थोड़ी देर पहले ही चाय की ट्रे के साथ छत पर आयी थीं।

"मैं शाम को चाय नहीं पीता।" शैल ने बगैर उनकी ओर मुड़े कहा।

कप को होठों तक ले जाता शारदा का हाथ रुक गया।

"तो क्या तुम ये भी भूल गये कि इवनिंग टी तुम्हारी डेली रुटीन में शामिल है?"

"ये मेरी रुटीन नहीं है। मैं शाम को प्रोफ़ेसर शास्त्री के साथ होता हूँ।"

"प्रोफ़ेसर शास्त्री?" शारदा यूं चौंकी मानो पैरों तले धरातल हट गया हो- "ये कौन हैं? जहाँ तक मुझे मालूम है, शास्त्री सरनेम वाला कोई प्रोफ़ेसर तुम्हारी जिन्दगी में नहीं है।"

"वे मेरे रिसर्च गाइड हैं।" शैल अभी तक शारदा की ओर नहीं पलटा था- "एक वही तो ऐसे शख्स हैं, जो मेरे उन रिसर्च आइडियाज पर भी गहन चिंतन करते हैं, जिन्हें साधारण लोग कोरी कल्पना कहकर खारिज कर देते हैं।"

"रिसर्च गाइड? रिसर्च आइडियाज?" शारदा के माथे पर बल पड़ गये-"ये सब क्या है शैल? तुम कैसी बातें कर रहे हो? तुम....तुम अभी रिसर्च स्टूडेंट नहीं हो।"

शारदा अपनी जगह से उठीं, उसके करीब पहुँचीं।

"क्या सोच रहे हो तुम? बताओ मुझे। तुम्हें एट लीस्ट ये तो याद होना ही चाहिये कि तुम रिसर्च स्टूडेंट नहीं हो।"

"तो फिर मैं कौन हूँ?" शैल लगभग चीखते हुये मिसेज आहूजा की ओर पलटा-"कौन हूँ मैं फिर?"

"शैल।"

"नहीं! इस नाम में मुझे झूठ नजर आता है। न जाने क्यों ऐसा लगता है कि मेरा वास्तविक नाम ये नहीं है।"

"वही तो हमारी समझ में भी नहीं आ रहा है कि दुर्घटना के बाद तुम किस भ्रमजाल में उलझ गये हो? तुम बार-बार

ऐसी घटनाओं का जिक्र क्यों कर रहे हो, जिनसे तुम्हारा दूर-दूर तक कोई वास्ता नहीं है।"

"वास्ता है। मेरा उन घटनाओं से वास्ता है। मैं एक जरूरी काम से सोलन गया था। जिस एक्सीडेंट के कारण मैं इस दशा में पहुंचा हूँ, वह एक्सीडेंट सोलन से ही लौटते वक्त हुआ था।"

"अगर ऐसा है तो...।" मिसेज आहूजा झुंझला उठीं- "तो तुम बताते क्यों नहीं कि वह कौन सी वजह थी, जो तुम्हें सोलन खींच कर ले गयी थी? क्या था वह
जरूरी काम?"

"कुछ याद नहीं आता मुझे।" शैल ने रेलिंग पर अपना सर टिका लिया- "कुछ भी नहीं। बिल्कुल भी नहीं। बंद आँखों के अँधेरे में बस कुछ धुंधले साये नजर आते हैं। आकृतियाँ नजर आती हैं, जो मुझे कुछ बताना चाहती हैं। जब भी उनके इशारे समझने की कोशिश करता हूँ तो सर में भयंकर पीड़ा होती है और साँसें उखड़ जाती हैं। ऐसा महसूस होता है जैसे अगर यह अवस्था ज्यादा देर तक रही तो मैं पागल हो जाऊंगा।"

"मत कोशिश करो उन्हें याद करने की। तुम केवल इसी विश्वास के साथ जियो कि वे घटनायें तुम्हारे जीवन का हिस्सा ही नहीं हैं। और यही सच भी है। उन्हें दुःस्वप्न समझकर भूलने की कोशिश करो।"

"मैं उन्हें दुःस्वप्न कहकर टाल नहीं सकता...।" शैल ने एक झटके से रेलिंग पर से सर उठाया- "क्योंकि वही घटनायें मुझे वास्तविक लगती हैं। आप लोग अजनबी

लगते हैं। यादों की उस धुंधली झलक में ही मुझे मेरा वास्तविक जीवन नजर आता है। मुझे लगता है कि मेरा नाम शैल न होकर कुछ और है। मैं अपने जीवन में कुछ खालीपन महसूस करने लगा हूँ। आप लोगों का बर्ताव मुझे अजीब लगता है। कुछ देर पहले आपने कहा कि इवनिंग टी मेरे डेली रूटीन में है, जबकि मुझे ऐसी कोई शाम याद नहीं जब मैंने इवनिंग टी ली हो। मैं ये जानता हूँ कि मैं इसी शहर में पैदा हुआ हूँ, ये जानता हूँ कि आप दोनों ही मेरे दादा-दादी हो और ये भी जानता हूँ कि मैं एक्सीडेंट से गुजरा हूँ, लेकिन फिर भी मेरे जेहन में छुपी वे यादें पल-प्रतिपल मुझे एहसास दिलाती हैं कि ये मेरा जीवन नहीं है। मेरा जीवन दगशाई की हसीन वादियों में हैं।"

शारदा बगैर कुछ कहे शैल के चेहरे पर आते-जाते भावों को देखती रहीं। लम्बे समय बाद जब उसकी सांसें थोड़ी संयत हुईं तो उसने कहा- "मुझे एक नाम याद आता है।"

"कौन सा नाम?" मिसेज आहूजा रोमांचित हुईं।

"क्षि...।" शैल ने दिमाग पर जोर डाला- "क्षिप्रा....नहीं...शायद...शायद क्षितिज। हाँ!...हाँ!! क्षितिज! यही है वह नाम।"

"क्षितिज?" मिसेज आहूजा के माथे पर सिलवटें उभरीं- "इस नाम के साथ तुम्हें क्या वास्ता नजर आता है?"

"नजर नहीं आता। बस महसूस होता है।"

"कल शाम जब डॉ. रेहान रूटीन चेकअप के लिये आयेंगे, तो हम उनसे इस नाम का जिक्र करेंगे। मैं चाय फिर से गर्म करके लाती हूँ।"

"नहीं! मैं आराम करना चाहता हूँ।"

शैल सीढ़ियों की ओर बढ़ गया।

□□□

रेहान के चेहरे पर तनाव व्याप्त था।

"क्षितिज।" लम्बी खामोशी के बाद उन्होंने कहा-"क्या आपको शत प्रतिशत याद है कि शैल ने यही नाम लिया था?"

"मुझे पूरी तरह याद है, उसने यही नाम लिया था।" शारदा ने कहा।

"लेकिन क्यों?" रेहान ने स्वयं से पूछा।

"क्या आप इस नाम के बारे में कुछ जानते हैं?" आहूजा का स्वर।

"इससे कोई फर्क नहीं पड़ता।" रेहान ने खुद को सामान्य दिखाने की कोशिश करते हुये कहा-"दुनिया में एक ही नाम के बहुत से लोग होते हैं। ये आवश्यक नहीं है कि मैं जिस क्षितिज को जानता होऊँ, उसका ताल्लुक शैल से हो।"

"तो फिर इस वक्त शैल की जो मानसिक दशा है, उसका कोई चिकित्सकीय कारण है आपके पास?"

"मैं पहले ही कह चुका हूँ कि शैल के मेमोरी डिसऑर्डर की ठोस वजह मेरे पास नहीं है। उसका मर चुका दिमाग जब से दोबारा हरकत में आया है तभी से ऐसे स्ट्रेंज

सिम्प्टम्स नजर आ रहे हैं। इट मे बी कि उसके मेमोरी डिसऑर्डर की वजह ब्रेन फंक्शन्स के रीस्टार्ट होने से जुड़ी हो।"

"आपने शैल की यादों के कुछ साल पीछे चले जाने की संभावना व्यक्त की थी न?" आहूजा ने कहा।

"हाँ! लेकिन आपने उस संभावना को ये कहकर खारिज कर दिया था कि वह अतीत में कभी सोलन नहीं गया।"

"मेरे मन में अभी-अभी एक विचार आया है।"

"कैसा विचार?"

"क्या ऐसा नहीं हो सकता कि किसी की यादें कुछ साल पीछे जाने की बजाय कुछ साल आगे चली जायें?"

"यू मीन कि शैल जिन परिस्थितियों की बात कर रहा है, वे परिस्थितियां भविष्य में निर्मित हो सकती हैं। हो सकता है कि....।"

"मेरा मतलब बिल्कुल यही है डॉक्टर।" उत्साहातिरेक में आहूजा ने रेहान की बात काटते हुये कहा- "जब किसी की स्मृतियों का पीछे जाना संभव है, तो उनका आगे जाना भी संभव होना चाहिये। शैल ने खुद को रिसर्च स्कॉलर और किसी प्रोफ़ेसर शास्त्री को अपना रिसर्च गाइड कहा। क्या ऐसा नहीं हो सकता कि भविष्य में वह रिसर्च के लिये एनरोल्ड हो, शास्त्री सरनेम का प्रोफ़ेसर उसका रिसर्च गाइड बने, वह किसी कारण से दगशाई जाये, जहां कोई उसकी जान का दुश्मन बन जाये, फिर उसे सोलन के नर्सिंग होम जाने की जरूरत पड़े और वहां से लौटते वक्त दूसरी बार उसका एक्सीडेंट हो जाये?"

"और फिर उस दूसरे एक्सीडेंट के बाद उसकी स्मृति सामान्य हो जाये।" शारदा पति के तर्क से सहमत नजर आयीं।

रेहान ने तुरंत कुछ नहीं कहा। उनकी लम्बी खामोशी के दौरान आहूजा दम्पत्ति आकंठ उत्कंठा में डूबकर केवल उन्हें ही देखते रहे।

"नहीं।" गहन चिंतन के बाद रेहान ने इनकार में गर्दन हिलाया- "ऐसा नहीं होता है। शैल के केस में तो बिल्कुल भी नहीं हो सकता है, क्योंकि उसके केस में और भी कई कॉम्प्लीकेशन्स हैं। न केवल उसकी यादें अज्ञात घटनाओं पर अटकी हुयी हैं, बल्कि वह खुद को शैल मानने से भी कतरा रहा है। यदि वह 'फॉरवर्ड मेमोरी' जैसी अवस्था में होता तो अपनी पहचान को किसी अनजान नाम 'क्षितिज' से क्यों जोड़ता? वह खुद को शैल कहने से क्यों कतराता? वह ये क्यों कहता कि इवनिंग टी लेना उसकी डेली रुटीन में नहीं है? वह अपनी स्विफ्ट राइडिंग की आदत और विजय नाम के दोस्त को कैसे भूल जाता?"

रेहान के तर्कों ने एक बार फिर आहूजा और शारदा को हताश कर दिया। थोड़ी देर पहले अतिउत्साहित नजर आ रहे आहूजा के चेहरे पर निराशा ने ऐसा धावा बोला कि वे लुटे-पिटे जुआरी नजर आने लगे।

"मैं किसी थ्योरी या तर्क पर बहस करना नहीं जानती डॉक्टर।" शारदा का भावुक लहजा- "मैं तो बस शैल को पुराने रूप में देखना चाहती हूँ।"

माहौल गंभीर हो उठा।

“क्या आप क्षितिज नाम के किसी ऐसे शख्स को जानते हैं, जो कभी शैल की

जिन्दगी में रहा हो?” रेहान ने पूछा- “आई मीन बचपन से लेकर आज तक क्या क्षितिज नाम का उसका कोई फ्रेंड था?”

“नहीं। मैंने शैल के मुँह से ये नाम पहली दफा सुना।”

रेहान ने गहरी साँस ली। उनके चेहरे के भाव बयां कर रहे थे कि उन्हें शारदा से इसी जवाब की उम्मीद थी।

“डोंट वरी। मैं शैल से बात करके देखता हूँ।”

□□□

“हैलो शैल।” रेहान ने मुस्कुराते हुये दरवाजे को नॉक किया।

“वेलकम डॉक्टर। मैं आपका ही इंतज़ार कर रहा था।”

शैल ने मैगजिन बगल में रखा और बिस्तर पर आधा उठकर बैठ गया।

“मेरा इंतज़ार?” रेहान ने बेड के पास पड़े स्टूल पर तशरीफ रखते हुये कहा- “कोई खास वजह?”

“हाँ! बेहद ख़ास।”

“मुझे पता चला कि तुम्हें कोई ‘क्षितिज’ नाम याद आता है, जो तुम्हें तुम्हारा वास्तविक नाम लगता है।”

शैल ने कुछ नहीं कहा।

“होता है।” रेहान ने सामान्य स्वर में कहा- “जिस स्थिति में तुम हो, उस स्थिति में ऐसा होता है। इंसान के दिमाग में छुपी पुरानी यादें बाहर आने की कोशिश करती हैं। क्षितिज भी उन्हीं यादों में से एक होगा।”

हालांकि शैल, रेहान के तर्क से संतुष्ट नहीं था, किन्तु वह किसी दूसरे प्रकरण पर बात करना चाहता था, इसलिये बिना कोई प्रश्न किये उसने कहा- "आज मेरे पास आपको चौंकाने की एक दूसरी वजह भी है।"

"चौंकाने की वजह?" रेहान के चेहरे पर प्रश्नवाचक भाव उभरे।

"हाँ! और आप एकलौते हैं, जिनसे मैं उस वजह को शेयर करने जा रहा हूँ। मैंने इस बारे में दादा-दादी को भी कुछ नहीं बताया है, क्योंकि मैं उन्हें और ज्यादा परेशान नहीं देखना चाहता हूँ।"

'क्षितिज' नाम के जिक्र ने रेहान को पहले से ही उलझाया हुआ था। ऐसे में जब शैल ने उन्हें चौंकाने का दावा किया तो उनका कौतुहल चरम सीमा तक बढ़ गया। प्रत्यक्ष में उन्होंने मुस्कुराते हुये कहा।- "मैं जल्द से जल्द वह वजह जानना चाहता हूँ।"

"कल रात मेरे साथ कुछ अजीब हुआ डॉक्टर।" शैल ने सर्द लहजे में कहा।

"क्या हुआ?"

"मैंने एक सपना देखा। हो सकता है वह आपको सामान्य सपना लगे, किन्तु
मुझे वह अजीब लगा।"

"ऐसा क्या था उस सपने में?"

"चार लोग एक आदमी का पीछा कर रहे थे, पीछा करते-करते उन्होंने उसे शूट कर दिया।"

शैल ने ठहर कर रेहान की ओर देखा।

"कहते रहो। मैं सुन रहा हूँ।"

"इसके बाद दृश्य बदला। एक पुराना चर्च नजर आया। उस चर्च के पीछे ईसाइयों का भयानक कब्रिस्तान था। दृश्य एक बार फिर बदला। इस बार वही चार लोग एक सरकटी लाश को खाई में फेक रहे थे।"

"सरकटी लाश?" रेहान चौंके- "क्या तुम्हें अच्छी तरह याद है कि उस लाश का सर नहीं था?"

"हाँ। अच्छी तरह याद है। लाश उसी आदमी की थी, जिसे उन चारों ने दौड़ा कर शूट कर दिया था।"

रेहान के चेहरे पर दहशत का बादल मंडराया, किन्तु उन्होंने इस बात का बोध शैल को नहीं होने दिया।

"और क्या देखा तुमने?"

"काफी कुछ, लेकिन याद बस इतना ही है। दरअसल मुझे सपने याद नहीं रहते।"

"क्या तुम मुझे अपना जन्मदिन बता सकते हो?"

रेहान की भाव-भंगिमाएं बयां कर रही थीं कि शैल ने जिन घटनाओं का जिक्र किया था, वे सामान्य नहीं थीं।

"31 अक्टूबर 1994"

"क्या सचमुच?" रेहान का लहज काँपा।

"ऑफ़कोर्स डॉक्टर!"

"मेरा मतलब है कि क्या तुम्हें ठीक से याद है?"

"हाँ! मेरी जन्मकुंडली और एकेडेमिक रिकार्ड्स में यही डेट ऑफ़ बर्थ दर्ज है।"

"ऐसा कैसे हो सकता है?" रेहान ने अस्फुट स्वर में खुद से कहा- "तो क्या इक्कीस साल पहले...।"

"इक्कीस साल पहले क्या डॉक्टर?"

"क्षितिज के बारे में तुम्हें कुछ याद आता है?" रेहान ने उसके सवाल को नजरअंदाज करते हुये अधीर लहजे में पूछा- "इस नाम से जुड़े कुछ दूसरे अनुभव भी होते हैं तुम्हें?"

"बस यही महसूस होता है कि इस नाम से मेरा पुराना नाता है। मैं नहीं जानता कि वह पुराना नाता क्या है, जबकि इस नाम का आज तक मेरा कोई दोस्त नहीं हुआ। इस नाम के बारे में जब अधिक सोचता हूँ तो सर दर्द से फटने लगता है।"

"मैं एक बार फिर जानना चाहता हूँ कि क्या तुम श्योर हो, जिस लाश को घाटी में लुढ़काया जा रहा था, उसका सर नहीं था?"

"या! आई एम श्योर अबाउट दैट।"

"क्या वह चर्च वीरान था? क्या उस चर्च में कोई महिला भी थी?"

"महिला?" शैल ने दिमाग पर जोर डाला- "शायद...शायद थी। जो दृश्य मुझे याद नहीं हैं, उनमें शायद एक महिला भी थी।"

"ओह गॉड!" रेहान ने सूखे अधरों पर जुबान फेरी।

"क्या हुआ डॉक्टर? आप ठीक तो हैं?"

"हाँ...हाँ..मैं ठीक हूँ।" न चाहते हुये भी रेहान हकला उठे- "मैं तुमसे बाद में मिलता हूँ शैल।"

"ले..लेकि.....न....डॉक्टर..।"

रेहान शैल की बातों को अनसुना करते हुये खड़े हो गये।

□□□

वर्तमान दौर शैल के अब-तक के छोटे से जीवन का सर्वाधिक तनाव भरा दौर था। उसे पीड़ादायक मानसिक द्वंद्व और रहस्यमय सपनों के साथ जूझते हुये बारह दिन गुजर चुके थे। इन बारह दिनों के दौरान उसकी व्यग्रता के अनगिनत कारणों में एक कारण ये भी था कि डॉ. रेहान से उसका संपर्क टूट गया था। जिस शाम रेहान उसे रहस्यमय स्थिति में छोड़कर गये थे, उसी शाम से उनका सेलफोन स्विच्ड ऑफ हो गया था। इन बारह दिनों में न तो वे उससे मिलने आये थे और न ही उनका कोई मैसेज मिला था। आज सुबह शैल ने न्यूज़पेपर में रेहान के हॉस्पिटल से सम्बन्धित रिपोर्ट पढ़ी थी। रिपोर्ट के अनुसार रेहान ने हॉस्पिटल की 'पॉवर ऑफ़ अटॉर्नी' अपने ही समकक्ष डॉक्टर खुराना को सौंप दी थी, जो उन्हीं की भाँति उच्चकोटी के न्युरोसर्जन थे। हालाँकि रिपोर्ट में उक्त दस्तावेज की प्रकृति को लेकर कुछ विशेष उल्लेख नहीं था, किन्तु संभावना ये जतायी गयी थी कि रेहान द्वारा खुराना को सौंपी गयी 'पॉवर ऑफ़ अटॉर्नी' जनरल प्रकृति की थी, अर्थात खुराना अब हॉस्पिटल से जुड़े हर छोटे-बड़े फैसले को लेने के लिये तब-तक स्वतंत्र थे, जब तक कि रेहान उस दस्तावेज को रद्द नहीं कर देते। रेहान को अचानक अपने हॉस्पिटल की जिम्मेदारी किसी और को सौंपने की क्या जरूरत पड़ गयी? इस सवाल के जवाब के लिए आहूजा ने रेहान से हर माध्यम के जरिये सम्पर्क करने की कोशिश की थी, किन्तु विफल रहे थे। जो कुछ हो रहा

था उसे शैल तर्कों की कसौटी पर कसने की कोशिश कर रहा था,किन्तु कई सवाल ऐसे थे, जिनके आगे उसके सारे तर्क धराशायी हो जा रहे थे।

'यदि भयानक एक्सीडेंट के कारण आयी सीरियस हेड इंजरी के बावजूद मेरे चमत्कारिक ढंग से बच जाने की घटना एक संयोग मात्र है तो फिर मैं अपनी यादों के कुछ हिस्सों से तटस्थ क्यों हो गया हूँ? अनजान घटनायें मेरी स्मृति का हिस्सा क्यों बन गयी हैं? यदि परिस्थितियां सामान्य हैं तो एक रहस्यमयी सपना मुझे क्या बताना चाहता है? रेहान अचानक कहां गुम हो गये?'

फिलहाल शैल के पास उपर्युक्त सवालों के जवाब पाने का कोई जरिया नहीं था। दोस्तों के साथ बिताए हुये फुर्सत के क्षणों की तस्वीरें देखने के बाद उसने इस बात पर गौर जरूर किया था कि कॉलेज टूर की लगभग हर तस्वीर में एक लड़का उसके बेहद करीब खड़ा था।

'तो क्या यही विजय है?'

इस सवाल का जवाब उसे 'हाँ' में मिला, जब उसने घर में पड़े पुराने अख़बार में अपने कार एक्सीडेन्ट की ख़बर को पढ़ा। खबर के अंतर्गत जिस लड़के की फाइल फोटो छपी थी, वह कॉलेज टूर का वही लड़का था और उसे विजय नाम से ही संबोधित किया गया था। उसकी मौत बेहद दर्दनाक हुयी थी। समूचा जिस्म पीस गया था। शिनाख़्त के लिये कुछ अधिक नहीं बचा था, सिवाय कपड़े इत्यादि के। इतना कुछ खंगालने के बाद भी जब जीवन में आये

इस व्यतिक्रम को सुलझाने का कोई जरिया शैल के हाथ न लगा तो वह हताश हो उठा।

उस घड़ी वह ड्राइंग हाल में था, जब डोरबेल का स्वर उसके कानों में पड़ा। उसने दरवाजा खोला। सामने पोस्टमैन था।

"क्या आपका ही नाम शैल आहूजा है?"

"जी हाँ!"

"आपके नाम ये खत है।" पोस्टमैन ने थैले से एक लिफाफा निकालकर
उसकी ओर बढ़ा दिया। उसने लिफाफा थामा। खत साधारण डाक से भेजा गया था, जिस पर भेजने वाले का पता नहीं अंकित था। लिफ़ाफ़े के फ्रंट पर गंतव्य के पते के ठीक ऊपर अंग्रेजी के कैपिटल लेटर में 'कांफिडेंशियल' लिखा हुआ था, जो ये इंगित कर रहा था कि खत गोपनीय था। पोस्टमैन को विदा करके ड्राइंग हाल में आने के बाद उसने खत बाहर निकाला और एक ही साँस में पढ़ता चला गया।

हैलो शैल,

जिस वक्त मेरा लिखा ये खत तुम्हारे हाथ में होगा उस वक्त तुम्हारी जिन्दगी एक चमत्कार से रूबरू हो चुकी होगी। ब्रेनडेथ के बाद भी तुम्हारे ब्रेन फंक्शन्स के रिस्टार्ट हो जाने की घटना मेडिकल साइन्स में हुये अब तक के अजूबों की सूची में शीर्ष पर काबिज हो चुकी होगी। कुछ नई और धुंधली यादों के साथ तुम्हारा संघर्ष उग्र हो उठा होगा, क्योंकि तुम्हारे ट्रीटमेंट की जिम्मेदारी उठाने वाला

डॉक्टर तुम्हें छोड़कर जा चुका होगा। मैं कौन हूँ? तुम्हें ये खत क्यों लिख रहा हूँ? तुम्हारी जिन्दगी के बारे में मुझे कैसे मालूम? ये सारे सवाल तुम्हारे जेहन में शंखनाद कर रहे होंगे, किन्तु तुम लाख सर खपाने के बावजूद भी ये नहीं महसूस कर पाओगे कि जिन सवालों के जवाब तुम अपने शहर में तलाश रहे हो, वे लगभग इक्कीस सालों से मेरी मुट्ठी में बंद हैं। इक्कीस साल पहले लिखी गयी पटकथा को एक नृशंस हत्या के बाद अधूरा छोड़ दिया गया था। जब तक तुम उस अधूरे पटकथा के पूरे होने की अहम वजह नहीं बनोगे, तब-तक वे धुंधली यादें साये की तरह तुम्हारा पीछा करती रहेंगी। तुम्हें ये जानकर हैरानी होगी कि तुम एक दोहरी जिन्दगी जी रहे हो। तुम उस वजूद का एक अहम हिस्सा हो, जो आज भी तुम्हारे बगैर अधूरा है। कई ऐसे रहस्य हैं, जो तब से तुम्हारे जीवन का हिस्सा हैं, जब तुम इस दुनिया में भी नहीं आये थे। अगर तुम नहीं चाहते कि वे सारे रहस्य तुम्हारे जेहन की नसों को फाड़ कर बाहर आ जायें, 30 अक्टूबर 2015 की रात बारह बजने से पहले किसी भी कीमत पर नीचे दिए गये पते पर पहुचों।

संत थॉमस चर्च

दगशाई, सोलन

हिमाचल प्रदेश- 173210

तुम्हारा शुभचिन्तक

□□□

3 महीने बाद

30 अक्टूबर 2015, कुमारहट्टी रेलवे स्टेशन

रात के दस बजने वाले थे।

कालका से चलकर शिमला को जाने वाली ‘हिमालयन क्वीन’ के प्लेटफॉर्म पर ठहरते ही उस छोटे से स्टेशन की गर्दिश में इजाफा हो गया। केवल एक मिनट का हाल्ट होने के कारण यात्रियों में उतरने के लिये होड़ मच गयी। शैल भी उन्हीं में से एक था। हालांकि ट्रेन के यहाँ पहुँचने का समय दोपहर दो बजे का था, किन्तु ट्रैक पर एक दुर्घटना हो जाने के कारण यह अपने निर्धारित समय से आठ घंटे लेट थी।

प्लेटफार्म पर कदम रखते ही सर्द हवा के एक तेज झोंके ने हिमाचल की धरती पर शैल का स्वागत किया। उसने जल्दी से अपना सामान उठाया और वेटिंग रूम की ओर बढ़ गया।

रेलवे स्टेशन बहुत बड़े भूभाग में नहीं था। दगशाई के किसी बड़े पर्यटन स्थल न होने के कारण इस स्टेशन पर पर्यटकों का आवागमन भी बेहद कम होता था। शैल के साथ उतरने वाले यात्री लगभग दस मिनट के अन्दर ही अपने-अपने गंतव्य को रवाना हो गये। स्टेशन पर इक्का-दुक्का यात्रियों और रेलवे कर्मचारियों के अलावा कोई नहीं बचा। शैल के जिस्म पर ब्लेजर, पैरों में मजबूत जूते और हाथों में ग्लब्ज थे। उसने मफलर से कान भी ढक रखे थे, किन्तु ठण्ड से सुरक्षा के इतने कड़े इंतजाम के बाद भी

बर्फीले प्रदेश की उसकी पहली यात्रा कष्टदायक सिद्ध हो रही थी।

लम्बे-लम्बे डग भरता हुआ वह वेटिंग रूम में पहुँचा। स्टेशन परिसर की भांति वहां भी सन्नाटा था। बैग साइड में रखने के बाद वह एक बेंच पर आराम से फैलकर बैठ गया। बनारस से चंडीगढ़ तक की यात्रा उसने हवाई मार्ग से की थी, तत्पश्चात यहाँ तक का सफर उसने दो खण्डों में पूरा किया था। चंडीगढ़ से कालका और फिर कालका से कुमारहट्टी। दगशाई के लिये रवाना होने से पहले वह कुछ देर के लिये आराम करना चाहता था। उसने सेलफोन निकालकर गूगल मैप पर दगशाई को सर्च किया और पाया कि अब वह गंतव्य से केवल पांच किलोमीटर के फासले पर था।

कुछ समय बाद आहट पाकर उसकी तंद्रा भंग हुई। वह सफाई कर्मी था, जो
कोई लोकगीत गुनगुनाते हुये अपने काम में मशगूल हो गया था।

"सुनिये!" शैल ने उसे आवाज दी।

"जी कहिये।"

"दगशाई के लिये कोई वाहन मिल सकता है यहाँ से?"

"मुश्किल है।" सफाई कर्मी ने दो टूक लहजे में कहा।

शैल ने एक ठण्डी आह भरी। उसे दगशाई के विषय में अधिक जानकारी नहीं थी। हालाँकि उसने इस स्थान के बारे में इन्टरनेट पर मौजूद जानकारियों को खंगाला था, किन्तु उसे कुछ विशेष पढ़ने को नहीं मिला था, सिवाय उस

अंग्रेज अफसर की प्रेमकहानी के, जिसकी पत्नी पर उसके पूर्वजन्म के प्रेमी की आत्मा का साया था।

"कोई दूसरा ऑप्शन?"

"कोशिश कर के देख लो साहब। भाग्य ने आपका साथ दिया तो उस ओर जाने वाला कोई टैक्सी ड्राईवर अपने आख़िरी चक्कर के लिये आप जैसे ही किसी यात्री की तलाश में स्टेशन के बाहर अभी तक खड़ा होगा। यहाँ रात गुजारने से बेहतर होगा कि आप किसी तरह अपनी मंजिल की ओर रवाना हो जाओ, क्योंकि जैसे-जैसे रात बढ़ेगी, वैसे-वैसे ठण्ड बढ़ेगी। हीटर कब धोखा दे जायेगा पता नहीं।"

शैल अपना सामान समेट कर स्टेशन से बाहर आ गया।

□□□

सड़क पर आने के बाद शैल को महसूस हुआ कि दगशाई का लगभग पांच किलोमीटर लम्बा सफर इतना आसान नहीं था। स्ट्रीटलाइट की बीमार रोशनी में उसे वीरान सड़क पर दूर तक कोई वाहन नहीं नजर आया। अँधेरे में खड़े विशालकाय पर्वत काले दैत्याकार दानव सदृश नजर आ रहे थे। किसी अन्य विकल्प की तलाश में उसने इधर-उधर नजरें दौड़ायीं। लगभग सौ मीटर के फासले पर अलाव की रोशनी दिखायी पड़ी, जहां से बातचीत की आवाजें भी आ रही थीं।

शैल अलाव तक पहुँचा। वहां एक छोटी सी गुमटी थी, जिसके सामने अलाव को घेरकर छः-सात की संख्या में स्थानीय लोग बैठे हुये थे। गुमटी वाला दुकान बंद करने

की तैयारी कर रहा था। दहकते अंगारों से भरी भट्टी पर चाय की केतली रखा देख शैल ने अनुमान लगाया कि वह अपने मित्रों के लिये दिन की आख़िरी
चाय उबाल रहा था।

अपने बीच शैल के रुप में एक अजनबी को पाकर स्थानीय लोगों का छोटा सा समूह मौन हो गया। बातचीत का जो सिलसिला उन्होंने शुरु कर रखा था, वह थम गया।

"क्या चाय मिल सकती है?" शैल ने दुकानदार को लक्ष्य करके पूछा।

"कहा जाना है साहब?" एक ने पूछा।

सवाल सुनकर शैल को बुरा लगा किन्तु इसे स्वाभाविक समझकर उसने शालीन स्वर में उत्तर दिया- "सन्त थॉमस चर्च, दगशाई।"

"स...संत...थॉमस चर्च..?" शैल के गंतव्य का नाम सुनते ही सवाल पूछने वाले का चेहरा दहशत से पीला पड़ गया। हिम्मत करके उसने आगे पूछा- "किन्तु इतनी रात गये?"

"बैडलक के कारण रात हुई।" शैल ने चाय का छोटा कुल्हड़ थामते हुये कहा- "शुक्रिया जनाब!"

"जिस चर्च को आप जा रहे हैं, उसके बारे में कुछ जानते हैं?"

यद्यपि शैल उस चर्च के बारे में कुछ नहीं जानता था, किन्तु लोगों की हैरानी की वजह न बनने के उद्देश्य से उसने झूठ कहा– "ह..हाँ क्यों नहीं? वहाँ के पादरी से जान पहचान है मेरी। दगशाई घूमने आया हूँ, इसलिये मुझे

किसी होटल की अपेक्षा उस चर्च में ठहरना मुनासिब लग रहा है।”

“पादरी?” लोग बुरी तरह चौंके- “अरे साहब! वहाँ के पादरी की हत्या हुये तो इक्कीस साल होने को आये। अब कोई उस चर्च में इबादत के वास्ते भी नहीं जाता।”

“म..मतलब?” हालांकि शैल का झूठ पकड़ा गया था, किन्तु पादरी की हत्या के जिक्र ने उसे चौंकाया।

“मतलब ये साहब कि आपको गलत सूचना मिली है।”

“उस चर्च में कोई पादरी नहीं रहता। केवल एक लड़की रहती है, जो पैंतालीस बरस की होते हुये भी अभी तक अकेली है। उसके बारे में सुनने में आता है कि जब वह जवान थी, तो उसका किसी लड़के के साथ अफेयर था। बाप के मना करने पर उसने अपने परिवार को जलाकर मार डाला।”

“क्या?” शैल को मानो कोई शॉक लगा- “अपने परिवार को खुद ही जला डाला?”

“हाँ! किन्तु चर्च के पादरी जोसेफ को लगता था कि वह लड़की निर्दोष है, इसलिये उन्होंने उसे चर्च में पनाह दी। फिर एक रात चर्च के पीछे वाले कब्रिस्तान में किसी शैतान ने फादर की भी हत्या कर दी।”

“शैतान?” शैल को एक और शॉक लगा- “यू मीन की वह चर्च हॉन्टेड है?”

“अगर हॉन्टेड का मतलब प्रेतबाधित होता है तो हाँ, वह गिरिजाघर हॉन्टेड है।”

“ओह!”

शैल को हैरानी नहीं हुयी, क्योंकि उसने वेब सर्च के दौरान दगशाई में मौजूद हॉन्टेड इमारतों के विषय में लम्बे-लम्बे आर्टिकल्स पढ़े थे। उन आर्टिकल्स में एक पुराने कारागार और कब्रिस्तान पर लिखा आर्टिकल भी शामिल था। शैल भूतों के अस्तित्व पर विश्वास न करने वाले इंसानों में से एक था, इसलिये उसने उन आर्टिकल्स को मनगढ़ंत दलीलें समझकर खारिज कर दिया था।

"वह शैतान कोई और नहीं बल्कि लड़की के उसी आशिक का भूत था, जिसका सरकटा शव उस रात की सुबह घाटी में पाया गया था, जिस रात वह लड़की के साथ उसी चर्च में शादी करने वाला था"

"किसी हॉरर फिल्म की कहानी सुनाने के लिये शुक्रिया सर।" शैल ने चाय खत्म करके कुल्हड़ को डस्टबिन में फेंकते हुये कहा- "आप चाय के पैसे ले लिजिए।"

उसने चाय का दाम दुकानदार की ओर बढ़ाया और बैग संभालते हुये चलने को उद्यत हुआ।

"तो क्या आपको हम लोगों की बात झूठ लग रही है?"

"केवल झूठ ही नहीं बकवास भी लग रही है।"

शैल उनके प्रतिक्रिया की परवाह किये बगैर सड़क पर आ गया। दगशाई के लिये किसी साधन के मिलने उसकी उम्मीद पर पानी नहीं फिरा, क्योंकि ज्यों ही वह सड़क पर आया, उसकी नजर दूर खड़े कार पर पड़ी, जो संभवत: अभी-अभी वहां पहुँची थी।

शैल तेजी से कार के पास पहुँचा और ड्राइविंग डोर के शीशे को ठकठकाया।

"क्या आप ही सन्त थामस चर्च जाने के वास्ते यहाँ आये हैं साहब?"

आवाज सुनकर शैल तेजी से पलटा। वह एक आदमी था, जिसे सड़क के किनारे फैले गहरे अंधेरे से निकलता देख शैल जरूर चौंका होता, यदि उसने उसे
पतलून की जिप बंद करते हुये न देख लिया होता तो।

"आपको कैसे पता चला कि मुझे सन्त थामस चर्च जाना है?"

"दरअसल मैं यहाँ एक मुसाफिर को लेने करने आया हूँ साहब।" ड्राईवर हँसा– "आप पहनावे और हाव-भाव से इस इलाके में नये लग रहे हैं, इसलिये पूछ लिया।"

"ओह! बहरहाल तुम्हें भेजा किसने है?"

"चर्च में रहने वाली मरियम मैडम ने।"

"मरियम मैडम ने?" शैल के माथे पर बल पड़े- "क्या तुम्हारी मारियम मैडम मुझे जानती हैं।"

"ये मैं कैसे बता सकता हूँ साहब?" ड्राईवर ने खींसे निपोरी- "अगर आप मरियम मैडम को नहीं जानते तो फिर ये अब मरियम मैडम ही बता सकती हैं कि वे आपको कैसे जानती हैं।"

'तो क्या इसी मरियम ने मुझे पत्र लिखकर यहाँ बुलाया है? क्या इसी मरियम के बारे में अफवाह है कि इसने अपने परिवार को जला कर मार डाला था?' शैल के जेहन में कई सवालों ने तेजी से करवट लिया।

"क्या सोच रहे हैं साहब? अब देर ना करिये। जल्दी गाड़ी में बैठिये। लाइये; सामान मैं डिग्गी में रख देता हूँ।"

शैल ने बैग ड्राईवर को थमाया और कार की पिछला सीट का द्वार खोला।

वहां पहले से ही एक लड़की की मौजूदगी देख वह ठिठक कर ड्राईवर की ओर मुड़ा। ड्राईवर सामान डिग्गी में रखने में व्यस्त था। शैल ने जब दोबारा कार के अंदर देखा तो उसकी दुविधा दूर हो गयी। लड़की सीट के दूसरे सिरे पर खिसक चुकी थी।

वह अपने और उसके बीच पर्याप्त फासले का ध्यान रखते हुये बैठ गया। सीट पर बैठते ही एक अजीब सी ठण्ड से उसकी हड्डियां अकड़ गयीं। यूँ तो सर्द मौसम में ऐसा होना सामान्य था, किन्तु सर्दी के उस एहसास को सामान्य नहीं कहा जा सकता था। शैल को ऐसा महसूस हो रहा था, जैसे उसे भीषण बर्फबारी में निर्वस्त्र खड़ा कर दिया गया हो।

"कहाँ जाना है आपको?" बातचीत की पहल लड़की ने ही की।

"दगशाई! सन्त थामस चर्च।"

"घूमने आये हैं यहाँ?"

शैल को अचानक सूझा ही नहीं कि क्या जवाब दे।

"टेंशन मत लो साहब। दस मिनट लगेंगे पहुँचने में।" सामान रखने के कार्य से निवृत्त होने के पश्चात ड्राईवर ने सीट पर आसीन होते हुये कहा।

शैल का जेहन लड़की की ओर से पूछे गये सवाल का बनावटी जवाब ढूँढने में व्यस्त था, इसलिये उसने ड्राईवर

के कथन पर ध्यान नहीं दिया। थोड़ी ही देर में कार रात के अंधेरे को चीरते हुये आगे बढ़ रही थी।

“आपने मेरे सवाल का जवाब नहीं दिया।”

“ओह हाँ!” शैल मानो नींद से जागा- “वास्तव में मैं यहाँ किसी से मिलने आया हूँ।”

लड़की मुस्कुरा कर खिड़की से बाहर देखने लगी। शैल ने राहत की सांस ली, जब उसने ये नहीं पूछा कि वह किससे मिलने जा रहा है। लड़की के जिस्म पर सामान्य कपड़े थे, जो इस प्रदेश के मौसम के अनुकूल नहीं थे, फिर भी उसके चेहरे पर शिकन का ऐसा कोई भाव नहीं था, जो ये इंगित करता कि वह सर्द मौसम से आहत है। इसके विपरीत उसने अपनी ओर की खिड़की का शीशा नीचे कर रखा था।

“आपको कहाँ जाना है?”

“दगशाई मेंटल एसाइलम के पीछे। वहीं पर मेरा घर है। आप मुझे तान्या नाम से बुला सकते हैं।”

शैल खामोश हो गया। उसे इस बात का बोध नहीं था कि स्टीयरिंग पर मौजूद ड्राईवर की उंगलियाँ काँप रही थीं। वह बार-बार रियर-व्यू मिरर की ओर देख रहा था।

“आप उस चर्च में किससे मिलने जा रहे हैं?” तान्या ने अर्थपूर्ण नज़रों से शैल को घूरा।

शैल बौखला उठा। थोड़ी देर पहले ली गयी राहत की साँस निरर्थक थी।

"मैं भारत में मौजूद पुराने चर्चों पर एक रिपोर्ट तैयार कर रहा हूँ, उसी सिलसिले में मरियम से मिलने जा रहा हूँ।" उसने सतर्कता से झूठ बोला।

मरियम नाम सुनते ही तान्या के रुख में परिवर्तन हुआ। खिड़की से प्रविष्ट हुये हवा के थपेड़े से तान्या के बाल लहराकर चेहरे पर बिखर गये। ऐसी दशा में जब उसने शैल की ओर देखा तो बेहद भयानक नजर आयी।

"चर्चों पर रिपोर्ट?" उसके चेहरे पर सवालिया निशान उभरा- "आप करते क्या हैं, जो इस तरह के असाइनमेंट से आपका पाला पड़ा?"

"जर्नलिज्म में डिप्लोमा।"

"ओह! लेकिन आपने दगशाई के उसी चर्च को क्यों चुना? रिपोर्ट में दर्ज होने लायक उससे बेहतर चर्च तो शिमला का क्राइस्ट चर्च है। लोग उसे मेरठ के सेंट जॉन्स चर्च के बाद भारत का दूसरा सबसे पुराना चर्च बताते हैं।"

एक झूठ को छिपाने के लिये अनगिनत झूठ बोलने पड़ते हैं, इस किताबी सबक को शैल ने आज व्यावहारिक जीवन में महसूस किया।

"मेरा डेस्टिनेशन क्राइस्ट चर्च ही है। दगशाई के चर्च में जाने की वजह, उसके बारे में इन्टरनेट पर फ़ैली हुयी भ्रांतियां हैं।"

"समझ गयी।" तान्या रहस्यमय ढंग से मुस्कुरायी- "आप उनमें से एक है, जिन्हें परछाइयों के पीछे भागने का जानलेवा शौक होता है।"

तान्या के लहजे से शैल के जिस्म में झुरझुरी दौड़ गयी। न जाने क्यों उसे उसके ख़ूबसूरत चेहरे पर व्याप्त मुस्कान डरावनी लगी।

"एक दुकान पर स्थानीय लोगों ने मुझे उस चर्च के बारे में कुछ अजीब बातें बतायीं। उनका कहना था कि वहां के फादर की हत्या किसी शैतान के हाथों हुयी थी। क्या उस घटना के बारे में आप कुछ जानती हैं?"

"ज़्यादा कुछ नहीं। बस इतना कि किसी ने फादर को कब्र पर पटक दिया था और उस पर लगा क्रॉस उनके सीने में गहरायी तक धंस गया था। मरियम आज भी उस चर्च में किसी के आने का इंतजार कर रही है।"

"क्या आपको उन मनगढ़ंत बातों पर भी यकीन है, जिसे यहाँ के लोगों ने मरियम के बारे में फैला रखा है?"

"वे कोई मनगढ़ंत बातें नहीं, गुज़री हुई हकीकत हैं।" तान्या का लहजा सख्त हो उठा- "उस सैलाब की सच्ची दास्तान हैं, जो कई जिंदगियों को अपने साथ बहा ले गया था।"

"यानि कि आप भी ये मानती हैं कि मरियम ने अपने परिवार को जला कर मार डाला था?"

"इस सवाल का जवाब इक्कीस सालों से चर्च की चारदीवारी में एड़ियां रगड़ रही मरियम ही बेहतर ढंग से दे सकती है।"

अब-तक के संक्षिप्त वार्तालाप के दौरान जब-जब मरियम का नाम तान्या की जुबान पर आया था, तब-तब उसके हाव-भाव अजीब ढंग के हो गये थे। बहरहाल उन

दोनों के मध्य खामोशी छा गयी, जो ज़्यादा देर तक कायम न रह सकी।

"मेरा घर आ गया।" तान्या ने कहा।

कार अब किसी बस्ती में पहुँच चुकी थी।

"गाड़ी रोक दो ड्राईवर।"

शैल के आदेश का पालन हुआ। कार रुकने पर तान्या उतरी और शैल के देखते ही देखते अंधेरे में गुम हो गयी। उसके जाते ही कार में व्याप्त अजीब सर्दी भी गायब हो गयी, किन्तु शैल ने इसे नोटिस नहीं किया।

"क्या दगशाई आ गया ड्राईवर?"

"ज...जी हाँ साहब! हमारी मंजिल बस दो सौ मीटर दूर है।" ड्राईवर के लहजे में कंपकपी थी।

"तुम ठीक तो हो?"

"ज..जी! जी मैं बिल्कुल ठीक हूँ।" वह हकलाया।

शैल ने गौर किया कि ड्राईवर की हालत खस्ता थी। सर्द आलम में भी वह पसीने से तर था। थोड़ी देर बाद उसने कार रोक दी।

"हम पहुंच गये साहब।"

शैल कार से बाहर आया।

कार चर्च के ठीक सामने रुकी थी। सड़क से सौ मीटर के फासले पर अँधेरे में खड़े चर्च की आकृति पंख फैलाये हुये किसी विशाल चमगादड़ जैसी नजर आ रही थी। चर्च के परिवेश में फ़ैली खामोशी में मनहूसियत घुली हुयी थी। मुख्यद्वार पर लालटेन की रोशनी नजर आ रही थी।

ड्राईवर सामान उठाकर चर्च की ओर बढ़ चला। शैल ने भी उसका अनुसरण किया। मुख्यद्वार पर पहुँचने के बाद उसे पता चला कि जो लालटेन उसने दूर से देखा था उसे एक महिला लेकर खड़ी थी।

"इनका सामान अन्दर ले जाओ गोपाल।" ड्राईवर को आदेश देने के बाद महिला शैल की ओर मुखातिब हुई- "उम्मीद है कि तुम्हें स्टेशन पर ज़्यादा देर तक नहीं रुकना पड़ा होगा।"

"जी नहीं! बस चाय पीने तक रुकना पड़ा था।"

लालटेन की रोशनी में शैल को महिला की उम्र चालीस से अधिक लगी, किन्तु चेहरे पर ऐसे कोई लक्षण नहीं नजर आये, जो उसकी वास्तविक उम्र को

बयां करने का साहस रखते। उसकी गर्दन पर किसी पुराने ज़ख़्म का निशान था।

"माफ़ कीजियेगा, लेकिन क्या आप मुझे जानती हैं?" शैल की उत्कंठा चरम पर थी। वह जिन विचित्र परिस्थितियों में यहाँ आया था, उन परिस्थितियों में उसे किसी औपचारिकता का ख्याल नहीं रहा।

"घबराओ मत! वक्त तुम्हें तुम्हारे सभी सवालों के जवाब देगा।" मरियम ने शैल को अन्दर आने का रास्ता दिया।

चर्च के प्रार्थना हाल में अनगिनत मोमबत्तियों का प्रकाश फैला हुआ था। प्रवेश द्वार के ठीक सामने यीशु की विशाल प्रतिमा स्थापित थी। प्रतिमा से लगभग दस मीटर की दूरी पर चर्च के अंदरूनी हिस्से में जाने के लिये दरवाजा

था। प्रार्थना हाल में पर्याप्त से भी अधिक बेंच थे, किन्तु ये बात जुदा थी कि बीस सालों से इस चर्च में कोई कैरल नहीं गाया था या फिर गाया भी गया था तो बहुत कम।

"क्या यहाँ इलेक्ट्रिसिटी का प्रबंध नहीं है?"

"है, लेकिन यहाँ लाइट का आना-जाना लगा रहता है।"

"ओह!"

"शायद तुम फ्रेश होना चाहते होगे?"

"श्योर!"

"मेरे साथ आओ।"

मरियम, शैल को लेकर पिछले हिस्से में जाने वाले दरवाजे की ओर बढ़ गयी।

□□□

"मैडम!" गोपाल ने खौफजदा स्वर में पुकारा।

मरियम पलटी।

"तुम इतने डरे क्यों हो?" गोपाल की अजीब हालत देख वह हैरान हुई।

"व...वह लड़का कहाँ है?"

"बाथरूम में है। तुम्हें कुछ कहना है उसके बारे में?"

"व...व..वह मैडम...।" गोपाल मरियम के बेहद करीब आ गया, मानो राज़ की बात बताने वाला हो - "वह लड़का मुझे अजीब लग रहा है।"

"साफ-साफ बोलो कि हुआ क्या है?"

"मैडम, यहाँ आते वक्त कार में उस लड़के के अलावा कोई नहीं था, फिर भी रास्ते भर वह न जाने किसके साथ बातें कर रहा था। उसने मेंटल एसाइलम के

पास कार भी रुकवाई थी।"

"मेरे मना करने के बाद भी आज तुमने फिर शराब पी रखी है न?" मरियम ने उसे जलती निगाहों से घूरा।

"गॉड प्रॉमिस मैडम। मैंने हफ्ते भर से शराब नहीं पी है। मैं जो कुछ बता रहा हूं, उसे मैंने पूरे होशो-हवास में महसूस किया है और खुली आँखों से देखा है।"

मरियम ने गोपाल के चेहरे का मुआयना किया। वहां मौजूद भाव उसे सच्चे लगे। गोपाल ने आगे कहा- "उस लड़के ने मेंटल एसाइलम के पास गाड़ी रुकवायी थी। कार रुकने के बाद मैंने पिछले डोर को अपने आप खुलते और बंद होते देखा। वह जो कोई भी था, एसाइलम के पास उतरा था। गाड़ी में मैंने एक और बात नोट की थी।"

"क्या?"

"उस लड़के के स्टेशन से बैठते ही मुझे अजीब सी सर्दी महसूस होने लगी थी। वह सर्दी मेंटल एसाइलम से ख़त्म हो गयी थी।"

मरियम ने गोपाल की बातें गौर से सुनी।

"उनके बीच क्या बातचीत हुई?"

"कुछ ख़ास नहीं। वह जो कोई भी था, लड़का उससे चर्च के बारे में पूछ रहा था। इस लड़के को शायद रास्ते में ही इस बात की भनक लग चुकी है कि इक्कीस साल पहले दगशाई में क्या हुआ था। और..."

"उस गायबचंद ने....।" मरियम ने गोपाल की बात काटते हुये कहा - "शैल को इस बारे में क्या बताया?"

"नहीं बता सकता मैडम। न तो मैं उसे देख पा रहा था, और न ही उसकी बातें सुन पा रहा था।"

"ठीक है! जाओ!"

गोपाल के जाने के बाद मरियम की निगाह वॉल-क्लॉक पर गयी। ग्यारह बजने में दस मिनट शेष थे।

□□□

खौफनाक रात ने समूचे दगशाई को स्याह चादर में छुपा लिया था। भीषण सर्दी के खौफ से आवारा पशु भी सड़कों पर नहीं नजर आ रहे थे। वातावरण में फैला सन्नाटा इस आशंका को प्रबल बना रहा था कि आज रात कुछ होने वाला था। शायद किसी की जान जाने वाली थी, या इससे भी मनहूस घटना घटने वाली
थी।

'दगशाई मेंटल एसाइलम' के तेरहवें सेल में बन्द आदमी आँखें खोलते ही बुरी तरह चौंका। जिस परिवेश में वह था, उस पर सहसा यकीन नहीं कर पाया। सेल में व्याप्त मध्यम रोशनी में माहौल का मुआयना करने के बाद जब वह वास्तविकता के प्रति आश्वस्त हो गया तो गला फाड़कर चीख पड़ा।

"मैं कहाँ हूँ?"

उसकी चीख का कोई विशेष प्रभाव नहीं दिखा सिवाय इसके कि वह एसाइलम की दीवारों को भेदती हुयी घाटी में गूंज उठी। बौखलाये हुये आदमी ने अपनी जगह से उठने का प्रयास किया किन्तु विफल रहा, क्योंकि उसके पैरों में मौजूद बेड़ियाँ दीवार से जुड़ी हुई थीं।

"आह!" कंधे में भयानक पीड़ा का बोध होते ही वह कराह उठा।

अपने कंधे पर बंधी पट्टी से खून रिसता देख, कुछ घंटे पहले घटी घटनायें आदमी के स्मृतिपटल पर चलचित्र की भाँति घूम गयीं। उसने पुन: उठने का प्रयास किया, परन्तु नतीजा पहले जैसा ही रहा।

"मैं यहाँ कैसे पहुँचा?" उसने सवाल दोहराया, किन्तु जवाब नहीं पाया।

अब उसे न केवल अपनी चीखों की प्रतिध्वनि, बल्कि तेज साँसों का स्वर भी डरावना लगने लगा था। उसकी चीखें सुन कर आस-पास के सेल में मौजूद पागल भी एक-एक करके चिल्लाना शुरू कर रहे थे। धीरे-धीरे फैल रहे शोर गुल से जब उसे एहसास हुआ कि वह मेंटल एसाइलम में है तो इस बार गिड़गिड़ा उठा।

"मैं पागल नहीं हूँ। मैं पागल नहीं हूँ। मुझे बाहर निकालो।"

पागलों की चीखों और पैर पटकने की ध्वनि से पूरा एसाइलम कांप उठा। चर्च के घण्टे के बारह बजने का ऐलान करते ही किसी भेड़िये के रोने की आवाज से वातावरण भी थर्रा उठा। एकाएक सारे पागल शान्त हो गये और आकस्मात व्याप्त हो उठी निस्तब्धता में किसी की पदचाप गूँजी।

'शायद चीख-पुकार सुनकर कोई आ रहा है।' मन में यही संभावना लिये हुये उस आदमी ने खामोशी अख्तियार कर ली और सेल के खुलने का इंतज़ार करने लगा।

कॉरीडोर में गूंज रही पदचाप रहस्यमयी थी। यूँ लग रहा था जैसे कोई प्रत्येक सेल में झाँक-झाँककर किसी को तलाश रहा हो। उस वक्त आदमी का कलेजा उछलकर हलक में आ फंसा, जब उसने पदचाप को अपने सेल के सामने रुकते सुना।

"वुउउउउ!"

एसाइलम के बाहर भेड़िये की मनहूस आवाज फिर से गूंजी। ठीक इसी पल सेल का दरवाजा एक झटके से खुल गया।

□□□

शैल अपने लिये मुक़र्रर किये गये कमरे में पहुंचकर ठिठका। वहां घना अँधेरा था। स्विचबोर्ड ढूँढ़ने के लिये वह सेलफोन का फ़्लैशलाइट ऑन करने ही वाला था कि-

"हैप्पी बर्थ डे शैल!"

इस मधुर आवाज के साथ ही कमरा रौशन हो उठा। अचानक हुई रोशनी से शैल की आँखें चुंधिया गयीं। तीक्ष्ण रोशनी के प्रति अभ्यस्त होने के बाद शैल ने देखा कि कमरा विलक्षण ढंग से सजा हुआ था और ठीक मध्य में मौजूद सेन्टर टेबल पर खूबसूरत केक रखा हुआ था। केक पर जल रही इक्कीस अंक की रंगीन कैंडल देखने के बाद शैल को जो कुछ समझ में आया, उसने उसके पैरों के नीचे की जमीन खींच ली।

"जन्मदिन मुबारक हो शैल।" स्विचबोर्ड के पास खड़ी मरियम मुस्कुरायी।

“आपको..आपको कैसे पता कि आज मेरा जन्मदिन है?”

“तुम जन्मदिन की बात कर रहे हो?” मरियम ने यूं जवाब दिया मानो शैल ने कोई मूर्खतापूर्ण सवाल पूछ लिया हो- “मुझे तो तुम्हरी पसंद-नापसंद के बारे में भी पता है।”

उसने शैल की ओर कदम बढ़ाया।

“क्या..क्या हम पहले भी मिल चुके हैं?”

मरियम ठहरकर गयी। शैल के मनोभावों को परखने लगी।

“मुझे कुछ नहीं समझ में आ रहा है कि ये सब क्या हो रहा है?” शैल ने व्यथित लहजे में कहा- “मेरे शहर से सैकड़ों मील दूर एक वीरान चर्च में रहने वाली कोई महिला मेरे जन्मदिन से कैसे वाकिफ हो सकती है? मेरी पसंद-नापसंद को जानने का दावा कैसे कर सकती है?”

“क्योंकि तुमने उस महिला से एक वादा किया था, लौट कर आने का वादा।”

‘कहीं ये महिला मुझे क्षितिज क्षितिज का पुनर्जन्म तो नहीं समझ रही है?’

शैल के मन में उपर्युक्त संभावना सर उठाने लगी। प्रत्यक्ष में उसने कहा- “ये कैसा स्टुपिड इमोशन है? क्या आपको हमारी उम्र में एक बड़ा अंतर नहीं दिखायी दे रहा है?”

“दिखायी दे रहा है, लेकिन क्या उम्र के इस बड़े अंतर में प्रेम के उस बंधन को तोड़ पाने की क्षमता है, जिसमें हमने एक दूसरे को इक्कीस साल पहले बांधा था?”

"इक्कीस साल तो मेरी उम्र है। कोई पैदा होते ही किसी के साथ प्रेम-बंधन में कैसे बंध सकता है?"

"बंध सकता है। जब प्रेम के उस बंधन का एक सिरा पिछले जन्म से जुड़ा हो तो बंध सकता है।"

"ओह!" शैल के मन में थोड़ी देर पहले पनपी संभावना यथार्थ में परिणित हो गयी-"मैं आपकी भावनाओं की कद्र करता हूँ, लेकिन मैं पुनर्जन्म जैसे सिद्धांत को नहीं मानता।"

"मान्यताओं को नकाराने या स्वीकारने, तर्क या सवाल करने के लिये तुम्हारे पास बहुत वक्त है। ये दिन सिर्फ तुम्हारी जिन्दगी का ही नहीं, मेरी ज़िन्दगी का भी सबसे अहम दिन है। तुम कल्पना भी नहीं कर सकते कि कितनी शिद्दत के साथ मैंने तुम्हारे इस इक्कीसवें जन्मदिन का इंतज़ार किया है।"

शैल के मस्तिष्क में उफान मारता सवालों का भयानक सैलाब उस वक्त थम सा गया, जब उसने कमरे की तेज रोशनी में पहली दफा मरियम के वजूद को मुकम्मल तौर पर तवज़्जो दी। उम्र की सीमाओं से परे उसके अनछुए नैसर्गिक सौन्दर्य के आगे शैल की निगाहें सम्मान की भावना से अभिभूत होकर खुद-ब-खुद झुकती चली गयीं।

"जिन्दगी के जिस दौर से हम दोनों गुजर रहे हैं, वह आज भी उतना ही असामान्य है जितना कि तब था, जब इक्कीस साल पहले की एक तूफानी रात ने तुम्हें मुझसे छीन लिया था। मुझे बेघर कर दिया था और इस चर्च में सर छुपाने को मजबूर कर दिया था। आज की रात अगर हम उस भयानक त्रासदी से पनपे सवालों को तवज़्जो देंगे तो उन

पलों से वंचित रह जायेंगे, जिसके लिये हमने इक्कीस साल इंतज़ार किया है।”

मरियम ने भावुक लहजे में कहा। शायद उस कुंवारी औरत के अन्दर छिपी कुछ पुरानी भावनायें बाहर आ गयीं थीं।

“हमने नहीं। सिर्फ आपने। मैंने किसी लम्हें का इंतज़ार नहीं किया था। आप इक्कीस साल पहले घटी जिन घटनाओं का हवाला दे रही हैं, उन घटनाओं के वक्त तो शायद मेरा जन्म भी नहीं हुआ रहा होगा। चूंकि मैं रिइनकारनेशन में यकीन नहीं करता, इसलिये मैं आपके इस दावे को कभी सही नहीं मान सकता कि इक्कीस साल पहले आपने जिसे खोया था वह मैं ही था।”

“अगर ऐसा है तो फिर वह कौन सी वजह है, जो तुम्हें ठीक उस वक्त यहाँ खींच लाई, जिस वक्त मुझे पता था कि तुम आओगे।”

“मेरे यहाँ आने की वजह आपका भेजा हुआ वह ख़त है, जिसमें आपने दावा किया था कि यदि मैं यहाँ आऊँगा तो अपने स्मृति के व्यतिक्रम को सुलझाने में सफल हो जाऊंगा।”

“मैंने..मैंने तो तुम्हें कोई खत नहीं भेजा था।” मरियम चौंकीं।

“तो फिर...तो फिर किसने भेजा था वह ख़त?” शैल के हैरत की सीमा नहीं रही- “किसने भेजा था वह ख़त, जिसमें ये दावा किया गया था कि मैं किसी के वजूद का हिस्सा हूँ और किसी अधूरी पटकथा के पूरे होने की वजह बनूंगा?”

"मैं नहीं जानती। तुम इसी तारीख को यहाँ आओगे, ये मुझे पता था, लेकिन ऐसी परिस्थितियों में आओगे, ये नहीं पता था मुझे।"

कुछ देर पहले मरियम के जिस चेहरे को देखकर शैल के भीतर सम्मान की भावना जागृत हुई थी, वही चेहरा अब उसे रहस्यमयी लगने लगा।

'अगर खत भेजने वाली ये औरत नहीं है, तो फिर कौन है?'

शैल उपर्युक्त सवाल पर विचार कर ही रहा था कि बाहर एक हृदयविदारक चीख गूंजी।

"आह।"

मरियम और शैल एक साथ चौंके।

"आ...आपने इस चीख को सुना?" शैल का बदहवास लहजा।

"हाँ!" मरियम ने सपाट लहजे में कहा- "शायद मेंटल एसाइलम से आई है।"

"इतनी रात गये मेंटल एसाइल्म में क्या हुआ होगा?"

"सुबह होने पर पता चलेगा।"

चीख के प्रति मरियम का लापरवाह अंदाज शैल को असामान्य लगा।

"क्या सोचने लगे शैल? मेंटल एसाइलम से ऐसी चीखों का आना आम बात है। किसी पागल को नियंत्रित करने की कोशिश की जा रही होगी। लेट्स सेलिब्रेट!"

शैल के मन-मस्तिष्क में गूंजते अनगिनत सवाल भी उसे मरियम का अनुरोध

स्वीकार करने से न रोक सके। उसने आगे बढ़कर एक ही फूंक में मोमबत्ती बुझा दी।

ठीक उसी पल!

"आह।"

चीख एक बार फिर गूंजी।

□□□

नामः अमर कुलकर्णी।

पदः एस.एच.ओ., दगशाई पुलिस स्टेशन।

कदः पाँच फिट दस इंच।

उम्रः 32 साल।

काया की रंगतः दूध जैसी उजली।

ब्लैक गॉगल उसके रौबदार चेहरे को आकर्षक बनाता था।

पुलिस जीप के मेंटल एसाइलम के सामने रुकते ही रात में हुई हत्या को लेकर गुफ्तगू कर रहे स्थानीय लोगों के समूह में सनसनी फैल गयी। भीड़ ने किनारे होकर पुलिस को अन्दर जाने का रास्ता दिया।

एसाइलम में लोगों की आवाजाही पहले ही बन्द की जा चुकी थी। फोटोग्राफर्स और फिंगरप्रिंट एक्सपर्ट्स अपना काम शुरू कर चुके थे। पागलों के सेल में मजबूती से ताला लगा दिया गया था। तेरहवें सेल को रात से ही सब इंसपेक्टर तारकनाथ की देख-रेख में रखा गया था।

"हत्या किस सेल में हुयी है?" अन्दर पहुँचते ही अमर ने तारकनाथ को लक्ष्य करके पूछा।

"आइये सर!"

तारकनाथ, उसे तेरहवें सेल की दिशा में ले गया।

लाश की दशा खौफनाक थी। हत्प्राण के गले में सरिया से सुराख किया गया था। चेहरा इतनी बेदर्दी से कुचला गया था कि पहचान करना मुश्किल था। जिस्म के बाकी हिस्सों के साथ भी कातिल वहशियाना ढंग से पेश आया था।

“मरने वाले का नाम?”

“प्रोफ़ेसर रामानुजन शास्त्री। सेन्ट जोसेफ यूनिवर्सिटी में फिजिक्स के प्रोफ़ेसर थे, किन्तु रिटायर होने से पहले ही किसी अनजान कारण से मानसिक सन्तुलन खो बैठे थे और इक्कीस सालों से यहाँ थे।” तारकनाथ के बगल में खड़े एसाइलम
के इंचार्ज मि. जोशी ने कहा।

“मेडिकल साइन्स इतनी तरक्की कर चुका है, इसके बावजूद प्रोफ़ेसर शास्त्री का पागलपन इक्कीस सालों में भी ठीक नहीं किया जा सका?”

जोशी कुछ नहीं बोला।

अमर लाश के समीप पहुँचा और पंजों के बल बैठकर उसका मुआयना करने लगा। लाश में कोई विशेष बात नोट करते ही उसने एक नजर जोशी पर डाली।

“क्या मरने वाले का नाम प्रोफ़ेसर रामानुजन शास्त्री ही था मि. जोशी?”

“ज..जी बिल्कुल।” अमर के सवाल पर जोशी हकला उठा- “इस फाइल में थर्टीन्थ सेल के पेशेंट की पूरी डिटेल है।”

उसने एक फाइल अमर की ओर बढ़ाया।

अमर ने फाइल थामा और तारकनाथ को संबोधित करते हुये कहा- "इनके स्टेटमेंट्स नोट कर लो।"

वह एक बार फिर से लाश की ओर मुखातिब हुआ। विभिन्न कोणों से लाश का मुआयना करने के बाद उसके जेहन में अनगिनत सन्देह घर कर गये।

उसने एक फोटोग्राफर को ऐसे कोण से फोटो लेने का आदेश दिया कि लाश के दाहिने हाथ की कलाई स्पष्ट नजर आये। इसके अलावा भी उसने लाश के विभिन्न कोणों से कई फोटो क्लिक करवाये।

"सीसीटीवी से क्या इनफार्मेशन निकला?" अमर, तारकनाथ की ओर पलटा।

"हत्यारा फुटेज में नजर आ रहा है सर। उसी फुटेज की बिनाह पर हमने उसे अरेस्ट कर लिया है। हत्यारा इसी एसाइलम का चौकीदार रहमत अली है, जिसकी ड्यूटी पिछले हिस्से में रहती है। फिर भी...।"

"फिर भी क्या?"

"सिचुएशन में काफी झोल नज़र आ रहा है सर।"

"पहला झोल तो मेरी आँखों के सामने ही है।" अमर ने एक बार फिर लाश की दाहिनी कलाई पर दृष्टिपात किया और गहरी सांस लेकर आगे कहा- "औपचारिकतायें पूरी करने के बाद लाश को पोस्टमॉर्टम के लिये रेफर कर दो। कल रात ड्यूटी पर मौजूद सारे स्टाफ मेम्बर्स के स्टेटमेंट्स ले लो। रहमत के अलावा सिक्योरिटी पर तैनात लोगों को

उसने एक फाइल अमर की ओर बढ़ाया।

अमर ने फाइल थामा और तारकनाथ को संबोधित करते हुये कहा- “इनके स्टेटमेंट्स नोट कर लो।”

वह एक बार फिर से लाश की ओर मुखातिब हुआ। विभिन्न कोणों से लाश का मुआयना करने के बाद उसके जेहन में अनगिनत सन्देह घर कर गये।

उसने एक फोटोग्राफर को ऐसे कोण से फोटो लेने का आदेश दिया कि लाश के दाहिने हाथ की कलाई स्पष्ट नजर आये। इसके अलावा भी उसने लाश के विभिन्न कोणों से कई फोटो क्लिक करवाये।

“सीसीटीवी से क्या इनफार्मेशन निकला?” अमर, तारकनाथ की ओर पलटा।

“हत्यारा फुटेज में नजर आ रहा है सर। उसी फुटेज की बिनाह पर हमने उसे अरेस्ट कर लिया है। हत्यारा इसी एसाइलम का चौकीदार रहमत अली है, जिसकी ड्यूटी पिछले हिस्से में रहती है। फिर भी...।”

“फिर भी क्या?”

“सिचुएशन में काफी झोल नज़र आ रहा है सर।”

“पहला झोल तो मेरी आँखों के सामने ही है।” अमर ने एक बार फिर लाश की दाहिनी कलाई पर दृष्टिपात किया और गहरी सांस लेकर आगे कहा- “औपचारिकतायें पूरी करने के बाद लाश को पोस्टमॉर्टम के लिये रेफर कर दो। कल रात ड्यूटी पर मौजूद सारे स्टाफ मेम्बर्स के स्टेटमेंट्स ले लो। रहमत के अलावा सिक्योरिटी पर तैनात लोगों को

स्वीकार करने से न रोक सके। उसने आगे बढ़कर एक ही फूंक में मोमबत्ती बुझा दी।

ठीक उसी पल!

“आह।”

चीख एक बार फिर गूंजी।

□□□

नाम: अमर कुलकर्णी।

पद: एस.एच.ओ., दगशाई पुलिस स्टेशन।

कद: पाँच फिट दस इंच।

उम्र: 32 साल।

काया की रंगत: दूध जैसी उजली।

ब्लैक गॉगल उसके रौबदार चेहरे को आकर्षक बनाता था।

पुलिस जीप के मेंटल एसाइलम के सामने रुकते ही रात में हुई हत्या को लेकर गुफ्तगू कर रहे स्थानीय लोगों के समूह में सनसनी फैल गयी। भीड़ ने किनारे होकर पुलिस को अन्दर जाने का रास्ता दिया।

एसाइलम में लोगों की आवाजाही पहले ही बन्द की जा चुकी थी। फोटोग्राफर्स और फिंगरप्रिंट एक्सपर्ट्स अपना काम शुरू कर चुके थे। पागलों के सेल में मजबूती से ताला लगा दिया गया था। तेरहवें सेल को रात से ही सब इंसपेक्टर तारकनाथ की देख-रेख में रखा गया था।

“हत्या किस सेल में हुयी है?” अन्दर पहुँचते ही अमर ने तारकनाथ को लक्ष्य करके पूछा।

“आइये सर!”

तारकनाथ, उसे तेरहवें सेल की दिशा में ले गया।

लाश की दशा खौफनाक थी। हत्प्राण के गले में सरिया से सुराख किया गया था। चेहरा इतनी बेदर्दी से कुचला गया था कि पहचान करना मुश्किल था। जिस्म के बाकी हिस्सों के साथ भी कातिल वहशियाना ढंग से पेश आया था।

“मरने वाले का नाम?”

“प्रोफ़ेसर रामानुजन शास्त्री। सेन्ट जोसेफ यूनिवर्सिटी में फिजिक्स के प्रोफ़ेसर थे, किन्तु रिटायर होने से पहले ही किसी अनजान कारण से मानसिक सन्तुलन खो बैठे थे और इक्कीस सालों से यहाँ थे।” तारकनाथ के बगल में खड़े एसाइलम
के इंचार्ज मि. जोशी ने कहा।

“मेडिकल साइन्स इतनी तरक्की कर चुका है, इसके बावजूद प्रोफ़ेसर शास्त्री का पागलपन इक्कीस सालों में भी ठीक नहीं किया जा सका?”

जोशी कुछ नहीं बोला।

अमर लाश के समीप पहुँचा और पंजों के बल बैठकर उसका मुआयना करने लगा। लाश में कोई विशेष बात नोट करते ही उसने एक नजर जोशी पर डाली।

“क्या मरने वाले का नाम प्रोफ़ेसर रामानुजन शास्त्री ही था मि. जोशी?”

“ज..जी बिल्कुल।” अमर के सवाल पर जोशी हकला उठा- “इस फाइल में थर्टीन्थ सेल के पेशेंट की पूरी डिटेल है।”

उसने एक फाइल अमर की ओर बढ़ाया।

अमर ने फाइल थामा और तारकनाथ को संबोधित करते हुये कहा- "इनके स्टेटमेंट्स नोट कर लो।"

वह एक बार फिर से लाश की ओर मुखातिब हुआ। विभिन्न कोणों से लाश का मुआयना करने के बाद उसके जेहन में अनगिनत सन्देह घर कर गये।

उसने एक फोटोग्राफर को ऐसे कोण से फोटो लेने का आदेश दिया कि लाश के दाहिने हाथ की कलाई स्पष्ट नजर आये। इसके अलावा भी उसने लाश के विभिन्न कोणों से कई फोटो क्लिक करवाये।

"सीसीटीवी से क्या इनफार्मेशन निकला?" अमर, तारकनाथ की ओर पलटा।

"हत्यारा फुटेज में नजर आ रहा है सर। उसी फुटेज की बिनाह पर हमने उसे अरेस्ट कर लिया है। हत्यारा इसी एसाइलम का चौकीदार रहमत अली है, जिसकी ड्यूटी पिछले हिस्से में रहती है। फिर भी...।"

"फिर भी क्या?"

"सिचुएशन में काफी झोल नज़र आ रहा है सर।"

"पहला झोल तो मेरी आँखों के सामने ही है।" अमर ने एक बार फिर लाश की दाहिनी कलाई पर दृष्टिपात किया और गहरी सांस लेकर आगे कहा- "औपचारिकतायें पूरी करने के बाद लाश को पोस्टमॉर्टम के लिये रेफर कर दो। कल रात ड्यूटी पर मौजूद सारे स्टाफ मेम्बर्स के स्टेटमेंट्स ले लो। रहमत के अलावा सिक्योरिटी पर तैनात लोगों को

भी हिरासत में ले लो और एसाइलम के सारे सीसीटीवी फुटेज को जब्त कर लो।"

तारकनाथ को आदेश देने के बाद अमर, जोशी की ओर पलटा।

"आपको पुलिस स्टेशन चलना होगा। कुछ जरूरी बात करनी है आपसे।"

जोशी की प्रतिक्रिया जाने बगैर वह एसाइलम से बाहर आ गया।

□□□

नाश्ते के टेबल पर उपस्थित शैल के लिये आज की सुबह बेहद खूबसूरत होती यदि उसे ये नहीं पता चला होता कि पिछली रात मेंटल एसाइलम में किसी की हत्या कर दी गयी। रात में जो चीखें उसने सुनी थी बेशक वे चीखें मरने वाले की ही थीं।

डायनिंग टेबल पर मौजूद चीजों को देख वह असमंजस में था कि वह नाश्ते पर है या लंच पर। हालांकि नाश्ते में उसके पसंद की चीजें ज़्यादा थीं, किन्तु फिर भी उसे ये सब अजीब लग रहा था।

'किसी अनजान शख़्स के बुलावे पर यहाँ आकर उसने किस दर्जे की समझदारी का परिचय दिया है?' इस सवाल ने उसे परेशान कर रखा था। उसने कुछ भी नहीं लिया था, सिवाय ब्रेड की एक स्लाइस के।

"तुम नाश्ता क्यों नहीं कर रहे हो शैल?" मरियम ने, जो अपना नाश्ता लगभग ख़त्म करने के कगार पर थी, उसे ध्यानमग्न देखकर पूछा।

“आं..कुछ नहीं।” शैल की तन्द्रा भंग हुई– “मैं एसाइलम में हुई हत्या के बारे में सोच रहा था। रात में जो चीखें हमने सुनी थीं, वे जरूर एसाइलम से ही आयी थीं।”

“हो सकता है।” संक्षिप्त उत्तर देने के साथ ही मरियम ने फ्रुट्स की प्लेट शैल की ओर सरका दी- “तुम नाश्ता करो।”

“अगर हम चाहते तो...!”

“तो भी हम कुछ नहीं कर सकते थे।” शैल की बात काटकर उसने कहा- “फिजूल की बातें सोचना बंद करो। दुनिया में हर रोज न जाने कितनी हत्याएं होती हैं।”

मरियम का रहस्यमयी बर्ताव, चर्च के बारे में फैली हुई भ्रान्तियाँ और एसाइलम में हुई हत्या पर उसका रुख देखकर शैल को अब विश्वास होने लगा था कि इस चर्च में कुछ तो जरूर था जो उसकी जिन्दगी से जुड़ा था।

“आप कुछ जानती हैं उस हत्या के बारे में?” शैल ने नाश्ते पर ध्यान देते हुये
खुद को सामान्य दिखाने का प्रयास किया।

“नहीं।” मरियम ने भावहीन उत्तर दिया - “मैं कुछ नहीं जानती।”

“मरने वाला प्रोफ़ेसर रामानुजन शास्त्री नाम का कोई पागल था, जो कभी सेन्ट जोसेफ यूनिवर्सिटी में फिजिक्स का प्रोफ़ेसर हुआ करता था।”

हत्प्राण का परिचय पाकर मरियम ने रुख बदला।

“तुम्हें कैसे पता?”

"मार्निंग वॉक के समय एसाइलम के सामने लगी भीड़ से पूछने पर पता चला।"

"क्या सचमुच?"

शैल ने गौर किया कि मरियम के खूबसूरत चेहरे पर चिन्ता की गहरी लकीरें खींच गयी थीं। वह थोड़ी बेचैन नजर आने लगी थी।

"क्या आप प्रोफ़ेसर को जानती थीं?"

"हां! जब मैं सेन्ट जोसेफ यूनिवर्सिटी की स्टूडेंट थी, तब वे ठीक थे। उनकी रेगुलर क्लासेज हुआ करती थीं। वे हमेशा विज्ञान और आध्यात्म के एकीकरण के सपने देखते थे। यही कारण था, जो मैं आर्ट बैकग्राउंड की होते हुये भी उन्हें बहुत पसन्द करती थी।"

"लेकिन वे पागल कैसे हो गये थे?"

"पता नहीं! ये एक रहस्य है, जो आज तक कोई नहीं जान पाया।"

"कोई एक पागल की हत्या क्यों करेगा?"

मरियम ने कोई जवाब नहीं दिया। उसका चेहरा अब तनावग्रस्त हो उठा था।

"तुम्हें खत किसने भेजा था?"

"यहाँ आने से पहले मुझे लगा था कि इस चर्च में रहने वाले किसी शख़्स ने भेजा होगा, किन्तु जब कल रात मुझे ये पता चला कि वह खत आपने नहीं भेजा था तो मैं खुद भी कई सवालों में उलझ गया हूँ। मुझे खत भेजकर यहाँ आमंत्रित करने वाला कौन है? उसका मकसद क्या है? आपको कैसे पता कि मैं दगशाई आऊँगा?"

मरियम शैल को केवल घूरती रही, मानो उसके भावों को परखने की कोशिश कर रही हो।

“तुम्हारे साथ जो कुछ हुआ, क्या तुम मुझे उसके बारे में बता सकते हो?”

“जरूर; किन्तु उससे पहले आप मेरे एक सवाल का जवाब दीजिये।”

“कैसा सवाल?”

“यहाँ के लोगों ने चर्च के बारे में जो कहानी फैला रखी है, उसमें कितनी
सच्चाई है?”

“किस कहानी की बात कर रहे हो तुम?”

“दरअसल मैं एक चाय पीने तक स्टेशन पर रुका था। उसी दौरान वहां मौजूद लोगों ने मुझे बताया कि किसी शैतान ने इस चर्च के फादर की हत्या कर दी थी। उन्होंने मुझे आपसे ताल्लुक रखने वाली बातें भी बतायीं।”

मरियम भांप गयी कि स्थानीय लोगों ने शैल को उसके अतीत के बारे में बताया होगा।

“तुम शैतान जैसे शब्दों पर यकीन करते हो?”

“यकीन तो नहीं करता किन्तु ये मेरे जीवन का ऐसा दौर है कि जब कोई इस तरह की बातें करता है तो जेहन में कई संभावनायें पनपने लगती हैं।”

“लोग जो बताते हैं, वह सच है।” मरियम ने सपाट लहजे में कहा- “अब तुम मुझे बताओ कि तुम्हारे साथ क्या हुआ था?”

“मेरे करीबियों का कहना है कि मैं स्विफ्ट राइडिंग का शौकीन था, जिसके कारण मेरा एक दोस्त विजय बुरी मौत मारा गया। मैं बच तो गया, लेकिन मुझे इसकी कीमत चुकानी पड़ी। उस हादसे के बाद मेरी स्मृति में कुछ व्यतिक्रम आ गये हैं। लोगों का कहना है कि मैं बनारस का रहने वाला हूँ और मेरा एक्सीडेंट कॉलेज जाते वक्त हुआ था, जबकि मुझे लगता है कि मैं दगशाई का निवासी हूँ और मेरा एक्सीडेंट सोलन के किसी नर्सिंग होम से लौटते वक्त हुआ था।”

“तुम बच कैसे गये?”

“मेरा इलाज करने वाले डॉक्टर रेहान....।”

“डॉक्टर रेहान?” मरियम चौंक पड़ी और शैल थम गया।

“हाँ! लेकिन आप चौंकी क्यों?”

“आगे क्या हुआ?” मरियम ने व्यग्र लहजे में पूछा।

“डॉक्टर रेहान के अनुसार एक्सीडेंट में आयी हेड इंजरी के कारण मेरा ब्रेन डेड हो चुका था और मैं वैन्टीलेटर के जरिये अपने शरीर की कार्बन-डाई-आक्साइड को बाहर निकाल रहा था। फिर चमत्कार हुआ। मेरे बॉडी के वे सारे फंक्शन्स रिस्टार्ट हो गये, जिन्हें ब्रेन कंट्रोल करता है। यानि कि मेरा दिमाग फिर से जी उठा था। यह घटना हैरतअंगेज थी। डॉक्टर रेहान ने तो मेरे केस की डिटेल रिपोर्ट भी तैयार की थी, जिसे वह अंतरराष्ट्रीय सेमिनार में प्रस्तुत करने वाले थे, किन्तु...।”

“किन्तु क्या?”

"वे मेरा इलाज बीच में ही छोड़कर न जाने कहाँ लापता हो गये।"

"लेकिन क्यों?"

"बीमारी से उठने के बाद मुझे अजीब-अजीब से सपने आने लगे थे और उन सपनों में मैं किसी सरकटी लाश को घाटी में फेका जाता हुआ देखता था। और....और उन सपनों में मैं इसी चर्च को देखता था, जिसमें बैठकर आज नाश्ता कर रहा हूँ।"

"आगे क्या हुआ?" मरियम का लहजा पहले की अपेक्षा अधिक व्यग्र हो उठा।

"मुझे हमेशा ऐसा लगने लगा था कि मेरा नाम शैल नहीं है। मैं कोई और हूँ। कोई ऐसा इंसान जो अपना वास्तविक जीवन भूलकर 'शैल' नाम के छद्म आवरण में जी रहा हो। एक शाम मुझे वह नाम याद आ गया। मैंने जब सपनों और उस नाम के बारे में डॉक्टर रेहान को बताया तो वो भयभीत हो उठे और फिर उस शाम के बाद मुझसे कभी नहीं मिले। फिर मुझे एक खत मिला, जिसमें मुझे यहाँ आने के लिये कहा गया।"

"वह...वह नाम क्या था?" मरियम ने लगभग चीखते हुये पूछा।

"आप..आप को क्या होता जा रहा है? आप ठीक तो हैं?"

"वह नाम क्या था?" इस बार मरियम ने शैल को झकझोर डाला।

"क्ष...क्षि...क्षितिज।" शैल ने घबराकर एक झटके से कह दिया नाम सुनते ही मरियम शॉक्ड रह गयी।

"मैं जानती थी कि उसका वापस आने का वादा झूठा नहीं था। तुम्हीं हो...तुम्हीं हो वह जिसका मुझे इंतज़ार था। तुम्हारी ये अनुभूति सही थी कि तुम 'शैल' नाम के छद्म आवरण में जी रहे हो। तुम्हारा वास्तविक नाम तो क्षितिज है। क्षितिज सक्सेना।"

मरियम लम्बी-लम्बी सांसें लेने लगी। उसकी जुल्फें बिखरकर चेहरे पर फ़ैल गयी थीं।

"तुम...तुम कुछ बोलते क्यों नहीं?"

वह शैल को झकझोरते हुये फिर से चीखी।

शैल क्या जवाब देता? वह तो सपने में भी नहीं सोच सकता था कि जो नाम उसके जेहन में किसी वायरस की तरह घर कर चुका है, उस नाम का शख्स किसी की जिन्दगी का हिस्सा भी हो सकता है।

वह मरियम की हालत देख बुरी तरह घबरा गया। इससे पहले कि वह और ज़्यादा नर्वस होता चीखें सुन कर गोपाल भागते हुये डायनिंग हाल में पहुँचा- "क्या हुआ? मैडम को क्या हुआ?"

शैल के कुछ बोलने से पहले ही मरियम फिर से चीखी- "ये क्षितिज ही है गोपाल। यही है वह, जिसका इंतज़ार मैं इक्कीस सालों से कर रही थी।"

गोपाल को पूरा मामला समझते देर न लगी। उसने मरियम को खींचकर शैल से अलग किया।

“ये क्या कह रही हैं आप मैडम? क्षितिज साहब को मरे हुये आज इक्कीस साल हो गये। वे अब लौटकर नहीं आयेंगे। कभी नहीं आयेंगे।”

मरियम ने खुद को गोपाल से छुड़ाया और एक जोरदार थप्पड़ उसके गाल पर जड़ दिया। थप्पड़ की आवाज मरियम की चीख के नीचे दब गयी।

“हाँ वह मर गया था, लेकिन एक नये रुप में लौट कर आने का वादा किया था उसने। और इस लड़के के रूप में लौट कर उसने अपना वादा पूरा कर दिया है।”

लगातार चीखने के कारण मरियम का गला बैठ गया। उसकी हरकत से शैल घबरा गया था। मरियम के ऊपर कैसा जुनून हावी हुआ था, ये शैल नहीं समझ पाया किन्तु गोपाल इससे वाकिफ था।

“क्या आपने क्षितिज का नाम इनके सामने लिया था?”

शैल ने गर्दन हिलाकर ‘हां’ में जवाब दिया।

“आइन्दा कभी ऐसा मत कीजियेगा। इस नाम को सुनकर इनके सब्र का बांध टूट जाता है और ये इसी तरह की हरकतें करने लगती हैं।”

गोपाल ने मरियम को फर्श से उठाया और उसे कंधे का सहारा देकर कमरे की ओर ले जाने लगा।

□□□

“आपका नाम?”

कांस्टेबल की चशमाधारी आँखें सामने बैठी उस महिला की ओर उठ गयीं, जो पति की गुमशुदगी की रिपोर्ट दर्ज कराने आई थी।

"मधु दीक्षित।" महिला ने शालीन स्वर में कहा।

"आपके पति का नाम?"

"डॉक्टर आर्यन दीक्षित।"

"करते क्या हैं?"

"सेन्ट जोसेफ यूनिवर्सिटी में फिजिक्स के असिस्टेंट प्रोफ़ेसर हैं।"

"कब से लापता हैं।"

"कल रात से।"

उस आदमी का कागज पर चलता कलम रुक गया। उसने मधु को घूरते हुये कहा - "कल रात को ही गायब हुये और आप सुबह होते ही रिपोर्ट लिखवाने आ गयीं? कहीं गये होंगे। आ जायेंगे।"

"जी ऐसी बात नहीं है।" मधु ने पूर्ववत शालीनता के साथ कहा– "कल रात वे अपने कमरे में सोये थे। सुबह देखा तो कमरे में नहीं थे। खिड़की के शीशे भी टूटे हुये मिले।"

" 'अपने' कमरे में सोये हुये थे?" लिखने वाला अपनी निगाहें वापस कागज पर जमाकर 'अपने' शब्द पर खासा जोर देता हुआ बोला– "यानि कि आप उनके साथ नहीं थीं?"

"ज...जी नहीं !"

"क्यों?" उसकी निगाहें फिर से मधु पर ठहर गयीं।

मधु को अचानक सूझा ही नहीं कि क्या जवाब दे। मजबूरन उसे कहना पड़ा - "हमारे बेडरूम अलग-अलग हैं।"

"हूँ!" लिखने वाले ने हुंकार भरी और पेन कागज पर छोड़ता हुआ आराम से कुर्सी पर फैल गया- "क्या इसका मतलब मैं ये समझूं कि आपकी आपके पति के साथ बनती नहीं है?"

"जी ऐसी बात नहीं है।"

"तो फिर कैसी बात है मिसेज दीक्षित? आप दोनों का झगड़ा हुआ रहा होगा?"

"जी नहीं! सब कुछ सामान्य था। हर रोज की तरह कल भी वे अपने कमरे में ही थे।"

"आपको क्या लगता है? कहाँ जा सकते हैं आपके पति?"

"मुझे ये अपहरण का केस लगता है, क्योंकि उनकी बेडरूम की खिड़की का
शीशा टूटा हुआ था। कमरा अस्त-व्यस्त था और कमरे में रखी उनकी रिवाल्वर भी अभी-तक गायब है।"

"आपके पति हथियार रखते थे?"

"केवल सुरक्षा के लिहाज से। हमने अभी-तक उसका प्रयोग सेलिब्रेशन फायर के रूप में ही किया था। हमारे पास लाइसेन्स भी है।"

"हथियार रखने वाले एक इंसान को कोई खिड़की से लेकर भाग गया।" माखौल उड़ाने वाले अंदाज में हंसते हुये कांस्टेबल ने अगला सवाल किया- "आपको किसी पर शक है?"

"जी नहीं। वे सीधे-सादे इंसान थे। उनकी भला किसी से क्या दुश्मनी हो सकती है?"

"अगर उनकी किसी से दुश्मनी नहीं थी तो क्या वे कुत्ते के डर से रिवाल्वर साथ लेकर चलते थे? हो सकता है कि बाहर उनका किसी से लफड़ा रहा हो, जिसे उन्होंने आपसे शेयर न किया हो, क्योकि आप दोनों के बीच काफी दूरियाँ हैं।"

मधु कुछ नहीं बोली वह पुलिस के सवालिया अंदाज से वाकिफ थी। वह जानती थी कि ऐसे सवालों से पाला पड़ना स्वाभाविक है, इसलिये वह खुद को मानसिक तौर पर तैयार करके आई थी।

"खैर!" आदमी ने पेन बन्द करके रखते हुये कहा- "आपकी रिपोर्ट लिखी जा चुकी है। हम जल्द ही एक्शन लेंगे।"

"लेकिन कब?" मधु ने अधीरता से कहा।

"देखिये! आज हमारे पास आपके पति की गुमशुदगी से भी ज़्यादा जरूरी केस है। एसाइलम में हुई हत्या के बारे में आपको नहीं पता क्या?"

मधु कुछ नहीं बोली।

"अब आप जा सकती हैं।"

"जी शुक्रिया।"

कहते हुये मधु उठ खड़ी हुई।

□□□

"मैं सपने में भी नहीं सोच सकता था कि तेरे मासूम चेहरे के पीछे एक मक्कार भेड़िये का चेहरा है।"

जोशी फोन पर बुरी तरह बरस रहा था। क्रोध और भय के कारण उसकी

आवाज में लड़खड़ाहट थी।

“आखिर हुआ क्या, जो मुझ जैसा सीधा-सादा इंसान अचानक तुम्हें भेड़िया
नजर आने लगा?” दूसरी तरफ से लापरवाह अंदाज में पूछा गया।

“वही हुआ जलील इंसान जो तू चाहता था।” इस बार जोशी के जबड़े भींच गये।

लाइन पर खामोशी छा गयी।

“तू सुन तो रहा है न?”

“आखिर हुआ क्या है?”

दूसरी ओर से बात करने में बरती जा रही लापरवाही ने जोशी को आशंकित कर दिया। उसने ये सुनिश्चित करने के लिये सेलफोन का डिस्प्ले चेक किया कि लाइन पर वही बंदा है, जिससे वह बात करना चाहता था या कोई और।

“तुम..तुम ‘वही’ हो न?”

“हाँ ‘वही’ हूँ। लेकिन तुम इतने घबराये हुये क्यों हो?”

“बकवास मत करो।” इस बार जोशी आपा खोकर चिल्ला उठा- “मेरे एसाइलम में मर्डर हुआ है। किसी और का नहीं बल्कि उसी आदमी का जिसे तूने कल रात प्रोफ़ेसर शास्त्री के सेल में शिफ्ट किया था, ये कहकर कि वह फीटपाथ पर लुढ़कने वाला एक शराबी है।”

“ओह!”

“फिलहाल तो मैं ये जानना चाहता हूँ मक्कार भेड़िये कि वह शराबी क़त्ल होने तक एक सामान्य आदमी में कैसे बदल गया?”

"मैं समझा नहीं जोशी कि आखिर तुम कहना क्या चाहते हो? और प्लीज मुझे बार-बार भेड़िया कहना बंद करो। भेड़िये इस तरह फोन पर बात नहीं करते हैं।"

"जिसे तूने शराबी कह कर प्रोफ़ेसर के सेल में ठूंसा था, उसका क़त्ल हो गया।"

"तो?"

"तू साबित क्या करना चाहता है?" जोशी चिढ़ते हुये बोला- "क्या तूझे ये एहसास नहीं है कि अब मेरे सर पर कितनी बड़ी तलवार लटकने वाली है?"

"इतना ओवररियेक्ट करने की क्या जरूरत है जोशी? किसी को हमारे-तुम्हारे बीच हुये सौदे की भनक नहीं है। पुलिस को ख्वाब नहीं चमकेगा कि मरने वाला
प्रोफ़ेसर शास्त्री के बजाय कोई और था।"

"या तो तू बेहद बेवक़ूफ़ है या फिर पुलिस को प्राइमरी में पढ़ने वाला बच्चा
समझता है। लाश को देखकर कोई भी पहचान जायेगा कि हत्प्राण शास्त्री नहीं है।"

"अगर ऐसा है तो तुम्हारी परेशानी बढ़ गयी होगी जोशी।" दूसरी ओर से तरस खाने वाले अंदाज में कहा गया।

"क्या मतलब? इस पूरे प्रकरण में क्या तू दूध में धुला है? क्या तू मेरे साथ नहीं फंसेगा?"

"मैं नहीं फसूंगा जोशी। फंसेगा तो वह शख्स जिसने तुम्हारे साथ 'विनिमय' की बात की थी।"

"ओह!" दूसरी सिरे पर मौजूद व्यक्ति का मंतव्य समझते ही जोशी ने गहरी सांस ली- "तो तू इस बात से मुकर रहा है कि तुने मुझसे कोई सौदा किया था।"

"हर इंसान अपने बचाव का रास्ता ढूँढता है और फिलहाल मुझे मेरे बचाव का यही एक रास्ता नजर आ रहा है।"

"काफी बचकाना रास्ता चुना है तूने। मेरी मुखबिरी तेरे कैरियर को बर्बाद कर सकती है।"

"तो बन जाओ मुखबिर। नाव में मैं अकेले नहीं सवार हूँ।"

जोशी खामोश। कहने के लिये शब्द ही कहाँ बचे उसके पास? अगर वह चाहता तो भी कुछ नहीं कह सकता था क्योंकि कॉल डिसकनेक्ट किया जा चुका था। उसने एक नया नंबर डायल किया।

"वह मुकर गया।" दूसरी ओर से कॉल रिसीव किए जाते ही उसने बगैर किसी औपचारिकता के कहा।

"हमें मालूम था कि वह मुकर जायेगा।" दूसरी ओर से आवाज आई - "खैर! तुम्हारे एसाइलम में हत्या हुयी कैसे?"

"मुझे भी नहीं मालूम।" जोशी ने परेशान स्वर में कहा- "क़त्ल करने वाला कोई और नहीं बल्कि एसाइलम का ही सिक्योरिटी गार्ड रहमत अली है। सीसीटीवी फुटेज में वह साफ-साफ़ नजर आ रहा है। मुझे जरा भी आभास नहीं था कि वह जिस शख्स को शराबी करार देकर प्रोफ़ेसर

की सेल में शिफ्ट करा रहा है, वह उसी रात एसाइलम के कर्मचारी के हाथों क़त्ल होने वाला है।"

"लेकिन सिक्योरिटी गार्ड ने ऐसा किया क्यों?"

"पता नहीं। यही तो मेरे लिये सबसे बड़ी पहेली है कि इस हत्याकांड में रहमत अली कैसे शरीक हुआ? उसे तो ये तक नहीं मालूम था कि एसाइलम में शास्त्री नहीं बल्कि कोई और है। पुलिस ने उसे अरेस्ट कर लिया है। मुझे उससे कुछ पूछने का मौक़ा भी नहीं मिल पाया था।"

"कहीं ऐसा तो नहीं कि प्रोफ़ेसर शास्त्री की हत्या का षडयंत्र हो रहा था और वह, जिसने तुम्हारे सामने सेल में प्रोफ़ेसर के बदले किसी और को शिफ्ट करने का प्रस्ताव रखा था, इस षडयंत्र से वाकिफ था?"

"जो कुछ भी हो लेकिन मेरा तो नपना तय है। हत्यारा भले ही रहमत अली के रूप में पकड़ा जा चुका है, किन्तु सबसे बड़े सवाल का जवाब तो मुझे ही देना होगा कि सेल में प्रोफ़ेसर की जगह एक सामान्य आदमी कैसे पहुंचा?"

"क्या तुम इस बात को लेकर निश्चिंत हो कि रहमत ये नहीं जानता था कि सेल में प्रोफ़ेसर के बजाय कोई और है?"

"शत प्रतिशत निश्चिन्त हूँ। अदला-बदली की बात मेरे और उसके अलावा और कोई नहीं जानता था।"

"अदला-बदली को लेकर पुलिस का क्या विचार है?"

"कह नहीं सकता क्योंकि अभी तक मेरा सामना इंस्पेक्टर अमर से नहीं हुआ है। लेकिन इतना तो तय है कि अमर एक घाघ पुलिस ऑफिसर है। वह इस सवाल का

जवाब तलाशने में अपनी पूरी ताकत लगा देगा कि सेल में कोई दूसरा आदमी कैसे पहुंचा और प्रोफ़ेसर कहाँ गये?”

“तुम उसके सामने फिलहाल यही कहोगे कि तुम अदला-बदली से अनजान थे। तुम्हें नहीं मालूम कि प्रोफ़ेसर शास्त्री को कौन ले गया और कहाँ ले गया।”

“लेकिन ये झूठ अमर को ज्यादा समय तक भरमाये नहीं रख सकता।”

“फिलहाल तुम्हारे सामने यही एक रास्ता है। मैं तब तक तुम्हारी कोई मदद नहीं कर पाऊंगा जब तक कि मुझे ये नहीं पता चला जाता कि ‘एक्सचेंज’ कराने वाले का इस काम के पीछे क्या मकसद था? और वह प्रोफ़ेसर शास्त्री को किस उद्देश्य और कहाँ ले गया है?”

“इस दौरान अगर इंस्पेक्टर अमर मेरे साथ सख्ती से पेश आया तो? जैसे वह आम अपराधियों के साथ पेश आता है।”

“तो तुम अपने बचाव के लिये उसका नाम ले सकते हो, जिसने तुम्हें
‘एक्सचेंज’ ऑफर दिया था।” जोशी खामोश रहा तो दूसरी तरफ से स्वतः ही आवाज आई - “तुम फ़िक्र मत करो। समय आने पर मैं अमर के सामने तुम्हारी बेगुनाही का सबूत पेश कर दूंगा।”

“ठीक है!”

“और हाँ! एक बात का ध्यान रखना, आज के बाद मुझे कॉल मत करना क्योंकि अब तुम पुलिस इन्वेस्टीगेशन के

दायरे में हो और मैं नहीं चाहता कि इन घटनाओं में मेरे शामिल होने की भनक पुलिस को समय से पहले लगे।"

"ठीक है!" जोशी ने किसी छोटे बच्चे की तरह हामी भर दी।

□□□

जोशी, अमर के सामने था। हालांकि इन्टेरोगेशन शुरू नहीं हुआ था, फिर भी पूछे जाने वाले सवालों की कल्पना करके उसके रोंगटे खड़े हो रहे थे।

"मिस्टर जोशी! क्या आप जानते हैं कि तेरहवें सेल में जिस पागल की मौत हुई है वह प्रोफ़ेसर शास्त्री नहीं है?" अमर ने नपे-तुले स्वर में पूछा।

"जी?" जोशी हकलाया।

"जी मैंने पूछा कि क्या आप जानते हैं कि तेरहवें सेल में जिस पागल की मौत हुई है वह प्रोफ़ेसर शास्त्री नहीं है?" अमर ने इस बार एक-एक शब्द पर जोर दिया।

"म..मैं मतलब नहीं समझा आपका। वह सेल प्रोफ़ेसर शास्त्री का था, तो लाश भी प्रोफ़ेसर की ही होगी न?"

"यही तो सबसे बड़ा पेंच है जोशी साहब। मरने वाला प्रोफ़ेसर नहीं है।"

"क्या कह रहे हैं आप?"

"मैं नहीं कह रहा। मैं तो कुछ भी नहीं कह रहा। जो कुछ कह रही हैं, ये तस्वीरें कह रही हैं।"

"कैसी तस्वीरें?"

"ये देखिये?"

अमर ने एक लिफाफे से कुछ तस्वीरें निकालकर जोशी के सामने फैला दिया। ये लाश की वही तस्वीरें थीं, जो फोटोग्राफर ने विभिन्न कोणों से लिये थे।

"इस फोटो में हतप्राण की दाहिनी कलाई को गौर से देखिये।"

जोशी को गौर से देखने की जरूरत नहीं पड़ी, क्योंकि कलाई पर अंकित 'आर्यन' स्पष्ट नजर आ रहा था।

"मरने वाला तो आर्यन नाम का कोई व्यक्ति है।"

"आर्यन नहीं। सेंट जोसेफ यूनिवर्सिटी के असिस्टेंट प्रोफ़ेसर डॉक्टर आर्यन दीक्षित। उनकी पत्नी ने आज सुबह ही उनकी गुमशुदगी की रिपोर्ट दर्ज कराई है।"

जोशी खामोश।

"हैरानी है मुझे।" अमर कुर्सी की पुश्त छोड़कर जोशी की ओर झुक गया- "जो आपको लाश देखते ही समझ जाना चाहिये था, उसे मुझे आपको सबूतों के जरिये समझाना पड़ रहा है। आप तो प्रोफ़ेसर के डील-डौल और हुलिये से वाकिफ रहे होंगे। चेहरा बेशक कुचला गया था, लेकिन बाकी शिनाख्त के आधार पर तो प्रथम दृष्टया ही जाहिर हो गया था कि मरने वाला कोई और है, प्रोफ़ेसर नहीं।"

जोशी ने कुछ कहना चाहा।

"मेरी बात अभी ख़त्म नहीं हुई है।" अमर ने सख्त लहजे में आगे कहा- "मरने वाले यानि कि आर्यन के जिस्म पर पागलों के कपड़े थे। जो भी उसे सेल तक लाया था, उसने उसे पागलों के कपड़े पहना दिये थे। यानि कि उसे

प्रोफ़ेसर शास्त्री बनाने की बेहद मूर्खतापूर्ण कोशिश की थी उसने।"

जोशी लाख चाहने के बावजूद भी जिस्म को पसीना उगलने से नहीं रोक पाया।

"जिसने भी यह कोशिश की ही उसका मकसद क्या था? ये हम बाद में जानेंगे। फिलहाल ये जानना हमारे लिये ज्यादा अहम है कि आपकी नाक के नीचे एसाइलम में पागल के स्थान पर एक असिस्टेंट प्रोफ़ेसर को शिफ्ट कर दिया गया और आपको भनक नहीं लगी, तो क्यों नहीं लगी? इतने दुस्साहसपूर्ण कार्य को तो बिना मिलीभगत के इतनी कुशलता से अंजाम नहीं दिया जा सकता है।"

जोशी ने सूखे अधरों पर जुबान फेरी।

"आपकी खामोशी हमारे इस शक की जड़ें मजबूत कर रही है कि ये काण्ड आपकी नाक के नीचे नहीं बल्कि आँख के आगे हुआ है।"

"न..नहीं। मैं नहीं जानता कि ये कैसे हुआ?"

जोशी सिहर उठा क्योंकि उसके पास तर्क-वितर्क के लिये पर्याप्त संसाधन नहीं थे। सब-कुछ आईने की तरह साफ़ था।

"तो आप ये स्वीकार करते हैं कि एक इन्चार्ज के तौर पर आपकी लापरवाही ने न केवल आर्यन की जान ली बल्कि पागल प्रोफ़ेसर को भी एसाइलम से लापता करा दिया। नहीं?"

जोशी बगलें झांकने लगा।

“पानी पी लीजिये।” अमर ने पानी का ग्लास जोशी की ओर बढ़ा दिया।

उसे सचमुच पानी की जरूरत थी। उसने ग्लास उठाया और एक ही साँस में
खाली कर दिया।

“मेरा सवाल अब भी यही है कि....।” अमर ने कहा - “आपके एसाइलम में किसी पागल की बजाय एक शरीफ आदमी को बंद कर दिया गया और आपको भनक क्यों नहीं लगी?”

जोशी पर ‘काटो तो खून नहीं’ वाली कहावत चरितार्थ हो रही थी।

“जो कुछ हुआ है मेरी जानकारी में नहीं हुआ है। हत्यारा पकड़ा जा चुका है। उससे पूछताछ कीजिये। हो सकता है आपको जवाब मिल जाये।”

“ऐसा कहकर आप बच नहीं सकते हैं मिस्टर जोशी। एसाइलम में जो अदला-बदली हुई है, उसको लेकर आपकी कुछ जवाबदेही बनती है कि नहीं?”

“मैं एसाइलम में हुई अदला-बदली की नैतिक जिम्मेदारी लेता हूँ। मैं कल ही मेडिकल सुपरिटेंडेन्ट के पद से इस्तीफ़ा दे दूंगा।”

जोशी के समर्पण पर अमर और तारकनाथ की निगाहें आपस में टकरायीं। वह कमजोर पड़ रहा था और ये स्वाभाविक भी था, क्योकि जो कुछ हुआ था अचानक हुआ था। बेशक जोशी को ये नहीं पता था कि प्रोफ़ेसर के सेल में जिस आदमी को रखने का वह सौदा कर रहा है,

वह आदमी उसी रात रहमत अली के हाथों कत्ल कर दिया जायेगा, वरना वह क्या, कोई अन्य भी बड़ी से बड़ी लालच में भी पड़कर यह रिस्क नहीं लेता।

“आपकी मर्जी। लेकिन ये इस्तीफ़ा भी अदला-बदली में आपकी भूमिका पर परदा नहीं डाल सकता।”

“आप इन्वेस्टीगेशन पूरी कीजिये। मैं आपको इन्वेस्टीगेशन पूरा होने तक ये कस्बा छोड़कर न जाने और इन्वेस्टीगेशन में पूरा सहयोग देने का आश्वासन देता हूँ।”

“थैंक्स फॉर योर कोऑपरेशन मिस्टर जोशी। आप जा सकते हैं।”

जोशी कुर्सी से उठा और हाथ मिलाने की औपचारिकता पूरी करने के बाद केबिन से बाहर निकल गया।

“एसाइलम के तीनों सिक्योरिटी गार्ड हिरासत में हैं सर।” तारकनाथ ने कहा।

“रहमत अली से ये जानने की कोशिश करो कि उसने तेरहवें सेल में मौजूद आदमी की हत्या क्यों की? उसे ये बात मालूम थी या नहीं कि कल रात सेल में जो था, वह प्रोफ़ेसर शास्त्री नहीं था। बाकी दोनों को अभी हिरासत में रखो। पोस्टमार्टम रिपोर्ट आने के बाद उनसे मिलूंगा।”

“ओके सर!”

“जोशी पर एक आदमी का पहरा लगा दो। और टेक्नीशियन्स की एक पैनल को एसाइलम के सभी कर्मचारियों के फोनकॉल्स ट्रेस करने का जिम्मा सौंप दो।”

"समझ गया सर।"

□□□

"आपकी चाय!" कहने के बाद गोपाल ने चाय का ट्रे सेंटर टेबल पर रख दिया।

शैल ने अख़बार मोड़कर सोफे पर रखा और वापस जाने के लिये पलटे गोपाल को आवाज दी- "सुनो!"

"जी साहब!" गोपाल पलटा।

"तुम्हारी मैडम की तबियत कैसी है?"

"अपने कमरे में हैं इस वक्त। हल्का बुखार है।"

"मुझे तुमसे कुछ बात करनी है। यहाँ मेरे पास बैठो।"

गोपाल जानता था कि शैल उससे क्या पूछने वाला है। वह अनमने ढंग से उसके पास बैठ गया।

"तुम जानते हो कि क्षितिज सक्सेना कौन था?"

"ज़्यादा कुछ नहीं साहब। बस थोड़ा बहुत ही जानता हूँ।"

"क्या?"

"यही कि मरियम मैडम का इस नाम के साथ कुछ ज़्यादा ही लगाव है। वह अपने कमरे में लगी क्षितिज की तस्वीर को रोज अपने हाथों से साफ करती है। यह काम वह मुझे नहीं करने देती हैं।"

"क्षितिज क्या लगते थे तुम्हारी मैडम के?"

"सुनते में आता है कि बेइंतहां मोहब्बत करते थे वे दोनों एक-दूसरे से किन्तु....।"

"किन्तु क्या?"

"छोड़िए भी साहब। अब उन बातों का जिक्र करने से क्या फायदा, जिसने एक परिवार और एक मासूम की जिन्दगी को तहस-नहस कर दिया।"

"तुम किसकी बात कर रहे हो?"

"मरियम मैडम के परिवार की।"

"क्या हुआ था उनके साथ?"

"मैडम ने मुझे कुछ भी बताने से मना किया है। मैं मजबूर हूँ। आपको कुछ नहीं बता सकता।"

"मैं तुमसे जो कुछ पूछ रहा हूँ, उसके तार मेरी जिन्दगी से भी जुड़े हुये हैं। मैं पहले ही बहुत उलझा हुआ हूँ। मुझे और मत उलझाओ प्लीज।"

"मैं चाहकर भी आपको कुछ नहीं बता सकता। क्षितिज के एक छोटे से जिक्र ने मरियम मैडम की क्या हालत कर दी थी, ये आप अपनी आँखों से देख चुके हैं। मैं नहीं चाहता कि मैडम की पुरानी यादों को छेड़कर फिर से कोई नया तूफान खड़ा किया जाये। जिस सदमें से उबरने के लिये वह 21 सालों से संघर्ष कर रही हैं, मैं उसे फिर से ताजा नहीं करना चाहता।"

शैल ने गोपाल के व्यक्तित्व में वफादारी की झलक देखी थी। उसकी बातें सुनकर उसे यकीन हो गया था कि मरियम अपने जिस अतीत को उससे छुपाना चाहती थी, गोपाल उसे किसी भी कीमत पर उजागर नहीं करेगा।

फिर भी शैल के लिये इस रहस्य का खुलासा अनिवार्य हो चुका था, क्योंकि क्षितिज नाम, जो मरियम की जिन्दगी

का अभिन्न हिस्सा था, अब वह शैल की जिन्दगी का अनसुलझा रहस्य बन चुका था।

"क्या तुम जानते हो कि मरियम मैडम ने मुझे यहाँ क्यों बुलाया है?"

"क्या उन्होंने आपको नहीं बताया?"

"दरअसल मुझे यहाँ आने के लिये एक ख़त मिला था, लेकिन मरियम ने बताया कि उन्होंने मुझे बुलाने के लिये कोई खत नहीं भेजा था।"

"अगर उन्होंने ऐसा कहा होगा तो गलत नहीं कहा होगा, क्योंकि मैंने पिछले दिनों मैडम का कोई खत पोस्ट नहीं किया था।"

गोपाल के इस जवाब पर शैल को हैरानी नहीं हुई क्योंकि वह पहले ही मरियम की बात पर यकीन कर चुका था।

"तो फिर उन्हें ये कैसे पता कि मैं यहाँ आऊँगा?"

"मैं इस बारे में कुछ नहीं जानता। मैं खुद भी कल सुबह से ही हैरान था।"

"तुम क्यों हैरान थे?"

"क्योंकि मैंने हमेशा गम के बोझ तले दबे रहने वाली मरियम मैडम के चेहरे पर रौनक देखी थी। इक्कीस सालों में पहली दफा मैंने मैडम जी को जन्मदिन की पूर्व संध्या पर इतना खुश देखा था। पूछने पर उन्होंने मुझे बताया कि कोई ख़ास आने वाला है। वह ख़ास आप थे, ये मुझे तब पता चला जब उन्होंने मुझे आपको
रिसीव करने के लिये स्टेशन भेजा।"

"इसका मतलब कि आज केवल मेरा ही नहीं बल्कि मरियम का भी जन्मदिन है?"

"क्या आपको ये बात नहीं पता थी?"

शैल को रात की घटना याद आ गयी, जब अंधेरे कमरे में अचानक रोशनी करती हुये मरियम ने उसे हैरान कर दिया था, लेकिन वह सेलिब्रेशन शैल के नाम पर था। केक पर भी केवल उसी का नाम लिखा गया था, मरियम का नहीं।

इसका मतलब कि 31 अक्टूबर मरियम का भी जन्मदिन है? लेकिन अगर ऐसा है तो मरियम ने मुझे बताया क्यों नहीं? केक उसने सिर्फ मेरे नाम का ही क्यों काटा? रात को उसके हाव-भाव से ये कतई जाहिर नहीं हो रहा था कि यह तारीख उसके लिये भी विशेष का दर्जा रखती है।

"क्या सोचने लगे साहब?"

"कुछ नहीं!" शैल सवालों के समंदर से बाहर निकला - "उस दिन तो मेरा भी जन्मदिन था।"

"ओह! तो ये बात है। अब मुझे समझ में आया।"

"क्या समझ में आया?"

"यही कि मरियम मैडम ने केक पर अपने नाम के बजाय आपका नाम क्यों लिखा? वे अपना नहीं, बल्कि आपका जन्मदिन मनाना चाहती थीं।"

"मरियम जी अपना जन्मदिन क्यों नहीं मनातीं?"

गोपाल खामोश हो गया।

"जवाब दो गोपाल।"

"मरियम मैडम ने आज के ही दिन क्षितिज को खोया था।"

शैल के कानों में मरियम का वाक्य गूंजा।

'जिन्दगी के जिस दौर से हम दोनों गुजर रहे हैं, वह सबकुछ आज भी उतना ही असामान्य है जितना कि तब था, जब इक्कीस साल पहले एक तूफानी रात ने तुम्हें मुझसे छीन लिया था। मुझे बेघर कर दिया था और इस चर्च में सर छुपाने को मजबूर कर दिया था। आज की रात अगर हम सवालों को तवज़्जो देंगे तो उन पलों से वंचित रह जायेंगे, जिसके लिये हमने इक्कीस साल इंतज़ार किया है।'

उसके जेहन में विचारों का भंवर उठने लगा।

'जिस दिन क्षितिज की मौत हुई उसी दिन मेरा जन्म हुआ, इसके साथ-साथ

मरियम का मेरे प्रति भावनात्मक जुड़ाव; तो क्या सचमुच क्षितिज और मुझमें कोई अप्रत्यक्ष संबंध है? कहीं मरियम मुझे क्षितिज का पुनर्जन्म समझने की भूल तो नहीं कर रही? किन्तु किस विश्वास के आधार पर वह ऐसा सोच सकती है?'

अगले ही पल उसके ख्यालों ने करवट लिया।

'मरियम अगर ऐसा सोचती भी होगी तो उसका सोचना बेवजह नहीं है। खुद मुझे भी तो ऐसा ही लगता है कि मैं शैल नहीं क्षितिज हूँ। लोगों के अनुसार मरियम के आशिक यानि कि क्षितिज की सरकटी लाश घाटी में पायी गयी थी। मुझे चमकने वाला वह ख्वाब भी इसी बात की गवाही देता है, जिसमें चार लोग एक सरकटी लाश को घाटी में लुढ़काते हुये नजर आते हैं। क्षितिज और उससे

जुड़ी घटनायें मेरी जिन्दगी से हेड इंजरी के बाद जुडीं; अगर इस मान्यता पर यकीन किया जाये कि पूर्वजन्म से जुड़ी यादों के लौटने की वजह हेड इंजरीज होती हैं, तो ये स्पष्ट है कि एक्सीडेंट के कारण आयी हेड इंजरी के बाद मुझे मेरा पिछला जन्म याद आ रहा है। उफ़! लेकिन मैं इस फैंटेसी पर मैं कैसे यकीन कर लूं?'

"आप फिर से कुछ सोचने लगे?" विचारों के मंथन में डूबे शैल को देखकर गोपाल ने कहा।

"कुछ नहीं। तुम जाओ, अपना काम करो।"

□□□

शाम के चार बजे थे।

बदहवास सा भागता हुआ एक इंसान किसी गली से निकला और तेजी से मुख्य सड़क की भीड़ में शामिल हो गया। आगे बढ़ते हुये उसने कई दफे यूं पीछे मुड़कर देखा। जैसे किसी के द्वारा उसका पीछा किया जा रहा हो।

उसके जिस्म पर ओवरकोट था, जिसकी लम्बी टोपी से उसने अपना सर और आधा चेहरा ढक रखा था। वह लम्बे-लम्बे डग भरता हुआ तेजी से बढ़ा चला जा रहा था कि अचानक एक महिला से टकरा गया और इस चक्कर में उसकी टोपी उतर गयी।

"धत्त तेरी की!"

घबराहट में उसने टोपी फिर से सर पर चढ़ाई और पूर्ववत् गति से आगे बढ़ चला। थोड़ी देर बाद सड़क की भीड़-भाड़ कम हो गयी। आदमी ने भी अपनी चाल मंद कर दी। और राह चलते हुये ही गुजर रहे वाहनों पर लिफ्ट

मिलने की आस में नजर डालने लगा। अंतत: उसने एक कार को लिफ्ट का इशारा किया। संकेत पाते ही कार की रफ़्तार सुस्त पड़ी और वह आदमी से कुछ मीटर आगे निकलकर रुक गयी।

कार रुकते ही वह उसकी ओर लपका।

"क्या आप इस कस्बे के बाहर स्थित खण्डहर की ओर जा रहे हैं?"

ड्राइविंग सीट पर मौजूद व्यक्ति ने हाँ में गर्दन हिलाया। उसने आधा चेहरा रुमाल से ढँक रखा था, किन्तु लिफ्ट मांगने वाले ने इस ओर कोई तवज्जो नहीं दिया। उसने फुर्ती से ड्राइविंग डोर खोला और ड्राईवर के बगल वाली सीट पर सवार हो गया।

"प्लीज हरी अप!"

"एक पुराने खण्डहर में जाने की इतनी जल्दी क्यों है मिस्टर?"

आदमी ने ढंग से सांस भी नहीं लिया था कि ड्राइविंग सीट पर मौजूद शख्स बोल पड़ा। आदमी शायद इस आवाज को पहचानता था। उसने चौंककर ड्राईवर पर दृष्टिपात किया। ड्राईवर ने चेहरे पर से रुमाल हटा लिया था।

"नहीं...म..मु...मुझे नीचे उतारो।" उसने चीखते हुये ड्राइविंग डोर को खोलने का प्रयास किया। उसकी दशा ऐसी हो उठी थी मानो उसने रुमाल के पीछे किसी भूत का चेहरा देख लिया हो।

"कोशिश मत करो डोर लॉक्ड हो चुके हैं।" ड्राईवर ने सर्द लहजे में कहा।

"त...तुम....यहाँ...?"

"ये सवाल तो मुझे तुमसे पूछना चाहिये।"

"उस घटना को गुजरे इक्कीस साल हो चुके हैं। अब हमारे रास्ते अलग हो चुके हैं।"

"ऐसे कैसे अलग हो सकते हैं हमारे रास्ते?" ड्राईवर ने एक-एक हर्फ़ को चबाते हुये कहा- "समय का लम्बा अंतराल किसी की गुनाहों को नहीं छुपा सकता।"

"तुम क्या चाहते हो मुझसे?" लिफ्ट माँगने वाला आदमी गिड़गिड़ा उठा।

"पुराना हिसाब बराबर करना चाहता हूँ।"

□□□

शैल, मरियम के कमरे के दरवाजे पर पहुँचकर ठिठक गया।

वह एक तस्वीर को साफ करने में इस कदर व्यस्त थी कि उसे शैल के आने

की आहट भी नहीं पता चली। उसे तन्मयतापूर्वक तस्वीर साफ़ करते देख शैल समझ गया कि तस्वीर क्षितिज की ही थी। वह बगैर कुछ बोले दरवाजे से ही उसकी गतिविधियाँ देखने लगा।

तस्वीर साफ करने के बाद मरियम ने उसे दीवार पर यथास्थान लगा दिया। ठीक इसी क्षण शैल चौंका। तस्वीर में नजर आ रहा शख्स लगभग पच्चीस वर्षीय युवा था, जिसकी सांवली सूरत पर मनमोहक मुस्कान उसी

प्रकार खिल रही थी जैसे श्रीकृष्ण के होंठों पर मुरली। शैल के चौंकने का कारण ये था कि इस शख्स की तस्वीर वह शिकागो में यथार्थ नाम के एक रिसर्च स्कॉलर के पास पहले ही देख चुका था।

शैल कुछ सोच पाता कि मरियम की नजर उस पर पड़ गयी।

“दरवाजे पर क्यों खड़े हो? प्लीज अन्दर आओ।”

मरियम का लहजा सामान्य था। ऐसा बिल्कुल भी नहीं लगा था कि पिछली सुबह नाश्ते के टेबल पर जो कुछ हुआ था, उसका असर उसके दिमाग पर है।

शैल कमरे में प्रविष्ट हुआ।

“बैठो!” मरियम ने शैल को बेड पर ही बैठने का इशारा किया और खुद भी एक कुर्सी खींचकर उसके समीप बैठ गयी।

शैल ने कुछ कहने के लिये मुँह खोला ही था कि उससे पहले ही मरियम बोल पड़ी-“मैं जानती हूँ कि तुम्हारे दिमाग में क्या चल रहा है? शायद तुम यही जानना चाहते हो कि तुम्हें खत के जरिये यहाँ किसने बुलाया है? मुझे कैसे पता चला कि तुम यहाँ आओगे?”

शैल मुस्कुराया और जेब से एक ताजा गुलाब निकालकर मरियम की ओर बढ़ा दिया।

“मेनी-मेनी हैप्पी रिटर्न्स ऑफ द डे!”

“किसलिये?” गुलाब थामने से पहले वह मुस्कुराई।

“आपका बर्थडे था इसीलिये।”

"मेरा बर्थ डे?" पहले तो वह अचंभित हुई लेकिन फिर सहज हो गयी- "ओह! लेकिन तुम्हें कैसे पता?"

"गोपाल ने बताया और ये भी बताया कि आप इस दिन को सेलिब्रेट नहीं करतीं। क्या मैं कारण जान सकता हूँ?"

शैल को गोपाल के द्वारा पहले ही पता चल चुका था कि इसी दिन हुई
क्षितिज की हत्या के कारण मरियम ने इस दिन को अपनी जिन्दगी के सबसे मनहूस दिन में शुमार कर लिया था, फिर भी उसने जानबूझकर मरियम से ये सवाल किया क्योंकि वह बातों का रुख क्षितिज की ओर मोड़ना चाहता था।

सवाल सुनकर मरियम के होठों पर दर्द भरी मुस्कान फिसलती चली गयी।

"क्या करोगे जानकर? तुम्हारी जिन्दगी से इसका कोई ताल्लुक नहीं है।"

"ताल्लुक है, क्योंकि जिस नाम के साथ आपकी भावनायें जुडी हुई हैं, उस नाम से मुझसे मेरा चैन छीन लिया है। क्षितिज नाम का वह शख्स अब मेरे लिये एक पहेली बन चुका है, जिसे आप अपनी मोहब्बत कहती हैं।"

"क्या तुम्हें मुझे देखकर कुछ याद नहीं आता? क्या तुम्हें याद नहीं आता कि तुमने अपने करीबी दोस्त के जरिये मुझे ये सन्देश भिजवाया था कि मैं संत थॉमस चर्च पहुंचू, जहाँ तुम मुझसे शादी करोगे?"

"नहीं! मुझे कुछ नहीं याद आता। जब से मैं यहाँ आया हूँ तब से मुझे एक पल के लिये भी ऐसा नहीं लगा है कि मैंने आपको कहीं देखा है। या मैं आपसे मिल चुका हूँ।"

“मैं समझ रही हूँ।” मरियम ने शून्य को घूरते हुये उदास लहजे में कहा- “शायद मैं एक दिल्लगी पर भरोसा करके अकेलेपन को गले लगाकर इतने सालों तक इस चर्च के वीराने में सिसकती रही। हाँ! दिल्लगी ही की होगी उसने मेरे साथ ताकि मैं किसी और के साथ अपनी दुनिया न बसा सकूं।” थोड़ी देर रुककर मरियम ने शैल के चेहरे पर दृष्टिपात किया- “क्या तुमने कभी किसी से प्यार किया है?”

“नहीं!” शैल ने संक्षिप्त उत्तर दिया।

“तब तुम मेरी भावनाओं को कभी नहीं समझ पाओगे।”

“क्यों? ऐसा क्या है आपकी भावनाओं में?”

“वर्षों से इंतजार की जिस आग में मैं जल रही हूँ, उसका दर्द वही समझ सकता है जिसने कभी किसी से सच्चा प्यार किया हो।”

मरियम खामोश हो गयी। उसकी खूबसूरत आँखें, जिसमें शैल ने दर्द का एक सैलाब देखा था, उस तस्वीर पर ठहर गयीं, जिसे उसने खुद अपनी हाथों से साफ करके दीवार पर टांगा था। तस्वीर क्षितिज की थी। उस क्षितिज की जिसे मरियम के दिल का कोई भी कोना मरा हुआ समझने को तैयार नहीं था। कोई लड़की उस इंसान के लौटने की राह देखते हुये इक्कीस साल कैसे गुजार सकती है, जिसे दुनिया ने मृत घोषित कर दिया हो? जवाब के रूप में मरियम उसके सम्मुख खड़ी थी। उसके अनोखे विश्वास के पीछे दो कारण हो सकते थे; या तो उसका प्यार इतना सच्चा था कि क्षितिज की मौत भी उसे उसके दिल से

ख़त्म न कर सकी या फिर वक्त की नजाकत को देखते किसी की दी हुयी दिलासा उसके इस विश्वास को आज भी कायम रखे हुये थी कि क्षितिज वापस आयेगा।

“शायद यही क्षितिज है।”

अतीत के सागर में डुबती-उतराती मरियम का ध्यान भंग हुआ।

“तुम्हें कैसे पता?”

“कोई किसी तस्वीर को इतनी शिद्दत से तभी देखता है, जब उस तस्वीर के साथ उसकी भावनायें जुडी हों।”

मरियम जबरदस्ती मुस्कुराई। शैल को उस मुस्कान में उसी दर्द का एहसास हुआ, जिसे वह अब तक महसूस करता आया था।

“लोग कहते हैं क्षितिज मर चुका है।”

“लोग झूठ तो नहीं कहते होंगे न?”

“क्षितिज का वादा भी तो झूठा नहीं होगा न?”

“क्या वादा किया था उसने आपसे?”

“इक्कीस साल पहले 31 अक्टूबर की तूफानी रात को छोड़कर गया था मुझे, यानि कि उस दिन जिस दिन मेरा जन्मदिन था। जन्मदिन के तोहफे के रूप में इसी चर्च में मेरी कलाइयों में सुहाग की चूड़ियां पहनाने वाला था। मैं चर्च आ गयी लेकिन वह नहीं आया। अगली सुबह लोगों ने कहा कि किसी घाटी में उसकी सरकटी लाश पायी गयी है।”

“तो फिर उसने आपसे ये वादा कैसे किया कि .....!”

"उस रात जब वह नहीं आया तो उसका एक करीबी दोस्त इसी चर्च में आया। उन सामानों के साथ जो उसने शादी के लिये खरीदी थीं। उसने ही मुझसे कहा था- *'क्षितिज जिन्दगी के उस पड़ाव पर विश्राम करने के लिये ठहर गया है, जिसे लोग मृत्यु कहते हैं। वह इक्कीस साल बाद तुम्हारे पैंतालिसवें जन्मदिन पर एक बार फिर तुमसे मिलेगा। तब तक इंतज़ार करो, उसके लौटने का।'*

जन्मदिन के तोहफे के रूप में एक लम्बा इंतजार पाकर मैं टूट गयी, लेकिन क्षितिज का वादा मेरी बैसाखी बना। उसी बैसाखी के सहारे मैंने इक्कीस साल अकेले गुजार दिया। लेकिन....।" मरियम ने कथन अधूरा छोड़कर शैल के चेहरे पर मौजूद भावों का जायजा लिया और आगे कहा - "तुम्हारे आने के समय और तुम्हारे जन्मदिन के बारे में भी मुझे इक्कीस साल पहले क्षितिज के उसी दोस्त ने बताया था। जब तुम यहाँ आये तो इसे मैं अपनी लम्बी प्रतीक्षा का सुखद अंत समझकर अभिभूत हो गयी, लेकिन मैं गलत थी। तुम क्षितिज कैसे हो सकते हो? तुम तो किसी खत को पढ़कर अपनी उलझनें सुलझाने आये हो यहाँ।"

मरियम खामोश हो गयी और लम्बी-लम्बी साँसे लेते हुये आशापूर्ण दृष्टि से उसे देखने लगी।

"क्षितिज की हत्या किसने और क्यों की?"

"लम्बी कहानी है शैल। मुझे सुनाने के लिये मजबूर मत करो। यौवनावस्था कि संज्ञा से नवाजा जाने वाला मेरे जीवन का वह हिस्सा, जब लोगों के अरमानो को पंख लगते हैं, मेरे लिये मनहूसियत का एक साया है। मैं खुद को

उस साये से दूर रखने के लिये आज तक अपनी अंतरात्मा से लड़ रही हूँ।”

“इस चर्च के फादर...!”

“चर्च के पीछे वाले कब्रिस्तान में उनकी हत्या हो गयी।” मरियम ने शैल का कथन पूर्ण होने से पहले ही कहा - “क्षितिज के जाने के ठीक सात दिन बाद।”

“लोग कहते हैं कि किसी शैतान ने उनकी हत्या की थी।”

मरियम के होठों पर एक रहस्यमयी मुस्कान थिरक उठी। वह कुर्सी से उठी और आलमारी से एक बेहद पुराना कपड़ा बाहर निकाला।

कपड़े पर दृष्टि पड़ते ही शैल चौंक उठा।

“य.. ये क्या? खून से सना कपड़ा?”

“फादर जोसेफ की हत्या मैंने की है।”

सुनते ही शैल पर मानो बिजली गिर पड़ी।

□□□

एक आलीशान बंगले के बाहर झाड़ियों में छिपा शख़्स मुख्य गेट पर अपनी निगाहें जमाए हुये था। उसे ऐसा करते हुये लगभग दो घण्टे गुजर चुके थे, मगर इन दो घण्टों में उसने बंगले के आस-पास कुछ भी संदिग्ध नहीं पाया था। अब तक वह बोर होकर लम्बी जम्हाइयां लेने लगा था।

अचानक कुछ देखकर उसकी निगाहें चौकन्ना हो उठीं और बोरियत गायब हो गयी। बंगले के मुख्य गेट से जोशी की इनोवा निकल रही थी, जिसे वह खुद ड्राइव कर रहा था। देखते ही देखते इनोवा सड़क पर दौड़ पड़ी।

'जोशी सोलन की ओर क्यों जा रहा है?'

आदमी झाड़ियों से बाहर आया और बाइक को इनोवा के पीछे दौड़ा दिया। इनोवा सामान्य रफ्तार से चलती रही और बाइक लगातार उसके पीछे लगी रही।

'जोशी सोलन की तरफ जा रहा है।' बाइक सवार का यह भ्रम उस वक्त दूर हो गया जब उसने इनोवा को दूसरे रास्ते पर मुड़ते देखा।

'ये रास्ता तो दगशाई के बाहर घाटियों में जाता है।'

लगभग पन्द्रह मिनट चलने और कई बार दायें-बाएं मुड़ने के बाद बाइक सवार को इनोवा की रफ़्तार सुस्त होती जान पड़ी।

इनोवा एक खण्डहर के सामने रुक गयी। बाइक सवार ने खुद को एक पेड़ की ओट में छुपा लिया। जोशी गाड़ी से नीचे उतरा। उसने इधर-उधर देखा और खण्डहर में प्रविष्ट हो गया। बाइक वाला भी पेड़ की ओट से निकला और जोशी की नज़रों से बचते हुये खण्डहर में दाखिल हो गया।

एक खुले स्थान पर खड़ा जोशी सेलफोन के जरिये किसी से संपर्क करने की कोशिश कर रहा था।

उसने कुछ देर तक सेलफोन कान से लगाए रखा। तत्पश्चात कान से हटा लिया। शायद फुल रिंग के बाद भी दूसरी ओर से कोई रिस्पॉस नहीं आया था। उसने सेलफोन के डिस्प्ले को घूरा। रिडायल के बाद सेलफोन को फिर से कान पास ले गया, किन्तु इस बार तुरन्त ही हटा लिया। इस क्रिया को उसने कई बार दोहराया और अंत में

झल्लाकर सेलफोन जेब में रख लिया। करीब दस मिनट तक इंतज़ार करने के बाद खण्डहर से बाहर आ गया।

□□□

चटाक।

आदमी की हथेली तीव्र वेग से उस आदमी के गाल से टकराई, जो लकड़ी की कुर्सी पर बांधा हुआ था और जिसका चेहरा चेचक के निशान के कारण काफी हद तक विकृत हो चुका था। उसकी आँखों के इर्द-गिर्द नजर आ रहे निशान से पता चलता था कि वह कभी आँखों की सर्जरी से भी गुजर चुका है।

"तुझे क्या लगता है कि तेरे सितम से तंग आकर मैं तुझे ये बता दूंगा कि फ़ार्म हाउस काण्ड में किसका हाथ हैं?" थप्पड़ खाने वाला बेख़ौफ़ अंदाज में कहता चला गया।

"हाथ तो तेरा ही है। वरना इतने लम्बे अरसे बाद तू दगशाई में नजर क्यों
आया? और तेरे पास मेरा सेलफोन कहाँ से आया?"

"मैं दगशाई से गया ही कब था मूर्ख प्राणी?" इस बार थप्पड़ खाने वाले का लहजा चिढ़ाने वाला था।

"तो इतने दिन किस कोने में छुपा था तू?"

"मैं छुपा नहीं था, क्योंकि मुझे किसी का खौफ नहीं था। तुझ जैसे कीड़े का तो बिल्कुल भी नहीं।"

"अब खौफ खायेगा। मुझसे ही नहीं मेरी आने वाली पीढी से भी खौफ खायेगा तू।"

आदमी के चेहरे पर क्रूरता काबिज हो गयी। उसने मुट्ठी भींच ली और अगले ही पल वह मुट्ठी कुर्सी से बंधे आदमी

के जबड़े पर कहर बरपा गयी। उसके होंठ बुरी तरह फट गये, जहाँ से खून की मोटी धाराएं बह निकलीं।

"तू इतने सालों से यहाँ क्या कर रहा था?"

"तेरी चिता जलाने का प्रबंध कर रहा था।"

कुर्सी से बंधा आदमी होठों से बह रहे खून को जीभ निकालकर चाट गया।

"हरामजादे!" टॉर्चर करने वाला क्रोध में तिलमिलाकर उसके चेहरे पर फिर से कई प्रचंड घूंसे बरसा डाला। फिर हांफते हुये उसका कालर पकड़कर गुर्राया- "मेरे मेडिसिनल रिसर्च की फ्लॉपी डिस्क कहाँ है?"

कुर्सी से बंधा आदमी कुछ नहीं बोला। बस पहले आदमी के उस चेहरे को घूरता रहा, जहाँ इस वक्त काल ताण्डव कर रहा था। घूंसे खाने वाला जब लम्बे समय तक कुछ नहीं बोला तो पहला आदमी फिर से गुर्रा उठा- "तुझे मैं इतनी आसानी से नहीं छोड़ूंगा। तूने कविता की जिन्दगी तबाह की है। क्षितिज के सपनों को मटियामेट कर डाला तूने। अगर मेरी फ्लॉपी मुझे नहीं मिली तो..."

इससे पहले कि वह आगे कुछ कहता, उसका सेलफोन बज उठा। उसने डिस्प्ले पर उभर रहे नंबर को देखा और फिर जब उसने कुर्सी से बंधे आदमी के चेहरे पर दृष्टिपात किया, तो वहाँ मौजूद भद्दी मुस्कान ने उसके आग में घी का काम किया।

उसने सेलफोन एक तरफ उछाल दिया। उसकी बैटरी अलग हो गयी।

इसके बाद वह रुका नहीं। पैर पटकता हुआ कमरे से बाहर निकल गया।

"तू फंस गया बेवक़ूफ़। जल्द ही पुलिस तेरे दरवाजे पर होगी।"

□□□

"डेडबॉडी की पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट आ गयी?"

"यस सर!" तारकनाथ ने रिपोर्ट की फाइल अमर की ओर बढ़ायी।

"फिंगरप्रिंट्स रिपोर्ट्स क्या कह रहे है?"

"नतीजे हैरान करने वाले हैं सर। सबसे ज़्यादा हैरान तो पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट कर रहा है।"

"क्यों? ऐसा क्या है रिपोर्ट में?"

"आप खुद ही देख लीजिये।"

अमर ने फाइल को सिरे से पढ़ना शुरु किया। पन्ने दर पन्ने उसके चेहरे पर तनाव गहराता गया और जब उसने फाइल को बंद किया तो होंठों से अस्फुट स्वर में यही निकला- "इस रिपोर्ट के अनुसार लाश के गले में जो सुराख थे, वे किसी सरिया से नहीं बल्कि इंसानी नाखूनों से किए गये थे। बट हाउ इज इट पॉसिबल?"

"यही सवाल तो मेरा भी है सर।"

"लेकिन ये रिपोर्ट भी तो गलत नहीं मानी जा सकती।" अमर ने बेचैनीपूर्वक पहलू बदला।

"साधारण आँखों से देखने पर हर किसी को यही लगा था कि लाश की गर्दन पर सरिया से सुराख किया गया है, लेकिन पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट के अनुसार वे सुराख सरिया

से नहीं बल्कि इंसानी नाखूनों से किये गये हैं। इस बात पर यकीन करने को जी नहीं चाहता कि हत्प्राण के गले में इंसानी नाखूनों से सुराख किया गया है, क्योंकि कम से कम रहमत जैसे साधारण इन्सान के नाखून तो सरिया जैसे नहीं हो सकते।"

"सीसीटीवी फुटेज के बारे में तुम किसी झोल की बात कर रहे थे न?"

"झोल एक नहीं दो हैं सर। पहला झोल ये है कि साढ़े दस बजे से पौने ग्यारह बजे की रिकॉर्डिंग सीसीटीवी फुटेज में नहीं है। स्टाफ ने इसकी वजह अचानक एसाइलम में पॉवर सप्लाई का बंद हो जाना बताया है। उनका कहना है कि जनरेटर में अचानक कोई खराबी आ गयी थी।"

"और उस फाल्ट को पंद्रह मिनट में रिकवर भी कर लिया गया?"

"जी हाँ!"

"और दूसरा झोल?"

"इसके बाद एक और पीरियड है जिसकी रिकॉर्डिंग सीसीटीवी कैमरे में नहीं है, और वह पीरियड ग्यारह बजकर पचपन मिनट से बारह बजकर दस मिनट तक
का है।"

"यानि कि एसाइलम में एक बार फिर पंद्रह मिनट के लिये ब्लैक आउट हुआ था।"

"नहीं सर। दरअसल ये दूसरा झोल थोड़ा अजीबोगरीब है। ब्लैक आउट न होने के बाद भी एसाइलम की तीसरी आँख ने काम करना बंद कर दिया था।"

"क्या मतलब?"

"मतलब ये कि कैमरों के ऑन रहने के बावजूद भी कुछ नहीं रिकॉर्ड हुआ है। रहमत के एसाइलम में दाखिल होने से लेकर हत्या होने तक के समयांतराल वाले वीडियो में केवल झिलमिलाहट नजर आ रही है। उक्त समयांतराल की झिलमिलाहट के तुरंत बाद स्पष्ट होने वाले वीडियो में रहमत बौखलाया हुआ लाश के पास खड़ा नजर आ रहा है। हक्का-बक्का राजेश भी उसके पास ही खड़ा दिख रहा है। उसके बाद के वीडियो में कुछ भी उल्लेखनीय नहीं है।"

"हमारे टेक्नीशियन का क्या कहना है?"

"उनका कहना है कि ऐसा जबरदस्त मैग्नेटिक इंटरफरेंस के कारण हुआ।"

"मैग्नेटिक इंटरफरेंस मतलब?"

"ये एक डिस्टर्बेंस हैं, जिसके कारण इलेक्ट्रिक सर्किट ठीक से काम नहीं करते हैं।"

"तो फिर ये डिस्टर्बेंस आया कहाँ से? कहीं कातिल ने...।"

"नो सर...।" तारकनाथ ने अमर की बात काट दी- "मैग्नेटिक इंटरफरेंसेज ह्यूमन जनरेटेड डिस्टर्बेंस नहीं होते। टेक्नीशियन्स का कहना है कि ऐसा सर्किट के किसी डिफेक्ट के कारण होता है। वे उस डिफेक्ट को पता करने की कोशिश भी कर रहे हैं। चूंकि इस मग्नेटिक इंटरफरेंस के बाद भी रहमत कातिल सिद्ध होने से नहीं बच पाया, इसलिये हम ये नहीं कह सकते कि रहमत ने सर्किट में कोई ऐसा डिफेक्ट पैदा किया जो मैग्नेटिक इंटरफरेंस का कारण

बना। सोचने वाली असल बात तो ये है कि ये इंटरफरेंस क़त्ल के दौरान ही क्यों हुआ?”

“इस व्यवधान के कारण केवल तेरहवें सेल का कैमरा प्रभावित हुआ था या
फिर पूरे एसाइलम का?”

“पूरे एसाइलम का।”

अमर खामोश रह गया। थोड़ी देर बाद उसने मेज पर पड़ी दूसरी फाइल पर दृष्टिपात करते हुये पूछा- “फिंगरप्रिंट्स रिपोर्ट्स की क्या कहानी है?”

“रिपोर्ट्स हमारे अनुमान के मुताबिक़ हैं। सेल के दरवाजे और लाश की गर्दन पर रहमत अली के ही फिंगरप्रिन्ट्स हैं।”

“पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट में एक बात और सामने आई है सर। आर्यन की बॉडी में केटामाइन के ट्रेसेज मिले हैं। ये बेहोशी की दवा है, जिसका प्रयोग आम तौर पर तकलीफदेह शल्य चिकित्सा के दौरान किया जाता है। उस पर बुलेट भी चलायी गयी थी, जो उसके कंधे को स्पर्श करती हुयी निकल गयी थी।”

“यानि कि मिसेज दीक्षित सही थीं। यकीनन उनके पति का अपहरण हुआ था।”

“राइट सर!” तारकनाथ थोड़ा उत्साहित हुआ- “अपहरण करने वाला वही शख़्स रहा होगा, जो शायद ये बात जानता था कि उस रात प्रोफेसर शास्त्री की हत्या होने वाली थी। इट मे बी कि वह प्रोफ़ेसर को बचाना चाहता

था और बदले में आर्यन को बलि का बकरा बनाना चाहता था।"

"बात गले से नीचे नहीं उतर रही है तारक।" अमर के होंठ सोंचने की मुद्रा में सिकुड़कर गोल हो गये- "कोई एक पागल की हत्या क्यों करना चाहेगा? और कोई दूसरा शख्स उस पागल को क्यों बचाना चाहेगा? वह भी एक ऐसी योजना के साथ जिसके तहत पहले उसे एक अपहरण करना पड़ा और फिर उस अपहृत को एसाइलम में शिफ्ट करने का जोखिम उठाना पड़ा।"

"इस सवाल का जवाब तो केवल वही शख्स दे सकता है सर जिसने आर्यन को एसाइलम में शिफ्ट किया।"

"शाम की फुटेज में कोई नोटिस की जा सकने वाली गतिविधि नजर आयी है?"

"इसके लिये फुटेज को फिर से चेक करना होगा सर।"

"रहमत अली का क्या स्टेटमेंट है? उसके बयान से ये तो स्पष्ट हो जाना चाहिये कि उसने किसके इशारे पर हत्या की? हत्या उसने प्रोफ़ेसर के धोखे में की, या फिर उसे अदला-बदली के विषय में मालूम था।"

"मुश्किल है सर! उसका जो स्टेटमेंट है, वह हमारे अब तक के पुलिसिया
जीवन का सबसे अजीबोगरीब स्टेटमेंट है।"

"क्या मतलब?"

"वह बार-बार एक ही जुमला दोहरा रहा है कि उसकी आँख लग गयी थी और जब आँख खुली तो उसने खुद को थर्टीन्थ सेल में पाया। उसके कपड़े खून में

सने हुये थे और प्रोफ़ेसर का निर्ममता से कत्ल हो चुका था।"

"तो क्या उसका कहना है कि उसने प्रोफ़ेसर की हत्या सोते वक्त यानि कि नींद में की है?"

"उसका तो ये कहना ही नहीं है कि उसने हत्या की है। वह इस बात पर दहाड़े मार-मार कर रो रहा है कि ड्यूटी पर सो जाने की सजा के रूप में उसे कातिल साबित किया जा रहा है।"

"लगता है तुमने ट्रेनिंग के दौरान थर्ड डिग्री का ढंग से इस्तेमाल करना नहीं सीखा।" अमर ने तनिक रूखे स्वर में कहा।

"ऐसी बात नहीं है सर। जब उसके सुर ही नहीं बदलते हैं तो हमें ऐसा लगने लगता है कि हम पत्थर पर लाठी बरसा रहे हैं।"

"क्या उसे सेल में हुई अदला-बदली के विषय में मालूम था?"

"नहीं, उसे ये नहीं मालूम था। वह तब-तक सेल में हुई हत्या को 'प्रोफ़ेसर की हत्या' कहकर संबोधित करता रहा था, जब तक कि हमने उसे ये नहीं बता दिया कि हतप्राण प्रोफ़ेसर शास्त्री नहीं बल्कि आर्यन है।"

अमर ने एक गहरी सांस ली। अमूमन वह ऐसा तभी करता था, जब उसकी सोच कहीं अटक जाती थी।

"जिस आदमी को तुमने जोशी पर नजर रखने का काम सौंपा था, उसकी क्या रिपोर्ट है?"

"जोशी पुराने खण्डहर गया था। वहां उसने सेलफोन के जरिये किसी से बात करने की कोशिश की थी, लेकिन सफल नहीं हो पाया था। और कुछ देर की प्रतीक्षा के बाद लौट आया था।"

"यानि कि किसी के द्वारा उसे खण्डहर में बुलाया गया था।"

"हो सकता है। वरना ऐसी संदिग्ध परिस्थिति में वह भला खण्डहर क्यों जाता?"

"लेकिन बुलाने वाला उससे मिलने क्यों नहीं आया?"

"शायद उसे आभास हो गया था कि हमारी नजर जोशी पर है।"

"फोनकाल्स ट्रेस करने वाले पैनल की क्या रिपोर्ट है?"

"कुछ खास नहीं। जोशी या एसाइलम के किसी भी कर्मचारी का अभी तक ऐसा कोई भी फोनकॉल ट्रेस नहीं किया जा सका है, जो केस के सम्बन्ध में अहम सुराग दे सके। अभी तक लोगों ने एसाइलम में हुई घटना को लेकर औपचारिक फोनकॉल या फिर पर्सनल फ़ोनकॉल ही अटेंड किये हैं। अज्ञात शख्स ने फोनकॉल के बजाय किसी और जरिये से जोशी तक खण्डहर पहुँचने का सन्देश पहुंचाया था, क्योंकि ट्रेस किये गये फोनकॉल्स में ऐसी किसी सूचना का आदान-प्रदान नहीं है। खण्डहर में पहुँचने के बाद जोशी ने जिस नंबर पर फ़ोन किया था, उस पर कुछ सेकंड तक रिंग जाने के बाद रिंग बंद हो गयी थी। उसके बाद भी जोशी ने कई दफे ट्राई किया था, लेकिन हर

दफे उसे स्विच ऑफ का टोन सुनाई दिया था। इसी कारण वह खण्डहर से बैरंग लिफ़ाफ़े की मानिंद लौट आया था।”

“जिस नंबर पर जोशी ने फोन किया था, उस नंबर की डिटेल्स निकलवा ली तुमने?”

“एक आदमी को मैंने कॉल सेंटर भेजा है सर। वह डिटेल्स लेकर आता ही होगा। वैसे अगर हम चाहे तो इस सिलसिले में जोशी से जवाब-तलब भी कर सकते हैं।”

“अभी नहीं।” अमर ने सोचनीय मुद्रा में कहा- “अभी दो सिक्योरिटी गार्ड्स के स्टेटमेंट्स बाकी हैं। हो सकता है कि उसके बाद अदला-बदली में जोशी या किसी और की भूमिका और अधिक स्पष्ट हो जाये।”

“वे लॉक अप में हैं। उन्हें अभी छुआ भी तक नहीं गया है।”

□□□

उस संगीत में अजीब सी कसक थी, जिसे सुनकर शैल की नींद उचट गयी थी। उसने एक निगाह वाल-क्लॉक पर डाली। रात के दो बज रहे थे। *‘इतनी रात गये पियानो कौन बजा रहा है?’* सोचते हुये वह पलंग से नीचे उतरा।

पियानो की आवाज मरियम के कमरे से आ रही थी। शैल कमरे से बाहर आया। मरियम के कमरे का रास्ता ड्राइंग हाल से होकर जाता था। गोपाल ड्राइंग हाल के सोफे पर पियानो की संगीत से बेखबर होकर सो रहा था। आहट पाकर उसकी नींद खुल गयी।

“कौन?” उसने आँखें मलते हुये पूछा।

"क्या तुम पियानो की आवाज सुन रहे हो?" शैल ने पूछा।

"ह... हाँ!" गोपाल ने अलसाये हुये अंदाज में कहा - "मरियम मैडम होंगी। कभी-कभी जब उन्हें नींद नहीं आती तो मन बहलाने के लिये बजाती हैं।" कहने के बाद उसने फिर से आँखें बंद कर लीं।

पियानो पर कोई दर्दनाक धुन चल रही थी। धुन में समाये हुये अजीब से

आकर्षण के तहत शैल के कदम न चाहते हुये भी मरियम के कमरे की ओर खींचे चले गये।

दरवाजे के दोनों पल्ले आपस में जुड़े हुये थे, जिनके दरार से कमरे की रोशनी बाहर आ रही थी। शैल ने दरवाजे को नॉक किया।

"आ जाओ।" अन्दर से मरियम की आवाज आई।

शैल कमरे में प्रविष्ट हुआ। कमरे की वह खिड़की खुली हुई थी, जो चर्च के पीछे मौजूद कब्रिस्तान की ओर खुलती थी। धवल चांदनी खिड़की के रास्ते बे रोक-टोक कमरे में प्रवेश कर रही थी। साथ ही वह सर्द हवा भी, जिसका मरियम पर लेश मात्र भी असर नहीं हो रहा था। खिड़की से नजर आते दूधिया चाँदनी में नहाये हुये कब्र और उन पर लगे क्रास माहौल को रहस्यमयी बना रहे थे।

खिड़की के पास ही वह पियानो था, जिस पर मरियम की उंगलियाँ थिरक रही थीं। उसका रुख खिड़की की ओर था। शैल के कमरे में दाखिल होने के बाद भी पियानो पर थिरकती उसकी उंगलियाँ नहीं ठहरीं।

करीब से शैल को स्पष्ट हुआ कि पियानो पर जो धुन चल रहा था, उसे वह पहले भी कहीं सुन चुका था। *'कहाँ सुना था?'* ये चाहकर भी न याद कर पाया। उसने मरियम की ओर आहिस्ता कदम बढ़ाया।

ठीक उसी पल पियानो खामोश हुआ और आगे बढ़ने के लिये उठा शैल का कदम यथास्थान पर आ गया। मरियम ने गर्दन पीछे घुमायी और शैल को अपना लहू जमता हुआ महसूस हुआ। उसकी आँखें लाल थीं और लम्बे बाल बिखर कर चेहरे तक आ गये थे। खुली खिड़की के रास्ते अन्दर आ रही सर्द हवा उसके बालों से छेड़खानी कर रही थी।

"नींद नहीं आ रही तुम्हें?"

शैल ने राहत की सांस ली क्योंकि मरियम का लहजा सामान्य था।

"संगीत सुनकर नींद खुल गयी। और फिर बरबस ही इस ओर खींचा चला आया। वैसे पियानो अच्छा बजा लेती हैं आप।"

मरियम कुछ नहीं बोली। वह मुस्कुराते हुये पियानो की कुर्सी से उठी और
खिड़की के निकट पहुँची अब वह सन्नाटे में डूबे कब्रिस्तान को निहार रही थी।

"आपको कब्रिस्तान से डर नहीं लगता? मैंने तो सुना है कि कब्रिस्तान में बेचैन रूहों का वास होता है।"

"बेचैन रूहों का वास कब्रिस्तान में नहीं बल्कि इंसानी जिस्म में होता है।"

मरियम ने बगैर शैल की ओर मुड़े हुये ही कहा- "जैसे कि इस वक्त मेरे अन्दर एक बेचैन रूह है, जो जिस्म के कैद से आजाद होने के लिये छटपटा रही है।"

"उस रूह की छटपटाहट का कारण?"

"तुम नहीं समझ पाओगे।" मरियम ने एक नजर शैल पर डाली और फिर से कब्रिस्तान को घूरने लगी।

"मैं कोशिश करूंगा।"

"उस कोशिश का कोई परिणाम नहीं निकलेगा।"

"फिर भी मैं करना चाहता हूँ।"

मरियम खामोश रही।

"मैं अब-तक आपके और क्षितिज के बारे में केवल इतना ही जान पाया हूँ कि आप दोनों ने एक दूसरे से मोहब्बत की थी। क्षितिज की रहस्यमयी हत्या के कारण वह मोहब्बत अधूरी रह गयी थी। जिसके पूरे होने को लेकर आपने यह धारण पाल रखी है कि क्षितिज का पुनर्जन्म होगा।"

मरियम एक बार फिर खामोश रही।

"आपको शायद एहसास नहीं है कि आप एक ऐसे रास्ते पर हैं, जो इंतज़ार की गलियों से होता हुआ न जाने कितनी दूर तक चला गया है। एक ऐसा सफर तय कर रहीं हैं आप, जिसकी शायद कोई मंजिल नहीं है।"

"स्टॉप इट शैल!" मरियम उग्र स्वर में चीखते हुये उसकी ओर पलटी। शैल को उसकी खूबसूरत आँखों में दहकते शोले दिखाई पड़े- "अगर मेरे सफ़र की कोई मंजिल नहीं है तो तुम यहाँ क्यों आये? जो नाम मेरी

जिन्दगी का हिस्सा है वह आज तुम्हारे लिये एक पहेली क्यों बना हुआ है? रहस्यमयी ख़त में तुम्हें मुझे बताये गये वक्त और तारीख को ही यहाँ आने को क्यों कहा गया?"

शैल के पास इन सवालों का जवाब नहीं था। उसे निरुत्तर पाकर मरियम का लहजा थोड़ा नर्म पड़ा। उसने आगे कहा- "तुम भी उसी नाव में सवार हो शैल जिस नाव में मैं सवार हूँ। फर्क बस इतना है कि मैं अपनी खोयी हुई मोहब्बत तलाश रही हूँ और तुम अपनी खोई हुयी पहचान।"

थोड़ी देर के लिये उन दोनों के बीच खामोशी छा गयी। फिर मरियम ने ही उस खामोशी को तोड़ा- "क्या तुम रेलवे स्टेशन से यहाँ तक के सफ़र के दौरान कार में अकेले थे?"

"नहीं! मेरे साथ तान्या नाम की एक लड़की थी, जो मेंटल एसाइलम के पास
उतर गयी थी।"

मरियम ने व्यग्रता से पहलू बदला।

"क्या हुआ? आप खामोश क्यों हो गयीं?"

"क्या तुमने उससे पूछा था कि वह रेलवे स्टेशन क्यों गयी थी?"

"नहीं! ये तो नहीं पूछा।"

"आगे मैं जो कुछ भी कहूँगी, शायद तुम उस पर यकीन नहीं करोगे।"

"ऐसा क्या कहने वाली हैं आप?"

"वास्तव में तुम्हें कार में कोई मिला ही नहीं था।"

"क्या मतलब?"

"जिसे तुम तान्या समझ रहे हो, दरअसल वह हवा का एक झोंका थी। एक खूबसूरत बला थी, जो इक्कीस साल पहले क़त्ल की जा चुकी है। पूरे रास्ते भर वह सिर्फ तुम्हें ही नजर आयी; ड्राईवर गोपाल को नहीं।"

"त..तान्या...म..मर चुकी है?" शैल स्तब्ध रह गया। पलकें तक झपकाना भूलकर मरियम को ही घूरता रह गया।

"हाँ! उसी रात क़त्ल की जा चुकी है, जिस रात क्षितिज की हत्या हुई।"

"लेकिन..लेकिन मैं कैसे यकीन कर लूं? मैं चार दिन पहले ही उससे मिला हूँ।"

"तुम जिससे मिले थे वह एक बेचैन रूह है, जो आज भी अपने कातिल की तलाश में भटक रही है। वह केवल तुम्हें नजर आयी, इसका मतलब ये है कि तुम उसके लिये महत्व रखते हो। क्यों महत्व रखते हो? क्या महत्व रखते हो? इन सवालों के जवाब भी उतने ही अँधेरे में हैं, जितने अँधेरे में हम दोनों खुद हैं।

"ऐसा कैसे हो सकता है? मुझसे...मुझसे एक रूह ने बातें की?"

मरियम ने कोई जवाब नहीं दिया। उसकी निगाहें कब्र पर ठहरी हुयी थीं।

□□□

मेंटल एसाइलम के तीनों सिक्योरिटी गार्ड्स कांपते हुये कमरे में दाखिल हुये। इंटेरोगेशन रूम कहा जाने वाला वह कमरा माध्यम आकार का था। दीवारों पर लगे पेंट

जगह-जगह से प्लास्टर सहित उखड़ चुके थे। कमरे के मध्य में एक आयताकार मेज था, जिसके उस पार पड़ी कुर्सी पर अमर आसीन था। तारकनाथ भी उसके पास ही खड़ा था। मेज के इस पार पड़ी तीन कुर्सियां खाली थीं।

अमर ने तीनों को उन कुर्सियों पर बैठने का इशारा किया।

"एक-एक करके अपना नाम बताओ?"

"रामपाल!"

"राजेश!"

"रहमत अली!"

"नाईट शिफ्ट में किस तरह ड्यूटी करते हो?" सवाल तारकनाथ ने किया।

"हम एसाइलम के अलग-अलग हिस्सों में पहरा देते हैं!" रामपाल ने कहा।

"कौन किस हिस्से में तैनात रहता है?"

"मैं एसाइलम के पीछे वाली गेट पर, रामपाल मुख्य गेट पर और राजेश एसाइलम के अंदरूनी भाग में होता है।" इस बार रहमत अली ने कहा।

"हत्या की रात एसाइलम में क्या हुआ था?"

"ब.. बहुत विचित्र हुआ साहब। बहुत ही विचित्र।" राजेश ने बुरी तरह घबराते हुये कहा। रामपाल और रहमत के चेहरे से भी दहशत टपकने लगी।

"क्या मतलब?"

"उस वक्त बारह बजे थे साहब, जब मैंने एसाइलम के मेन गेट पर किसी के कदमों की आहट सुनी। मुझे लगा

रात को गश्त करने वाला पुलिस का चौकीदार होगा किन्तु फिर भी मैंने एक बार देख लेना जरूरी समझा। मैं गेट की ओर बढ़ा। वहां पहुँचने पर मुझे अजीब से ठंडेपन का एहसास हुआ।"

"ठण्डेपन का एहसास? यानि कि उससे पहले तुम्हें गर्मी लग रही थी?"

"नहीं साहब! वह अजीब सी सर्दी थी। मैं एसाइलम में पंद्रह सालों से पहरेदारी कर रहा हूँ, लेकिन वैसी सर्दी पहले कभी नहीं महसूस की थी मैंने।"

"क्या खास बात थी उस सर्दी में।"

"बता नहीं सकता साहब। बस इतना समझ लो कि उस सर्दी के चपेट में आने के बाद मेरा बदन कपड़े के अन्दर मौजूद होने के बाद भी किसी मुर्दे के समान ठंडा पड़ गया था। हड्डियां यूं अकड़ रही थीं कि लगने लगा था किसी भी पल भी चटक कर टूट सकती हैं।"

रामपाल की आँखों में खौफ था। उसके हाव-भाव से लग रहा था जैसे क़त्ल
की उस दहशत भरी रात की एक-एक घटना उसके जेहन में सजीव हो उठी हो। तारकनाथ ने अमर पर दृष्टिपात किया। उसका सारा ध्यान रामपाल के चेहरे पर था।

"आगे बोलो।"

"गेट के करीब पहुँचते ही मुझे लगा कि कोई उसे खोलने की कोशिश कर रहा है। मैं सकते में आ गया। जल्दी से गेट तक पहुँचा। मुझे लगा कि गेट हवा के कारण

खड़खड़ाया रहा होगा, लेकिन अगले ही क्षण मैंने महसूस किया कि गेट के पास रूहानी ठण्ड कुछ ज़्यादा ही थी।

"रूहानी ठण्ड?" अमर के माथे पर बल पड़ गये- "किस डिक्शनरी में लिखा है कि तो ठण्ड तुझे लग रही थी, उसे रूहानी ठण्ड कहते हैं?"

रामपाल सकपकाया। उसने अपने दोनों साथियों पर एक नजर डाली और डरते हुये कहा- "मेरे गाँव में ये कहा जाता है साहब कि ऐसी ठण्ड वहां होती है, जहाँ बेचैन रूहें टहलती हैं।"

"ओह!" अमर के कुछ बोलने से पहले ही तारकनाथ व्यंग्यात्मक लहजे में कह उठा- "यानि कि उस रात एसाइलम के गेट पर कोई बेचैन रूह टहल रही थी।"

"ह...हाँ साहब। ऐसा ही था।" रामपाल को लगा कि तारक उसकी बात पर यकीन कर रहा है, इसलिये वह उत्साहित होकर कहता चला गया- "मैंने टॉर्च जलाकर इधर-उधर देखा भी था लेकिन कोई नजर नहीं आया था। कई दफे आवाज भी लगाई थी। मैं डरने लगा था साहब कि तभी मुझे कदमों की आहट फिर से सुनाई दी। मैं तुरंत आहट की दिशा में पलटा और पाया कि वह आहट एसाइलम में दाख़िल होने वाले दरवाजे की ओर बढ़ी चली जा रही थी, किंतु..।"

"किन्तु क्या?"

"आहट लगातार एसाइलम में दाखिल होने वाली दिशा में जा रही थी। मेरे कानों को साफ-साफ सुनाई भी दे रहा

था, किंतु..! किंतु साहब मेरी नज़रों के सामने कोई नहीं था। रुहानी ठण्ड भी अब मुझसे दूर जा रही थी।"

चटाक!

तारकनाथ का थप्पड़ खाकर रामपाल कुर्सी से गिरते-गिरते बचा। उसे थप्पड़ खाता देख बाकी दोनों की घिग्घी बंध गयी।

"हरामजादे! तुझे कहानियाँ सुनाने के लिये पुलिस वाले ही मिले थे?"

"ये कहानी नहीं है साहब। जो रामपाल के साथ हुआ वही मेरे साथ भी हुआ।" इस बार राजेश ने कांपते हुये कहा।

तारकनाथ क्रूर मुखाकृति लिये हुये उसकी ओर बढ़ा।

"ठहरो तारक। इन्हें बोलने दो।"

तारकनाथ के रूकने के बाद अमर राजेश से मुखातिब हुआ-"तुम क्या कह रहे थे?"

"मैं सेकंड फ्लोर के सभी सेलों का मुआयना करने के बाद ग्राउंड फ्लोर के सेलों को देखने रहा था कि तभी मुझे किसी के चलने की आवाज सुनाई पड़ी। मुझे लगा रामपाल होगा, जो हर रोज की तरह टाइमपास के लिये आया होगा। यही सोच कर मैंने आवाज भी लगाई, लेकिन बदले में कोई आवाज नहीं आयी।"

"आगे बोलो।"

"मैं तुरंत ग्राउंड फ्लोर पर पहुँचा और ध्यान लगाकर आहट सुनने लगा। चलने वाला अब उस कॉरिडोर की ओर बढ़ रहा था, जिसके दोनों ओर सेल बने हुये थे। मैं भी

उसी दिशा में बढ़ा। जैसे ही कॉरिडोर में कदम रखा वैसे ही मुझे तेरहवें सेल के पागल के चीखने की आवाज सुनाई दी और फिर थोड़ी ही देर में पूरी गैलरी पागलों के चीखने की ध्वनि से गूँज उठी। पदचाप उन चीखों में ओझल हो गयी। मैं किसी अनहोनी की आशंका से घबरा उठा कि तभी अचानक पागलों का शोर अप्रत्याशित ढंग से बंद हो गया। गैलरी में अब वही रहस्यमय ठंडक व्याप्त थी, जो रामपाल ने एसाइलम के बाहर महसूस की थी। इससे पहले कि मैं कुछ सोच पाता तेरहवें सेल से एक दर्दनाक चीख सुनाई दी। मैं सेल की ओर दौड़ा और...।"

कहने के बाद राजेश ने रहमत अली की ओर देखा, मानो पूछ रहा हो कि आगे का किस्सा बताये या नहीं।

"और तुमने रामपाल को तेरहवें सेल में मौजूद शख्स का खून करते हुये देखा। राइट?"

"नहीं साहब! खून मैंने नहीं किया है?" रहमत लगभग रो पड़ा।

"सीसीटीवी फुटेज में तुम नजर आ रहे हो। हत्प्राण के गले और सेल के दरवाजे के अलावा भी कई जगह से तुम्हारे फिंगरप्रिंट बरामद हुये हैं।"

"मैं नहीं जानता साहब। मैं कुछ भी नहीं जानता।" रहमत इस बार दहाड़े मारकर रो पड़ा- "मैं नहीं जानता कि यह सब कैसे हुआ? मैं तो सो गया था। मैं नहीं जानता कि मैं उस सेल में कैसे पहुंचा? ये खून मैंने नहीं किया है। मैंने नहीं किया है।"

"शांत हो जाओ।"

रहमत चिल्लाता रहा।

"चुप्प!" तारकनाथ एक बार फिर आप खो बैठा।

दहाड़ सुनकर रहमत सहम गया और धीमें स्वर में सुबकने लगा।

"तुमने सेल में क्या देखा था?" अमर, राजेश से मुखातिब हुआ।

"सेल में बंद पागल छटपटा रहा था। उसके गले से चीखें नहीं निकल पा रही थीं। रहमत पास ही खड़ा था। इसके चेहरे पर पैशाचिक हंसी थी। ऐसा लग रहा था जैसे उस पागल को तड़पते हुये देखकर इसे मजा आ रहा था। शायद उस वक्त यह रहमत न होकर कोई और था। मेरी आँखों के सामने ही उस पागल ने आख़िरी हिचकी ली थी। पागल की गर्दन के एक ओर लुढ़कते ही रहमत के हाव-भाव बदल गये। सामने एक लाश और खुद को खून से सना देख यह घबरा कर चिल्लाने लगा। मैं स्तब्ध था। ये देखकर हैरान था कि जो रहमत कुछ देर पहले इस हत्या पर खुश नजर आ रहा था, वह अब भयभीत हो उठा था।"

"वह...वह मैं नहीं था साहब।" रहमत ने एक बार फिर अपने बचाव में दुहाई दिया- "मेरे अन्दर वही रूह घुसी हुई थी, जिसे रामपाल ने गेट से अंदर दाखिल होता महसूस किया था।"

अमर ने उसकी बातों पर कोई विशेष ध्यान नहीं दिया और राजेश को ही लक्ष्य करके कहा- "फिर?"

"एक-एक करके नाईट शिफ्ट के सारे डॉक्टर्स और कर्मचारी जिनके केबिन टॉप फ्लोर पर थे, तेरहवें सेल

में जमा हो गये। आनन-फानन में जोशी साहब को फोन किया गया। हत्या की खबर सुनते ही वे घबरा गये और दस मिनट के अन्दर ही एसाइलम पहुंचे। पहुंचते ही सबसे पहले उन्होंने कैमरे की रिकॉर्डिंग चेक की। वीडियो में हत्या के वक्त की रिकॉर्डिंग नहीं थी। बाद की रिकॉर्डिंग में रहमत लाश के पास डर से चीखता-चिल्लाता नजर आ रहा था। कैमरा साफ़-साफ बता रहा था कि क़त्ल रहमत के ही हाथों हुआ है, इसलिये जोशी साहब ने सीधे पुलिस को फोन कर दिया।"

तारकनाथ की आँखों में वहशी चमक उभरी। चेहरे पर किसी जल्लाद के जैसा भाव लिये हुये वह रहमत के करीब पहुंचा और उसकी आँखों में आँखों डालकर गुर्राया-"तूने सेल में मौजूद आदमी का क़त्ल उसे प्रोफ़ेसर शास्त्री समझकर किया या फिर तुझे मालूम था कि वह आर्यन था?"

रहमत, तारक की शक्ल देख कर हकला उठा।

"मैं...ने...क...कोई...ह..त्या..न...हीं...कि...या। म..मैं तो सो...सो रहा ...था।"

"तो फिर तू लाश के पास कैसे पहुँच गया?"

"मेरे अन्दर वही बेचैन रूह घुस गयी थी, जिसकी मौजूदगी को रामपाल ने मेन गेट पर महसूस किया था। उसी ने मेरे जरिये क़त्ल किया"

इस बार रहमत ने अपने बचने की आस में धाराप्रवाह कह डाला, किन्तु ये बात जुदा थी कि उसके उक्त कथन के बाद तारकनाथ के नथुने क्रोध में फूलने पिचकने लगे थे।

उसने अनगिनत भद्दी गालियाँ बकते हुये रहमत को कुर्सी से उठाकर जमीन पर पटक दिया और बेतहाशा लात-घूंसे बरसाने लगा। कुछ रहमत के ऊलजुलूल बयान का गुस्सा था तो कुछ अमर द्वारा उसके थर्ड डिग्री के तरीके पर किये गये टिप्पणी का असर था, जो वह रहमत पर तब तक लात बरसाता रहा जब तक कि खुद बुरी तरह हांफने नहीं लगा। अमर ने भी उसे रोकने की चेष्टा नहीं की, क्योंकि वह जानता था कि हजम न होने वाली किसी बात को बार-बार सुनने के बाद पागल सांड की तरह आक्रामक हो उठना तारकनाथ का स्वभाव था।

"हरामजादे!" तारकनाथ ने रहमत का गिरेहबान पकड़कर झकझोरते हुये हांफते स्वर में कहा- "अब अगर एक भी बार तूने बेचैन रूह का नाम लिया तो तेरे जिस्म की ऐसी हालत करूंगा कि ये किसी दूसरी रूह तो क्या खुद तेरी रूह के रहने लायक नहीं रहेगा।"

उसने अर्धविक्षिप्त हो चुके रहमत को वापस कुर्सी पर बैठा दिया। मुंह और नाक से बहते खून से उसका चेहरा लाल हो उठा था। अब वह कुछ बोल पाने की दशा में नहीं रह गया था। रहमत की हालत और तारकनाथ का गुस्सा देख राजेश और रामपाल जूड़ी के मरीज की भांति कांपने लगे।

"देख लिया कहानी सुनाने का अंजाम?" अमर ने शांत स्वर में उन दोनों को लक्ष्य करके कहा।

रहमत की तो हालत ही खस्ता थी; राजेश और रामपाल भी खौफ के कारण कुछ नहीं कह सके।

“कहानियां सुनाना बंद करो और सीधे सीधे बताओ कि रहमत ने हत्या क्यों की? तुम लोगों ने सर्किट में ऐसी कौन सी खराबी कर डाली कि कैमरा हत्या के
दृश्य को रिकॉर्ड नहीं कर सका?”

दोनों ही तरद्दुद में फंस कर तारकनाथ का मुंह ताकने लगे, क्योंकि वे अमर से ज्यादा तारक से खौफ खाए हुये थे।

“जवाब दो।” तारकनाथ गुर्राया।

“हमने..हमने तो सबकुछ बता दिया साहब। आप लोग मानो न मानो आपकी
मर्जी।” राजेश ने डरते हुये कहा।

“तुम लोग अच्छी तरह जानते हो कि अगर हमने तुम्हारे बयान पर यकीन नहीं किया तो इस हवालात में तुम्हारी कैसी दुर्गति होगी।” अमर ने गंभीर लहजे में कहा- “तुम जो वाकया बयां कर रहे हो, उस पर कोई भी पढ़ा-लिखा शख्स यकीन नहीं कर सकता। कम से कम पुलिस तो बिल्कुल भी नहीं।”

“हत्या के वक्त ही कैमरा खराब करके हमको क्या मिलता साहब? रहमत तो वैसे भी उस तीसरी आँख से नहीं बच सका। क़त्ल के आरोप में दबोच ही लिया गया। लाश की गर्दन पर सरिया से सुराख किये गये थे, उसका चेहरा बुरी तरह कुचल दिया गया था, जबकि रहमत के पास कोई हथियार तक नहीं था।”

“यही..।” तारकनाथ फिर से आवेशित हुआ- “यही तो कलाकारी की है तुम हरामजादों ने। जिस वक्त कैमरा

आराम फरमा रहा था, उसी दौरान तुम लोगों ने मर्डर वैपन्स को ठिकाने लगा दिया।"

"अगर हमें यही करना होता तो हम कैमरे को केवल पंद्रह मिनट के लिये क्यों खराब करते?"

"तर्कशास्त्री समझता है खुद को?"

राजेश का तर्क सुनते ही तारक बौखला कर आपा खो देने को आतुर हुआ किन्तु अमर का खामोश संकेत पाकर संभल गया।

"क्या तुम्हें मालूम था कि हत्या की रात थर्टीन्थ सेल में जो था वह प्रोफ़ेसर शास्त्री नाम का कोई पागल नहीं बल्कि डॉक्टर आर्यन दीक्षित नाम का एक असिस्टेंट प्रोफ़ेसर था?" सवाल अमर ने किया।

'नहीं साहब!" जवाब रामपाल ने दिया- "ये बात तो हमें हवालात में पता चली कि जो मरा है वह कोई पागल नहीं बल्कि एक सामान्य इंसान है।"

"मतलब जानते हो इसका?"

दोनों खामोश रहे।

"मतलब ये है कि सेल से पागल को निकाला गया था और एक नार्मल इंसान
को रखा गया था।"

"इस बारे में हमें कुछ नहीं मालूम साहब।"

"तो फिर जो मालूम है वही बता दो। जिस रात हत्या हुई थी उसके दिन में यानि कि तीस अक्टूबर को तुमने एसाइलम में ऐसा कुछ देखा था, जो तुम्हारे
अनुसार वहां के डेली रूटीन से अलग था?"

"एक बात थी जो एसाइलम के रूटीन से बिल्कुल अलग थी।" रामपाल ने कहा।

"क्या?"

"दिन में ड्यूटी करने वाले जोशी साहब समेत एसाइलम के सारे स्टॉफ मेम्बर शाम पाँच बजे तक चले जाते हैं। रात को एसाइलम में हम तीनों, कुछ डॉक्टर्स और वार्डबॉयज के अलावा कोई नहीं होता है। उस दिन रात के दस बज गये थे, किन्तु जोशी साहब एसाइलम से नहीं गये थे। वे अपने केबिन में बैठे हुये थे, शायद किसी का इंतज़ार कर रहे थे।"

"तुम्हें कैसे पता कि जोशी किसी का इंतज़ार कर रहा था?"

"उस रात दस बजे के बाद एक कार एसाइलम आयी थी।" रामपाल ने कहा- "कार से उतरे आदमी ने मुझसे जोशी साहब के केबिन का पता पूछा था।"

"क्या तुम उसे जानते थे?"

"जानता तो नहीं साहब लेकिन पहचानता जरूर था। वह पहले भी एसाइलम में एक दो बार आ चुका था। यदि वह दोबारा मेरे सामने आ जायेगा तो जरूर पहचान लूँगा।"

"फिर क्या हुआ?"

"उसके बाद मैंने इस बात पर विशेष गौर नहीं किया साहब, लेकिन पंद्रह मिनट बाद ही उस कार को लौटते देखा था।"

अमर ने तारकनाथ की ओर देखा।

"दस बजे के फुटेज में एसाइलम के कंपाउंड में एक वाइट इंडिगो को दाखिल होते हुये कैप्चर किया गया है।" तारकनाथ ने बताया।

"ब्लैक आउट का पीरियड क्या था?"

"साढ़े दस से पौने ग्यारह।"

"यानि कि अदला-बदली इसी ब्लैक आउट के दौरान हुई।" कहते हुये अमर, रामपाल से मुखातिब हुआ- "क्या उस आदमी को पहचान सकते हो?"

"जी..जी साहब!"

"वैरी गुड!" अमर उत्साहित अवस्था में तारकनाथ की ओर पलटा- "फुटेज को फिर से चेक करो। यदि इंडिगो की नंबर प्लेट नजर आ रही हो तो उसकी मदद से ओनर की डिटेल निकलवाओ। कार से उतरने वाले आदमी की फोटो जारी कर दो और जोशी को एक बार फिर इंटेरोगेशन के लिये आमंत्रित करो।"

आदेशों की श्रृंखला समाप्त करने के बाद तारकनाथ ने कुर्सी छोड़ दिया।

□□□

छत पर खड़ी मरियम पश्चिम की ओर देख रही थी। संध्या काल होने के कारण अस्ताचल सिंदूरी हो उठा था। यद्यपि शाम ख़ूबसूरत थी किन्तु मरियम के मस्तिष्क में विचारों की आंधी थी। उसकी तवज्जो शाम की खूबसूरती की ओर नहीं बल्कि उन सवालों की ओर थी, जो शैल नाम के एक लडके के कारण वजूद में आये थे।

"मैडम कहाँ हैं आप?"

अचानक गोपाल की चीख सुन कर उसके विचारों की श्रृंखला तार-तार हो गयी। वह प्रार्थना हाल में से ही हलक फाड़ कर चिल्लाया था। शायद बुरी तरह घबराया हुआ भी था, क्योंकि मरियम के प्रार्थना हाल तक पहुँचने के दरम्यान वह कई दफे चीख चुका था। अंततः मरियम को कहना पड़ा- "आ रही हूँ। आखिर हुआ क्या है?"

प्रार्थना हाल में कदम रखते ही मरियम को अपने सवाल का जवाब मिल गया। गोपाल दरवाजे पर था। निश्चेत शैल को उसने कन्धों के सहारे खड़ा किया हुआ था, किन्तु इस काम में उसे काफी मशक्कत का सामना करना पड़ रहा था।

"क्या..क्या हुआ इसे?"

"अनर्थ हो गया मैडम। बहुत बड़ा अनर्थ हो गया।"

गोपाल ने हांफते हुये कहा और शैल के जिस्म को एक बेंच पर इस कदर टिकाया मानो वह कांच की मूर्ति हो।

"इसे..इसे हुआ क्या?" मरियम दौड़ते हुये शैल के पास आयी।

"इसे छूकर देखिये मैडम।"

शैल के माथे पर हथेली रखते ही मरियम को मानो चार सौ चालीस वोल्ट का झटका लगा। उसने घबराकर गोपाल की ओर देखा और फिर शैल के बाकी अंगों को स्पर्श करते हुये बदहवास लहजे में बोली- "इसका...इसका जिस्म इतना ठंडा क्यों है?"

"इसकी नब्ज और धड़कनें भी चेक कर लीजिये मैडम।"

"क्या अनाप-शनाप बके जा रहे हो तुम?"

मरियम ने क्रोधमिश्रित स्वर में कहा और पागलों की तरह शैल के सीने से कान लगाकर उसकी धड़कनें सुनने की कोशिश करने लगी। थोड़ी देर तक ऐसा करने के बाद उसने नब्ज टटोली और फिर लगभग रोनी सूरत लिये हुये गोपाल को झकझोर डाली- "क्या हुआ इसे? इसकी धड़कनें खामोश और नब्ज लापता क्यों है? इसका..इसका जिस्म मुर्दे के समान ठंडा क्यों है?"

"मुझे कुछ नहीं मालूम मैडम। मैं कुछ नहीं जानता। मैंने इन्हें चर्च से थोड़ी ही दूर पर लड़खड़ाकर गिरते हुये देखा। ऐसा लग रहा था जैसे ये किसी से बचकर भाग रहे हों। जब तक मैं इनके पास पहुंचा तब तक ये आधी चेतना गवां चुके थे। इन्हें संभालने की कोशिश के दौरान मैंने पाया कि इनका जिस्म पूरी तरह ठंडा पड़ता जा रहा था। नब्ज भी धीरे-धीरे क्षीण पड़ती जा रही थी और इनकी लड़खड़ाती जुबान से केवल 'कविता' शब्द निकल रहा था। मैंने इन्हें अपने कंधे का सहारा देकर उठाया। यहाँ आने के दौरान रास्ते में ही इनकी जुबान खामोश हो गयी और गर्दन एक ओर को लटक गयी।

"नहीं!" मरियम ने चीख कर अपने दोनों कानों पर हथेली रख ली- "ये नहीं हो सकता। ये कभी नहीं हो

सकता। इसने 'कविता' नाम लिया था। मौत इसे अपने पास कैसे बुला सकती है?"

"मैं डॉक्टर को फोन करूं मैडम?"

"नहीं!" मरियम ने दृढ़ लहजे में कहा- "शैल को डॉक्टर की जरूरत नहीं है।"

"तो फिर किसकी जरूरत है मैडम?"

मरियम ने अपने आंसू पोंछ डाले। मानो किसी अदृश्य प्रेरणा के कारण उसके मन में यह विश्वास जागृत हो उठा कि शैल का जिन्दगी से नाता टूटा नहीं है।

"फादर डिकोस्टा को फोन करो।"

"उन्हें? लेकिन उन्हें क्यों मैडम?"

"सवाल मत करो। तुम फादर को फोन लगाओ।"

"लेकिन..।" मरियम के निर्णय से गोपाल विचलित नजर आने लगा था- "लेकिन मैडम इनकी हालत गंभीर है। नब्ज जा चुकी है। जिस्म ठंडा हो चुका है। इन्हें तुरंत उपचार की जरूरत है। फादर तो शिमला में हैं। उन्हें यहाँ पहुँचने में

आधी रात या सुबह भी हो सकती है।"

"तुम फादर को फोन करो। मैं जानती हूँ कि इसे कुछ नहीं होगा।"

हालांकि गोपाल मरियम के निर्णय से असंतुष्ट था, किन्तु उसके कुपित हो उठने के भय से उसने आगे कुछ नहीं कहा और अनमने ढंग से लैंडलाइन की

और बढ़ा।

□□□

कार चर्च के ठीक सामने आकर रुकी। गोपाल ने आगे बढ़कर पिछली सीट का गेट खोला। फादर के उतरते ही ड्राईवर ने गाड़ी आगे बढ़ा दी, क्योंकि गैराज चर्च के कंपाउंड में बने सर्वेंट क्वार्टर्स के पास था।

"वह लड़का कहाँ है?" आगवानी के लिये आगे बढे मरियम से फादर ने पूछा।

"गेस्ट रुम में।"

"यानि कि चर्च में ही है।"

"जी हाँ फादर।"

सामान उतरवाने में ड्राईवर की मदद करने के लिये गोपाल गैराज की ओर बढ़ गया।

"थैंक्स फॉर कमिंग फादर!"

"इट्स माय प्लेजर डिअर।"

लम्बे-लम्बे डग भरते हुये दोनों ने प्रार्थना हाल पार किया। शैल के कमरे में दाखिल होते वक्त मरियम का दिल जोरों से धड़क रहा था।

शैल बिस्तर पर था।

शाम की स्थिति में अभी तक कोई सुधार नहीं आया था। मरणासन्न शैल की हालत पर भयभीत होकर गोपाल ने कई दफे डॉक्टर को बुलाने का प्रस्ताव मरियम के सामने रखा था, किन्तु न जाने किस वजह के तहत मरियम के मस्तिष्क में यह विश्वास जन्म ले चुका था कि शैल को डॉक्टर की नहीं पादरी की जरूरत है।

"तुम यहीं रुको।"

फादर ने मरियम को दरवाजे पर ही ठहरने को कहा और खुद शैल के नजदीक पहुंचे। एक-एक करके उसकी पुतलियों का मुआयना किया और मरियम की ओर देखा। तत्पश्चात गले से लटके क्रॉस को निकालकर उसकी दोनों भौंहों के मध्य टिका दिया। कुछ मिनट तक प्रतिक्रिया का इंतज़ार किया, किन्तु निश्चल पड़े जिस्म में कोई हलचल नहीं हुई। अंततः उन्होंने क्रॉस हटा लिया और उसे पुनः गले में धारण करने के पश्चात लगभग पांच मिनट तक प्रार्थना किया।

उपर्युक्त क्रियाकलापों के बाद वे चहलकदमी करते हुये मरियम के पास पहुंचे।

“खबर अच्छी है। ये पजेस्ड नहीं है।”

“तो फिर इसकी ये हालत।”

“इसकी हालत का जिम्मेदार पजेसन को नहीं ठहराया जा सकता।”

“ये..ये जिन्दा तो है न?” मरियम ने शंकित लहजे में पूछा।

“ऑफ़कोर्स! ही इज अलाइव।”

“अगर ये जिन्दा है तो इसका जिस्म इतना ठंडा क्यों है? इसकी धड़कनें खामोश क्यों हैं? नब्ज रुकी हुई क्यों है?”

“इसकी वजह कोई असाधारण घटना है।”

“असाधारण घटना मतलब?” मरियम के माथे पर सिलवटें उभरीं।

“डोंट वरी माय चाइल्ड।” फादर ने मरियम के कंधे पर हाथ रखा- “मैंने प्रे कर दिया है। सुबह तक इसकी कंडीशन

नार्मल हो जायेगी। होश में आने पर यह खुद बताएगा कि इसके साथ क्या हुआ था।"

मरियम, फादर को लिये हुये ड्राइंग रूम में आयी।

"क्या ये वही है?" फादर ने सोफे पर आसीन होते हुये कहा।

"हाँ!" मरियम ने संक्षिप्त उत्तर दिया।

फादर ने थोड़ी देर तक कुछ सोचा और फिर उन्होंने मरियम को इस कदर देखा मानो कुछ ऐसा बोलने जा रहे हों जो उसके लिये अप्रिय हो।

"देखो मरियम! ऐसा कहकर मैं तुम्हारे विश्वास को कोई ठेस नहीं पहुँचाना चाहता, किन्तु सच यही है कि क्रिश्चियनिटी रिइनकारनेशन में यकीन नहीं करता। *'क्षितिज एक नये जन्म में लौटेगा'* तुम्हारी यह आस धार्मिक मान्यता के विरुध्द है। एक ईसाई होकर तुम पुनर्जन्म में यकीन कर रही हो?"

"मेरा यकीन किसी धार्मिक मान्यता से नहीं बंधा है फादर। ये क्षितिज के उस आख़िरी वादे से बंधा है, जो उसने मुझसे किया था। फिर से लौट आने का वादा। आप से बेहतर ये कौन जान सकता है कि इक्कीस साल पहले मेरे साथ क्या हुआ था और किन परिस्थितियों में मुझे ईसाईयत को अपनाना पड़ा। जब मैं सब कुछ गंवाकर इस संसार में अकेली हो गयी थी, तो आपकी और फादर जोसेफ की सहायता से बिशप ने मुझे चर्च में रहने की परमीशन दी थी, किन्तु उनकी शर्त ये थी कि मुझे हिन्दू से ईसाई बनना होगा।"

फादर खामोश हो गये। उन्होंने मध्यमा उंगली से चश्मे को दुरुस्त किया और सोफे से उठकर दोनों हाथ पीछे किया हुये चहलकदमी करने लगे।

"क्या सोचने लगे फादर?" लम्बी खामोशी को मरियम ने भंग किया।

"यही कि क्षितिज ने तुमसे एक असंभव वादा करके तुम्हारे भीतर ये विश्वास क्यों जगाया कि वह एक नया जन्म लेकर तुमसे मिलेगा? साइंस का रिसर्च स्कॉलर होकर भी उसने तुम्हें रिइनकारनेशन जैसी अमान्य थ्योरी पर यकीन करने को क्यों कहा?"

"क्योंकि वह रिइनकारनेशन पर यकीन करने लगा था।"

"क्यों?" फादर ठहर गये और नजरें मरियम पर टिकाये हुये कहा- "ऐसा क्या हुआ था कि वह इस पर यकीन करने लगा था?"

"कोई नहीं जानता। कोई भी नहीं जानता कि क्षितिज के साथ क्या हुआ था। इक्तीस अक्टूबर सन चौरानबे की शाम रेहान मेरे पास आया था, क्षितिज के इस सन्देश के साथ कि वह इस चर्च में मुझसे शादी करना चाहता है, लेकिन जब मैं चर्च पहुँची थी तो मेरा सामना उस शैतान से हुआ था, जिसका नाम लेना भी मैं गुनाह समझती हूँ।"

"क्षितिज इक्कीस साल बाद नये रूप में लौटेगा, ऐसा तुमसे रेहान ने ही कहा था न?"

"हाँ!"

"तो फिर रेहान ने तुमसे झूठ बोला था। क्षितिज ने ऐसा कोई भी वादा तुमसे नहीं किया था, जो तुम्हें इस चर्च में नन के रुप में रहने को विवश करता। तुम पर उस रात दोहरे आघात हुये थे। तुम क्षितिज के साथ-साथ अपने परिवार को भी खो चुकी थी, तुम्हारे लिये खुद को संभालना मुश्किल होता, इसलिये रेहान ने तुम्हें जीने के लिये एक झूठी उम्मीद दी थी।"

"नहीं फादर!" मरियम के चेहरे पर सख्त प्रतिरोध के भाव उभरे और वह सोफे से उठ खड़ी हुई- "रेहान ने मुझसे झूठ नहीं कहा था। उस रात इस चर्च में जो कुछ हुआ था, उसे अगर आपने अपनी आँखों से देखा होता तो शायद ऐसा कभी नहीं कहते। अगर ये लड़का क्षितिज नहीं है तो इसे क्षितिज से जुड़े सपने क्यों आते हैं? रेहान के बताये हुये तारीख और समय को ही ये यहाँ क्यों आया? इसे अपने नाम में झूठ और क्षितिज नाम में सच क्यों नजर आ आता है? गोपाल के सामने निश्चेत होने के दौरान इसके होठों से कविता नाम क्यों निकला? स्टेशन से यहाँ आने के दौरान तान्या के सूक्ष्म शरीर ने इससे बातें क्यों की?"

फादर को एक बार फिर खामोश रह जाना पड़ा। उन्हें महसूस हो रहा था कि
मरियम के विश्वास से लड़ना आसान नहीं था।

"ये लड़का किन परिस्थितियों में यहाँ पहुंचा है?"

मरियम ने अब तक के पूरे घटनाक्रम को बयां कर दिया। सुनकर डिकोस्टा ने गहरी साँस ली।

"अगर ये लड़का क्षितिज का पुनर्जन्म है तो इसे कुछ याद क्यों नहीं आ रहा है? पुनर्जन्म को लेकर प्रचलित मान्यताओं के अनुसार इस चर्च में आने, तुमसे मिलने और क्षितिज के रूप में पूर्वजन्म की अपनी तस्वीर देखने के बाद तो इसे सब-कुछ याद या जाना चाहिये था।"

"यही तो मेरी निराशा का कारण है फादर।" मरियम ने हताश लहजे में कहा- "शैल को कुछ याद क्यों नहीं आ रहा है। यह किसी रहस्यमयी द्वंद्व से क्यों जूझ रहा है?"

"इन सवालों का जवाब यही है कि शैल, क्षितिज का पुनर्जन्म है ही नहीं। वह किन्हीं रहस्यमय कारणों से क्षितिज से जुड़ा जरूर है, किन्तु वह कारण पुनर्जन्म नहीं हो सकता है।"

"शैल के साथ गुजरे हुये शाम को ऐसा क्या हुआ था फादर, जो वह मरणासन्न अवस्था में पहुँच गया?"

"वह किसी शैतानी गतिविधि का शिकार हुआ था।"

"शैतानी गतिविधि?" मरियम के रोंगटे खड़े हो गये।

"हाँ! हालांकि वह पजेस्ड नहीं हुआ, किन्तु शैतान के हमले का शिकार जरूर हुआ है। उसकी आँखों में मुझे लिलिथ[1] का प्रभाव नजर आया था। उसके माथे पर क्रॉस रखते ही क्रॉस जलने लगा था।"

मरियम के चेहरे पर चिंता के गहन बादल मंडराये।

"शैल को कब तक होश आ जायेगा?"

"घबराने के बात नहीं है। जीजस उसके साथ हैं। सुबह तक वह नार्मल हो जायेगा। हमें उसके होश में आने का इंतजार करना चाहिये। वह स्वयं बताएगा कि

उसके साथ क्या हुआ था।"

मरियम ने खामोश प्रतिक्रिया व्यक्त की।

□□□

"अब तो ये आईने की तरह साफ़ है कि एसाइलम में अदला-बदली जोशी के ही इशारे पर हुई थी। और उस दौरान हुई जब एसाइलम में पंद्रह मिनट के लिये ब्लैकआउट हुआ।"

अमर ने बगल की सीट पर बैठे तारकनाथ से कहा। जीप आर्यन के घर की ओर दौड़ रही थी।

"लेकिन सर हैरानी की बात तो ये है कि जोशी ने इस ऑफर को कबूल क्यों किया?"

"क्योंकि उसे नहीं पता था कि जो नया आदमी सेल में लाया जा रहा था, वह क़त्ल के लिये लाया जा रहा था। शायद ऑफर देने वाले ने उसे अदला-बदली की कोई अन्य वजह बताई रही होगी।"

"इसका मतलब कि शायद कोई है, जिसे मालूम था कि तीस अक्टूबर की रात पागल प्रोफ़ेसर का क़त्ल होने वाला था, इसलिये उसने प्रोफ़ेसर को एसाइलम से निकाला और उनकी जगह पर मरने के लिये आर्यन को शिफ्ट कर दिया।"

"फिलहाल तो ऐसा ही लगता है। लेकिन इक्कीस साल के लम्बे गैप के बाद पागल प्रोफ़ेसर का ऐसा कौन सा दुश्मन पैदा हो गया, जिसने उन्हें क़त्ल करने के लिये रहमत अली को खरीदा और ऐसा कौन सा हमदर्द पैदा हो गया, जिसने उन्हें बचाने के लिये जोशी को खरीदा?"

"जितनी आसानी से रहमत अली एक कातिल के रूप में हमारे शिकंजे में है, उससे साफ़ जाहिर है कि उसने बिना किसी प्लानिंग के हत्या की है। किसी ऐसे शख्स से जो एसाइलम का कर्मचारी हो, हम ये अपेक्षा नहीं रख सकते कि वह बिना किसी प्लान के एसाइलम में कोई मर्डर करेगा।" तारकनाथ ने चेहरे पर असमंजस के भाव लिये हुये अमर की ओर देखा और आगे कहा- "मुझे लगता है कि रहमत को क़त्ल करने के लिये खरीदा नहीं गया था।"

"तो क्या उसने अपनी कोई व्यक्तिगत खुन्नस निकालने के लिये एक पागल की हत्या कर दी?"

"नहीं! उसकी तो प्रोफ़ेसर से कोई दुश्मनी ही नहीं थी।"

"तो फिर? जब सीसीटीवी फुटेज में क़त्ल के तुरंत बाद नजर आ रही रहमत की अवस्था चीख-चीख कर उसे ही कातिल ठहरा रही है, तो अब अचानक तुम्हें ऐसा क्यों लगने लगा कि उसे क़त्ल के लिये खरीदा नहीं गया था? कहीं तुम भी उसके इस बयान पर यकीन तो नहीं करने लगे कि उसके अन्दर कोई बेचैन रूह घुस गयी थी?"

कहने के बाद अमर ने जोरदार ठहाका लगाया लेकिन तारकनाथ ने उन ठहाकों में उसका साथ नहीं दिया। वह विचित्र दुविधा में फंसा नजर आ रहा था। जब वह काफी देर तक खुद में ही उलझा रहा तो अमर ने पूछा- "क्या सोचने लगे?"

"मैं इस बात पर नहीं विचार कर रहा हूँ सर कि रहमत का बयान सच है या झूठ? मेरा ध्यान बार-बार पोस्टमार्टम रिपोर्ट और कैमरों के एब्नार्मल बिहेविअर की ओर जा रहा

है। अगर हत्यारा रहमत अली है तो पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट में सरिया जैसे जिन इंसानी नाखूनों का जिक्र है वे किसके हैं? इतना तो तय हैं कि वे रहमत अली के नहीं हो सकते। और फिर अचानक ऐसा कौन सा मैग्नेटिक इंटरफरेंस पैदा हो गया, जिसके कारण कैमरे अंधे हो गये और हत्या के दृश्य को न देख सके?"

"यही तो गुत्थी है, जो तब तक नहीं सुलझ सकती जब तक कि असली जालसाज हमारी गिरफ्त में नहीं आ जाता। मौजूदा समय में हमारे पास आगे बढ़ने के पर्याप्त रास्ते हैं। सीसीटीवी फुटेज में जोशी से मिलने आये शख्स का न केवल पूरा चेहरा क्लियर दिख रहा है बल्कि संयोगवश गाड़ी के नंबर प्लेट को भी कैमरे ने ठीक से कवर किया है। उसके शिकंजे में आते ही गुत्थियां सुलझ जायेंगी।"

"गुत्थियां शायद तब भी नहीं सुलझेंगी सर।"

"तुम्हें ऐसा क्यों लग रहा है?"

तारकनाथ फिर से दुविधा में फंसा नजर आने लगा। वह शायद अमर के सामने अपने विचारों को रखने में संकोच का अनुभव कर रहा था। अंतत: उसने कहा- "हालाँकि कल रहमत के बयान को सुनकर मैं आपे से बाहर हो गया था, किन्तु दिमाग स्थिर होने पर जब मैंने पोस्टमार्टम रिपोर्ट, सीसीटीवी फुटेज और उसके बयान को एक साथ रखकर देखा तो दिमाग अनायास ही उन बातों की ओर चला गया, जिन्हें मैंने आज तक कभी तवज्जो नहीं दी थी।"

"कैसी बातें?"

"सीसीटीवी फुटेज को लेकर किये गये इन्टरनेट सर्च में मुझे पता चला कि
कैमरों के काम में रुकावट डालने वाले ऐसे मैग्नेटिक इंटरफरेंसेज, जो बिना किसी सर्किट फाल्ट के जेनेरेट होते हैं, साधारण नहीं होते। ये इंटरफरेंसेज स्ट्रांग मैग्नेटिक फील्ड के कारण उत्पन्न होते हैं।" कहने के बाद तारकनाथ थोड़ा रुका और दबे स्वर में बोला- "यूएस के पैरानॉर्मल रिसर्चर ये मानते हैं कि इंसान की मेटाफिजिकल बॉडी यानि कि आत्मा शरीर से बाहर निकलने के बाद मैग्नेटिक फील्ड के रूप में ब्रह्माण्ड में विचरती है।"

"ओह!" अमर ने मुंह बिचकाया- "तो तुम ये कहना चाहते हो कि उस रात एसाइलम में कोई आत्मा...ओह सॉरी! कोई स्ट्रांग मैग्नेटिक फील्ड टहल रहा था?"

"सर मैं खुद भी ऐसी बातों पर यकीन नहीं करता, लेकिन मुझे इंटरनेट पर कुछ रेफरेन्स मिले हैं, जो इस दिशा में सोचने को मजबूर करते हैं। मैंने ऐसी जानकारियाँ रखने वाले कई युआरएल को बुकमार्क किया है। आप चाहे तो उन्हें देख सकते हैं। उन रेफरेन्सेज के अनुसार ब्रेन हमारी बॉडी में इलेक्ट्रिक फील्ड जेनेरेट करता है, जो आत्मा के रूप में बॉडी में पहले से ही मौजूद मैग्नेटिक फील्ड से संयुक्त होकर इलेक्ट्रोमैग्नेटिक वाइब्रेशन्स पैदा करता है। ये वाइब्रेशन्स ही हमें ज़िंदा रखते हैं। जब मेटाफिजिकल बॉडी, फिजिकल बॉडी से अलग हो जाती है तो मैग्नेटिक फील्ड के अभाव में इलेक्ट्रोमैग्नेटिक वाइब्रेशन्स जेनेरेट नहीं हो पाते। यही अवस्था मौत कहलाती है। डेवलप्ड

कन्ट्रीज में वैज्ञानिक तर्कों के आधार पर ऐसे कई सिद्धांत बनाये गये हैं, जो पैरानॉर्मल घटनाओं की व्याख्या में अहम भूमिका निभाते हैं। पैरानॉर्मल केसेज हैंडल करने वालों को वहां पैरानॉर्मल स्पेशलिस्ट कहा जाता है।"

"प्लीज तारकनाथ!" अमर के सख्त लहजे में कहा- "साइंस की मदद से सुपरस्टेटस को जस्टिफाई करने की कोशिश मत करो। अमेरिका हॉरर फिल्मों और उपन्यासों का एक बड़ा बाजार है, इसलिये वहां पर ऐसे काल्पनिक सिद्धांत रोज बनते बिगड़ते रहते हैं। टेक्नोलॉजी के एडवांस होने के बाद क्राइम करने के तरीके भी एडवांस हो गये हैं। पागल प्रोफ़ेसर की हत्या के ख्वाहिशमंद ने भी रहमत को ऐसी ही कोई टेक्नोलॉजी मुहैया कराई रही होगी, जिसकी मदद से उसने 'स्ट्रांग मैग्नेटिक फील्ड' जेनेरेट करके कैमरों को अंधा कर दिया।"

अमर ने 'स्ट्रांग मैग्नेटिक फील्ड' पर जोर देते हुये कहा। हालाँकि तारकनाथ के पास उसके इस तर्क को काटने के लिये पर्याप्त तर्क थे, किन्तु उसके मौजूदा तेवर देख कर वह कुछ नहीं बोल सका। उन दोनों की वार्तालाप यहीं पर समाप्त हो गयी, क्योंकि वे आर्यन के घर पहुँच चुके थे, जहाँ उन्हें मधु का बयान लेना था।

पुलिस की जीप विशाल गेट को पार करके कंपाउंड में दाखिल हुई। बंगला मातमी रंग में रंगा हुआ था। लॉन में लगे खूबसूरत फूल मुरझा गये थे। बाल्कनी में सन्नाटा फैला हुआ था।

अमर और तारकनाथ जीप से उतरे। ड्राईवर को गाड़ी में ही रुकने का संकेत देकर वे दरवाजे पर पहुंचे। डोरबेल बजाने के थोड़ी देर बाद दरवाजा खुला।

“मिसेज दीक्षित से कुछ पूछताछ करनी है?” तारकनाथ ने दरवाजा खोलने वाली उस महिला से पूछा, जो शायद मेड थी।

“आप लोग बैठिये। मैं बुलाती हूँ।”

उन दोनों को ज़्यादा इंतज़ार नहीं करना पड़ा, क्योंकि थोड़ी देर बाद ही मधु ड्राइंग हाल में नजर आई। उसने आते ही बिना कोई औपचारिकता निभाए हुये कहा- “क्या पूछना है आप लोगों को?”

मधु का रुखापन अमर और तारकनाथ को स्वाभाविक नहीं लगा।

“देखिये।” अमर ने शालीनतापूर्वक कहा- “हमें मालूम है कि आप अपने पति की गुमशुदगी की रिपोर्ट दर्ज कराने पुलिस स्टेशन आयी थी, किन्तु उसी दिन से हम जिस केस में उलझे हुये हैं, उसके बारे में आप अच्छी तरह जानती हैं। इससे पहले कि हम आपकी रिपोर्ट पर गौर करते, हमें ये पता चल गया कि एसाइलम में कत्ल किया गया इंसान प्रोफेसर शास्त्री नहीं बल्कि आपके पति डॉक्टर आर्यन दीक्षित थे। अगर रिपोर्ट लिखने वाले के रवैये से आपको कोई शिकायत है तो हम उसके लिये क्षमाप्रार्थी हैं।”

“मेरे पति जिस परिस्थिति में अपने बेडरूम से गायब हुये, उसे मैं अपने ऍफ़आईआर में दर्ज करा चुकी हूँ।”

"हम उस बारे में कोई सवाल नहीं पूछेंगे।" अमर ने कहा- "आपके पति की एक सोची-समझी साजिश के तहत हत्या की गयी है। जिस रात वे गायब हुये, उस रात की सुबह एसाइलम में उनकी लाश पायी गयी। क्या इस सनसनीखेज वाकया को सुनकर, जो विचार हमारे सर का दर्द बने हुये हैं, वे कभी आपके जेहन में नहीं आये?"

मधु कुछ नहीं बोली। उसके चेहरे के भाव सामान्य हो गये थे, लेकिन गमों का जो पहाड़ उस पर कहर बनकर टूटा था, उसके स्वाभाविक पदचिह्न अब भी
अपनी जगह पर विद्यमान थे।

"आपके पति की अजीबोगरीब स्थिति में हत्या हुई है।" तारकनाथ ने कहा- "हम ये नहीं समझ पा रहे हैं कि उन्हें क़त्ल करने के लिये एसाइलम में क्यों शिफ्ट किया गया? उनका ऐसा कौन सा दुश्मन था, जो उन्हें ज़िंदा नहीं देखना चाहता था? इन्हीं सवालों का जवाब ढूँढने के सिलसिले में हम स्वर्गीय दीक्षित साहब के बैकग्राउंड के बारे में जानना चाहते हैं। हो सकता है कि हमें आप दोनों की निजी जिन्दगी के बारे में कुछ सवाल पूछने पड़े।"

"क्या जानना चाहते है आप?"

"मिस्टर दीक्षित की किसी से दुश्मनी थी? आई मीन कोई पुरानी रंजिश?"

"नहीं! वे एक सुलझे हुये इंसान थे। यूनिवर्सिटी में स्टूडेंट्स के बीच एक पॉपुलर टीचर के रूप में मशहूर थे। जहाँ तक मुझे याद है; उनके जीवन में ऐसा कोई भी शख्स नहीं था, जिसे उनके जीवित रहने से कोई प्रॉब्लम होती।"

"आपने शायद ध्यान नहीं दिया मिसेज दीक्षित कि मैंने अपने सवाल में पुराने रंजिश की संभावना व्यक्त की है।"

"हमारी शादी के पंद्रह साल हो चुके थे। इन पंद्रह सालों में उन्होंने कभी भी मुझसे किसी नये-पुराने विवाद का जिक्र नहीं किया था। जहाँ तक मैं अपने पति को जानती थी, उसके अनुसार 'विवाद' शब्द कभी उनके जीवन का हिस्सा ही नहीं रहा।"

"आप दोनों का दांम्पत्य जीवन कैसा था?"

अमर द्वारा अकस्मात पूछे गये इस निजी सवाल से मधु के चेहरे पर सख्त भाव उभरे।

"इस सवाल का मेरे पति की हत्या से क्या सम्बन्ध है?"

"इन्वेस्टिगेशन का मतलब होता है बिखरी हुई कड़ियों को जोड़ना। कब कौन सी कड़ी हत्यारे के गले का फंदा बन जायेगी, इन बारे में कुछ कहा नहीं जा सकता। आप हमारे सवालों के जवाब देती जाइए। उनका इन्वेस्टिगेशन से क्या ताल्लुक है? ये हमें मालूम है।"

मधु असहज हुई और पूर्व की अपेक्षाकृत धीमें स्वर में बोली- "हम दोनों के बीच कोई तीसरा भी था।"

"तीसरा भी था?" इससे पहले कि अमर कोई प्रतिक्रिया व्यक्त करता तारकनाथ चौंका- "यानि कि आपके पति का किसी के साथ अफेयर था?"

"आप चौंक क्यों रहे हैं? पति-पत्नी के सम्बन्धों में दरार की सामान्य वजह है ये।"

"आप हमें इस अफेयर के बारे में कुछ...।"

अमर जो जानना चाहता था मधु उसका अनुमान लगा चुकी थी, इसलिये उसने अमर की बात पूरी होने से पहले ही पास खड़ी मेड से कहा- “बेडरूम से उनका वैलेट लाओ?”

नौकरानी ने आदेश का पालन किया।

मधु ने उसके हाथ से पर्स लिया और खोलकर अमर की ओर बढ़ा दिया। पर्स में एक लड़की की पासपोर्ट साइज फोटो थी।

“ये कौन है?”

“तान्या; यही है वह जो आर्यन के जेहन में सांसें ले रही थी और हमारे दांपत्य जीवन में विष बनकर घुली हई थी, लेकिन ये लड़की इन्वेस्टीगेशन में आपकी कोई मदद नहीं कर सकती, क्योंकि इसको मरे हुये इक्कीस साल हो चुके हैं।” अमर और तारकनाथ चौंके, जबकि मधु ने आगे कहा-“जिस यूनिवर्सिटी से आर्यन ने अपनी रिसर्च पूरी की थी, ये उसी यूनिवर्सिटी में उनके साथ थी।”

“इसकी मौत कैसे हुई?”

“पूरी बात नहीं मालूम। आर्यन ने इतना बताया था कि 31अक्टूबर 1994 की रात किसी ने इसकी हत्या कर दी थी।”

“क्यों?”

“नहीं मालूम।”

“इस लड़की की हत्या इक्कीस साल पहले हुई यानि कि आप दोनों की शादी से पहले। तो फिर ये लड़की

आपके और आर्यन के बीच तनाव का कारण कैसे हो सकती है?”

“मैंने पहले ही बताया कि वह आर्यन के जेहन में सांसें ले रही थी। मेरे पति के दिल में मरकर भी जिन्दा थी वह। वे खुद इसे बेबाकी से स्वीकार करते थे कि तान्या उनका पहला प्यार थी।”

अमर और तारकनाथ ने एक दूसरे की ओर देखा। आर्यन और मधु के रिश्ते के भावनात्मक रूप से कमजोर होने की वजह उन्हें समझ में आ गयी थी, इसलिये इस बाबत कुछ भी पूछना उन्होंने उचित नहीं समझा।

“क्या आपने अपहरण की रात अपने पति के कमरे से गोली चलने या फिर उनके चीखने की आवाज सुनी थी।”

“नहीं। हालांकि उनके बेडरूम में संघर्ष के निशान थे। उनका रिवाल्वर भी आलमारी से गायब था, जो अभी भी गायब है।”

“पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट में ये खुलासा हुआ है कि आपके पति पर फायर किया गया था। हमें लगता है कि उन्होंने किडनैपर को रिवाल्वर का भय दिखाया था, लेकिन उसने रिवाल्वर पर कब्जा करके आर्यन पर फायर झोंक दिया। गोली कंधे को स्पर्श करती हुई निकल गयी थी, यानि कि फायर को लेकर किडनैपर का इरादा शायद उन्हें कमजोर करने का था, ताकि वे प्रतिरोध करने में अक्षम हो जाएँ। हो सकता है वह रिवाल्वर अपने साथ ही ले गया हो।”

मधु कुछ नहीं बोली। पुलिस द्वारा उजागर किये जा रहे तथ्य उसके लिये कोई मायने नहीं रखते थे।

“अब हम उस कमरे को देखना चाहते हैं, जिसमें वे अपहरण की रात सोये हुये थे।”

तारकनाथ ने जैसे ही उपरोक्त वाक्य कहा, मधु अपनी जगह से उठ खड़ी हुई।

□□□

रात के बारह बज चुके थे।

अँधेरे की काली चादर दगशाई को अपने आगोश में ले चुकी थी। चर्च के कब्रिस्तान के साथ-साथ समूचा कस्बा अंधेरे में डूबा हुआ था। हवाओं का बदला हुआ रुख किसी तूफान के आने की चेतावनी दे रहा था।

वह कब्रिस्तान की चारदीवारी से लगा छोटा सा कमरा था, जो सर्वेन्ट क्वार्टर के रूप में गोपाल के लिये मुकर्रर किया गया था। यूँ तो वह चर्च में भी सो जाता था, किन्तु जब कभी उससे स्थायी आवास के बारे में सवाल पूछा जाता था तो जवाब वही सर्वेन्ट क्वार्टर होता था, जिसमें आज वह सो रहा था।

वायु का वेग सामान्य से थोड़ा ज्यादा था, इस कारण जब कब्रिस्तान में मौजूद उस इकलौते कमरे के दरवाजे पर थपकियाँ पड़ रही थीं तो उत्पन्न होने वाली ध्वनि रात की खामोशी को भेदते हुये दूर तक गूँज रही थी। झींगुर भी रात की खामोशी से लड़ रहे थे, किन्तु ये बाद जुदा थी कुत्तों के भौंकने की ध्वनि उनकी ध्वनि को निगल जा रही थी।

अचानक दूर कोई भेड़िया रोया और कई निशाचर परिन्दे एक साथ कब्रिस्तान से उड़ गये। वातावरण में मानो मनहूसियत घुल गयी। हवा का एक छोटा सा बवंडर सर्वेन्ट क्वार्टर के दरवाजे पर यूं चक्कर काटने लगा, मानो वह परिंदों के पंखों की फड़फड़ाहट से ही जन्मा हो।

बवंडर के प्रभाव से सर्वेंट क्वार्टर के दरवाजे पर लगातार कई थाप पड़े। अन्दर सो रहे गोपाल की नींद उचट गयी। उसे लगा, जैसे किसी ने दरवाजा खटखटाया था।

"कौन है?" आँखें मलते हुये वह चारपाई से उठकर बैठ गया। प्रत्युत्तर में उसे कुछ नहीं सुनाई दिया, सिवाय खट-खट के।

"अब इतनी रात गये क्या तमाशा हो गया?"

झुंझलाते हुये वह चारपाई से नीचे उतरा और दरवाजे की ओर बढ़ा। *'शैल को लेकर शायद फिर कुछ बखेड़ा हुआ।'* मन में यही संदेह लिये हुये उसने दरवाजा खोला।

उसकी आँखें उस वक्त फटी की फटी रह गयीं, जब उसने पाया कि बाहर कुछ नहीं था। हवा का वेग भी उसे इतना तेज नहीं लगा कि वह उस पर दरवाजा पीटने की गुस्ताखी का इल्जाम लगाता।

अगले ही क्षण किसी भेड़िये के रोने का डरावना स्वर उसके कानों में पड़ा और भय की एक सर्द लहर उसके जिस्म में सरगोशी करती चली गयी। उसकी आँखों के सामने अँधेरे में डूबे अनगिनत कब्र थे, जिनमें मुर्दे दुनिया से बेख़बर होकर सो रहे थे। सामान्य तौर पर गोपाल को कब्रिस्तान में डरने की आदत नहीं थी, क्योंकि चर्च की

नौकरी अलावा वह कब्रिस्तान की चौकीदारी की भूमिका भी बखूबी अदा करता था, किन्तु आज के वातावरण में कुछ ऐसा था कि उसका कलेजा खौफ के कारण हलक में आ फंसा था।

उसने हिम्मत करके चारपाई के सिरहाने रखे टॉर्च को उठाया और प्रकाश के दायरे को आस-पास घुमाते हुये क्वार्टर से कुछ दूर निकल आया।

"कौन है?" उसने एक स्थान पर खड़े होकर आवाज दी।

जब प्रत्युत्तर में कुछ नहीं सुनाई दिया तो वह वापस मुड़ने को उद्यत हुआ, किन्तु अगले ही पल कुछ देखकर ठहर गया।

"वह क्या चीज है?" खुद से कहते हुये उसने टॉर्च पर पकड़ मजबूत की और सधे कदमों से उस दिशा में बढ़ा, जिस दिशा में उसे कुछ चमकता हुआ नजर आ रहा था।

फासले कम होते गये और फिर एक वक्त ऐसा आया जब उसने उसी

रहस्यमयी सर्दी को महसूस किया, जो उसने शैल को स्टेशन से ले आते समय कार में महसूस किया था। अब तक वह 'चमकती हुई वस्तु' के काफी निकट आ चुका था। इतने निकट कि वह आसानी से देख सकता था कि जिसे उसने दूर से चमकती हुयी वस्तु समझा था, वह वास्तव में एक सफ़ेद लिबास था, जो एक कब्र पर बैठी लड़की के जिस्म पर था। लड़की की पीठ गोपाल की ओर थी, और उसके खुले बाल हवा में लहरा रहे थे।

"य..ये कौन है? यहाँ..यहाँ क्या कर रही है?"

गोपाल का हलक मरुस्थल बन गया। खौफ उस पर इस कदर हावी हुआ कि पैर जिस्म का भार वहन करने में असमर्थ सिद्ध होने लगे। उसके खौफ का सबसे बड़ा कारण ये था कि उसके चारों ओर सफ़ेद कुहरा घिरना शुरु हो चुका था और वातावरण में वही अजीब सी ठण्ड बढ़ने लगी थी, जिसे उसने मरियम के सामने रूहानी ठण्ड कहा था।

वह खौफजदा खड़ा था कि अगले ही क्षण लड़की की गर्दन उसकी ओर घूम गयी। उसकी ये हरकत गोपाल के बाकी बचे हौसले पर कहर बनकर टूटी। जिस तरीके से उसने गर्दन पीछे घुमायी थी, वह किसी सामान्य इंसान के लिये संभव नहीं था।[2] धड़ पर मौजूद गर्दन किसी यंत्र की मानिंद तीन सौ साठ डिग्री के एंगल पर घूम गया था।

भागने के ध्येय से गोपाल पीछे पलटा, किन्तु कदमों ने उसका साथ नहीं दिया।

□□□

शैल के सामने किसी मनहूस साये के समान खड़ा वह दोमंजिला मकान जर्जर अवस्था में पहुँच चुका था। छोटे से कंपाउंड से लेकर दीवारें तक घास का जंगल बन चुकी थीं। जंग खा चुका गेट का ताला बेहद कमजोर नजर आ रहा था, जो एक मजबूत झटके में ही शहीद हो सकता था। यदि वह ताला कमजोर न भी होता तो भी कंपाउंड में दाखिल होने के किसी के मंसूबे पर अंकुश नहीं लगा सकता था, क्योंकि गेट मध्यम ऊंचाई का था और उसे

आसानी से लांघा जा सकता था। ये बात जुदा थी कि कंपाउंड, जो अब विषैले जन्तुओं का पनाहगाह बन चुका था, में दाखिल होने के लिये आसाधारण हौसले की जरूरत थी।

मरियम के इस रहस्योद्धाटन के बाद कि तान्या इक्कीस साल पहले क़त्ल की जा चुकी है, शैल के लिये कौतुहल पर नियंत्रण रख पाना मुश्किल हो गया था। वह टहलने का बहाना करके चर्च से निकला था। उसे याद था कि स्टेशन से दगशाई तक हमसफ़र रही रहस्यमयी लड़की ने बताया था कि वह मेंटल एसाइलम के पीछे रहती है, इसलिये वह, एसाइलम के बगल से गुजरने वाले लगभग चार फीट चौड़े पक्के सड़क पर टहलते हुये यहाँ तक आ पहुंचा था।

मकान की वर्तमान दशा बता रही थी कि वह इंसानों को रखने की काबिलियत कब का गँवा चुका था। इलाका वीरान था। आस-पास घनी झाड़ियाँ थीं, जिनका सिलसिला दूर तक चला गया था। दृष्टि के विस्तार तक कोई अन्य मकान या इंसानी गतिविधियों के चिह्न नहीं नजर आ रहे थे। जिस सड़क पर शैल खड़ा था, वह सड़क भी आगे जाकर पहाड़ों और घने जंगलों में गुम हो गया था। वातावरण में फ़ैली निस्तब्धता के बीच गूंजता पक्षियों का कलरव रहस्यमयी प्रतीत हो रहा था।

"मुझसे मिलने आये हो?"

शैल चौंका। आवाज उसके पीछे से आयी थी। वह द्रुतगति से पलटा। जैसा कि उसने आवाज से ही अनुमान लगा लिया था, पीछे तान्या खड़ी थी। जिस्म पर उस रात

का ही लिबास था। उसके पीछे हल्का-हल्का धुंध फैल रहा था, जो क्षण-प्रतिक्षण गहराता जा रहा था। इस धुंध के बीच श्वेत परिधान में लिपटी वह लड़की ख़ूबसूरत किन्तु रहस्यमयी नजर आ रही थी। उसका सौन्दर्य आकर्षण के बजाय भय उत्पन्न कर रहा था। चेहरे पर काबिज मुस्कान ऐसी लग रही थी मानो कोई डायन अपने शिकार को फांस लेने के बाद मंद-मंद मुस्कुरा रही हो।

"आप..?"

शैल का लहजा कंपकपाया। भय से नहीं बल्कि उस अजीब सी ठंड के कारण जिसे वह पहले भी महसूस कर चुका था। तान्या के नजर आने के बाद पक्षियों का कलरव भी आश्चर्जनक ढंग से बंद हो गया था। वातावरण में अब कोई गूँज नहीं थी। सब-कुछ शांत था। बिल्कुल निस्तब्ध। सफ़ेद धुंवा अब इतना गाढ़ा हो चुका था कि शैल, तान्या के पीछे के दृश्यों को नहीं देख सकता था। धुंध धीरे-धीरे पूरे वातावरण में आच्छादित होती जा रही थी और उसी अनुपात में शैल के बदन की कंपकपी भी बढ़ती जा रही थी।

"क..कौन हैं आप? मरियम ने बताया कि आप इक्कीस साल पहले क़त्ल की जा चुकी हैं।"

"दगशाई के लोग मानते हैं कि इस इलाके में एक ख़ूबसूरत डायन टहलती है। मौत की सर्द ठंडक उसके आने का संकेत होती है। वह पहले शिकार को भींच कर गले लगाती है और फिर अपने मुर्दा जिस्म की बेपनाह सर्दी उसके जिस्म में उतार देती है। इसके बाद शिकार

का जिस्म अकड़ जाता है। सर्दी के कारण उसके दिल की धड़कनें रुक जाती हैं। वह पहले शीतनिद्रा में जाता है और फिर मौत की गहरी नींद सो जाता है।" तान्या के चेहरे पर हिंसक भाव काबिज हो गये। उसने सर्द लहजे में आगे कहा- "मैं ही हूँ वह डायन।"

शैल खामोश। वह एकटक उस लड़की को ही देखता रह गया जिसके आसेब होने की कल्पना उसने सपने में भी नहीं की थी। धुंध लगातार उसकी ओर बढ़ रही थी। आखिरकार उसने कंपकंपी के बीच होंठ खोला- "मुझसे तुम्हारी दुश्मनी की वजह?"

"तुम्हारे ही कारण मैं एक बेचैन रूह बन कर इन वीरान वादियों में अपने कातिल की तलाश में भटक रही हूँ। तुम मुझे बेरहमी से ठुकरा कर उस मनहूस लड़की की आगोश में चले गये थे, जो आज भी तुम्हारी यादों के साथ चर्च में अकेली है।"

"तुम..तुम भी शायद उसी क्षितिज की बात कर रही हो, जिसके बारे में मरियम ने यह धारणा पाल रखी है कि मैं उसका पुनर्जन्म हूँ।"

"नहीं! तुम उसके पुनर्जन्म नहीं हो। तुम उस ऐतिहासिक प्रयोग का परिणाम हो, जिसे शक्तिस्वरूप सिंघानिया 'ह्यूमन जीनोम प्रोजेक्ट' की आड़ में अपने जूनियर साइंटिस्ट की मदद से अंजाम दे रहा था।"

"शक्तिस्वरूप?" शैल के माथे पर सिलवटें उभर आयीं। ये नाम उसे कहीं सुना हुआ लगा- "मैं...मैं इस नाम को पहले भी सुन चूका हूँ।"

“एक लापता साइंटिस्ट। जो ‘ह्यूमन जीनोम प्रोजेक्ट’ का मेंबर था, लेकिन साथ-साथ ह्यूमन ब्रेन पर भी व्यक्तिगत शोध कर रहा था। वह एक ऐसे सिंथेटिक जीन के डेवलपमेंट पर काम कर रहा था, जिसकी मदद से वह इंसान के ब्रेन की मल्टीपल कॉपी बना सकता था। इस शोध को उसने ‘डेवलपमेंट ऑफ़ मल्टीपल ब्रेन’ नाम दिया था।”

शैल के जेहन में बिजली कौंधी। उसे याद आया कि शिकागो में मिले
जेनेटिक्स के रिसर्च स्कॉलर ‘यथार्थ’ ने उसे डॉ.शक्तिस्वरूप सिंघानिया के बारे में बताया था। सिंघानिया के इसी सिद्धांत को सेमिनार में उसने अपने शोध व्याख्यान का विषय बनाया था, और अमेरिकी प्रोफेसर्स की कड़ी आलोचना का शिकार हुआ था।

“मैं....मैं उस सिंघानिया के रिसर्च का परिणाम कैसे हो सकता हूँ?” शैल ने मानो खुद से पूछा।

“इस सवाल के जवाब में एक खौफनाक षड़यंत्र छुपा हुआ है। एक ऐसा षड़यंत्र जिसकी जड़ें उतनी ही पुरानी हैं, जितनी तुम्हारी उम्र। तुम अभी तक अपने जीवन की एक ऐसी हकीकत से अनजान हो, जिससे वाकिफ होने के बाद तुम खुद के वजूद पर भी यकीन नहीं कर पाओगे।”

शैल को यथार्थ का वह कथन याद आया, जो उसने मुलाकात के अंतिम क्षणों में रहस्यमयी मुस्कान के साथ कहा था।

‘मुझे लगता है कि शायद मेरे सपनों को मंजिल तक पहुँचने का रास्ता मिल गया है, जो तुम्हारी जिन्दगी से होकर गुजरता है।’

शैल को अपना जेहन अंतरिक्ष में तैरता महसूस होने लगा। वह एक साथ कई सवालों से घिर गया।

‘तो क्या मेरे साथ जो कुछ हो रहा है, उसकी डोर यथार्थ नाम के उसी शख्स के हाथों में है, जिसने मुझे सबसे पहले क्षितिज की तस्वीर दिखाई थी? कौन था वह? इक्कीस साल पहले क़त्ल किये जा चुके क्षितिज की तस्वीर उस तक कैसे पहुँची? उसने ऐसा क्यों कहा कि उसके सपनों की मंजिल का रास्ता मेरी जिन्दगी से होकर गुजरता है?’

धुंध अब समूचे वातावरण में काबिज हो चुका था। जिसकी सफेदी के बीच तान्या का वजूद और भी रहस्यमय हो उठा था। उसे देखकर ऐसा जान पड़ता था जैसे कोई मुर्दा जिस्म अपने पैरों पर खड़ा हो गया हो। विचारों के भंवर में डूबते उतराते शैल को केवल इतना महसूस हो रहा था कि वह बर्फ के ढेर में धंसता चला जा रहा है। धड़कनों की रफ़्तार पल-प्रतिपल सुस्त होती जा रही है और हड्डियां बुरी तरह अकड़ रही हैं। ठण्ड से बचने की कोशिश में वह खुद में ही सिमटता जा रहा था।

“म..मैं वह हकीकत जानना चाहता हूँ। क्षितिज कौन था? उस उसका...मुझसे क....क्या सम्बन्ध है? वह...वह मेरे...वजूद पर क्यों हावी..होना..चाहता...है?”

“एक सनकी लड़का था।” तान्या शैल की ओर बढ़ते हुये भयावह लहजे में कह उठी- “जो समय की धारा तैरने

के सपने देख रहा था, लेकिन इससे पहले कि उसका सपना साकार रूप ले पाता, वह कविता नाम की एक मनहूस डायन की चाहत का शिकार हो गया। ये मूर्खतापूर्ण चाहत ही वजह थी, जो उसे इक्तीस अक्टूबर चौरानबे की रात क़त्ल होकर इस फानी दुनिया से रुख्सत होना पड़ा।"

शैल के गौर किया कि 'कविता' नाम लेने के दौरान तान्या की आँखें सूर्ख हो उठी थीं। विषाक्त भाव के कारण उसका चेहरा और अधिक भयानक हो गया था।

"तुम...तुम..मेरे..साथ...क्या...करने..वाली...हो?" तान्या को अनवरत अपनी ओर बढ़ता देख शैल बदहवास हो उठा। उसकी कंपकपाहट बढ़ चुकी थी। हलक अब लफ्ज उगलने में नाकामयाब साबित हो रहे थे।

"तुम्हें अपने आगोश में लेकर तुम्हारा जेहन टटोलने वाली हूँ। वह वजह तलाश करने वाली हूँ, जो तुम्हें रहस्यमय ढंग से क्षितिज से जोड़ता है। मरने से पहले उसने एक थीसिस लिखा था। मैं जानना चाहती हूँ कि उस थीसिस में क्या था?"

"क्या..क्या...मैं..उसके..बाद...ज़िंदा..रहूँगा?"

"पता नहीं! वजूद में आने से लेकर आज तक मैंने जितने भी शिकार किये हैं, उनमें से कोई भी मेरे जिस्म की सर्दी को नहीं झेल पाया और मौत के गहरे गर्त में विलीन हो गया।"

"तुम..तुम...!"

शैल के आगे के लफ्ज हलक में ही दम तोड़ गये। उसकी दृष्टि धुंधली पड़ने लगी थी। धड़कनें भी साथ

लगभग छोड़ चुकी थीं। वह लड़खड़ा कर गिरने को हुआ। संभलने की कोशिश भी बेकार गयी। उसने सामने देखा। बंद होती पलकों की दरारों से नजर आ रहे धुंधलके में केवल इतना ही देख पाया कि तान्या उसके बेहद करीब आ चुकी थी, इतने करीब की मात्र एक पग बढ़ाकर उसे बाहों में भींच सकती थी और मौत देने वाली सर्दी उसकी रगों में उतार सकती थी।

आगामी क्षण शैल के लिये भयावह थे। उसे महसूस हुआ कि एक फौलादी
शिकंजा उसके इर्द-गिर्द कसता जा रहा है। और उसी अनुपात में उसकी रगों में बहता लहू जमता जा रहा है। उसे कोई दृश्य चमकते नजर आने लगे। ऐसा लगने लगा जैसे कोई उसे बुरी तरह प्रताड़ित करते हुये कुछ याद करने को मजबूर कर रहा हो। अचानक सबकुछ अँधेरे में डूब गया। फिर इस अँधेरे में कुछ आकृतियाँ उभरीं। धीरे-धीरे वे आकृतियाँ मुकम्मल चलायमान दृश्य में तब्दील हो गयीं। वे दृश्य पुराने कैमरों के नेगेटीव्ज जैसे थे। उनमें मौजूद लोगों के केवल अक्स नजर आ रहे थे, जिन्हें पहचानना मुश्किल था। दृश्य दो लोगों की बातचीत का था।

'क्या आपकी बीबी प्रेग्नेट है?'

'सिक्योरिटी।'

'प्लीज। आप मुझे पागल मत समझिए। मेरे जीवन में एक रहस्यमयी घटना घटी है और उस घटना के बाद मैं आपके जीवन के कई राज जान चुका हूं। मैं.....मैं ये भी

जान चुका हूं कि आपकी बीवी आज जिस बच्चे को जन्म देने वाली है वह बच्चा जेनेटिकली मॉडिफाइड[3] है।'

'कौन हो तुम?'

'मेरा नाम क्षितिज सक्सेना है और मैं इस वक्त अमेरिका के ह्यूमन जीनोम प्रोजेक्ट में काम करने वाले एक जूनियर साइंटिस्ट डॉ. अश्विनी चतुर्वेदी से मुखातिब हूं।'

'तुम्हें मेरे बारे में कैसे मालूम हुआ?'

'ये सब-कुछ जानने के लिये आपको अकेले में मुझसे दो मिनट बात करनी होगी।'

'मेरे पास टाइम नहीं है। मेरी पत्नी ऑपरेशन थियेटर में है और मुझे उसके ऑपरेशन का बिल भरना है। जो कुछ कहना है यहीं कहो।'

'वह सब यहां नहीं कहा जा सकता। प्लीज आप मेरे साथ आइये। मैं आपको सिंघानिया की एक गहरी साजिश से आगाह करने आया हूं।..हां! ये सच है। सिंघानिया नाम का वह शख्स, जो प्रोजेक्ट में आपका सीनियर है, आपके बच्चे की जान का दुश्मन बन चुका है।'

'कहां चलना होगा मुझे?'

बस! इसके बाद वह दृश्य ओझल हो गया। दृश्य के ओझल होते ही शैल के सीने में एक असहनीय दर्द उठा। वह थोड़ी देर बुरी तरह छटपटाया। और फिर दर्द के ख़त्म होते ही सबकुछ ख़त्म हो गया। न कोई सर्दी और न ही कोई तकलीफ। वातावरण की भयानक निस्तब्धता सुखद शान्ति में तब्दील हो गयी। मानो सब कुछ स्थिर हो गया था।

शैल ने धीरे-धीरे आँखें खोली। वह तान्या की बाहों में था। नजदीकी का आलम ये था कि उसके होंठ शैल के होठों के स्पर्श को उद्यत लग रहे थे। अब कहीं कोई धुंध नहीं था। सब-कुछ बदल चुका था। अगर कुछ था, जो नहीं बदला था, तो वह था तान्या का वहां मौजूद होना। उसके उन होंठों पर अब भी पैशाचिक मुस्कान थी, जो किसी भी पल शैल के चेहरे पर अपनी सूर्ख छाप छोड़ सकते थे।

"ये शांति तुम्हें बेहद सुखद लग रही होगी शैल।" तान्या ने यूं धीमें स्वर में कहा मानो उसके कानों में फुसफुसा रही हो- "लेकिन इस शान्ति की कीमत बहुत ज्यादा है। इस विलक्षण शांति को महसूस करने के लिये जिन्दगी की सीमा को लाँघ कर मौत के दायरे में दाखिल होना होता है।"

"तो..तो क्या मैं उस दायरे में दाखिल हो चुका हूँ? क्या मैं मर चुका हूँ?"

"नहीं! तुम्हारी अवस्था ठीक वैसी ही है, जैसी बर्फ के ढेर में दबे इंसान की होती है। तुम्हारे शरीर की जैविक क्रियायें ठप्प हो चुकी हैं, लेकिन तुम्हारी रूह अभी भी ये आस लगाये बैठी हुयी है कि उसे जिस्म में दोबारा दाखिल होने का मौक़ा मिलेगा। ये वैसा ही है, जैसे एक मां अपने बेटे की मौत हो जाने पर भी उसे मरा समझने को तैयार न हो रही हो। कुछ ही घंटों में तुम्हारी रूह का भ्रम टूट जायेगा और वह तुम्हारे जिस्म को लावारिस छोड़कर एक नई दुनिया में चली जायेगी। यानि कि इस वक्त तुम मौत

की दहलीज पर खड़े हो। एक कदम आगे बढ़ाते ही उसके दायरे में दाखिल हो जाओगे।"

तान्या के होठों पर काबिज पैशाचिक मुस्कान और अधिक गहरी हो गयी। उसने शैल के जिस्म को छोड़ दिया। तान्या के आगोश से छूटते ही उसका जिस्म बेजान लाश की भांति जमीन से जा टकराया।

कुछ ही क्षणों में तान्या का अक्स हवा में घुल गया।

□□□

"सब कुछ भयानक था। बेहद भयानक।"

कम्बल ओढ़े हुये होने के बावजूद शैल का बदन काँप रहा था। मरियम उसके सिरहाने बैठी हुई थी, जबकि फादर बिस्तर के नजदीक पड़ी एक कुर्सी पर बैठे हुये थे। दोनों ने शैल के किस्से के हर एक लफ्ज को ध्यान से सुना था।

"अब तो तुम्हें यकीन हो गया होगा कि कार में तुमने किसी जीती जागती

लड़की से नहीं बल्कि एक परछाईं से बातें की थी। अफसोस कि इस यकीन की तुम्हें बड़ी कीमत चुकानी पड़ी। इतनी बड़ी कीमत कि अगर तुम्हारी इच्छाशक्ति ने तुम्हारा साथ न दिया होता तो तुम अपने पैरों पर चलकर कस्बे तक नहीं पहुँच पाते और उस वीराने में ही मौत को गले लगा लेते।"

"लेकिन मेरे साथ ऐसा क्यों हो रहा है? क्षितिज का मुझसे क्या सम्बन्ध है? तान्या ने उसकी लिखी हुई किसी थीसिस का जिक्र किया था, ऐसा क्या था उस थीसिस में? और फिर ये तान्या थी कौन? इसकी हत्या क्यों हुई थी?"

"वह क्षितिज की रिसर्च फैलो थी। क्षितिज को उसकी हरकतें बिल्कुल पसन्द नहीं थी। वह हमेशा उससे चिढ़ता रहता था। जिस सुबह क्षितिज की लाश घाटी से बरामद हुयी थी, उसी सुबह तान्या की लाश भी उसकी स्टडी से बरामद हुई थी। पुलिस उन दो रिसर्च स्कॉलर्स के कातिल तक आज तक नहीं पहुँच सकी। और न ही हत्या की कोई वजह तलाश सकी।"

"तुम्हारा दिवगंत क्षितिज से क्या सम्बन्ध है?" फादर, जो अब तक खामोश थे, बोले- "ये तान्या भी जानना चाहती थी। और इस प्रयास में उसने तुम्हारे जेहन को टटोला था। तुम्हें मानसिक रूप से प्रताड़ित करते हुये तुम्हारे जेहन में छुपी हुई क्षितिज की यादों को दृश्य के रूप में देखने की कोशिश की थी और इस कोशिश में वह कामयाब भी हुई। उसे तुम्हारे जेहन में दो लोगों की बातचीत का दृश्य नजर आया, जिसमें से एक तो खुद क्षितिज था और दूसरा डॉ. अश्विनी चतुर्वेदी नाम का ह्यूमन जीनोम प्रोजेक्ट का कोई जूनियर साइंटिस्ट। आखिर तान्या को ये दृश्य तुम्हारे मस्तिष्क में मिले कैसे?"

"क्योंकि..!" मरियम उत्साहित हो उठी- "क्योंकि ये लड़का क्षितिज का पुनर्जन्म है। मैंने कहीं पढ़ा है कि इंसान के जेहन में उसके पुराने जन्म की यादें होती हैं।"

"अगर ऐसा है तो केवल यही एक दृश्य शैल को क्यों नजर आया? कोई और दृश्य या फिर इसके साथ-साथ अन्य दृश्य क्यों नहीं नजर आये? और फिर तान्या के ये

कहने का क्या तात्पर्य था कि शैल, सिंघानिया के किसी प्रयोग का परिणाम
है?”

मरियम के पास इस सवाल का जवाब नहीं था। फादर कुर्सी से उठे और कमरे के फर्श को रौंदने लगे। थोड़े समय की खामोशी के बाद वे शैल की ओर मुखातिब हुये-“क्या इस दृश्य को देखने के बाद तान्या ने तुम्हारे मस्तिष्क में दोबारा झांकने का प्रयास किया था?”

“नहीं! इस दृश्य के कौंधने के बाद सब-कुछ बदल गया था। चारों ओर शांति छा गयी थी। मुझे ऐसा महसूस होने लगा था जैसे मैं इस दुनिया का हिस्सा ही नहीं हूँ। इसके बाद मुझे मेरी अवस्था पर छोड़कर तान्या का अक्स हवा में घुल गया था।”

“यानि कि उसने इस दृश्य को देखने के बाद कुछ और जानने की जरूरत नहीं समझी थी। शायद वह किसी निष्कर्ष पर पहुँच चुकी थी। लेकिन किस निष्कर्स पर?”

“शायद...शायद उस दृश्य को देखने के बाद वह उस रहस्यमयी वजह को भांप गयी थी, जो मुझे क्षितिज से जोड़ती है।” शैल ने कहा।

“अगर ऐसा है तो उस दृश्य के जरिये हम उस वजह को क्यों नहीं तलाश पा रहे हैं?” मरियम ने उलझन भरे स्वर में कहा।

“क्योंकि अभी ऐसी बहुत सी बातें हैं जो हम नहीं जानते हैं।” फादर ने कहा- “हम नहीं जानते कि इक्तीस अक्टूबर सन चौरानबे की उस रात से पहले क्षितिज के साथ क्या

हुआ था? हमें ये भी नहीं मालूम कि जब वह अपने रिसर्च आईडिए के साथ सिंघानिया से मिला था तो सिंघानिया ने उसके साथ क्या किया था? अगर हम क्षितिज के साथ घटी घटनाओं से पूरी तरह वाकिफ होते तो हम भी तान्या की तरह अब तक किसी निष्कर्ष पर पहुँच गये होते।"

वातावरण में एक बार फिर तनावपूर्ण सनाटा छा गया। फादर पुन: पहले की तरह चहलकदमी करने लगे। और थोड़ी देर बाद फिर से शैल से मुखातिब हुये- "जो दृश्य तुम्हें नजर आया था, वह कहाँ का था?"

"किसी हॉस्पिटल का। शायद नर्सिंग होम का। क्षितिज जिस आदमी को अश्विनी कह कर संबोधित कर रहा था, वह बिलिंग काउंटर पर लगी लाइन में खड़ा था। उसकी पत्नी ऑपरेशन थियेटर...।"

"एक मिनट शैल!" फादर ने चौंककर शैल का वाक्य काट दिया- "ब्रेन डेथ की अवस्था से उबरने के बाद भी तुमने नर्सिंग होम का ही जिक्र किया था न?"

"यस फादर!"

"ओह! तुम्हारे उस समय के कथन के मुताबिक़ तुम्हारा एक्सीडेंट सोलन के किसी नर्सिंग होम से लौटते वक्त हुआ था। और तुम्हें भय था कि कोई तुम्हारी हत्या करने के लिये तुम्हारे पीछे पड़ा हुआ था।"

"एब्सोल्युटली यस! मुझे आज भी यही लगता है।"

"तान्या ने तुम्हारे जेहन में जो दृश्य देखा था, वह दृश्य भी नर्सिंग होम का था। अनुमानत: उसी दिन का जिस रात क्षितिज की हत्या हुई थी। उस शाम जब क्षितिज नर्सिंग

होम से लौट रहा होगा तो उसे भी यही भय सता रहा होगा कि कोई उसकी हत्या करना चाहता है।”

फादर जानबूझकर खामोश हो गये। वे जानना चाहते थे कि जिस निष्कर्ष पर वे पहुँच चुके थे उस निष्कर्ष पर मरियम पहुँची या नहीं।”

“तो इसका मतलब ये हुआ कि ब्रेन डेथ से उबरने के बाद शैल की यादें क्षितिज की यादों के साथ जुड़ गयीं हैं। इसी कारण इसे क्षितिज से जुड़े सपने आते हैं और उसके साथ इक्कीस साल पहले घटी घटनायें अपने साथ घटी हुई महसूस होती हैं।”

“और इसी कारण ये लड़का इस समय अपनी दो पहचान ‘शैल’ और ‘क्षितिज’ के साथ द्वंद्व कर रहा है।” फादर ने मरियम के निष्कर्ष को पूर्ण किया।

“लेकिन ऐसा हुआ क्यों? और शैल के साथ ही क्यों हुआ?”

“पता नहीं! शायद इसके पीछे वही वजह है जो तान्या ने बताई। यानि कि शैल सिंघानिया के किसी जेनेटिक एक्सपेरिमेंट का परिणाम है।”

“नहीं!” शैल ने इस कदर प्रतिरोध किया मानो इस संभावना के सच होने की कल्पना से सिहर उठा हो- “जेनेटिक एक्सपेरिमेंट का परिणाम यानि कि एक जेनेटिकली मॉडिफाइड ऑर्गेनिज्म..! नहीं! ऐसा बिल्कुल नहीं हो सकता। मैं जीएमओ नहीं एक साधारण इंसान हूँ। मैं..मैं वह बच्चा नहीं हो सकता, जिसके बारे में क्षितिज, अश्विनी से बात कर रहा था।”

शैल भावुक हो उठा। उसके भावुकता की वजह तान्या के इस कथन का याद आ जाना था-

'इस सवाल के जवाब में एक खौफनाक षड़यंत्र छुपा हुआ है। एक ऐसा षड़यंत्र जिसकी जड़ें उतनी ही पुरानी हैं, जितनी तुम्हारी उम्र। तुम अभी तक अपने जीवन की एक ऐसी हकीकत से अनजान हो, जिससे वाकिफ होने के बाद तुम खुद के वजूद पर भी यकीन नहीं कर पाओगे।'

मरियम आगे बढ़ी और शैल के कंधे पर हाथ रखते हुये सांत्वना भरे लहजे में बोली- "हमने केवल संभावना व्यक्त की है।"

"मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि यह संभावना कभी भी हकीकत का रूप न लेने पाए। मैं...मैं किसी प्रयोग का परिणाम नहीं हूँ। मैं केवल और केवल अपने मां-बाप की संतान हूँ, जिन्हें मैं बचपन में ही खो चुका हूँ।"

दारुण स्वर में कहे गये शैल के उपरोक्त कथन के बाद वातावरण थोड़ा बोझिल हो उठा।

अंततः फादर ने खामोशी तोड़ी- "रहस्यों की तह तक पहुँचने के लिये हमारे पास केवल दो रास्ते हैं। या तो हम क्षितिज की लिखी हुई थीसिस को तलाशें या फिर रेहान को, जो शैल का इलाज अधूरा छोड़कर गुमशुदा हो गया। फिलहाल थीसिस का मिल पाना तो नामुमकिन लगता है, लेकिन प्रयास करने पर रेहान जरूर मिल सकता है।"

"लेकिन रेहान के मिलने से क्या होगा? वह भी तो उतने ही अँधेरे में है जितने की हम।"

"नहीं मरियम।" फादर ने सोचनीय मुद्रा अख्तियार कर ली और आगे कहा- "रेहान को जरूर कुछ ऐसा पता है, जो हमें नहीं पता है। शैल की हालत से वाकिफ होने के बाद उसका गायब हो जाना रहस्यमयी है। वह किसी अज्ञात मकसद के साथ अंडरग्राउंड हुआ है। वह जरूर कुछ ऐसा जानता है, जो बिखरी हुई कड़ियों को जोड़ सकता है।"

"लेकिन हम उसे ढूंढेंगे कहाँ?"

"तुम गोपाल को बुलाओ और स्थानीय अखबारों में इश्तहार देने के लिये कहो।"

मरियम कमरे से बाहर चली गयी, किन्तु थोड़ी ही देर बाद ही बदहवास अवस्था में भागती हुई आयी।

"क्या हुआ?" डिकोस्टा उसकी हालत देख चौंके- "तुम इतनी घबराई हुई क्यों हो?"

"गोपाल कब्रिस्तान वाले सर्वेन्ट क्वार्टर में नहीं है, जबकि कल रात वह वहीं सोया हुआ था।"

"हो सकता है वह जल्दी उठकर कहीं चला गया हो।"

"नहीं फादर। वह मुझे बिना बताए कहीं नहीं जाता।"

डिकोस्टा और मरियम का सारा दिन गोपाल को तलाश करते हुये बीता, लेकिन हुआ वही, जो होना था। गोपाल उन्हें कहीं नहीं मिला।

□□□

"इक्कीस साल पहले हुई हत्या के बारे में तुमने तफ्तीश की?"

"यस सर। पुरानी फाइलों की स्टडी से ये बात सामने आयी है कि इक्तीस अक्टूबर की रात केवल तान्या की ही हत्या नहीं हुई थी। उसी रात एक और हत्या हुई थी। हतप्राण की सरकटी लाश घाटी में पायी गयी थी। धड़ की शिनाख़्त क्षितिज सक्सेना नाम से की गयी थी। दोनों ही सेन्ट जोसेफ यूनिवर्सिटी में फिजिक्स के रिसर्च स्कॉलर थे।"

"तो क्या क्षितिज का क़त्ल उसका सर काटकर किया गया था?"

"नहीं सर! सर हत्या के बाद काटा गया था, क्योंकि उसका जिस्म गोलियों से छलनी था।"

"सर का कुछ पता चल पाया था?"

"नहीं सर! लाश का अंतिम संस्कार बिना सर का ही किया गया था।"

"ओह!" अमर ने गहरी सांस ली। वह क्षितिज के परिवार की उस वक्त की दशा की कल्पना करके व्यथित हो उठा। थोड़ी देर बाद उसने आगे कहा- "चूंकि तान्या आर्यन की रिसर्च फैलो थी और साथ ही साथ क्षितिज की भी, तो इसका मतलब ये हुआ कि ये तीनों एक ही प्रोजेक्ट पर काम कर रहे थे।"

"राइट सर! और इन तीनों के ही रिसर्च एडवाइजर प्रोफेसर रामानुजन शास्त्री थे।"

"दो रिसर्च स्टुडेन्ट्स की इक्कीस साल पहले हत्या की गयी। उसी दौरान उनका रिसर्च एडवाइजर पागल हो गया। उनका तीसरा साथी इक्कीस साल बाद मारा गया। यानि कि तब, जब वह अत्युच्च श्रेणी का शोध कार्य करके लेक्चररशिप प्राप्त कर चुका था।"

"इक्कीस सालों से पागल की जिन्दगी बसर कर रहे प्रोफ़ेसर को एसाइलम से निकाल लिया जाता है, बदले में उन्हीं के भूतपूर्व छात्र को मरने के लिये उनकी जगह शिफ्ट कर दिया जाता है।" तारकनाथ ने कहा- "कहीं इस घटना के तार इक्कीस साल पहले घटी घटनाओं से तो नहीं जुड़े हैं?"

"इक्कीस साल पहले वाले केस के फाइनल रिपोर्ट में क्या दर्ज है?"

"संदिग्धों के बयानों का सिलसिला कई दिनों तक चला था। लेकिन पुलिस बयान से मिली जानकारियों को समीकरण में ढालकर किसी हल तक पहुँचने में नाकामयाब रही थी। उस पुराने केस की स्टडी के दौरान मुझे केवल स्टेटमेंट्स से भरी फाइलें ही मिलीं। नतीजे से जुड़ी कोई फाइल नहीं मिली ।"

"यानि कि इन्वेस्टिगेशन के नाम पर कुछ नहीं किया गया था। न तो दोनों रिसर्च स्कॉलर्स की बैकग्राउंड को खंगाला गया था और न ही सिचुएशन की स्टडी करके हत्या की वजहों को चिन्हित किया गया था। यदि ये काम किये गये होते और थोड़ा सा हाथ पाँव चलाया गया होता तो कोई न कोई पैटर्न जरूर मिला होता। खैर..उस समय

इन तीनों के अलावा प्रोफेसर शास्त्री के रिसर्च प्रोजेक्ट में और कितने स्कॉलर्स थे।”

“दो और थे।”

“उनके स्टेटमेंट्स क्या थे?”

“लगभग सेम थे। उन दोनों के अनुसार क्षितिज कई दिनों से यूनिवर्सिटी नहीं आया था। और तान्या को हत्या वाले दिन सुबह से ही किसी ने नहीं देखा था।

“वे दोनों वर्तमान में कहाँ है?”

“इस बारे में कहीं कोई विवरण नहीं मिला सर।”

“देखो तारकनाथ!” अमर ने दोनों कुहनी मेज पर टिकाकर जिस्म का पूरा भार उस पर डालते हुये कहा- “आर्यन उसी बैच का रिसर्च स्कॉलर था, जिस बैच के तान्या और क्षितिज थे। पांच रिसर्च स्कॉलर्स में से दो की हत्या पहले ही हो चुकि थी और तीसरे की हत्या अब जाकर हुई। अगर हम इस संभावना को जेहन में रख कर आगे बढ़ते हैं कि कोई था, जो प्रोफेसर्स के स्टूडेंट्स का दुश्मन था तो हमें ये मानना होगा कि किन्ही कारणों से इक्कीस साल तक खामोश बैठा वह दुश्मन एक बार फिर अपनी खोह से बाहर निकल आया है।”

“यानि कि आपको ये संशय है कि उन दो रिसर्च स्कॉलर्स की जान को भी खतरा है।”

“ऑफ़कोर्स खतरा है। इक्कीस साल पहले हुई दोनों हत्याओं को अगर जोड़ दिया जाये तो अब तक हुई तीनों हत्याओं में मारे गये शख्स प्रोफ़ेसर शास्त्री के प्रोजेक्ट से जुड़े हुये थे। वे तीनों प्रोफ़ेसर के ही स्टूडेंट थे। क्या ये एक

पैटर्न नहीं है? क्या ये अनुमान नहीं लगाया जा सकता कि कोई 'था', या यो कहें कि 'है' जो किसी कुंठा के कारण नहीं चाहता था कि प्रोफ़ेसर का प्रोजेक्ट पूरा हो।"

तारकनाथ के तर्क से अमरनाथ सहमत नहीं नजर आया। इस बात को उसने अपने अगले वाक्य से जाहिर भी कर दिया- "इस मुद्दे पर मेरी राय अलग है सर। अगर हत्या की वजह केवल इतनी होती कि हत्यारा प्रोफ़ेसर के प्रोजेक्ट को पूरा नहीं होने देना चाहता था, तो ये वजह तो प्रोफ़ेसर के पागल होने के साथ ही ख़त्म हो चुकी थी। हत्यारे को पलटकर इक्कीस साल बाद आने की क्या जरूरत थी? और फिर अगर प्रोफ़ेसर के प्रोजेक्ट में रुकावट डालना ही हत्यारे का मकसद था तो वह रिसर्चर्स की हत्या की प्लानिंग क्यों करता? वह एक-एक करके पांच हत्याओं के बजाय अकेले प्रोफ़ेसर की हत्या को ही प्राथमिकता देता, क्योंकि उस दशा में भी प्रोजेक्ट का रुकना तय था।"

तारकनाथ के तर्क में दम था, इसलिये अमर सहमत नजर आया।

"शायद तुम ठीक कह रहे हो।"

"शायद ये हमारी जिन्दगी का पहला केस है सर, जिसमें हत्यारा हमारे लॉक अप में है, बावजूद इसके हमें इतना सर खपाना पड़ रहा है।"

"ऐसा इसलिये है तारकनाथ क्योंकि हमारे पास कैमरे के एब्नार्मल बिहेवियर और पोस्टमार्टम रिपोर्ट में आये नाखूनों को एक्सप्लेन करने के लिये कोई थ्योरी नहीं है।

फिलहाल तान्या और क्षितिज के बैकग्राउंड को लेकर पुरानी फाइलों में क्या दर्ज है?"

"क्षितिज तमिलनाडु के निशानगढ़ नाम के एक गाँव के समृद्ध परिवार से था। उस गाँव में नार्थ इंडियन्स की आबादी थोड़ी ज्यादा है। जिन दिनों निशानगढ़ की गिनती रियासतों में हुआ करती थी, उन दिनों उत्तर भारत के किसी सामन्त की बेटी उस रियासत के मालिक से व्याही गयी थी। एक घातक बीमारी के कारण हुई राजा की अकाल मृत्यु के बाद जब रानी ने शासन संभाला तो उसने रियासत के महत्वपूर्ण पदों को उत्तरभारतीयों के लिये आरक्षित रखा। बाद में शासन में उच्च पद पाने वाले अधिकारी सपरिवार निशानगढ़ में ही बस गये और वहीं के होकर रह गये। आज उन्हीं के वंशज वहां हैं। क्षितिज एक मकान में पेइंग गेस्ट के रूप में रहता था। उसका रूममेट रेहान सिद्दीकी नाम का एक लड़का था, जो सेम यूनिवर्सिटी में 'एमएस इन न्यूरोसर्जरी' का स्टूडेंट था।"

"और तान्या के बारे में?"

"तान्या यहीं की थी। वह अपने पुश्तैनी मकान में अकेली रहती थी, क्योंकि उसका परिवार काफी पहले ही भोपाल शिफ्ट हो गया था। वह मकान आज भी
मेंटल असाइलम के पीछे खण्डहर के रूप में मौजूद है।"

"प्रोफेसर शास्त्री तान्या और क्षितिज की हत्या के कितने दिन बाद पागल हुये थे?"

"लगभग पन्द्रह दिन बाद।"

"और इस पागलपन की वजह?"

“अत्यधिक मानसिक चिंतन।”

“तान्या और क्षितिज की हत्या के बाद आखिर किस बात को लेकर प्रोफेसर इतना मानसिक चिन्तन करने लगे थे कि उन्हें अपने दिमाग से हाथ धोना पड़ा?”

“पता नहीं सर। प्रोफेसर के विवरण में तो यही दर्ज है कि अत्यधिक चिन्तन के कारण उनके नर्वस सिस्टम पर काफी गहरा असर पड़ा था। डॉक्टर्स ने अपनी पूरी क्षमता लगाई थी, किन्तु अंततः उन्हें स्थायी रूप से पागल घोषित करना पड़ा।”

“ओह!” अमर ने एक गहरी साँस ली- “बाई द वे; उस शख्स के बार में कोई इनफार्मेशन हासिल हुई, जो हत्या की रात जोशी से मिलने आया था?”

“इस मामले में हमें एक बड़ी बढ़त मिली है सर।” तारकनाथ के होठों पर कामयाबी भरी मुस्कान नृत्य कर उठी- “उस शख्स की पूरी जन्मकुंडली हमारे पास आ चुकी है।”

“कौन है वह?” अमर बुरी तरह रोमांचित हो उठा।

लेकिन इससे पहले कि तारकनाथ कोई जवाब देता, केबिन के दरवाजे पर हुई हलचल ने उन दोनों का ध्यान अपनी ओर खींच लिया।

एक फटेहाल आदमी था, जो कांस्टेबल्स के शिकंजों में बुरी तरह जकड़ा अन्दर आने को उतावला नजर आ रहा था।

“कौन है ये?”

“पता नहीं साहब। बोलता है कि आपको कोई जरूरी सूचना देनी है।” कांस्टेबल ने कहा।

“आने दो।”

कांस्टेबल के शिकंजे से छूटते ही आदमी तेजी से अन्दर दाखिल हुआ और मेज पर दोनों पंजे टिकाकार लम्बी-लम्बी साँसे लेने लगा।

“क्या सूचना देना चाहते हो?”

“मुझे मालूम है कि प्रोफेसर शास्त्री कहाँ कैद हैं?”

“व्हाट?”

अमर ने चौंक कर अपनी कुर्सी छोड़ दी।

“कौन हो तुम?” तारकनाथ ने उसे घूरा। उसका भी जिस्म तन गया था।

“मैं कहीं भागा नहीं जा रहा हूँ ऑफिसर। अगर आपने इस वक्त मुझमें ज़्यादा दिलचस्पी दिखाई तो शायद प्रोफेसर शास्त्री और असली अपराधी दोनों से हाथ

धो बैठेंगे। आपको अभी मेरे साथ शिमला चलना होगा।”

“गाड़ी निकालो।” अमर जोर से चिल्लाया।

□□□

गाड़ी रुकते ही अमर और तारकनाथ बाहर कूदे।

“फार्महाउस को चारों ओर से घेर कर पोजिशन ले लो।”

अमर ने होलेस्टर से रिवाल्वर निकालते हुये सिपाहियों को आदेश दिया और तारकनाथ को साथ लिये हुये

फार्महाउस के गेट की ओर दौड़ा। उन्हें यहाँ तक लाने वाला फटेहाल आदमी भी उनके पीछे ही था।

तारकनाथ ने पैर के ठोकर से लोहे के गेट को भीतर की ओर धकेला। गेट खुला हुआ था, अतः खुलता ही चला गया। 'फटेहाल' को साथ लिये हुये वे गेट के अन्दर दाखिल हुये। कंपाउंड में सन्नाटा पसरा हुआ था। लगभग सौ मीटर के फासले पर मौजूद एकमंजिले भवन के मुख्य द्वार के कपाट खुले हुये थे।

"दरवाजा तो खुला हुआ है सर।"

अमर ने कुछ नहीं कहा। तारकनाथ को फॉलो का संकेत पास करते हुये खुले दरवाजे की बढ़ा।

ड्राइंग हाल में भी सन्नाटा था। बिना कोई आवाज किये हुये वे थोड़ी देर तक आहट का जायजा लेते रहे, लेकिन कहीं कोई आहट नहीं थी। प्रतीत होता था मकान जनशून्य था।

अमर ने 'फटेहाल' की ओर देखा। चेहरे की भावभंगिमाओं के जरिये पूछा कि किस तरफ बढ़ना है।

'फटेहाल' ने टैरेस पर जाने वाले जीने के बगल में मौजूद कमरे की ओर इशारा किया। अमर उसी ओर बढ़ा और कमरे के आपस में भिड़े हुये दोनों कपाटों को रिवाल्वर की नाल से भीतर की ओर धकेलते हुये अन्दर दाखिल हो गया।

वह कमरा स्टडी रूम था। एक दीवार से सटी आलमारी में दवाओं से सम्बंधित किताबें रखी हुई थीं। कमरे में कोई नहीं था। फर्श पर बिछा हुआ कालीन एक जगह पर उभरा

हुआ था। 'फटेहाल' ने उस उभरे हुये भाग की ओर संकेत किया।

"कालीन को हटाओ।"

तारकनाथ ने तुरंत आदेश का पालन किया। कालीन के हटते ही उनकी आँखें आश्चर्य से फटी की फटी रह गयी। कालीन के नीचे चार फीट का एक वर्गाकार सुराख था, जिस पर लगा लकड़ी का दरवाजा आनन-फानन में ठीक से बंद नहीं किया गया था। यही वजह थी, जो उन्हें कालीन उभरा हुआ नजर आया था।

तारकनाथ ने 'ढक्कन' सरीखे दरवाजे को खोला। जैसा कि उन्हें अनुमान था, लकड़ी का एक जीना नीचे जाकर अँधेरे में गुम हो गया था।

अमर नीचे उतरने को उद्यत हुआ।

"संभल कर ऑफिसर! वह अँधेरे में छुपा हो सकता है।"

अमर और तारकनाथ ने 'फटेहाल' की चेतावनी को जेहन में नोट कर लिया और पसलियों से टकराते हृदय के साथ धीरे-धीरे जीने से नीचे उतरने लगे। पूरी दस सीढ़ियां उतरने के बाद उनके पैर फर्श से टकराए।

"स्विच बोर्ड जीने के बगल में ही है।" 'फटेहाल' अमर के कान में फुसफुसाया।

तारकनाथ ने सेलफोन का फ़्लैश लाइट ऑन करके स्विचबोर्ड ढूंढा और अगले ही पल वह भूमिगत कमरा तीव्र प्रकाश से भर उठा। प्रकाश में जो कुछ नजर आया, उसे देख अमर और तारकनाथ के साथ-साथ 'फटेहाल' की भी

आँखें हैरत से फटी की फटी रह गयीं। शरीर में दौड़ता लहू मानो बर्फ बन गया।

कमरे के ठीक बीच में मौजूद कुर्सी पर एक लाश बंधी हुई थी। प्रथम दृष्टया मरने वाले की उम्र अस्सी वर्ष नजर आ रही थी। उसके सीने में चाकू पेवस्त किया गया था, जहाँ से लहू की मोटी धार निकलकर जिस्म को भिगोते हुये अब फर्श को भिगो रही थी। लाश कुर्सी पर बंधी हुई थी, यानि कि कैद में ही उस व्यक्ति की हत्या कर दी गयी थी। अमर ने अपनी कैप उतार दी।

“आप लोगों ने देर कर दी इंसपेक्टर। वह हरामी प्रोफेसर की हत्या करके निकल गया।”

‘फटेहाल’ के ऐसा कहने भर की देर थी कि अमर को मानो एक साथ कई सवाल याद आ गये।

“तुम किसकी बात कर रहे हो? तुम्हें इस ठिकाने के बारे में कैसे पता? इन सब घटनाओं से तुम्हारा क्या सम्बन्ध है? प्रोफ़ेसर यहाँ कितने दिनों से थे? उन्हें एसाइलम से निकालकर यहाँ क्यों रखा गया था?”

“मेरे पास आपके सारे सवालों के जवाब हैं इंसपेक्टर। मैं सब बताने को तैयार हूँ।”

“वह कौन था, जिसके बारे में तुम्हें डर था कि वह प्रोफ़ेसर की हत्या कर
सकता है?”

“डॉक्टर रेहान सिद्दीकी।”

“रेहान सिद्दीकी?” तारकनाथ बुरी तरह चौंका- “ये तो..ये तो वही आदमी है, जो अदला-बदली वाली रात

एसाइलम में आया था। गाड़ी के नंबर प्लेट से इसी आदमी की इनफार्मेशन प्राप्त हुई है। जोशी ने जिस नंबर पर बात करने की कोशिश की थी, वह नंबर भी इसी नाम पर रजिस्टर्ड है।"

□□□

आहूजा के कानों में पहुँची डोरबेल की आवाज ने उन्हें चौंकने पर विवश कर दिया। वे चश्मा दुरुस्त करते हुये दरवाजे की ओर बढ़े। दरवाजा खोला।

"किससे मिलना है?"

दरवाजे पर खड़े शख्स की उम्र पच्चीस से तीस वर्ष के बीच थी। उसका गौर वर्ण चेहरा आकर्षक था। काले बाल गर्दन तक बढ़े हुये थे। गठीली काठी और छः फीट ऊंचे कद के कारण उसका व्यक्तित्व प्रभावशाली था।

"मेरा नाम यथार्थ है।" आगंतुक ने मुस्कुराते हुये कहा- "शैल का पुराना दोस्त।" कहने के बाद उसने आहूजा का चरणस्पर्श किया।

आशीर्वाद की औपचारिकता पूरी करने के बाद उन्होंने कहा- "अन्दर आओ।"

यथार्थ ड्राइंग हाल में प्रविष्ट हुआ। उसके सोफे पर बैठ जाने के बाद आहूजा ने मुंह खोला।

"शैल ने कभी हमें तुम्हारे बारे में नहीं बताया।"

"कैसे बताता?" यथार्थ हँसा - "हम केन्द्रीय विद्यालय में सिर्फ फिफ्थ स्टैंडर्ड तक साथ पढ़े थे, उसके बाद पिताजी के तबादले के कारण हमें शिमला शिफ्ट होना

पड़ा। एक एग्जाम के सिलसिले में बनारस आया था तो सोचा शैल से मिलता चलूँ।"

"शिमला से याद आया..।" आहूजा थोड़ा चौंके - "शैल भी उसी जगह के आस-पास गया है।"

"मतलब?"

"मतलब ये कि वह यहाँ नहीं है। उसे दगशाई गये हुये करीब बीस दिन हो गये।"

"लेकिन वह दगशाई क्यों गया है?" यथार्थ के कान खड़े हो गये। उसने

आहूजा पर अर्थपूर्ण दृष्टि डालते हुये कहा- "वह कोई पर्यटन स्थल नहीं है। ज्यादातर लोग तो उस जगह से वाकिफ भी नहीं हैं।"

आहूजा ने एक गहरी साँस ली।

"तुमने काफी दिन बाद शैल की ओर रुख किया है, इसलिये तुम शायद ये नहीं जानते कि उसकी जिन्दगी में बहुत बड़ा बदलाव आ चुका है।"

"मैं कुछ समझा नहीं।"

"उसका रोड एक्सीडेंट हुआ था और वह सीरियस हेड इंजरी से गुजरा था।"

"व..वह ठीक तो है?"

"दुनिया तो उसे ठीक समझ रही है, लेकिन जिस मानसिक अवस्था से वह गुजर रहा है, उसकी पीड़ा सिवाय उसके और कोई नहीं महसूस कर सकता है।"

"लेकिन वह दगशाई क्यों गया?"

इससे पहले कि आहूजा कोई जवाब देते, ड्राइंग हाल की आवाजें सुन मिसेज आहूजा वहां आ गयीं। उनके कुछ पूछने से पहले ही आहूजा ने यथार्थ से उनका परिचय कराया- "ये शैल का पुराना दोस्त यथार्थ है।"

"खुश रहो बेटा।" याथार्थ के औपचारिक नमस्ते का जवाब देने के बाद मिसेज आहूजा फिर से अन्दर चली गयीं और थोड़ी देर बाद सेन्टर टेबल पर नाश्ते की दुकान लग चुकि थी।

"एक्सीडेंट के कारण आई हेड इंजरी को डॉक्टर रेहान ने रिकवर तो कर लिया था, लेकिन उसके बाद शैल की स्मृति कुछ ऐसी घटनाओं पर ठहर गयी थी, जो कभी उसके जीवन का हिस्सा ही नहीं थीं। कुछ बातों को वह स्थायी तौर पर भूल गया था, बिल्कुल इस तरह जैसे वे बातें कभी उसकी जिन्दगी का हिस्सा ही न रही हों। न जाने क्यों वह ये समझने लगा था कि उसका एक्सीडेंट सोलन से लौटते वक्त हुआ था। यानि कि एक ऐसी जगह से लौटते वक्त, जहाँ वह पैदा होने से लेकर आज तक नहीं गया था। उसका कहना था कि उसे किसी के द्वारा क़त्ल हो जाने का भय था। उसे ऐसा लगने लगा था कि वह शैल नहीं बल्कि क्षितिज है। बाद में अखबार में छपे समाचार और अन्य दलीलें सुनने के बाद उसे ये यकीन तो हो गया कि सड़क दुर्घटना बनारस में ही हुई थी, किन्तु वह जेहन पर हावी हो चुके 'क्षितिज' नाम से नहीं उबर पाया। वह अजीब सा व्यवहार करने लगा था। कुछ रहस्यमयी और डरावने सपनों ने उसका जीना हराम कर दिया था।"

“इन सब घटनाओं पर डॉक्टर रेहान की क्या प्रतिक्रिया थी?”

रेहान का नाम सुनते ही आहूजा का चेहरा पत्थर की मानिंद सख्त हो गया।

“इन सब घटनाओं के बीच रेहान ने जो किया, वह भी किसी रहस्य से कम नहीं है। उन्होंने बेहद गैर-जिम्मेदाराना हरकत करते हुये शैल का इलाज बीच में ही छोड़ दिया और खुद रहस्यमय ढंग से न जाने कहाँ लापता हो गये।”

“क्या अब तक उनका कुछ पता चला?”

“कुछ पता नहीं चला। हमने हर उन सम्पर्क सूत्रों के माध्यम से उन्हें तलाश करने की कोशिश की, जो हमारे पास थे, किन्तु कुछ पता न चल सका।”

औपचारिकता के लिहाज से यथार्थ ने चाय का कप उठा लिया और एक छोटी सी चुस्की लेने के बाद कहा- “इन सब घटनाओं का उसके दगशाई जाने से क्या सम्बन्ध है?”

“उसे एक अनजान खत प्राप्त हुआ था, जिसमें उसे ये कहकर दगशाई आमंत्रित किया गया था कि वहां उसके जीवन में घटने वाली प्रत्येक घटना का राज दफन है।”

यथार्थ इस कदर चौंका कि कप का गरम चाय छलकते-छलकते बचा।

“कहाँ से आया था वह ख़त?”

“उस पर भेजने वाले का पता नहीं था।”

“किसी फ़िल्मी घटना की तरह उसे ख़त के जरिये दगशाई जाने को कहा गया और आप लोगों ने उसे अकेले

दगशाई जाने भी दिया? बगैर यह पड़ताल किये कि वह ख़त कहाँ से और किस उद्देश्य से भेजा गया था?"

आहूजा ने कुछ नहीं कहा। उनके चेहरे के भावों से जाहिर हुआ कि कुछ ऐसा था जिसे वे यथार्थ से बताने में हिचकिचा रहे थे।

"आप शायद कुछ छुपा रहे हैं मुझसे।" यथार्थ उनकी मनोदशा भांप गया।

"दरअसल शैल के जन्म को लेकर हम एक ऐसी हकीकत पर पर्दा डाले हुये हैं, जिसका सामना वह कभी नहीं कर सकता।"

यथार्थ को अपना जेहन शून्य में तैरता महसूस हुआ। जिस मकसद को पूरा करने के लिये वह शैल का पुराना मित्र होने का अभिनय कर रहा था, वह मकसद अब पूरा होने की कगार पर था। उसने अस्फुट स्वर में कहा- "क्या मैं वह हकीकत जान सकता हूँ?"

"नहीं!" आहूजा ने एक गहरी सांस ली। उनका लहजा भावुक हो चला था- "हमने उसे दगशाई क्यों जाने दिया? अपने इस सवाल के जवाब में तुम केवल इतना जान लो कि उस जगह से शैल का जन्म का रिश्ता है। वह पैदा ही सोलन में हुआ था।"

यथार्थ के चेहरे पर एक चमक उभरी, जिस पर उसने आहूजा की नजर नहीं पड़ने दी। शायद उसका अभिनय सफल रहा था और वह अपने मकसद में कामयाब हो चुका था।

"क्या मैं वह खत देख सकता हूँ?"

"उसे शैल अपने साथ ले गया है।"

"ओह।"

"अरे!" आहूजा सेंटर टेबल पर पड़े नाश्ते को देख चौंके- "तुमने तो कुछ लिया ही नहीं।"

"नहीं दादा जी। एग्जाम के बाद एक रेस्टोरेंट में मैंने पहले ही नाश्ता कर लिया था, इसलिये इनकी कोई जरूरत नहीं है।"

बार-बार मना करने के बाद भी आहूजा की जिद्द के कारण यथार्थ को पेस्टी का एक छोटा टुकड़ा हलक में उतारना पड़ा।

"मुझे अब चलना होगा।"

"लेकिन......।"

"मैं आज शाम की ट्रेन से ही अम्बाला के लिये वहां से दगशाई का रेल मार्ग सुगम है। शैल से मुलाक़ात भी हो जायेगी और अगर जरूरत पड़ी तो मैं उसकी हेल्प भी कर सकूंगा।"

□□□

अचानक जोरों की बिजली कड़की और कमरे की खिड़की हवा के तेज झोंके से खुल गयी। बारिश की बौछारें फर्श को भिगोने लगीं।

"उफ्फ! ये बारिश तो उग्र होती जा रही है।" मरियम अपनी जगह से उठी, इससे पहले कि बौछारें फर्श को ज़्यादा भिगो देतीं, उसने लपककर खिड़की को बन्द किया और फिर से डिकोस्टा के पास बैठ गयी।

"शैल ने डिनर कर लिया?" डिकोस्टा ने हाथ में लिये हुये किताब को बन्द करके सेन्टर टेबल पर रखा और मरियम से मुखातिब हुये।

"हाँ फादर। वह अपने कमरे में सोने की कोशिश कर रहा होगा। मैंने उसे गोपाल की गुमशुदगी के बारे में कुछ भी नहीं बताया है।"

"ठीक किया। उसे कुछ भी बताने का मतलब है; उसकी मानसिक उलझनों को बढ़ाना, जो फिलहाल उसकी सेहत के लिये ठीक नहीं है।"

थोड़ी देर के लिये मरियम और डिकोस्टा के बीच खामोशी छा गयी। खामोशी का ये सिलसिला तब टूटा, जब प्रार्थना हाल से डोरबेल बजने की आवाज आयी।

"मैं देखती हूँ।"

मरियम अपनी जगह से उठी। प्रार्थना हाल से होते हुये दरवाजे पर पहुँची, दरवाजा खोला।

"तुम?" मरियम का समूचा बदन कांप गया।

"हाँ कविता। ये मैं ही हूँ।"

बाहर खड़े शख़्स ने बिना कोई भाव प्रदर्शित किये हुये कहा। मरियम उसे जानती थी।

रेहान सिद्दीकी!

यही नाम था उस इंसान का, जो उसके सामने खड़ा था, और जिसका समूचा जिस्म बारिश में भीग चुका था।

"अ...न्दर आ..ओ।" मरियम ने उसे दाखिल होने का रास्ता दिया।

"मैं तुम्हें वह सब कुछ बताने आया हूँ, जो इक्कीस अक्टूबर सन् उन्नीस सौ चौरानबे की रात हुआ था।"

तेजी से अन्दर दाखिल होने के बाद रेहान ने दरवाजा बंद कर दिया।

"त..तुम ठीक तो हो न? सब कुछ ठीक तो है न?"

"कुछ भी ठीक नहीं है कविता। सब कुछ तबाह होने की कगार पर है।"

रेहान बुरी तरह हांफते हुये बोला। उसकी दशा को देखकर लग रहा था कि किसी भयानक त्रासदी की कल्पना से वह सहमा हुआ था।

"आखिर..आखिर हुआ क्या है?" मरियम का लहजा भी कंपकपाया।

रेहान के मुखमंडल को देख कर ऐसा लग रहा था, मानो वह सबकुछ बिना समय गवायें बता देना चाहता हो और उस भाव में निर्लिप्त पहला कथन उसके मुख से निकला।

"सिंघानिया लौट आया है।"

बाहर तेज बिजली कड़की और मरियम ने चीखकर रेहान से दूरी बना ली। यही वह क्षण था, जब डिकोस्टा ने प्रार्थना हाल में प्रवेश किया।

इक्कीस साल पहले

दगशाई, सोलन, हिमाचल प्रदेश

क्षितिज आनन-फानन में प्रोफ़ेसर रामानुजन शास्त्री के बंगले से बाहर आया। शास्त्री, सेंट जोसेफ यूनिवर्सिटी के भौतिकी विभाग में क्वाण्टम भौतिकी के प्रोफ़ेसर थे। उनका बंगला विश्वविद्यालय परिसर में ही था। रिसर्च स्टूडेंट होने के कारण क्षितिज के लिये यह बिल्कुल सामान्य था कि वह प्रोजेक्ट के सिलसिले में कभी भी वहां आ सकता था; बगैर किसी समय-सीमा के वहां रुक सकता था।

"उफ! लगता है शाम कुछ ज़्यादा हो गयी। रेहान तो आज जिन्दा नहीं छोड़ेगा। शाम के सारे बर्तन अकेले ही धो रहा होगा।"

वह तेजी से बड़बड़ाते हुये बाउंड्री वाल में बने सुराख की ओर दौड़ा, जो कैम्पस से बाहर निकलने का शॉर्टकट रास्ता था। वहां से बाहर निकलने वाला खुद को बस स्टैंड के ठीक सामने पाता था, अर्थात उसे लम्बा रास्ता अख्तियार करने की जहमत नहीं उठानी पड़ती थी। प्रोफ़ेसर शास्त्री को नहीं मालूम था कि आवागमन को सुलभ बनाने के लिये वह सुराख़ क्षितिज का ही बनाया हुआ था।

सुराख से बाहर निकल कर बस स्टैंड के टीनशेड के नीचे आ जाने तक क्षितिज को एहसास हो चुका था कि शाम ज़्यादा नहीं हुई थी, बल्कि आसमान पर छाये काले बादलों ने वातावरण को अंधकारमय कर दिया था।

"लगता है बारिश शुरू होने वाली है।"

क्षितिज ने रिस्टवॉच देखा। शाम के चार बज रहे थे। उसका अनुमान गलत नहीं था, थोड़ी ही देर में मूसलाधार बारिश शुरू हो गयी।

"लो! हो गयी छुट्टी। अब तो बारिश बन्द हुये बगैर बस मिलना भी मुश्किल है।"

क्षितिज का सोचना सही था क्योंकि बारिश के दौरान पहाड़ी सड़कें गीली होकर दुर्घटना का सबब बन जाती थीं, इसीलिये कोई भी चालक बारिश के दौरान सड़क पर चलने का जोख़िम नहीं उठाता था। स्टॉप पर क्षितिज अकेला ही था। बस मिलने की उम्मीद वह छोड़ चुका था, अतः बेंच पर फ़ैल कर बैठ गया और बारिश के थमने का इंतज़ार करने लगा। उसके देखते ही देखते इन्द्रदेव के प्रकोप ने सभी स्थानों को अपने चपेट में ले लिया।

क्षितिज को बैठे हुये करीब दस मिनट ही गुजरे थे कि अचानक मानो कोई
बिजली कौंधी। यूनिवर्सिटी के मुख्य गेट से एक लड़की भागते हुये बाहर निकली, उसने दौड़ते हुये सड़क पार किया और अगले ही पल टीनशेड की छाँव में क्षितिज के पास आ गयी। सब-कुछ इतनी तेजी से घटित हुआ कि जब क्षितिज कुछ समझने की स्थिति में आया तो उसे केवल यही नजर आया कि लड़की 'थैंक गॉड' कहते हुये अपना गीला दुपट्टा निचोड़ रही थी। वह अभी तक क्षितिज को नहीं देख पायी थी।

लड़की ऊंचे कद और चांदी जैसी रंगत वाली थी। उसकी केशराशि घनी और काली थी। परिधान सादगी भरे थे। किसी सौन्दर्य-प्रसाधान से सुसज्जित हुये बिना भी उसके नैन-नक्श इस सीमा तक आकर्षक थे कि क्षितिज उसे तब-तक घूरता रहा जब तक कि उसने दुपट्टे का पानी निचोड़ लेने के बाद चेहरा ऊपर नहीं उठा लिया।

एक अनजान लड़के को लगातार अपनी ओर घूरता पाकर लड़की सकपका गयी। जब कई क्षण गुजर जाने के बाद भी क्षितिज की निगाहें उसके चेहरे पर से नहीं हटीं तो वह कह उठी- “क्या आपने मुझे पहले भी कहीं देखा है?”

“माफ कीजियेगा!” क्षितिज घबरा गया- “मेरी निगाह आपके चेहरे पर नहीं बल्कि आपके हैंडबैग पर थी।”

“हैंडबैग...? क्या हुआ मेरे.....।” लड़की का आगे का वाक्य हलक में ही दम तोड़ गया, क्योंकि अगले ही पल उसकी नजर सड़क के उस पार कीचड़ में लिपटे हैंडबैग पर पड़ चुकी थी। उसके मुंह से स्वत: ही निकल पड़ा- “ओह गॉड! मेरा हैंडबैग।”

उसने हाथ में थमी ग्रन्थ सरीखी एक मोटी किताब और कुछ नोटबुक्स को संभालने के चक्कर में हैंडबैग को नजरअंदाज कर दिया था, जिसका परिणाम ये निकला था कि अब हैंडबैग सड़क के उस पार कीचड़ की गोद में आराम फरमा रहा था।

लड़की ने असहाय भाव से क्षितिज की ओर देखा। क्षितिज के बदन की थरथराहट बढ़ गयी। लड़की का रंग इस हद तक उजला था कि उसके दाहिने गाल पर

मौजूद काला तिल बिन्दु आकर का होने के बाद भी दूर से ही दिख जा रहा था। उसकी सादगी ने उसकी बला की खूबसूरती को कांतिमय बना दिया था। उसके होंठ खामोश थे किन्तु हिरनी जैसी चंचल आँखों में हैंडबैग ले आने का मूक निवेदन छिपा हुआ था।

"डोंट वरी! मैं ला देता हूँ।"

क्षितिज लड़की की प्रतिक्रिया को नजरअंदाज करके सड़क के उस पार दौड़ पड़ा। हालांकि उसकी फिदरत लड़कियों से नजदिकियाँ बढ़ाने या बेवजह उनकी मदद करने की नहीं थी, किन्तु न जाने क्यों आज पहली बार उसने अपनी फिदरत से बगावत की थी।

सड़क के उस पार पहुंचकर उसने हैंडबैग उठाया, वापस आने के लिये पलटा ही था कि उत्साह के अतिरेक में उसका पैर फिसल गया। संभलने की लाख कोशिशों के बावजूद भी वह सड़क के किनारे जमा हो गये कीचड़ में औंधे मुंह गिर पड़ा।

इधर वह कीचड़ में गिरा; उधर टीनशेड में खड़ी लड़की खिलखिला कर हँस पड़ी।

"धत तेरे की! सारा इम्प्रेशन खराब हो गया।"

क्षितिज खुद को कोसते हुये उठा। उसके कपड़े तो कीचड़ में सने ही थे, चेहरा भी कीचड़ में रंग कर बी ग्रेड की हॉरर फिल्मों में दिखाये जाने वाले भूतों जैसा बन चुका था। गिरने के कारण बदन से उठ रही दर्द की टीसों की आह को उसने बची-खुची ईज्जत बचाने के लिहाज से बाहर नहीं निकलने दिया।

"ये लीजिये।" इस पार आते ही उसने खींसे निपोरते हुये हैंडबैग लड़की की तरफ बढ़ा दिया - "मैं तो कीचड़ में नहा लिया, लेकिन आपका बैग सही सलामत है।"

"थैंक यू।" लड़की ने हैंडबैग थाम लिया।

कीचड़ में सना क्षितिज का चेहरा, कृत्रिम मुस्कान के कारण और भी अजीबोगरीब हो उठा। लड़की जोर-जोर से हंसना चाहती थी, किन्तु उसने अपनी इच्छा को कृतज्ञता भरी मुस्कान के बोझ तले बड़ी मुश्किल से दबाया हुआ था।

इससे पहले कि क्षितिज कुछ कहता, एक कार वहां आकर रुकी। उसकी ड्राइविंग डोर का शीशा तेजी से नीचे आया।

"अरे कविता! तू यहाँ कैसे फँस गयी?" ड्राइविंग सीट पर मौजूद लड़की चीखी, जो शायद बस स्टैंड पर मौजूद लड़की को जानती थी।

"ओह! थैंक गॉड बरखा कि तुम आ गयी। ये बारिश कम्बख़्त न जाने कब बन्द होगी?"

"कोई बात नहीं। चल आ। आज मैं तुझे घर छोड़ देती हूँ।"

लड़की बारिश के तेवर पर बरसती हुई कार की ओर लपकी।

अब बस स्टैंड पर केवल क्षितिज था, जो दूर पहुँच चुकी कार को मूर्खों की तरह घूर रहा था।

□□□

डोरबेल की आवाज सुन रेहान ने दरवाजा खोला और सामने क्षितिज को देखते ही चीख पड़ा- “अरे! तेरी ये हालत किसने कर दी?”

रेहान के सामने जो क्षितिज था उसे पहचान पाना मुश्किल था।

“पहले अंदर तो आने दे।” क्षितिज ने झुंझलाते हुये कहा।

“हाँ जरूर।” रेहान दरवाजे से हट गया।

“मकान मालिक का कुत्ता तो अंदर आने ही नहीं दे रहा था, बड़ी मुश्किल से ऊपर तक आया हूँ।”

“हा..हा..हा..।” रेहान अट्टहास कर उठा- “कैसे आने देगा? पूरा भूत बना बैठा है तू। आइने में शक्ल तो देख। वैसे ये हुआ कैसे?”

“एक लड़की के चक्कर में। मदद कर रहा था मैं उसकी।”

“क्या?” क्षितिज का कथन रेहान के लिये सदमे के समान था। उसके हाथ में मौजूद वह चाकू खुद-ब-खुद गिर पड़ा, जिससे वह कुछ देर पहले सब्जियाँ काट रहा था। उसका मुँह शेर की गुफा की भाँति खुला; तो फिर खुला ही रह गया- “त...तू...ल..ड़की की मदद कर रहा था?”

“हाँ।”

“लेकिन तू कब से ऐसा करने लगा?”

“कुछ देर पहले ही सीखा है लड़कियों की मदद करना। धरमपुर से पैदल आ रहा हूँ, अगर इजाजत हो तो बाथरूम में जाकर नहा लूँ?” रेहान के सवालों से क्षितिज की

झुंझलाहट बढ़ती जा रही थी- “बाकी बातें हम बाद में भी कर सकते हैं।”

“हाँ..हाँ...ठीक है। लेकिन बाथरूम गन्दा मत छोड़ना वरना मैं कल से ताला लगाना शुरु कर दूंगा।”

“ठीक है! टॉवेल अन्दर पहुँचा देना।”

क्षितिज ने बाथरूम की ओर आहिस्ता-आहिस्ता कदम बढ़ाया, ताकि उसके शरीर से कीचड़ गिर कर उस फर्श को गंदा न कर दे, जिसे रेहान ने बड़ी मेहनत से साफ किया था।

□□□

क्षितिज जैसे ही लैब से बाहर निकला, उसकी नजर निचली मंजिल के क्लासरूम की ओर गयी और आँखें खुली की खुली रह गयीं। क्लासरूम से वही लड़की बाहर निकल रही थी, जो पिछली शाम क्षितिज को बसस्टैंड पर मिली थी। उसके पीछे लगभग दस लड़कियों का झुण्ड इस प्रकार चल रहा था, जैसे संत-महात्माओं के पीछे उनके अनुयायी चलते हैं। वह अपने बराबर चल रही लड़की के साथ बातें करते हुये कॉमन रूम की ओर बढ़ रही थी। उसकी चाल तेज थी। या तो वह जल्दी में थी या फिर उसके चलने का ढंग ही ऐसा था।

क्षितिज का दिल जोरों से धड़क उठा। किसी अनजान प्रेरणा के वशीभूत होकर वह पल भर में ही नीचे जाने वाली सीढ़ियों की ओर लपक पड़ा। अन्य छात्र-छात्राओं से धक्के खाकर अंधे, बेवकूफ, इडियट इत्यादि उपाधियाँ पाता हुआ वह नीचे पहुँचा। लड़की अपने ‘अनुयायियों’ के साथ कॉमन रूम के बेहद नजदीक पहुँच चुकी थी। इससे

पहले कि क्षितिज उसके पीछे दौड़ लगाता; किसी ने पीछे से उसकी बांह पकड़कर खींच ली।

“क्या हुआ लल्लू, इतनी जल्दी में क्यों हो?”

पीछे खड़े रेहान के होठों पर मुस्कान देख क्षितिज भन्ना गया।

“चल बोल क्या है? तुझे भी इसी वक्त टपकना था?”

“क्या हुआ? चाय की केतली की तरह गर्म क्यों हो गया?”

“तेरी बेवक्त टपकने की आदत के कारण।”

“अब गुस्सा छोड़ और मेरा एक काम कर।”

“चल भाग यहा से।” क्षितिज भड़क गया- “मैं अभी खाली नहीं हूँ।”

“प्लीज!” रेहान ने रोनी सूरत बनायी- “बहुत अर्जेंट है।”

रेहान की सूरत देख क्षितिज हमेशा की तरह पिघल गया।

“अब भिखारियों जैसी शक्ल मत बना। चल बता कि काम क्या है?”

“आज मुझे प्रैक्टिस के लिये हॉस्पिटल नहीं जाना है। दरअसल कुछ सीनियर्स और रिसर्च फेलोज के साथ शिमला में डिनर की प्लानिंग है, जिसके लिये हमें अभी निकलना है।” रेहान ने अपना लेबोरेटरी कोट और हाथ में ली हुई फाइलों को क्षितिज की ओर बढ़ाते हुये कहा- “इन्हें तू अपने साथ रूम पर लेते जाना। मैं देर रात या फिर कल सुबह लौटूंगा।”

क्षितिज ने रेहान के कोट और फाइलों को संभाला और पुन: उसी दिशा में
मुड़ा, जिस दिशा में वह लड़की गयी थी।

"इस कम्बख्त को भी अभी ही मरना था।" रेहान पर फुंफकारते हुये वह आगे बढ़ा। गेट की तरफ जाते हुये उसने कॉमन रूम की खिड़की से अन्दर झाँका, किन्तु उसे कविता नाम की वह विशेष लड़की कहीं नहीं नजर आयी।

□□□

आँधी तूफान बना रेहान उस हाल के दरवाजे पर पहुँच कर ठिठका, जिस पर 'रिहर्सल हाल' हुआ लिखा था।

दरवाजा अंदर से बंद था। दौड़ने की वजह से बिखर चुके बालों को उसने हाथ से संवारा और शर्ट ठीक करने के पश्चात् लम्बी-लम्बी सांसें लेने लगा। हाल में मौजूद लोगों की आवाज बाहर तक आ रही थी। उसने दरवाजे को नॉक किया। हाल में होती हलचल थम गयी।

"देखो कौन है?" अन्दर से किसी लड़की की आवाज आई।

थोड़ी देर बाद हाल का दरवाजा खुला। दरवाजा खोलने वाले ने रेहान को खड़ा देख कर ये संदेश अन्दर पहुँचाया- "रेहान है कविता मैडम। अन्दर आना चाहता है।"

"आने दो उसे।"

रेहान हाल में दाखिल हुआ। अन्दर बहुत से छात्र-छात्रायें बैठे हुये थे।

"ये आने का वक्त है मिस्टर रेहान?" उस लड़की ने रेहान से कड़कते स्वर में पूछा, जो ठीक वहाँ खड़ी थी, जहाँ टीचर्स की डेस्क होती है। वह इस समूह की प्रशासक थी।

"सॉरी कविता मैडम। मैं थोड़ा....।"

"थोड़ा नहीं। आप पूरे आधे घण्टे लेट हैं।" कविता, रेहान की बात काटते हुये गुर्रा उठी- "ध्यान रहे कि आप मेडिकल स्टूडेंट हैं, इसके बावजूद हमने आपको अपने ड्रामे में भूमिका दी है। यदि आप डॉक्टर होकर भी समय के पाबन्द नहीं हैं, तो हमारे साथ काम करने के लायक नहीं हैं। आप जा सकते हैं। हम एन्टोनियो के किरदार के लिये किसी और को चुन लेंगे।"

रेहान शरमा गया। लेट हो जाने की एवज में ऐसी डांट आज तक उसने अपने प्रोफेसर्स से भी नहीं खायी थी।

"आगे से नहीं होगा मैडम।"

"होना भी नहीं चाहिये। अब अपनी जगह पर बैठ जाइये।"

रेहान सबसे पीछे की एक डेस्क पर जाकर बैठ गया।

वह हाल एक थियेटर के आकार का था। जिसमें रिहर्सल के लिये मंच के अलावा लोगों के बैठने की भी अच्छी व्यवस्था थी। हाल में लगे इंस्ट्रक्शन बोर्ड पर शेक्सपीयर के ड्रामे 'मर्चेन्ट ऑफ वेनिस' के चरित्रों के नाम थे और उनके आगे उनकी भूमिका निभाने वाले छात्रों के नाम। 'एन्टोनियो' के आगे रेहान लिखा हुआ था। 'पोर्शिया' के आगे तान्या लिखा हुआ था, किन्तु 'बेसेनियो' के आगे का स्थान रिक्त था। शायद बेसेनियो

के किरदार के लिये अभी तक किसी को नहीं चुना गया था।

"जैसा कि आपको पहले बताया गया था कि हम आज से अपने एनुअल फंक्शन के ड्रामे की रिहर्सल शुरू करने वाले थे।" पोडियम के माइक पर कविता की आवाज गूंजी।

"रिहर्सल शुरु करने वाले थे? इसका क्या मतलब है मैडम? क्या रिहर्सल आज से शुरू नहीं होगा?"

"नहीं।" कविता ने दो टुक कहा - "आप इंस्ट्रक्शन बोर्ड पर देख रहे हैं कि बेसेनियो के आगे का स्थान अभी भी खाली है। इससे आप अनुमान लगा सकते हैं कि हमें अभी तक बेसेनियो के किरदार के लिये कोई उपयुक्त शख़्स नहीं मिला। बेसेनियो ड्रामे का नायक है, उसके बगैर हम रिहर्सल शुरु करने के बारे में सोच भी नहीं सकते।"

"बेसेनियो के किरदार के लिये अब तक कोई मिला क्यों नहीं?"

"हम लोगों ने नोटिस बोर्ड पर एड दिया था किन्तु एड पढ़कर आये लोगों में कोई ऐसा नहीं था, जो बेसेनियो के किरदार के लिये परफैक्ट हो।"

"आपको बेसेनियो के लिये कैसा इंसान चाहिये?" छात्रों के समूह में से कई ने ये सवाल किया।

"वह दिखने में ठीक-ठाक होना चाहिये। उसकी डायलॉग डिलीवरी अच्छी होनी चाहिये। सबसे बड़ी और महत्वपूर्ण बात; कहानी की नायिका पोर्शिया यानि कि तान्या के साथ उसकी केमिस्ट्री अच्छी होनी चाहिये।"

कविता का विचार सुन रेहान ने लम्बी जम्हाई लेते हुये बगल में बैठे छात्र से कहा - “ये ड्रामे की कास्टिंग हो रही है या किसी फिल्म की?”

“कविता मैडम इस बार चरित्रों के चुनाव में काफी सख्ती बरत रही हैं।” उस छात्र ने कहा- “पिछले साल घटिया लोगों को ड्रामे में ले लेने के कारण इन्हें अवार्ड मिलने से रह गया था। इस बार पिछले साल की कसर पूरी करना चाहती हैं।”

“वैसे पिछले साल कौन सा ड्रामा था इनका।”

“जुलियस सीजर।”

“ओह! तो मोहतरमा शेक्सपीयर पर किये गये अपने रिसर्च का पूरा फायदा उठा रही हैं।”

रेहान की बात पर वह छात्र कोई प्रतिक्रिया न दे सका क्योंकि हाल में कविता की आवाज फिर से गूंज उठी थी– “हमें दुख के साथ कहना पड़ रहा है कि हम आज रिहर्सल नहीं शुरू कर पाएंगे। आज शाम ऑडिटोरियम हाल में होने वाले ऑडिशन में से अगर हमें बेसेनियो के चरित्र के लिये कोई मिल जाता है तो हम कल से रिहर्सल स्टार्ट कर सकते हैं।”

“यानि कि हमें बेसेनियो के लिये जब तक कोई मिल नहीं जाता तब तक रिहर्सल शुरू नहीं हो सकती।”

“बिल्कुल! लेकिन आप लोग अपना काम शुरु कर सकते हैं। आज आपको आपके हिस्से के संवादों की प्रिंट कॉपी मिल जायेगी। आप आईने के सामने खड़े होकर उन्हें

बोलने का अभ्यास शुरु कर सकते हैं और याद भी कर सकते हैं।"

कहने के बाद कविता टीम के साथ हाल से बाहर निकल गयी।

उसके जाने के बाद हाल में लोग धीरे-धीरे कम होते चले गये।

□□□

रेहान ने चेहरा ऊपर उठाया। सामने नजर पड़ते ही उसके मुंह में पड़ा सैंडविच का टुकड़ा हलक में ही फंस कर रह गया।

"अभी तो शाम भी नहीं हुई, और तू शिमला से डिनर करके चला भी आया?"

सामने खड़े क्षितिज की आँखों से चिंगारियां बरस रही थीं। उसकी मुखमुद्रा ऐसी नजर आ रही थी, जैसे पति का झूठ पकड़ लेने वाली बीवी के क्रोध का बाँध टूटने को आतुर हो। रेहान ने जूस का ग्लास कुछ ऐसे अंदाज में अपनी ओर खींच लिया, जैसे उसे भय हो कि क्षितिज उसका जूस पी जायेगा। क्षितिज दोनों हाथ के पंजे मेज टिकाते हुये उसकी ओर झुका और आँखों में आँखें डालकर गुर्राया- "तेरे सफ़ेद झूठ बोलने की वजह?"

रेहान ने आनन-फानन में मुंह में भरा सैंडविच ख़त्म किया और सहमे हुये स्वर

में कहा- "नहीं। मैंने तुझसे झूठ नहीं बोला। दरअसल प्लान में थोड़ी तब्दीली हो गयी। आज का प्रोग्राम कल

की डेट में शिफ्ट हो गया। मैं नाश्ता करके रूम पर ही आने वाला था। अल्लाह कसम।"

"सही कहा तूने। प्लान में तब्दीली की खबर मुझे भी मिली। सुनने में आया है कि एनुअल फंक्शन में होने वाले ड्रामे का रिहर्सल आज शुरू नहीं हो सका।"

रेहान ने जूस का ग्लास उठाने के लिये आगे बढ़ाये हुये हाथ को पीछे खींच लिया।

"हुआ होगा।" रेहान ने अनजान बनते हुये कंधे उचकाये- "मुझे इससे क्या?"

क्षितिज उसे घूरते हुये सामने वाली कुर्सी पर बैठ गया। कैन्टीन के काउंटर बॉय को सर्व करने का इशारा करने के बाद फिर से उसकी ओर मुखातिब हुआ- "कितने रूप छिपाये हैं तूने अपने अन्दर?"

"मतलब?"

"तेरे अन्दर एक्टिंग का कीड़ा कब से जागा?"

रेहान समझ गया कि जो कुछ वह क्षितिज से छिपाना चाहता था, वह बाहर आ चुका है।

"क्या सोचने लगा?"

"तू मेरा दोस्त है या बीवी? तुझे कैसे पता चल गया कि एनुअल फंक्शन के ड्रामे में इस बार मैं भी एक्टिंग कर रहा हूँ?"

"तेरा पीछा करने का शौक नहीं है मुझे। ये तो मुझे इत्तेफाकन पता चल गया कि तूने शिमला में नाईट डिनर का बहाना करके अपनी शाम की मेडिकल प्रैक्टिस

इसलिये छोड़ी ताकि आज से शुरु होने वाले रिहर्सल में शामिल हो पाए।”

इसी बीच काउंटर बॉय आर्डर सर्व करके चला गया। आर्डर में दो सैंडविच और दूध का एक बड़ा ग्लास था। क्षितिज ने एक सैंडविच रेहान की ओर बढ़ाया तथा दूसरा सैंडविच और दूध का ग्लास अपनी ओर खींच लिया। उसे अपना दूध दूसरे के साथ बांटना पसंद नहीं था। हालाँकि रेहान की इच्छा सैंडविच लेने की नहीं थी, किन्तु वह मना नहीं कर सका, क्योंकि वह जानता था कि उसका मना करना कैंटीन में किसी बड़े बखेड़े को आमंत्रित कर सकता था।

“अब बता कि किस इत्तेफाक के तहत तुझे पता चला कि मैं एनुअल ड्रामे में एक्टिंग कर रहा हूँ।”

क्षितिज ने सैंडविच का टुकड़ा मुंह में रखा और जुगाली करते हुये कहा- “कल जिस लड़की के चक्कर में मैं कीचड़ में नहाया था, वह लड़की मुझे अपनी सखियों के साथ रिहर्सल हाल में जाती हुई दिखी थी। मुझे लगा कि अन्दर लड़कियों का कोई प्रोग्राम चल रहा है, इसलिये अन्दर न जाकर मैं बाहर से ही उसके वापस आने का वेट करने लगा। थोड़ी देर बाद मुझे तू दौड़ता-भागता नजर आया। तेरी दशा देखकर लग रहा था कि तुझे उस समारोह के लिये लेट हो गया था, जो भीतर चल रहा था। फिर तू भी अन्दर घुस गया। लगभग दस मिनट बाद ही भीतर जमा हुये लड़के-लड़कियों का हुजूम बाहर आने लगा। उस हुजूम में मुझे वह लड़की भी नजर आयी। एक लड़के से

पूछने पर पता चला कि आज से एनुअल फंक्शन के ड्रामे का रिहर्सल स्टार्ट होने वाला था, किन्तु स्टार्ट न हो सका। हाल में जाने पर मुझे समझ आया कि इस बार के एनुअल फंक्शन के ड्रामे का नाम 'मर्चेंट ऑफ़ वेनिस' है, और तू उसमें एंटोनियो का किरदार निभा रहा है।"

रेहान ने गहरी सांस ली और इत्मीनान से जूस का ग्लास खाली करने के बाद बोला- "तू कब से छिछोरों वाली हरकतें करने लगा? तू तो लड़कियों को चुड़ैल कहता था, फिर उनका पीछा करने की लत तुझे कैसे लग गयी? क्या मैं ये समझूं कि माँ का लाडला बिगड़ गया?"

"तू ये सब बातें छोड़ यार।" क्षितिज सकुचाते हुये मुस्कुराया- "और मुझे उस लड़की के बारे में बता।"

"किस लड़की के बारे में? मुझे क्या पता कि किस लड़की ने तुझे कीचड़ में धकेला था?"

"वही लड़की, जो शायद इस यूनिवर्सिटी की सबसे ख़ूबसूरत लड़की है और जो अपने कद के समान लम्बे-लम्बे डग भरते हुये चलती है। उसके पीछे-पीछे लड़कियों का एक छोटा सा झुण्ड भी चलता है, ठीक वैसे ही जैसे किसी सल्तनत की राजकुमारी के पीछे-पीछे उसकी दासियाँ चलती हैं।"

"उसका नाम कविता है। इंग्लिश लिट्रेचर की रिसर्च स्कॉलर है और शेक्सपियर के कार्यों पर शोध प्रबंध लिख रही है। ड्रामे की स्क्रिप्ट राइटर और डायरेक्टर भी वही है।" रेहान ने एक सांस में कह डाला। ऐसा कहते वक्त उसका

चेहरा सपाट था। प्रतीत हो रहा था कि उस लड़की के बारे में क्षितिज को बताना उसे अच्छा नहीं लगा था।

"कविता....।" क्षितिज मानो कहीं खो गया- "नाइस नेम। और ऊपर से राइटर भी, यानि कि एक सेंसेटिव लड़की।"

"कहाँ खो गया तू? तेरा दूध ठंडा हो जायेगा मुन्ना।" रेहान ने उसके चेहरे के सामने चुटकी बजायी।

क्षितिज खयालों की दुनिया से बाहर आया। उसने रेहान की दाहिनी हथेली को अपनी दोनों हथेलियों के बीच इस कदर रखा मानो कोई लड़का किसी लड़की के साथ जीने-मरने की कसमें खाने वाला हो। फिर कहा- "तू मेरी एक हेल्प कर दे।"

"कैसी हेल्प?" रेहान ने आशंकित लहजे में पूछा। शायद वह भांप गया था कि
क्षितिज किस मामले में उसकी मदद चाहता है।

"मुझे भी ड्रामे में रोल दिला दे।"

"पागल हो गया है?" रेहान का संदेह विश्वास में परिणित हो गया। उसने एक झटके से अपना हाथ वापस खींच लिया- "एक्टिंग किसे कहते हैं, मालूम है तुझे?"

"यदि घोड़े जैसी शक्ल होने के बावजूद तुझे हीरो के फ्रेंड का किरदार मिल सकता है तो मुझे हीरो का किरदार क्यों नहीं मिल सकता?"

"बात शक्ल की नहीं है, बात एक्टिंग की है। तुझे मालूम भी है कि तू क्या एक्स्पेक्ट कर रहा है?"

क्षितिज बगैर कुछ कहे रेहान का चेहरा घूरता रहा।

"हीरो का रोल।" रेहान ने लहजे पर जोर देते हुये कहा- "वह भी शेक्सपियर के ड्रामे में और एनुअल फंक्शन जैसे इम्पोर्टेन्ट ऑकेजन पर। ये कोई मजाक नहीं है। इस ड्रामे के मंचन से यूनिवर्सिटी की प्रतिष्ठा जुड़ी हुई है।"

"तो तू ये क्या कहना चाहता है कि....।" क्षितिज ने कुपित नेत्रों से रेहान को घूरते हुये खूंखार लहजे में कहा- "यदि मुझे ड्रामे का हिस्सा बनाया गया तो मैं यूनिवर्सिटी की बदनामी की वजह बन जाऊंगा। सीधे शब्दों में तू ये क्यों नहीं कहता कि मेरी पर्सनालिटी और एक्टिंग टैलेंट से ईर्ष्या होती है तुझे। तुझे डर है कि मेरे आ जाने से ड्रामे में तेरी अहमियत घट जायेगी।"

रेहान गहरी सांस लेकर बगले झांकने लगा। वह क्षितिज की आदत जानता था। आपे से बाहर हो जाने पर बच्चों की तरह हास्यास्पद तर्क प्रस्तुत करना उसका स्वभाव था।

"सांप क्यों सूंघ गया तुझे?"

"आखिर तू कभी सीरियस क्यों नहीं होता यार? कभी तो बच्चों जैसी जिद्द से ऊपर उठकर एक मैच्योर्ड पर्सन की तरह सोचा कर।"

"तू मुझे मोरल साइंस के लेक्चर मत दे। ड्रामे में रोल दिला सकता है कि नहीं, ये बता।"

"कास्टिंग कम्पलीट हो चुकी है। अब कोई रोल नहीं बचा है।"

"मैंने इंस्ट्रक्शन बोर्ड पर देखा; बेसेनियो के आगे का स्थान खाली था। यानि कि उस रोल के लिये अभी तक

कोई नहीं चुना गया है और इसी कारण रिहर्सल आज से शुरू न हो सका।"

"आखिर तू...।"

"तू रोल दिला सकता है या नहीं?"

"उफ़!" रेहान, क्षितिज की बचकानी जिद्द पर झुंझला उठा- "मुझे सोचने दे।"

"ठीक है सोच।" क्षितिज कुर्सी पर आराम से फ़ैल गया। उसने अभी तक सैंडविच का दूसरा टुकड़ा नहीं उठाया था और न ही दूध का ग्लास होठों से लगाया था।

उसकी निगाहें रेहान के चेहरे पर ठहर गयीं। रेहान; जो बाहर से तो सामान्य नजर आ रहा था, किन्तु अन्दर ही अन्दर किसी द्वंद्व से जूझ रहा था। उसके मुखमंडल पर ऐसे भाव थे, जैसे वह जीवन का कोई महत्वपूर्ण फैसला ले रहा हो। क्षितिज बिना कोई जल्दबाजी किये उसके मुंह के खुलने का इंतज़ार करता रहा।

"ठीक है।" गहरी सांस लेते हुये आखिरकार उसने मुंह खोला- "आज शाम बेसेनियो के किरदार के लिये ऑडिटोरियम हाल में ऑडिशन है। मेरे साथ चलना।"

"थैंक यू....थैंक यू सो मच।" हर्षातिरेक में क्षितिज मेज के दूसरी ओर से ही रेहान पर झपटना चाहा।

"इट्स ओके...इट्स ओके!" रेहान ने उसे रोका- "लेकिन मैं इसकी गारंटी नहीं ले सकता कि कविता तुझे हीरो के रोल के लिये सेलेक्ट कर लेगी।"

"तू मेरे साथ रहेगा तो सब कुछ अपने-आप हो जायेगा।" क्षितिज का लहजा हर्ष से सराबोर था- "मैं तेरे लिये भी दूध मंगाऊं?"

"नहीं मैं आलरेडी बहुत ले चुका हूँ।"

"तो फिर जल्दी से फिनिश करते हैं। मुझे शाम के ऑडिशन के लिये काफी

तैयारियां करनी हैं।" क्षितिज ने इस कदर लम्बी सांस छोड़ी, जैसे वह ऑडिशन को लेकर बेहद गंभीर हो और फिर दूध का ग्लास होठों से लगा लिया।

रेहान का मुखमंडल भावहीन था। वह समझ गया कि एक गंभीर जिम्मेदारी जबरन उसके गले पड़ चुकी है। क्षितिज को बेसेनियो का रोल दिलाने के लिये कविता को कन्विंस करने की जिम्मेदारी।

□□□

"आज मैं बहुत खुश हूँ एन्टोनियो। अब तक मैं जिन्दगी का केवल एक ही पहलू देखता आया था, लेकिन आज मुझे पता चला कि इस ख़ूबसूरत शै का एक दूसरा पहलू भी है, जिसका नाम है प्यार, इश्क और मोहब्बत।"

आइने के सामने खड़ा क्षितिज उपरोक्त संवाद बोलते समय अपने चेहरे की भाव भंगिमाओं का बड़ी सावधानी से निरिक्षण कर रहा था। कमरे में एक ओर बैठा रेहान कान में उंगली डाले हुये था। भावनाओं में डूबकर डायलॉग बोलने का अभ्यास करता क्षितिज उस वक्त थम गया, जब उसकी नजर रेहान पर पड़ी।

"क्या हुआ? तू कान में उंगली डालकर क्यों बैठा हुआ है?"

"बस ऐसे ही।" रेहान ने झुंझलाते हुये कहा।

"कोई बात तो है। प्लीज बता यार?"

"डायलॉग की कॉपी पर जो लिखा है, उसे एक बार पढ़ कर देख।"

क्षितिज ने डायलॉग के पन्ने पर क्षणिक दृष्टिपात करने के बाद कहा- "देख लिया। सब कुछ ठीक तो है।"

"कमाल है यार। तुझे मिस्टेक नहीं नजर आयी?"

क्षितिज ने नासमझ भाव से इनकार में गर्दन हिलाया।

"तू एक ही अर्थ के लिये तीन शब्दों का इस्तेमाल कर रहा है। तू डायलॉग में जहाँ प्यार, इश्क और मोहब्बत बोल रहा है, वहाँ केवल प्यार होगा। भावनाओं में इतना अधिक क्यों बहा जा रहा है कि अपने मन से शब्द गढ़ ले रहा है?"

"उफ!" गहरी साँस लेते हुये क्षितिज ने डायलॉग का पेज बेड पर फेंक दिया - "मैं आधे घण्टे से गलत प्रैक्टिस कर रहा हूँ और तूने मुझे बताया तक नहीं?"

"कैसे बताता? तूने एक बार भी मेरी बात सुनने की कोशिश की?" रेहान को मानो गुस्सा निकालने का मौका मिल गया- "तू तो पूरा का पूरा बेसेनियो के करेक्टर में घुस जाना चाहता था।"

"अब क्या करूं मैं?" क्षितिज ने सर थाम लिया- "मैं तो आधे घण्टे से इस

डायलॉग पर इतनी बार प्रैक्टिस कर चुका हूँ कि ये गलत डायलॉग ही मुझे सही लगने लगा है। अगर इसमें सुधार करूंगा तो मुझे फिर से आधा घंटा लग जायेगा।"

"इसीलिये तो कह रहा हूँ कि ड्रामे में एक्टिंग करना तेरे बस की बात नहीं है।"

"ये कोई बहुत बड़ी प्रॉब्लम नहीं है।" क्षितिज ने लापरवाह अंदाज में कहा- "दो-चार शब्दों के घटने-बढ़ने से कुछ होने वाला नहीं है। मैं डायलॉग में कोई सुधार नहीं करने वाला। स्टेज पर वही बोलूँगा, जो मैंने अभी-अभी रटा है। यानि प्यार, इश्क और मोहब्बत।"

"पागल हो गया है तू?" रेहान यूं चौंका मानो क्षितिज ने कोई आत्मघाती फैसला ले लिया हो- "दिमाग तो नहीं खराब हो गया तेरा?"

"रौब क्यों झाड़ रहा है। सीधे पॉइंट पर आ और ये बता कि मेरे इस फैसले से मेरे पागल होने की पुष्टि कैसे होती है?"

"कल से रिहर्सल स्टार्ट हो रहा है। इस ड्रामे का पहला सीन तेरा और मेरा ही है। मैं एन्टोनियो हूँ और तू बेसेनियो। हम-तुम एक सच्चे मित्र हैं, जो काफी वर्षों बाद मिलते हैं। बेसेनियो यानि कि तू एन्टोनियो यानि कि मुझसे कहता है कि तुझे बेलमाण्ट की एक खूबसूरत स्त्री से प्रेम हो...।"

"मुझे मर्चेन्ट ऑफ वेनिस की स्टोरी पता है। तू बस ये बता कि अगर मैं केवल 'प्यार' की जगह पर 'प्यार, इश्क और मोहब्बत' तीनों कह दूं तो क्या बुराई है?"

"वही तो बता रहा हूँ तुझे। जिस तरह गणित में अंकों के हेर-फेर से बड़े-बड़े समीकरण धराशायी हो जाते हैं, उसी तरह साहित्य में शब्दों के हेर-फेर से भावनायें मर जाती हैं। कविता ने पुरस्कार जीतने की होड़ में स्क्रिप्ट लिखी है। अगर तूने उसके लिखे शब्दों से छेड़खानी की तो वह तुझे रिहर्सल के पहले दिन ही ड्रामे की कास्ट से बाहर कर देगी। पिछली बार कुछ गलतियों के कारण उसका ड्रामा जुलियस सीजर 'बेस्ट प्ले ऑफ द ईयर' का खिताब पाने से चूक गया था। इसीलिये इस साल वह पिछली गलतियों को दोहराना नहीं चाहती है। उसकी कड़ी मेहनत का परिणाम तेरे अभिनय का भी मोहताज है, क्योंकि तू ड्रामे का नायक है।"

"जानता हूँ यार।" क्षितिज ने लापरवाही से कहा- "इसीलिये तो प्रैक्टिस में लगा हुआ हूँ।"

"तू कुछ नहीं जानता बेवकूफ।" रेहान खीझ उठा - "तू अभिनय की ए बी सी डी भी नहीं जानता। अगर मैंने तेरी मदद न की होती तो तू आज शाम के ऑडिशन में से बेसेनियो के किरदार के लिये कभी नहीं चुना जाता।"

"तो क्या तू जिन्दगी भर मुझे इस बात के लिये धौंस देगा कि तेरी वजह से मुझे 'मर्चेन्ट ऑफ वेनिस' में कास्ट किया गया था, क्योंकि तूने इसके लिये कविता से सिफारिश की थी।"

"धौंस नहीं दे रहा हूँ बल्कि तुझे ये समझाने की कोशिश कर रहा हूँ कि तुझे ड्रामे में अपनी भूमिका को गंभीरता से निभाना चाहिये।"

"हम्म! वह तो निभाना ही है, लेकिन एक अड़चन आ गयी है बंधु।"

"कैसी अड़चन?"

"पोर्शिया का रोल खुद कविता करती तो कितना अच्छा होता न?"

"तो तू ये सोच कर ड्रामे में आया कि पोर्शिया का रोल कविता कर रही होगी?"

"नहीं। ये तो मुझे रिहर्सल हाल के बोर्ड को देखते ही पता चल गया था कि पोर्शिया के रूप में कविता नहीं बल्कि तान्या नाम की वह चुड़ैल है, जो मेरी रिसर्च फेलो है।"

रेहान कुछ नहीं बोला। क्षितिज को कविता में रुचि लेता देख, उसके चेहरे पर एक बार वही सपाट भाव काबिज हो गये थे, जो कैंटीन में उस वक्त काबिज हुये थे, जब वह उसे ऑडिशन में ले जाने के लिये 'हाँ' कर चुका था।

"जब तू ये जानता था कि कविता, पोर्शिया का रोल नहीं कर रही है तो ड्रामे में क्यों आया?" रेहान ने पारखी दृष्टि से क्षितिज के चेहरे का मुआयना किया।

"केवल इसलिये...।" क्षितिज जम्हाई लेते हुये बिस्तर पर लेट गया- "ताकि उस ख़ूबसूरत चुड़ैल को करीब से

जानने, उसके विचारों और भावनाओं को समझने का मौका मिल सके और...।"

"एक मिनट! एक मिनट!" क्षितिज अपनी बात पूरी भी नहीं कर पाया था कि रेहान ने उसे टोक दिया- "तू कविता के साथ नजदीकियाँ क्यों बढ़ाना चाहता है? तू कहीं दूर तक की तो नहीं सोच रहा है न?"

"अब मैं तुझे क्या बताऊँ।" क्षितिज ने बेड पर लेटे-लेटे ही गहरी साँस लेकर आँखें बंद कर ली – "कि मैं कितनी दूर की सोच रहा हूँ।"

क्षितिज के इरादे भांप लेने के बाद रेहान के चेहरे पर कठोर भावों ने कब्जा जमा लिया। वह क्षितिज के उस मासूम चेहरे को घूरने लगा, जो आँखें बंद होने की वजह से और भी मासूम लगने लगा था।

"मुझे लगता है कि एक और मजनूं की नईया प्रेम सागर में डूबने वाली है।"

"तू ऐसा क्यों बोल रहा है कि नईया डूबने वाली है?"

"क्योंकि मैंने अब तक की बड़ी-बड़ी प्रेमकथाओं में यही देखा है। लव बर्ड्स का मिलाप हो या न हो, वे बदनाम जरूर हो जाते हैं।"

"होता होगा बड़ी-बड़ी प्रेमकथाओं में ऐसा। मुझे मजनूं की तरह कोई लम्बा चौड़ा प्रेम ग्रन्थ नहीं लिखना है।"

"तो फिर क्या इरादा है?"

"मैं पहले उसे प्रपोज करूंगा। अपने मॉम-डैड को मनाऊँगा और फिर एक दिन उसके घर बैण्ड, बाजा, बारात लेकर पहुँच जाऊँगा।"

"हा..हा..हा!" रेहान दिल खोलकर हँसा- "अगर प्यार में सफल होना इतना ही आसान होता तो आज मजनूं की गिनती अमर आशिकों में नहीं होती। इतनी आसान नहीं होती है मोहब्बत की राह। ये अफसाने आशिकों के आंसू को स्याही बनाकर लिखे जाते हैं।"

"तू मेरा दोस्त है या दुश्मन।" क्षितिज बुरी तरह चीखते हुये उठा बैठा- "मेरा हौसला बुलंद करने के बजाय मुझे डरा रहा है?"

क्षितिज के बदले हुये तेवर देख रेहान ने उसके पास से उठ जाने में ही अपनी भलाई समझी।

"मैं तो तुझे समझा रहा था, लेकिन मुझे नहीं लगता कि तू मानने वाला है। तुझ पर इश्क का जो बुखार चढ़ा है, जल्द ही उतर जायेगा। देख लेना।"

रेहान ने डायलॉग वाली कॉपी उठाई और आइने के सामने जाकर खड़ा हो गया, जबकि क्षितिज पूरे शरीर को रजाई से ढककर सो गया।

"तुझे भी अब सो जाना चाहिये रेहान।"

क्षितिज की सलाह पर ध्यान न देते हुये रेहान अपनी प्रैक्टिस में लग गया। थोड़ी देर बाद कमरे में वह अकेला जाग रहा था और सन्नाटे को क्षितिज के खर्राटे भंग कर रहे थे।

करीब दस मिनट ही गुजरे थे कि अचानक ऐसा लगा जैसे कमरे में भूचाल आ गया हो। क्षितिज एक झटके के साथ रजाई फेंककर उठ बैठा था। रेहान भांप गया कि उसके सनकी दिमाग में कोई ऊटपटांग विचार आया था।

"लड़कियों को सबसे ज़्यादा क्या पसंद होता है रेहान?"

रेहान ने जबड़े भींच लिये। उसने वालक्लॉक की ओर देखा।

"रात के बारह बज चुके हैं। तेरे बकबक के चक्कर में मैं अपने डायलॉग अभी तक नहीं याद कर पाया हूँ। ड्रामे में तेरी एंट्री हो चुकी है तो क्या तू ये चाहता है कि मेरा एग्जिट हो जाये।"

"बता न यार।"

"मुझे नहीं मालूम। मैं ऐसी घटिया बातों पर ध्यान नहीं देता।"

सुनते ही क्षितिज अट्टहास कर बैठा। रेहान उसे घूरते रहने के बाद भी उस अट्टहास का कारण नहीं समझ पाया।

"तू हंस क्यों रहा है?"

"लड़कियों के मामले तू दुनिया पर रौब झाड़ सकता है लेकिन मुझ पर नहीं।"

"मतलब?"

"सुरभि की कहानी मैं आज-तक नहीं भूला। अगर मैंने समय रहते ही अपने दुर्लभ गीता-ज्ञान से, चार-चार बॉयफ्रेंड वाली उस लड़की के प्रति तेरे मोह का विनाश नहीं किया होता तो तू आज एमबीबीएस में ही जूते घिस रहा होता। मेरे सामने ब्रह्मचारी बनने का नाटक भूल कर भी मत करना क्योंकि मैं जानता हूँ कि लड़कियों के मामले में तू कितना बड़ा घाघ है।"

"मुझे क्षमा कर दो श्रीकृष्ण! मुझे नहीं ज्ञात कि कन्याओं को रिझाने के लिये कैसे स्वांग रचे जाते हैं।"

"चल जाने दे। ये नहीं पूछता मैं। लेकिन अभी-अभी मेरे दिमाग में एक विचार आया है।"

"जल्दी से उसे भी बक दे और सो जा।"

"तू एक काम करेगा?"

"पहले बता कि काम क्या है?"

"तू मवाली बनकर कविता से छेड़खानी कर। मैं उसके सामने तेरी भयंकर पिटाई करूंगा। इससे उसे लगेगा कि...।"

"क्या बोला?" क्षितिज का वाक्य पूरा भी नहीं हुआ था कि रेहान आगबबूला हो उठा- "जरा फिर से बोल तो।"

रेहान के तेवर देख क्षितिज की हिम्मत नहीं हुई कि वह अपना कथन दोहरा सके। रेहान के पास से उठकर पर्याप्त दूरी तक पहुँचने के बाद उसने दबे स्वर में
कहा- "दोस्ती के खातिर...।"

"भाड़ में गयी तेरी दोस्ती।" रेहान दहाड़ उठा- "अपना उल्लू सीधा करने के लिये तू मुझे मवाली बनाकर पीटेगा और मैं पीट जाऊंगा। तूने सोच कैसे लिया ऐसा?"

क्षितिज कुछ नहीं बोला। केवल ये परखने की कोशिश करता रहा कि रेहान का गुस्सा सच है या बनावटी। फिलहाल उसे रेहान के गुस्से में कोई बनावट नहीं नजर आ रही थी, इसीलिये उसने कमरे में इधर-उधर फुदक कर क्रोध में फुंफकार रहे रेहान से पर्याप्त दूरी बना रखी थी।

"शायद अब हम इस छत के नीचे नहीं रह सकते। मैं कल ही ये कमरा छोड़कर चला जाऊंगा।"

क्षितिज के लिये रेहान की ये धमकी नयी नहीं थी।

"कहाँ जायेगा?"

"किसी ऐसी जगह, जहाँ तुझ जैसा स्वार्थी इंसान अपना उल्लू सीधा करने के लिये मुझे बलि का बकरा न बना सके।"

"इस तरह की ये आपकी नौवीं धमकी है। अब आपको कोई नया जुमला ईजाद कर लेना चाहिये डॉक्साब।"

"मैं मजाक नहीं कर रहा। मेरी इस बार की धमकी गीदड़ भभकी नहीं है।"

"तू अचानक इतना सीरियस क्यों हो गया? मैंने...मैंने तो बस कहा। ऐसा करने के लिये तुझे फ़ोर्स तो नहीं किया।"

क्षितिज भी हकला उठा। उसका बेबाक अंदाज पल भर में ही रफूचक्कर हो गया।

रेहान ने बगैर कुछ कहे चेहरा दूसरी ओर घुमा लिया। वह उस वक्त से ही एक द्वंद्व से जूझ रहा था, जिस वक्त क्षितिज ने पहली दफा उसके सामने कविता के प्रति अपने आकर्षण का प्रदर्शन किया था। क्षण भर के लिये उस द्वंद्व से उसका नियंत्रण हट गया था, और इस अवस्था में उसने अपने सामने दोस्त को नहीं बल्कि एक प्रतिद्वंदी को खड़े पाया था।

"आखिर हुआ क्या?" क्षितिज ने जबरदस्ती रेहान का चेहरा अपनी ओर घुमाया। रेहान तब-तक अपने भावों को नियंत्रित कर चुका था।

"कुछ नहीं। चल अब बता कि मुझे करना क्या है, जिससे कविता तुझसे इम्प्रेस हो जाये?"

क्षितिज भौचक्क। रेहान उसे दुनिया की सबसे बड़ी पहेली नजर आया।

"तू तो रंग बदलने के मामले में गिरगिट का भी दादा निकला।"

"छोड़ यार!" रेहान मुस्कुराया, हालाँकि क्षितिज उस बेबस मुस्कान के पीछे छिपे असीम दर्द को नहीं महसूस कर पाया- "ये केवल एक मजाक था, ये जानने के लिये कि कभी सीरियस न होने वाला तुझ जैसा इंसान इस मुद्दे पर भी सीरियस होता है या नहीं।"

"थैंक गॉड!" क्षितिज ने इत्मीनान की सांस ली- "तूने तो मेरी जान ही निकाल दी थी यार। ये सच है कि अपना उल्लू सीधा करने के लिये मैं हमेशा तेरे साथ ज्यादती करता हूँ, लेकिन साथ ही ये भी सच है कि तेरे बगैर मैं कुछ भी नहीं....कुछ भी नहीं।" भावुकता के कारण क्षितिज का लहजा थोड़ा असंतुलित हुआ।

"चल अब अपनी प्लानिंग बता।"

"क्या तू भिखारी बन सकता है?"

"लेकिन बात तो मवाली बनने की हुई थी।"

"अरे यार पहले पूरी बात तो सुन।"

"आखिर हुआ क्या?" क्षितिज ने जबरदस्ती रेहान का चेहरा अपनी ओर घुमाया। रेहान तब-तक अपने भावों को नियंत्रित कर चुका था।

"कुछ नहीं। चल अब बता कि मुझे करना क्या है, जिससे कविता तुझसे इम्प्रेस हो जाये?"

क्षितिज भौचक्क। रेहान उसे दुनिया की सबसे बड़ी पहेली नजर आया।

"तू तो रंग बदलने के मामले में गिरगिट का भी दादा निकला।"

"छोड़ यार!" रेहान मुस्कुराया, हालाँकि क्षितिज उस बेबस मुस्कान के पीछे छिपे असीम दर्द को नहीं महसूस कर पाया- "ये केवल एक मजाक था, ये जानने के लिये कि कभी सीरियस न होने वाला तुझ जैसा इंसान इस मुद्दे पर भी सीरियस होता है या नहीं।"

"थैंक गॉड!" क्षितिज ने इत्मीनान की सांस ली- "तूने तो मेरी जान ही निकाल दी थी यार। ये सच है कि अपना उल्लू सीधा करने के लिये मैं हमेशा तेरे साथ ज्यादती करता हूँ, लेकिन साथ ही ये भी सच है कि तेरे बगैर मैं कुछ भी नहीं....कुछ भी नहीं।" भावुकता के कारण क्षितिज का लहजा थोड़ा असंतुलित हुआ।

"चल अब अपनी प्लानिंग बता।"

"क्या तू भिखारी बन सकता है?"

"लेकिन बात तो मवाली बनने की हुई थी।"

"अरे यार पहले पूरी बात तो सुन।"

क्षितिज अपनी योजना बताने के लिये रेहान के करीब आ गया।

□□□

क्षितिज के पैरों तले जमीन सरक गयी। भौतिकी के शोध अनुभाग में कविता का नजर आना, ताजमहल के दगशाई में नजर आने जैसा विस्मयकारी था। वह ठीक उस स्थान पर थी, जहाँ से प्रोफ़ेसर शास्त्री प्रोजेक्ट से सम्बन्धित दिशा-निर्देश दिया करते थे। आर्यन, तान्या समेत क्षितिज के दो अन्य रिसर्च फेलो भी कविता को उतनी ही तल्लीनता से सुन रहे थे, जितनी तल्लीनता से वे प्रोफ़ेसर शास्त्री को सुना करते थे।

"कमाल की लड़की है। ड्रामे को लेकर यहाँ तक चली आई।"

क्षितिज बिना कोई औपचारिकता निभाये ही अन्दर घुस गया। उसके अचानक प्रवेश से वहां मौजूद लोग चौंक उठे। कविता उसे इस कदर घूरने लगी, मानो प्रवेश की अनुमति न मांगकर उसने कोई नियम तोड़ दिया हो। उसके कांपते होठ कुछ कहने के लिये खुलने ही वाले थे कि क्षितिज कह उठा– "ये क्या कविता? तुम लैब तक क्यों चली आयी? तुम नहीं जानती कि यहाँ फिजिक्स के अलावा किसी अन्य सब्जेक्ट का नाम लेना भी वर्जित है। तुम जल्दी यहाँ से
चली जाओ। प्रोफ़ेसर शास्त्री किसी भी पल यहाँ पहुँचते होंगे।"

क्षितिज ने ये बातें अपने विषय की गंभीरता की आड़ में कविता को प्रभावित करने के लिये कही थीं, किन्तु उस वक्त वह चौंक पड़ा, जब उसका वाक्य सुनते ही वहां उपस्थित लोग ठहाके लगाने लगे, और कविता के चेहरे पर रोष की लालिमा व्याप्त हो गयी।

“मैं प्रोफ़ेसर रामानुजन शास्त्री ही हूँ मिस्टर क्षितिज सक्सेना।”

एक-एक हर्फों को चबाते हुये जब कविता ने उपरोक्त वाक्य कहा तो क्षितिज मानो नींद से जागा। यंत्रचालित युक्ति की तरह उसकी जीभ बाहर आ गयी। कल्पना की दुनिया से उबरकर जब उसने यथार्थ के धरातल पर कदम रखा, तब कहीं जाकर उसे नजर आया कि जिसे वह कविता समझ बैठा था, दरअसल वे प्रोफ़ेसर शास्त्री ही थे, जो इस वक्त उसे ऐसे घूर रहे थे, जैसे उसने बग़ैर इजाजत के उनकी लिखी उन किताबों को हाथ लगा दिया हो, जिनके बारे में वे दावा करते थे कि वे संसार की सर्वश्रेष्ठ रिफरेन्स बुक्स में से हैं। क्षितिज के पास अब कोई विकल्प नहीं था, सिवाय शर्म से लाल होकर गर्दन नीचे करने के। लोगों के ठहाके लगातार उसके कानों में पड़ रहे थे।

“कविता कौन है, ये जानने में हमारी जरा भी दिलचस्पी नहीं है, लेकिन तुम्हारा डॉक्टोरल एडवाइजर होने के नाते मैं तुम्हें ये आदेश देता हूँ कि अपनी अतिरिक्त कल्पनाशीलता को इस लैब से बाहर रखो। तुम मेरे स्टूडेंट हो, इसलिये मेरे बनाए हुये नियमों की परिधि में आते हो।”

क्षितिज जानता था कि जब प्रोफ़ेसर का क्रोध चरम पर होता है तो वे इसी तरह लम्बे-लम्बे संवादों में 'शिकार' पर आग उगलते हैं। उनके क्रोध पर अंकुश लगाने का सबसे आसान तरीका यही होता था कि 'शिकार' उनकी लम्बी डांट पर संक्षिप्त प्रतिक्रिया दे और इस वक्त क्षितिज के पास 'सॉरी' से भी संक्षिप्त और क्या हो सकता था।

"सॉरी सर!"

"गलती करने के बाद सॉरी बोलकर औपचारिकता निभाने से बेहतर ये होता है कि हम भविष्य में उस गलती को कभी न दोहराने की शपथ लें, जिसकी वजह से सॉरी बोलने की नौबत आई हो।"

क्षितिज की निगाहें पैर के अगूंठे पर थीं।

"आप अपने यथास्थान पर विराज सकते हैं। किन्तु स्मरण रहे कि यदि भविष्य
में आपने ये गलती दोहरायी तो...।"

प्रोफ़ेसर ने वाक्य अधूरा छोड़ दिया, क्योंकि वे डांट खाने वाले शिष्यों से ये अपेक्षा रखते थे कि वे अधूरे वाक्य से पूरा मतलब निकालने में सक्षम हैं।

'ओह गॉड! मोहब्बत नाम की बीमारी के सिम्प्टम्स इतनी जल्दी कैसे नजर आने लगे? अब तो हेलुसिनेशन्स भी होने लगे।'

क्षितिज मन में यही सोचते हुये दबे पाँव जाकर अपनी जगह पर विराजमान हो गया।

"अब हम अपने विषय पर आते हैं।"

प्रोफ़ेसर का उपरोक्त वाक्य गूंजते ही माहौल हद से ज़्यादा गंभीर हो गया। क्षितिज ने 'घटना' के बाद पहली दफा प्रोफ़ेसर की ओर देखा।

"क्षितिज के आने से पहले मैं आप लोगों के सामने एक रोचक उदहारण प्रस्तुत कर रहा था।"

क्षितिज रोमांचित हुआ, क्योंकि प्रोफ़ेसर के उदहारण हमेशा उसकी रुचि की खुराक हुआ करते थे।

"एक बार चालीस साल के प्रोफ़ेसर को अपनी सोलह साल की स्टूडेंट से प्रेम हो गया। दोनों की इच्छा विवाह के बंधन में बंधने की थी, किन्तु उम्र के अधिक अंतर के कारण वे समाज की ओर से होने वाली कठोर प्रतिक्रिया को लेकर भयभीत भी थे। ऐसे में उन्हें क्या करना चाहिये? क्या उन्हें अपने प्रेम को भूल जाना चाहिये? या फिर समाज को अंगूठा दिखाकर फ़िल्मी ढंग से अपने प्रेम को परवान चढ़ाने की कोशिश करनी चाहिये?"

"उन्हें समय-यात्रा का कोई जरिया तलाशना चाहिये।"

"लेकिन समय-यात्रा भी उनके उम्र के अंतर को कैसे कम कर सकता है? वे भूत में जाये या भविष्य में; उनके उम्र का अंतर तो बरकरार रहेगा।"

"जब तक वे दोनों मिलकर समय-यात्रा का जरिया तलाशेंगे तब-तक तो उन दोनों की प्यार करने की उम्र निकल चुकी होगी।"

"प्रोफ़ेसर तो वैसे भी डिस्चार्ज होने वाला है। टाइम-मशीन बनने तक वह इतना बुड्ढा हो चुका होगा कि शक्तिवर्धक कैप्सूल्स भी कारगर साबित नहीं हो पायेंगे।"

प्रोफ़ेसर शोधार्थियों के तर्क और चुहल पर मुस्कुराते रहे। उनका ध्यान क्षितिज पर था, जिसने अभी तक इस मुद्दे पर अपना तर्क नहीं प्रस्तुत किया था। वह रफ पेज पर कुछ गणनायें करने में व्यस्त था। पांच शोधार्थियों में क्षितिज ही ऐसा था, जिसकी अद्भुत तर्क-शक्ति के प्रोफ़ेसर भी कायल थे। वे जानते थे कि ‘समय-यात्रा’ को लेकर अगर कोई गंभीर था तो वह क्षितिज ही था, जो कई बार आइंस्टीन के समीकरणों के चौंकाने वाले हल ढूंढ कर न केवल उन्हें चमत्कृत कर चुका था, बल्कि गणितीय रुप से यह भी सिद्ध कर चुका था कि भविष्य की यात्रा संभव है। और यदि लाइट बैरियर को लांघने में सफलता मिल जाती है तो समय की धारा में पीछे की ओर भी तैरा जा सकता है। वह अपनी अद्भुत कल्पनाशक्ति और सैद्धांतिक भौतिकी के प्रयोग से ऐसी कई परिकल्पनायें गढ़ चुका था, जो समान्तर ब्रह्माण्ड के अस्तित्व की पुष्टि के साथ-साथ ये भी साबित करते थे कि यदि मानव तकनीकी रूप से इतना उन्नत हो जाये कि वह टेलीपोर्ट हो सके, तो ये समान्तर ब्रह्माण्ड ही भविष्य में झांकने की खिड़की बनेंगे।

प्रोफ़ेसर हमेशा की तरह सबसे अंत में क्षितिज की ओर घूमे।

“तुम क्या कहते हो क्षितिज?”

“मुझे लगता है कि वह प्रोफ़ेसर ‘टाइम डिलेशन’ प्रिन्सिपल का सहारा लेकर अपनी कठिनाई को दूर कर सकता है, लेकिन इसके लिये उसे एक क्लोज्ड स्पेसशिप की जरूरत होगी और उसे लाइट की नाइंटी नाइन पॉइंट

नाइन परसेंट की वेलोसिटी से कम से कम एक साल तक स्पेस ट्रैवल करना होगा। एक साल बाद जब वह धरती पर वापस आयेगा तो यहाँ पर बाईस साल सात महीने गुजर चुके होंगे। यानि कि स्पेसशिप में गुजारे हुये उसके एक साल धरती के बाईस साल सात महीने के बराबर होंगे। इस दशा में उसकी अवस्था इकतालीस साल होगी, जबकि उसकी स्टूडेंट अड़तीस साल सात महीने की हो चुकी होगी। मुझे लगता है कि शादी के बंधन में बंधने के लिये उम्र का यह छोटा अंतर अब विवादास्पद नहीं रह जायेगा।"

क्षितिज ने नोटबुक का पेज प्रोफ़ेसर की ओर बढ़ा दिया, किन्तु प्रोफ़ेसर ने उसके कैलकुलेशन पर नजर डालना जरूरी नहीं समझा, क्योंकि क्षितिज के जवाब ने उन्हें पूर्ण रूप से संतुष्ट कर दिया था।

"मेरे सवाल का जवाब बेहद साधारण था। कम से कम रिसर्च स्कॉलर्स के लिये ये किसी नर्सरी राइम को लर्न करने जितना आसान था।" प्रोफ़ेसर शास्त्री अन्य चार की ओर मुखातिब हुये- "यदि आपका दिमाग 'शक्तिवर्द्धक कैप्सूल' के बजाय 'टाइम डिलेशन' पर गया होता तो ये बात शायद आपके दिमाग में भी आ सकती थी कि गति का प्रभाव समय पर पड़ता है। और यदि यह गति प्रकाश की गति के समकक्ष या उससे तुलना किये जाने लायक हो जाये तो यह समय को आश्चर्यजनक ढंग से धीमा कर सकती है।[4]"

‘शक्तिवर्द्धक कैप्सूल’ शब्द का इस्तेमाल करने वाला शख्स झेंप गया।

“नाउ....कम टू द पॉइंट।” प्रोफ़ेसर ने गहरी सांस ली और कहा- “तुम्हारे लिये एक गुड न्यूज़ है क्षितिज। अमेरिका के ‘ह्यूमन जीनोम प्रोजेक्ट’ के लीडिंग साइंटिस्ट्स में से एक डॉक्टर शक्तिस्वरुप सिंघानिया इंडिया लौट रहे हैं।”

“रियली?” क्षितिज को मानो यकीन नहीं हुआ।

“ऑफ़कोर्स! ये सच है। सोलन में उनका मल्टीस्पेशियलिटी हॉस्पिटल और रिसर्च सेंटर का इंफ्रास्ट्रक्चर कम्पलीट हो चुका है। नेक्स्ट वीक वे उसी के इनऑगुरेशन के लिये इंडिया आ रहे हैं।”

“थैंक गॉड! मेरे ‘अस्तित्व थ्योरी’ में जेनेटिक इंजीनियरिंग की महत्वपूर्ण भूमिका है। डॉक्टर सिंघानिया जैसे वर्ल्ड क्लास जेनेटिसिस्ट की कंपनी मेरे लिये वरदान साबित होगी।”

“बेशक। सिंघानिया, क्वांटम रॉबिन के डीएनए से क्रिप्टोक्रोम[5] को सिंथेसाइज़[6] करने वाले जीन को एक्सट्रेक्ट करके ‘अस्तित्व’ का निर्माण करने के तुम्हारे फ़ॉर्मूले को जरूर पसंद करेंगे।”

उत्साह के अतिरेक के कारण क्षितिज कुछ नहीं बोल सका।

“सॉरी टू डिस्टर्ब प्रोफ़ेसर!” ये नयी आवाज एक लड़की की थी- “क्या हम ये जान सकते हैं कि क्षितिज.....।”

“नो तान्या! अभी नहीं।” प्रोफ़ेसर समझ गये कि लड़की क्या पूछना चाहती थी- “इसके लिये अभी तुम लोगों को प्रतीक्षा करनी होगी।”

तान्या ने मुंह बिचकाते हुये क्षितिज की ओर देखा। प्रोफ़ेसर के दो टूक लहजे ने साबित कर दिया था कि प्रतिष्ठा के मामले में वे सभी क्षितिज से पीछे थे, इतने पीछे कि उसके रिसर्च थीम को समय से पहले जानने के अधिकारी नहीं थे।

“आपको पूर्व में ही दी गयी सूचना के अनुसार ठीक एक घंटे बाद यानि कि

आठ बजे मेरी यूके के लिये मेरी फ्लाइट है। पंद्रह दिन कांफ्रेंस में बिजी रहने के

कारण हमारी मीटिंग नहीं हो पायेगी। इस दौरान अगर किसी का आर्टिकल कम्पलीट होता है, तो वह रिव्यु के लिये उसे मेरे असिस्टेंट के पास सबमिट कर सकता है। मैं लौटने के बाद रिकमंडेशन लैटर इशू कर दूंगा।” कहने के बाद प्रोफ़ेसर शास्त्री खड़े हो गये।

उनके कुर्सी छोड़ते ही क्षितिज लपक कर बाहर जाना चाहा, किन्तु तभी एक मजबूत हाथ ने उसे जबरदस्ती खींचकर अपने पास बैठा लिया। वह आर्यन था। उसका रिसर्च फैलो।

“क्या बात है डुड? इतनी जल्दी? कैंटीन चलते हैं।” आर्यन मुस्कुराया।

"नहीं। अभी नहीं। मेरा अभी इसी वक्त कहीं पहुंचना बहुत जरूरी है। मैं आलरेडी लेट हो चुका हूँ।" क्षितिज ने उठने की कोशिश करते हुये कहा।

तान्या उसे जहरबुझे नेत्रों से घूर रही थी।

क्षितिज को शुरू से ही उस लड़की में कोई रुचि नहीं थी। उसके जबरन गले पड़ने की प्रवृत्ति से वह नफरत करता था, जिसे वह यदा-कदा जाहिर भी किया करता था, किन्तु तान्या या तो उस नफरत को महसूस नहीं कर पाती थी या फिर नजरअंदाज कर देती थी। आज क्षितिज के मुंह से कविता का नाम सुनते ही उसके अरमानों का ढेर जमींदोज हो गया था।

हालांकि आर्यन ने क्षितिज को उसका कांसेप्ट जानने के लिये उसे रोका था, किन्तु तान्या को क्षितिज के कांसेप्ट से ज़्यादा उसकी उस कल्पना में रुचि जाग गयी थी, जिसमें डूबकर वह प्रोफ़ेसर शास्त्री को कविता समझने की भूल कर बैठा था और मजाक का पात्र बन गया था।

"कविता का नाम आज तुम्हारी ज़ुबान पर कैसे आ गया क्षितिज?"

तान्या द्वारा मुस्कुरा कर बोले गये वाक्य में व्यंग्य का पुट महसूस करके क्षितिज तिलमिला उठा, किन्तु नैतिक मूल्यों का ख़्याल करके उसने अपने भीतर के तूफान को न तो चेहरे से जाहिर होने दिया और न ही वाक्य से।

"ये सब कल देर रात तक किये गये रिहर्सल का असर था।" क्षितिज ने अपना लहजा शालीन रखने की सफल कोशिश की।

“रिहर्सल से याद आया।” तान्या चहकी- “ड्रामे में कविता ने मुझे पोर्शिया...।”

“मुझे मालूम है।” क्षितिज ने उसकी बात काट कर रुखे स्वर में कहा- “ड्रामे
में और वास्तविक जीवन में फर्क होता है।”

आर्यन खामोश था। वह तान्या के उन भावों को परखने की कोशिश कर रहा था, जो क्षितिज से बातें करते समय उसके चेहरे पर मौजूद थे।

“बाकी बातें हम बाद में भी कर सकते हैं।” क्षितिज ने जल्दबाजी में कहा और रिस्टवॉच पर एक उड़ती नजर डालते हुये बाहर निकल गया।

“ये इतनी जल्दी में क्यों है?”

उपरोक्त सवाल तान्या और आर्यन; दोनों के जेहन में था।

□□□

सुबह के सात बज रहे थे। दगशाई से कुमारहट्टी जाने वाली मुख्य सड़क पर स्थित प्राचीन देवी-मन्दिर से आती घण्टों की आवाज और अगरबत्ती की खुशबू ने वातावरण में आध्यात्मिकता का रस घोल दिया था। कुछ श्रद्धालु सीढ़ियाँ चढ़ रहे थे, जबकि कुछ हाथ में पूजा की थाली लिये हुये नीचे उतर रहे थे। सीढ़ियों के दोनों किनारों पर भिखारियों की दो लम्बी कतारें थीं, जिनमें अधिकतर भिखारी अपाहिज थे और भक्ति-रस में डूबे श्रद्धालुओं के आगे दयनीय स्वर में गिड़गिड़ा रहे थे।

कविता गर्भगृह से बाहर निकली और किसी की तलाश में इधर-उधर देखने लगी। अन्य लोगों की तरह उसके हाथ में भी पूजा की थाली थी।

“हे देवी माँ! अब ये चिपू कहाँ चला गया?”

चेहरे पर परेशानी का भाव लिये हुये उसने नीचे जाने वाली सीढ़ी की ओर देखा। एक छोटे और खूबसूरत बच्चे पर नजर पड़ते ही उसने चैन की सांस ली। वह बच्चा सीढ़ी के पास उतारे गये चप्पलों के ढेर में कुछ तलाश रहा था।

“चिपू मैंने तुम्हें बोला था न कि गर्भगृह के पास से कहीं नहीं जाना।” कविता तेजी से उसके पास पहुँची।

“दीदी देखो न इन चप्पलों की भीड़ में मेरी और आपकी चप्पल तो कहीं दिख ही नहीं रही।” बच्चे ने चप्पलों के ढेर को अपने नन्हें पैरों से इधर-उधर बिखेरते हुये बेहद मासूमियत के साथ कहा। वह कविता से पहले ही गर्भगृह से बाहर आ गया था और हिदायत के मुताबिक़ दर्शन करके पहले बाहर आ जाने की दशा में उसे गर्भगृह के पास ही खड़े रहना था, किन्तु चप्पल के चोरी हो जाने के भय से उसने बड़ी बहन की हिदायत को नजरअंदाज कर दिया था।

“ओफ्फो चिपू! हम लोगों ने अपनी चप्पल यहाँ नहीं माली दादा की दुकान के पास उतारी है। इतनी जल्दी भूल गये तुम? अभी परिक्रमा बाकी है। चलो पहले परिक्रमा पूरी करते हैं; फिर चप्पल पहनेंगे और घर चलेंगे।”

कविता ने चिपू की उंगली पकड़ी और गर्भगृह की परिक्रमा करने वालों के झुण्ड में शामिल हो गयी। बालकृष्ण के समान मोहक सौन्दर्य वाला लगभग चार साल का चिपू कविता की उंगली थाम कर बेहद उत्साह के साथ परिक्रमा कर रहा था। जब गर्भगृह के पीछे वाली दीवार पर बने देवी-यंत्र पर माथा टेकने की नौबत आयी तो उसने असहाय भाव से कविता की ओर देखा, क्योंकि छोटे कद के कारण वह स्वयं से श्रीयंत्र पर माथा नहीं टेक पाता था। कविता उसका मंतव्य समझ गयी। उसने पूजा की थाली को दान-पात्र पर रखा और चिपू को दोनों हाथों से उठाकर उसका माथा श्रीयंत्र की ऊंचाई तक ले गयी। चिपू ने पहले श्रीयंत्र को ध्यान से देखा फिर श्रद्धापूर्वक उस पर माथा टिकाते हुये हमेशा की तरह मन ही मन प्रार्थना की:

'तुम जो कोई भी हो, मुझे अपनी शक्तियों से जल्दी से बड़ा कर दो ताकि तुम तक पहुंचने के लिये दीदी को मुझे उठाना न पड़े।'

चिपू अपने वय के अन्य बच्चों की तुलना में ज्यादा बोलता था। इतना ज़्यादा कि कभी-कभी कविता को जरूरत से अधिक तेज डांट लगानी पड़ती थी। वह प्रत्येक मंगलवार को देवी-दर्शन के लिये चिपू को भी साथ लाती थी, ताकि उसके बालमन में ईश्वर के प्रति आस्था और स्त्री-शक्ति के प्रति श्रद्धा का भाव पनप सके।

"एक सवाल पूछूं दीदी चिल्लाओगी तो नहीं?" चिपू ने परिक्रमा करते हुये ही पूछा।

“चिपू; मैंने तुम्हें पूजा के समय शांत रहने को कहा था।”

“हाँ; लेकिन मेरा इस बार का सवाल पूजा से ही जुड़ा हुआ है।”

“ठीक है पूछो! लेकिन इसके बाद तुम कुछ नहीं पूछोगे। तब तक, जब तक कि हम परिक्रमा पूरी नहीं कर लेते।”

“हम लोग पूजा के बाद इस तरह मन्दिर के चक्कर क्यों लगाते हैं?”

“केवल मंदिर ही नहीं हर पवित्र स्थानों की परिक्रमा की जाती है ताकि हम उन स्थानों की ऊर्जा को स्वयं में समाहित कर सकें। इसे प्रदक्षिणा भी कहते हैं।”

“हम चक्कर केवल पाँच या सात बार ही क्यों लगाते हैं? उससे अधिक या कम क्यों नहीं? आप मुझे उठाकर जिस चक्र पर माथा रखवाती हैं, वह कौन से बाबा जी हैं, और उन्हें मंदिर के पीछे की दीवार पर इतनी ऊंचाई पर क्यों टांग दिया गया है?” पहले सवाल का जवाब मिलते ही चिपू ने सवालों की झड़ी लगा
दी।

“शान्त हो जाओ चिपू। मैंने कहा था न कि पूजा के समय बात नहीं करना है।”

“लेकिन अभी तो आपने कहा...।”

“शांत!” कविता के पास चिपू के सवालों के सरल जवाब नहीं थे, इसलिये उसने सवालों से छुटकारा पाने के लिये उसे कठोर स्वर में डांट दिया।

चिपू खामोश हुआ और कविता ने चैन की साँस ली, किन्तु वह जानती थी कि उसकी खामोशी तूफ़ान आने से पहले की खामोशी थी। बिना सवालों के जवाब पाए वह उसका पीछा नहीं छोड़ने वाला था; कम से काम आज दिन भर तो बिल्कुल भी नहीं।

दोनों ने परिक्रमा पूरी कर ली।

"चलो अब पक्षियों को प्रसाद खिलाते हैं।" कविता ने चिपू को चन्दन लगाते हुये कहा। और फिर उसे लेकर उस खुले जगह पर आ गयी, जहाँ पक्षियों का झुण्ड लोगों के डाले हुये दाने चुग रहा था। उसने चिपू की हथेली पर पक्षियों के लिये खरीदे गये दाने का कुछ हिस्सा रखा और कुछ अपनी मुट्ठी में लेकर बोली- "चलो अब शुरु करते हैं। एक...दो...तीन।"

'तीन' के उच्चारण के साथ ही दोनों ने दानों को चिड़ियों की ओर उछाल दिया। देखते ही देखते विहगों का समूह तेजी से जमीन पर आया और उनके छिंटे गये दानों पर धावा बोल दिया।

"अब किसकी बारी है?"

"डॉगिज की।" चिल्लाते हुये चिपू उन कुत्तों के झुण्ड की ओर बढ़ा, जो उन्हें देखते ही खड़े हो गये थे और दुम हिलाते हुये आहार का इंतज़ार करने लगे थे।

'कुत्ते नीले या पीले रंग के क्यों नहीं होते?'

'कुत्तों की तरह हमारे पास दुम क्यों नहीं होती?'

'कुत्तों की दुम सीधी क्यों नहीं होती?'

'कुत्ते भी हमारी तरह काम क्यों नहीं करते?'

'क्या कुत्तों की भी अपनी सोसायटी होती है?'

ऐसे न जाने कितने सवाल चिपू पूछ डालता, अगर कविता ने उसे सवाल पूछने के कारण कुछ देर पहले डांटा न होता तो। पूजा के बाद चिड़ियों और कुत्तों को बिस्कुट खिलाना तथा भिखारियों में दान करना, उन दोनों का प्रत्येक

मंगलवार का कार्य था।

"दीदी वहां देखो। आज डॉगिज अपने बच्चों को भी साथ लेकर आये हैं।" चिपू ने उन पिल्लों की ओर देखकर जोरदार किलकारी भरी, जो न जाने कहाँ से प्रकट होकर बड़े कुत्तों के साथ आहार की लूट में शरीक हो गये थे।

उसके बालसुलभ आचरण पर कविता ने हमेशा की तरह मुस्कुराते हुये कहा- "तुमने ठीक समझा चिपू। ये भी बिल्कुल तुम्हारे जैसे हैं। छोटे भी और क्यूट भी।"

कविता का उपरोक्त कथन सुनते ही कुत्तों की ओर बिस्कुट फेकते चिपू के हाथ रुक गये और वह एकटक उसे देखने लगा।

"क्या हुआ चिपू?"

बदले में चिपू ने जो कहा उसे सुन कविता के पैरों तले जमीन खिसक गयी। उसने लाल रंग के पिल्ले की ओर इशारा करते हुये कहा- "इनमें से एक को साथ लेकर घर चलो। मैं खेलूँगा उसके साथ। वह लाल रंग वाला मुझे पसंद आ गया है।"

"पागल हो गये हो तुम?" कविता चिल्लाई, क्योंकि वह जानती थी कि अगर इस मुद्दे पर उसने प्यार से बात की

तो उसे एक लावारिस पिल्ले को साथ लेकर घर लौटना पड़ जायेगा- "वे हमारे साथ नहीं रह सकते।"

"क्यों नहीं रह सकते?" चिपू भी नन्हीं सी जान लेकर पूरी तेजी के साथ चिल्लाया- "अभी-अभी तो आपने कहा कि ये मेरे जैसे हैं।"

चिपू की चीख सुनकर आस-पास के लोग भी उन दोनों की ओर देखने लगे। फलस्वरूप कविता उसकी जिद्द के आगे स्वयं को असहज महसूस करने लगी।

"क्या तुम चाहते हो कि मैं तुम्हारी पसंद की खातिर एक बच्चे को उसके माँ-बाप से अलग कर दूँ?"

कविता चिपू की रग-रग से वाकिफ थी, इसलिये उसने उसकी जिद्द ख़त्म करने के लिये ये पैंतरा आजमाया।

कविता के सवाल ने चिपू पर जादू सा असर किया। थोड़ी देर पहले पिल्ले के लिये जिद्द कर रहे चिपू ने 'नहीं' में सर हिला दिया, क्योंकि कविता ने उसे जो नैतिक शिक्षा दी थी, उसके अनुसार अपने शौक को पूरा करने के लिये दूसरों के कष्टों की वजह बनने वाले को ईश्वर कभी नहीं पसंद करता है। चिपू की गर्दन इंकार में हिलते ही कविता ने देवी माँ को धन्यवाद दिया।

"दैट्स लाइक अ गुड बॉय!" वह मुस्कुरायी और चिपू की उंगली पकड़कर नीचे जाने वाली सीढ़ियों की ओर बढ़ गयी।

□□□

भिखारियों की कतार में एक भिखारी ऐसा भी था, जो बार-बार कपड़ों में छिपाये हुये घड़ी को देख रहा था।

डायल पर थिरकतीं घंटे और मिनट की सुईयों को परस्पर तीस अंश का कोण बनाने को उद्यत पाकर उसके चेहरे पर काबिज बेचैनी और बढ़ गयी। किसी के आने की उम्मीद में उसने एक सरसरी नजर सड़क पर डाली।

उस भिखारी का नाम रेहान था। फटा-पुराना कम्बल ओढ़ कर, उलजुलुल रंग-रोगन वाला मेकअप करके, कमर में लंगोट लपेटकर और सामने एक टूटी हुई थाली रखकर उसने भिखारी का रूप अख्तियार किया हुआ था। उपर्युक्त सभी चीजें उसे क्षितिज ने ही मुहैया कराई थी। थाली में एक, दो और पाँच रूपये के अनगिनत सिक्कों के अलावा दस रुपये के कुछ नोट भी जमा हो गये थे।

“साढ़े सात होने को है। कम्बख़्त अभी तक आया क्यों नहीं?” वह धीमें स्वर में बड़बड़ाया।

लोग जब थाली में सिक्के फेंकते थे तो उनकी खनक रेहान के कानों में पिघले शीशे की भांति उतर रही थी। उसने स्वप्न में भी कल्पना नहीं की थी कि उसे दोस्ती की बलि वेदी पर कुर्बान होकर ये दिन भी देखने होंगे।

क्षितिज की योजना के मुताबिक़ रेहान को भिखारी बनकर कविता के साथ छेड़खानी करनी थी और इससे पहले कि पब्लिक उस पर टूट पड़े, क्षितिज को ऐन वक्त पर हिन्दी फिल्मों के हीरो की तरह वहाँ पहुँचना था और उसकी झूठ-मूठ की पिटाई करके कविता की नजर में हीरो बन जाना था।

'अगर क्षितिज ने आने में देर कर दी या नहीं आया तो एक लड़की को छेड़ने के एवज में पब्लिक मेरा क्या हश्र करेगी?'

उपर्युक्त सवाल पर विचार करते ही रेहान के जिस्म में झुरझुरी दौड़ गयी।

क्षितिज सामान्य छात्रों से बिल्कुल अलग था। स्कूल से लेकर अब तक फिजिक्स ने उसे इस कदर मोहित कर रखा था कि उसके जेहन में न्यूटन, आइंस्टीन, नील्स बोर, दे-ब्रोग्ली, मैक्स प्लांक इत्यादि भौतिकशास्त्रियों के अलावा किसी और का नाम ही नहीं दर्ज हो पाया था। किन्तु अब, जब वह अपनी डॉक्टरेट पूरी करने के आख़िरी चरण में था तो हर वह छिछोरी हरकत उसके जेहन के दरवाजे पर दस्तक दे रही थी, जिन्हें फिल्मों में किसी लड़की को इम्प्रेस करने के लिये अनिवार्य बताया जाता है।

फिजिक्स उसके जेहन में था, किन्तु कविता आँखों के रास्ते इस कदर उसके दिल में उतर गयी थी कि खुद उसे भी ये एहसास नहीं हो पाया था कि उसके जीवन का सफीना 'इश्क' नाम की उस अनजानी लहर के बीच आ चुका है, जिसमें फंसने वाले सफीने कभी साहिल तक नहीं पहुँचे।

'दोस्ती के खातिर' इस छोटे से जुमले ने रेहान को आज अजीब सी स्थिति में डाल दिया था, क्योंकि क्षितिज तयशुदा वक्त के गुजर जाने के बाद भी अभी तक नहीं आया था।

"मैं क्या करूं? प्लान पर अमल करूं या फिर क्षितिज के आने का इंतज़ार करूं? लेकिन अगर मैंने कुछ गड़बड़ की

और वह बेवक़ूफ़ नहीं आया तो फिर लोगों की भीड़ मुझे कहीं का नहीं छोड़ेगी।"

रेहान इसी उहापोह में डूबा हुआ था कि अचानक उसकी नजर कविता पर पड़ी। वह चिपू की उंगली पकड़कर सीढ़ियाँ उतरते हुये उसके हाथ से भिखारियों के कटोरों में सिक्के टपकाती जा रही थी। वे दोनों जैसे-जैसे उसके करीब आने लगे, वैसे-वैसे रेहान की धड़कनें रफ्तार पकड़ने लगीं। आखिरकार वह समय भी आ गया, जब उसे क्षितिज के प्लान के मुताबिक़ हरकत करनी थी।

"ये लो बाबा।" चिपू ने एक सिक्का रेहान की थाली में टपकाया।

सिक्के की खनक के साथ ही रेहान के एक्शन लेने का वक्त आ गया। उसने सिक्के समेटने के बहाने अपने आगे लटक रहे कविता के दुपट्टे के सिरे को उँगलियों में फंसा कर खींच लिया। दुपट्टा कविता के कंधे से फिसलता हुआ धरातल पर आ गिरा। कविता इसे जरूर इसे एक इत्तेफाक समझती, अगर उसने रेहान के चेहरे पर कुटिल मुस्कान और दुपट्टे के एक सिरे को अब भी उसकी उँगलियों में फंसा हुआ न देखी होती तो। उसे धूर्ततापूर्वक मुस्कुराते देख वह गुस्से में तमतमा उठी। अपने स्वाभिमान पर एक भिखारी की चोट खाकर उसका सुन्दर चेहरा क्रोधाग्नि में तपकर कुन्दन सा चमकने लगा। उसका रौद्र रूप देखकर रेहान की रुह कांप गयी।

"बद्तमीज!" कविता के मुँह से शेरनी जैसी गुर्राहट निकली - "तेरी इतनी हिम्मत।"

इससे पहले की रेहान कोई भाव व्यक्त कर पाता, कविता का जोरदार तमाचा उसका गाल ढांपता चला गया। थप्पड़ खाते ही रेहान के कान सुन्न पड़ गये। उसे कई क्षणों तक ऐसा महसूस होता रहा जैसे शांत वातावरण में हल्की सीटी बज रही हो। थप्पड़ का आवेग इतना अधिक था कि वह जहाँ बैठा था, वहीं बैठे-बैठे एक ओर को लुढ़क गया। क्षितिज के आगमन को लेकर उसका विश्वास इतना दृढ़ था कि लुढ़कते वक्त भी वह मन ही मन यही सोच रहा था कि अब सीन में क्षितिज की एंट्री होगी।

जब वह वापस अपनी जगह पर बैठा तो पाया कि चिपू उसे घृणित नज़रों से घूरते हुये कविता से कह रहा था- "ये भिखारी बहुत गन्दे होते हैं दीदी। आज से हम इन्हें कभी पैसा नहीं देंगे।"

कविता ने पूर्व की भाँति अंगारे बरसाती आँखों से रेहान को घूरते हुये कहा- "देखा तूने? तेरी ओछी हरकत ने एक छोटे बच्चे की मानसिकता पर क्या प्रभाव डाला?"

रेहान बेचारा क्या जवाब देता? उसे तो सिर्फ दो चीजों का भय सता रहा था। पहला ये कि कहीं कविता के कहने पर पब्लिक उसकी दर्दनाक पिटाई न कर दे और दूसरा ये कि कहीं उसके चेहरे का मेकअप छूटकर ये सच्चाई न बयां कर दे कि वह भिखारी नहीं बल्कि रेहान है।

इस अकस्मात घटना से वहाँ पर लोगों की भीड़ जमा हो गयी।

"क्या हुआ मैडम?"

इससे पहले की रेहान कोई भाव व्यक्त कर पाता, कविता का जोरदार तमाचा उसका गाल ढांपता चला गया। थप्पड़ खाते ही रेहान के कान सुन्न पड़ गये। उसे कई क्षणों तक ऐसा महसूस होता रहा जैसे शांत वातावरण में हल्की सीटी बज रही हो। थप्पड़ का आवेग इतना अधिक था कि वह जहाँ बैठा था, वहीं बैठे-बैठे एक ओर को लुढ़क गया। क्षितिज के आगमन को लेकर उसका विश्वास इतना दृढ़ था कि लुढ़कते वक्त भी वह मन ही मन यही सोच रहा था कि अब सीन में क्षितिज की एंट्री होगी।

जब वह वापस अपनी जगह पर बैठा तो पाया कि चिपू उसे घृणित नज़रों से घूरते हुये कविता से कह रहा था- "ये भिखारी बहुत गन्दे होते हैं दीदी। आज से हम इन्हें कभी पैसा नहीं देंगे।"

कविता ने पूर्व की भाँति अंगारे बरसाती आँखों से रेहान को घूरते हुये कहा- "देखा तूने? तेरी ओछी हरकत ने एक छोटे बच्चे की मानसिकता पर क्या प्रभाव डाला?"

रेहान बेचारा क्या जवाब देता? उसे तो सिर्फ दो चीजों का भय सता रहा था। पहला ये कि कहीं कविता के कहने पर पब्लिक उसकी दर्दनाक पिटाई न कर दे और दूसरा ये कि कहीं उसके चेहरे का मेकअप छूटकर ये सच्चाई न बयां कर दे कि वह भिखारी नहीं बल्कि रेहान है।

इस अकस्मात घटना से वहाँ पर लोगों की भीड़ जमा हो गयी।

"क्या हुआ मैडम?"

और वह बेवक़ूफ़ नहीं आया तो फिर लोगों की भीड़ मुझे कहीं का नहीं छोड़ेगी।"

रेहान इसी उहापोह में डूबा हुआ था कि अचानक उसकी नजर कविता पर पड़ी। वह चिपू की उंगली पकड़कर सीढ़ियाँ उतरते हुये उसके हाथ से भिखारियों के कटोरों में सिक्के टपकाती जा रही थी। वे दोनों जैसे-जैसे उसके करीब आने लगे, वैसे-वैसे रेहान की धड़कनें रफ्तार पकड़ने लगीं। आखिरकार वह समय भी आ गया, जब उसे क्षितिज के प्लान के मुताबिक़ हरकत करनी थी।

"ये लो बाबा।" चिपू ने एक सिक्का रेहान की थाली में टपकाया।

सिक्के की खनक के साथ ही रेहान के एक्शन लेने का वक्त आ गया। उसने सिक्के समेटने के बहाने अपने आगे लटक रहे कविता के दुपट्टे के सिरे को उँगलियों में फंसा कर खींच लिया। दुपट्टा कविता के कंधे से फिसलता हुआ धरातल पर आ गिरा। कविता इसे जरूर इसे एक इत्तेफाक समझती, अगर उसने रेहान के चेहरे पर कुटिल मुस्कान और दुपट्टे के एक सिरे को अब भी उसकी उँगलियों में फंसा हुआ न देखी होती तो। उसे धूर्ततापूर्वक मुस्कुराते देख वह गुस्से में तमतमा उठी। अपने स्वाभिमान पर एक भिखारी की चोट खाकर उसका सुन्दर चेहरा क्रोधाग्नि में तपकर कुन्दन सा चमकने लगा। उसका रौद्र रूप देखकर रेहान की रुह कांप गयी।

"बद्तमीज!" कविता के मुँह से शेरनी जैसी गुर्राहट निकली - "तेरी इतनी हिम्मत।"

इससे पहले की रेहान कोई भाव व्यक्त कर पाता, कविता का जोरदार तमाचा उसका गाल ढांपता चला गया। थप्पड़ खाते ही रेहान के कान सुन्न पड़ गये। उसे कई क्षणों तक ऐसा महसूस होता रहा जैसे शांत वातावरण में हल्की सीटी बज रही हो। थप्पड़ का आवेग इतना अधिक था कि वह जहाँ बैठा था, वहीं बैठे-बैठे एक ओर को लुढ़क गया। क्षितिज के आगमन को लेकर उसका विश्वास इतना दृढ़ था कि लुढ़कते वक्त भी वह मन ही मन यही सोच रहा था कि अब सीन में क्षितिज की एंट्री होगी।

जब वह वापस अपनी जगह पर बैठा तो पाया कि चिपू उसे घृणित नज़रों से घूरते हुये कविता से कह रहा था- “ये भिखारी बहुत गन्दे होते हैं दीदी। आज से हम इन्हें कभी पैसा नहीं देंगे।”

कविता ने पूर्व की भाँति अंगारे बरसाती आँखों से रेहान को घूरते हुये कहा- “देखा तूने? तेरी ओछी हरकत ने एक छोटे बच्चे की मानसिकता पर क्या प्रभाव डाला?”

रेहान बेचारा क्या जवाब देता? उसे तो सिर्फ दो चीजों का भय सता रहा था। पहला ये कि कहीं कविता के कहने पर पब्लिक उसकी दर्दनाक पिटाई न कर दे और दूसरा ये कि कहीं उसके चेहरे का मेकअप छूटकर ये सच्चाई न बयां कर दे कि वह भिखारी नहीं बल्कि रेहान है।

इस अकस्मात घटना से वहाँ पर लोगों की भीड़ जमा हो गयी।

“क्या हुआ मैडम?”

“क्या हुआ बहन जी? कोई बद्‌तमीजी की क्या इसने?”

“क्या हुआ बेटी?”

भीड़ द्वारा कविता से पूछे जा रहे अनगिनत सवाल सुन रेहान की घिग्घी बंध गयी। उसकी सांसें फूलने लगीं और जिस्म पसीने से नहा उठा।

“क्यूं रे! तूने कोई छेड़खानी तो नहीं की मैडम के साथ?” जब भीड़ में से एक हट्टे-कट्टे, लम्बे-तगड़े, देव सरीखे, काले-कलूटे इंसान ने रेहान से ये सवाल पूछा तो उसने दयनीय सूरत लिये हुये कविता की ओर देखा। उसे आशा थी कि कविता को उसकी शक्ल पर तरस आ जायेगा और वह भीड़ को सच्चाई नहीं बताएगी।

रेहान के भाग्य का सितारा प्रबल निकला। कविता एक संवेदनशील लड़की थी, इसलिये उसे रेहान की आँखों में भय और याचना के भाव नजर आ गये। वह भीड़ की ओर मुखातिब हुई और नर्म लहजे में बोली- “इसने जो कुछ किया, उसके लिये मेरे एक थप्पड़ को पर्याप्त दण्ड माना जा सकता है, लेकिन इसे अब यहाँ रहने का कोई अधिकार नहीं है। इसके सारे पैसे छीनकर इसे भगा दीजिये यहाँ से।”

कविता की बात सुनते ही भीड़ में से दो-चार लोग बाहर निकले।

“खाने की औकात नहीं लड़कियों को छेड़ता है।”

“कभी लंगूर जैसी शक्ल देखी है आइने में?”

“भाग यहाँ से।”

लोगों द्वारा पहले रेहान पर लात-घूँसा बरसाया गया तत्पश्चात उसे सीढ़ी से धकेल दिया गया। भीड़ को उसकी थाली में एक भी सिक्के नहीं मिले, क्योंकि बाजू वाले भिखारी ने मौका देखते ही थाली के सिक्कों पर हाथ साफ कर दिया था।

सड़क की ओर लुढ़क रहा रेहान मन ही मन इस घटना के बाद मिले अमूल्य सबक को याद कर रहा था।

'हर एक फ्रेंड कमीना होता है।'

□□□

क्षितिज ने ज्यों ही कमरे में कदम रखा, उसकी नजर रेहान पर पड़ी।

भिखारी का मेकअप उतारने के बाद वह आदमकद आइने के सामने खड़े होकर गाल पर पड़े कविता की उंगलियों के निशान को घूर रहा था। उसकी कुहनी और घुटने छिल गये थे। चेहरे पर भी कई जगह चोट के निशान थे, जिसका सबब वे घूंसे थे, जो भीड़ द्वारा उस पर बरसाये गये थे। उसे जख़्म साफ किये हुये ज्यादा समय नहीं गुजरा था, क्योंकि स्पिरिट की बॉटल और रुई का बंडल पास ही पड़ा था।

क्षितिज बिल्ली की तरह बिना कोई आवाज किये उसके ठीक पीछे जाकर खड़ा हो गया और अपने होंठ उसके कान के पास ले जाकर बोला– "आई ऍम रियली सॉरी!"

क्षितिज का स्वर कान में पहुँचने भर की देर थी कि रेहान चोट खाए जहरीले सांप की तरह फुंफकारते हुये पीछे पलटा।

"बस!" क्षितिज को देखते ही वह बम की तरह फटा– "अब कुछ कहने की जरूरत नहीं है और न ही कोई सफाई देने की। तुम्हारी कोई भी सफाई मेरे फैसले को नहीं बदल सकती।"

"इतनी जल्दी क्या फैसला कर लिया तूने?"

"यही कि अब हम एक छत के नीचे नहीं रह सकते।"

"तू तो बिल्कुल उसी अंदाज में धमकी दे रहा है, जैसे कोई पत्नी अपने पति से रुठकर मायके जाने की धमकी दे रही हो।" रेहान के लहजे में छुपे क्रोध को नजरअंदाज करके क्षितिज ने जोरदार ठहाका लगाया।

"ये धमकी नहीं है। मैं अब तुम्हारा रूममेट नहीं बना रह सकता।"

"पहले मेरी बात तो सुन यार।" क्षितिज खुशामदी अंदाज में बोला- "क्या तू ये नहीं जानना चाहेगा कि मैं तय किये गये वक्त पर क्यों नहीं पहुँच सका?"

"कुछ नहीं जानना मुझे।" रेहान दहाड़ा- "तेरी बड़ी से बड़ी मजबूरी भी मन्दिर में हुई मेरी दुर्गति के सामने छोटी ही साबित होगी।"

रेहान की रोनी सूरत देख क्षितिज का इरादा जोर से हंसने का हुआ, किन्तु वह हंस नहीं सका, क्योंकि इस बात का एहसास उसे भी था कि रेहान के साथ घटी दुर्घटना साधारण नहीं थी। वह दगशाई के लोगों के बीच एक

डॉक्टर के रूप में पहचाना जाता था और ऐसे में अगर किसी ने भांप लिया होता कि वह डॉ. रेहान सिद्दिकी है, जो एक लड़की से छेड़खानी करने के लिये भिखारी बना हुआ है, तो उसकी जो मान-हानि होती, उसकी भरपाई क्षितिज कभी नहीं कर पाता।

“पहले भिखारी बनाया। फिर कविता को इम्प्रेस करने के लिये फिल्मी अंदाज में सही टाइम पर आकर मेरी पिटाई करने का प्लान बनाया, लेकिन जब सही टाइम आया तो सीन से ही नदारद हो गया। ये तो कविता की उदारता का असर है जो मैं तुझे यहाँ जख्मों पर मरहम लगाता मिला, वरना अगर वह भी तेरी तरह मक्कार और बेदर्द होती तो मैं इस वक्त अपने ही मेडिकल कॉलेज के हॉस्पिटल में पड़ा डॉक्टर से हड्डियाँ जुड़वा रहा होता।”

“जब मैं समय पर नहीं पहुँच पाया था तो तुझे प्लान पर अमल करने की बेवकूफी करने की क्या जरूरत थी? क्या तू इसी अक्ल के बलबूते पर लोगों की खोपड़ी का ऑपरेशन करेगा?”

रेहान बगैर कुछ कहे गाल पर कोई लोशन लगाने लगा ताकि उँगलियों के निशान शीघ्र ही मिट जाएं। सच कहा जाये तो वह क्षितिज के साथ किसी बहस में पड़ने के मूड में था ही नहीं क्योंकि वह जानता था कि उस सनकी लड़के से बहस का परिणाम यही निकलेगा कि वह एक ऐसा मूर्ख साबित हो जायेगा, जो किसी लड़की से छेड़खानी के एवज में पब्लिक की मार खाकर घर लौटा है।

"तुझे ज़्यादा चोट तो नहीं आयी?" क्षितिज ने उसके गालों की ओर अपना
हाथ बढ़ाया।

"डोंट डेयर टू टच मी!" रेहान ने क्षितिज का हाथ झटक दिया।

"तेरी बॉडी लैंग्वेज और बातों से लगता है कि तेरे अन्दर किसी कन्या की आत्मा प्रवेश कर गयी है।"

"लोगों ने उठाकर मन्दिर की सीढ़ी से नीचे फेंक दिया था और ऐसा करने से पहले उन्होंने लात घूंसे भी बरसाये थे।"

"सॉरी अगेन यार।" क्षितिज इस बार पूर्व की अपेक्षा थोड़ा गंभीर हुआ- "आज सुबह आठ बजे प्रोफ़ेसर शास्त्री की यूके की फ्लाइट थी। वे पंद्रह दिनों के लिये बाहर जा रहे थे, इसलिये कुछ इम्पोर्टेन्ट इंस्ट्रक्शन्स के लिये एट रैंडम मीटिंग बुला ली थी उन्होंने।"

"बातें मत बना।" क्रोध की अधिकता के कारण रेहान के मुंह से झाग निकलने लगा- "हकीकत केवल यही है कि तू ऐन वक्त पर मैदान में आने से डर गया।"

"इसमें मेरे लिये डरने जैसी कोई बात ही नहीं थी, क्योंकि खतरे का काम तो तुझे ही करना था। मुझे तो केवल मोरल ड्यूटी निभाने वाले एक आम नागरिक की तरह तेरी पिटाई करनी थी। ऐसे में मेरे वहां न पहुँचने का तो सवाल ही नहीं पैदा होता था।"

"तुझे पता है?" रेहान, क्षितिज की ओर पलटा और उसकी आँखों में आँखें डालकर गुर्राया- "मैं आखिरी लम्हें

तक तेरे आने की उम्मीद पाले रखा था। उस वक्त तक भी जब मैं कविता का थप्पड़ खाकर लुढ़का।”

“सॉरी वन्स अगेन यार। अब मैं कभी भी कविता को फिल्मी अंदाज में इम्प्रेस करने के चक्कर में तुझे बलि का बकरा नहीं बनाऊँगा।”

“तू अब चाह कर भी मुझे बकरा नहीं बना पाएगा, क्योंकि अब मैं हमेशा के लिये तेरी जिन्दगी से दूर जा रहा हूँ।”

“ये दूरी कितने किलोमीटर की होगी?”

क्षितिज की बकवास पर कोई ध्यान न देते हए रेहान ने रुई को एक तरफ उछाल दिया और आलमारी की ओर बढ़ा।

“तो क्या तू सचमुच जा रहा है?”

रेहान ने कुछ नहीं कहा और आलमारी से कपड़े निकालने लगा।

“तू पागल हो गया है। दोस्ती के ख़ातिर...।”

“चुप!” कपड़े निकालते रेहान के हाथ रुक गये और द्रुतगति से क्षितिज की ओर पलटा। उसके कालर को अपनी दोनों मुट्ठियों में जकड़ा और काट खाने को आतुर कुत्ते की तरह गुर्रा उठा- “एकदम चुप। अब अगर एक भी बार तूने ‘दोस्ती’ शब्द के पीछे अपनी मक्कारी को छुपाने की कोशिश की तो चेहरे का भूगोल इस कदर बिगाड़ दूंगा कि जीवन भर कविता के सामने नहीं जा पायेगा।”

रेहान का रौद्र रूप देखकर क्षितिज केवल सहमे हुये बालक की भांति उसे ताकता रह गया। उसे कुछ सेकंड तक आग्नेय नेत्रों से घूरने के बाद रेहान फिर से आलमारी की ओर बढ़ गया।

"तू मेरी बात तो सुन....!"

क्षितिज ने हिम्मत करके कुछ कहना चाहा किन्तु रेहान ने कुछ भी सुनने का उपक्रम नहीं किया और कपड़े बैग में भरने लगा। क्षितिज उसके पास पहुंचा। बैग में रखे कपड़ों को बाहर बिखेर दिया। रेहान ने उन्हें फिर से बैग में रख लिया। यह क्रम कई बार चला। एक ओर रेहान कपड़े बैग में रखता, दूसरी ओर क्षितिज खुशामद करते उन्हें बाहर निकाल देता।

"मेरी बात तो सुन रेहान। तेरे जाने के बाद मैं इस कमरे में अकेले बोर होने लगूंगा। मुझे तो ढंग से चाय बनानी भी नहीं आती।"

रेहान अब भी खामोश होकर अपना काम करता रहा।

"मेरे न पहुँच पाने की मजबूरी को समझ यार। मैं जानता हूँ कि मैं थोड़ा बेवक़ूफ़ टाइप का हूँ। लाइफ में ज़रा भी प्रैक्टिकल नहीं हूँ। मेरे कारण तुझे हमेशा फजीहत झेलनी पड़ती है, लेकिन इसका मतलब ये तो नहीं कि तू मुझे मेरे पापों की प्रायश्चित का मौक़ा ही न दे।"

"मौक़ा दे तो रहा हूँ। तूने मुझ जैसे शरीफ इंसान को एक लड़की के हाथों जलील करवाने का जो पाप किया है, प्रायश्चित के रूप में उसकी सजा यही है कि तू कमरे में अकेले दीवारों के साथ सर टकराए, घर की बनी चाय पीने

के लिये तरस जाये और कैंटीन के खाने के पीछे महीने में हजारों रुपये खर्च करे।"

"तू बार-बार एक भड़की हुई बीबी की तरह बात क्यों कर रहा है?"

"जस्ट शटअप!" रेहान इस बार "बीबी' शब्द पर चिढ़ गया- "तू मुंह बंद रखेगा या नहीं?"

"रात गयी बात गयी यार। तू मेरी मजबूरी क्यों नहीं समझता?" क्षितिज ने उसका हाथ अपने हाथ में लेते हुये थोड़े भावुक लहजे में कहा।

"मुझे कुछ नहीं समझना।" रेहान ने उसका हाथ दूर झटक दिया।

क्षितिज सचमुच भावुक हो गया था। जब रेहान ने उसकी एक भी नहीं सुनी तो
वह बिना कुछ बोले कमरे में पड़ी एक कुर्सी पर बैठ गया और उसे बैग तैयार करते हुये देखता रहा। हर गुजरते लम्हें के साथ उसका ये विश्वास मजबूत होता जा रहा था कि रेहान केवल मजाक कर रहा है, वर्षों पुरानी दोस्ती को वह यूं तोड़कर नहीं जा सकता, लेकिन उसका विश्वास उस वक्त दम तोड़ गया, जब रेहान बैग उठाकर दरवाजे की ओर बढ़ गया।

एक पल के लिये क्षितिज को यूँ लगा मानो उसकी रुह जिस्म से बगावत करके जा रही हो, किन्तु उस क्षण उसकी उम्मीद को नई जिन्दगी मिली, जब उसने देखा कि रेहान दरवाजे पर पहुँचकर ठिठका और कदम बाहर रखने से पूर्व उसकी ओर पलटा।

"कविता शादीशुदा है।"

सुनते ही क्षितिज मानो परकटे पक्षी की भांति धरातल पर गिरा। उसे न तो अपने कानों पर विश्वास हुआ और न ही रेहान के कथन पर। वह रेहान पर झपटा और उसका कॉलर पकड़कर झकझोरते हुये पूछा- "ये क्या बकवास कर रहे हो तुम?"

"क्या हुआ? बौखला क्यों गया?" रेहान के होठों पर कुटिल मुस्कान फिसलती चली गयी। क्षितिज के होंठ काँपे। चेहरे के भाव बदले, किंतु इससे पहले कि वह कोई प्रतिक्रिया व्यक्त करता, रेहान ने आगे कहा- "ये जानते ही कि कविता शादीशुदा है, तुझे शॉक क्यों लगा?"

"इस बकवास के पीछे कितनी सच्चाई है?" क्षितिज ने हिस्टीरियाई अंदाज में पूछा। रेहान के चेहरे पर ठहरी उसकी निगाहों में व्यग्रता थी।

रेहान बगैर कुछ कहे कुटिल अंदाज में मुस्कुराता रहा। क्षितिज समझ गया कि उसका मजाक उड़ाया गया था। उसने रेहान का कालर छोड़ दिया और अपनी उखड़ी हुई सांसें संयत करने लगा। क्षण भर में ही उसकी हालत ऐसी हो गयी थी जैसे वह मौत के आगोश से ज़िंदा बच आया हो।

"इतनी फ्रस्टेशन?" रेहान ने उसके मुखमंडल पर व्याप्त भावों का बारीकी से मुआयना किया और व्यंग्यात्मक लहजे में कहा- "एक साधारण लड़की के लिये?"

क्षितिज ने सेंटर टेबल पर रखा जग उठाकर मुंह से लगा लिया। जब उसने जग को वापस टेबल पर रखा तो काफी हद तक बोल पाने में सक्षम हो चुका था।

"वह साधारण नहीं है। कम से कम मेरे लिये तो बिल्कुल भी नहीं।"

"ये महज आकर्षण के कारण पनपा एक संशय है, जो तुम्हें लगता है कि तुम उस लड़की से प्यार करते हो।" रेहान ने कठोर लहजे में कहा। उसकी भावभंगिमाएं इंगित कर रही थीं कि वह कविता के प्रति क्षितिज की भावनाओं को हर हाल में आकर्षण की उपज साबित करना चाहता था।

"नहीं! ये..ये आकर्षण नहीं है।"

"ये आकर्षण ही है।" रेहान ने लहजे पर जोर दिया।

"ये आकर्षण नहीं है।"

"तो फिर साबित करो। बताओ कि उसके लिये तुम्हारी फीलिंग्स किस मामले में दूसरों से अलग है? तुम कविता के लिये ऐसा क्या कर सकते हो, जो कोई दूसरा उसके लिये नहीं कर सकता? तुम्हें उसमें ऐसी क्या ख़ास बात नजर आयी, जो आज तक किसी और को नजर नहीं आयी?"

"मैं कुछ भी साबित नहीं कर सकता।" क्षितिज हताश स्वर में बोला- "मुझे..मुझे नहीं मालूम कि उसके लिये मेरी फीलिंग्स दूसरों से अलग कैसे हैं? अलग हैं भी या नहीं। मैं ये भी नहीं जानता कि वक्त आने पर मैं उसके लिये क्या कर सकता हूँ। जब उसके बारे में सोचता हूँ तो बस इतना महसूस होता है कि मेरी कोई तलाश उस पर आकर ख़त्म

हो गयी है, कोई ऐसी तलाश, जिससे मैं खुद आज तक अंजान था। जब वह सामने होती है तो ऐसा लगता है जैसे मेरी कोई ऐसी जरूरत पूरी हो गयी है, जिसे मैं आज तक नजरअंदाज करता रहा था।”

रेहान खामोश होकर उसे सुनता रहा।

“मैं सच कह रहा हूँ रेहान। ये कोई मजाक नहीं है। मैं लाइफ में पहली और आख़िरी बार किसी लड़की को लेकर इतना सीरियस हूँ। सच में।”

“आकर्षण के गिरफ्त में जकड़ा तुम जैसा इंसान अपने आस-पास ऐसी ही खोखली भावनाओं का रेशमी जाल बुन लेता है। ख़ूबसूरत लगने वाले अनगिनत एहसासों के साथ वह तब तक जीता है, जब तक कि ढलती उम्र के साथ उसके आकर्षण की चमक फीकी नहीं पड़ जाती। लगभग हर कॉलेज, हर गली और हर चौराहे पर मशरूम की तरह पनपने वाली प्रेमकथाओं की तरह तुम्हारे प्रेम की बुनियाद भी केवल आकर्षण है, एक ऐसा आकर्षण जो गुजरते सालों के साथ कविता के जिस्म की रंगत की तरह ही अपनी चमक से महरूम हो जायेगा और फिर...”

चटाक!

क्षितिज के थप्पड़ का गाल पर पड़ना था कि रेहान के मुंह से शब्दों का प्रवाह थम गया। किसी टेपरिकार्डर की भाँति चलता उसका जुबान रुक गया। वह क्षितिज को घूरने लगा, जिसकी आँखों में पानी के साथ-साथ चेहरे पर बेइंतहा क्रोध भी नजर आने लगा था।

रेहान शॉक्ड। मानो पाषाण-प्रतिमा में तब्दील हो गया।

"दफा..हो...जाओ...यहाँ...से।" क्रोधातिरेक के कारण क्षितिज का लहजा सूखे पत्ते की मानिंद थरथराया।

थप्पड़ का आवेग इतना तीव्र था कि रेहान के गौर वर्ण चेहरे पर खून छलछला आया। वह गाल पर हाथ रखे हुये क्षितिज को घूरता रहा।

"मैंने कहा दफा हो जाओ यहाँ से। गेट आउट!"

चीख कर बोला गया क्षितिज का 'गेट आउट' सुनकर रेहान मानो होश में आया। उसने बैग उठा लिया। दरवाजे की ओर पलट कर कदम आगे बढ़ाने ही वाला था कि क्षितिज का वाक्य उसके कानों में पड़ा- "और सुनो।"

वह ठिठका, किन्तु क्षितिज की ओर नहीं मुड़ा।

"आइन्दा कभी मेरे और कविता के बारे में अपनी गन्दी जुबान मत खोलना। मैं तुम्हें इस रूम से ही नहीं अपनी जिन्दगी से भी निकाल रहा हूँ।"

क्षितिज का वाक्य समाप्त होने तक रेहान कमरे में रुका तत्पश्चात हवा के झोंके की तरह बाहर निकल गया।

□□□

कुछ दूर जाकर शाम के धुंधलके में गुम हो गयी सड़क पर रेहान एक ऐसे जुआरी की मानिंद आगे बढ़ रहा था।, जो आज जिन्दगी की बिसात पर एक कीमती बाजी हार चुका था। सड़क पर फ़ैली खामोशी और उदासी के कदम अब उसकी जिन्दगी में भी पड़ चुके थे। यूनिवर्सिटी में दाखिले के बाद से लेकर आज दोपहर ढलने तक क्षितिज उसके जीवन की कहानी में 'दोस्त' नाम का एक ऐसा किरदार था, जो भले ही अपनी बचकानी हरकतों से उसकी

मुसीबतों का सबब बना करता था, लेकिन हर नाजुक लम्हें में उसके कंधे से कंधा मिलाकर खड़ा भी रहता था।

क्षितिज रईस घराने से ताल्लुक रखता था। उसके कदम अभावों के कठोर धरातल पर नहीं पड़े थे, ये भी एक वजह थी जो गंभीरता उसके व्यक्तित्व को स्पर्श तक नहीं कर पाई थी। वह 'संघर्ष' नाम के जीवन के अनिवार्य पहलू से अभी तक अवगत नहीं हुआ था, इसलिये बचपन की अल्हड़ता और चंचलता ने उसका साथ नहीं छोड़ा था। इसके विपरीत रेहान एक ऐसे मध्यमवर्गीय परिवार से था, जो उसकी मेडिकल की पढ़ाई का मोटा खर्च शायद कभी नहीं वहन कर पाता यदि उसने मेडिकल एंट्रेंस में अच्छी रैंक लाकर यूनिवर्सिटी की स्कॉलरशिप हेतु पात्रता न अर्जित कर ली होती। रेहान ने अब तक अपने जीवन में जो कुछ हासिल किया था, उसका मूल्य उसने कड़ी मेहनत और लगन के रूप में चुकाया था। अभावों से ग्रस्त उसके जीवन ने उसे कभी इतना अवकाश ही नहीं दिया था कि वह सपनों को हासिल करने की दौड़ में ठहर कर स्वयं को एक नजर देख पाता। अनवरत संघर्ष ने उसे गंभीर बना दिया था और मात्र दस से बारह साल पुराने बचपन के एक-एक अंश को उसके व्यक्तित्व से खुरच कर बाहर निकाल दिया था। परिणामत: उसकी गंभीरता से उबकर क्षितिज उसकी तुलना एक किसी ऐसे इंसान से करता था, जो समय से पहले ही अपनी युवावस्था को अलविदा कह चुका हो। बहरहाल ये विषमतायें कभी भी उनके बीच मतभेद का कारण नहीं बनीं थी, किन्तु आज भावनाओं के आपसी

टकराव ने उनके बीच एक ऐसा मतभेद कायम कर दिया था, जिसे कायम करने में धार्मिक मतभिन्नता भी आज तक असफल रही थी।

रेहान ने भले ही क्षितिज के सामने कविता के प्रति उसकी भावनाओं को आकर्षण की उपज कहकर नकारने की कोशिश की थी, किन्तु इस बात का एहसास उसे भी था कि क्षितिज की भावनायें पाक थीं।

"मैं कुछ भी साबित नहीं कर सकता। मुझे..मुझे नहीं मालूम कि उसके लिये मेरी फीलिंग्स दूसरों से अलग कैसे हैं? अलग हैं भी या नहीं। मैं ये भी नहीं जानता कि वक्त आने पर मैं उसके लिये क्या कर सकता हूँ। जब उसके बारे में सोचता हूँ तो बस इतना महसूस होता है कि मेरी कोई तलाश उस पर आकर ख़त्म हो गयी है, कोई ऐसी तलाश, जिससे मैं खुद आज तक अंजान था। जब वह सामने होती है तो ऐसा लगता है जैसे मेरी कोई ऐसी जरूरत पूरी हो गयी है, जिसे मैं आज तक नजरअंदाज करता रहा था।"

पराजित लहजे में कहा गया क्षितिज का उपरोक्त कथन ही रेहान को ये विश्वास दिलाने के लिये पर्याप्त था कि कविता सचमुच एक ख़ूबसूरत एहसास बनकर उसके दिल में उतर चुकी थी।

आसमान की छाती पर पाँव पसारते जा रहे काले बादल तेज बारिश के आने
का संकेत दे रहे थे। क्षण-प्रतिक्षण वातावरण अंधकारमय होता जा रहा था। सर्द हवाओं की गति भी त्वरित थी। कुल मिलाकर दिन का अंत एक ख़ूबसूरत शाम के रूप

में हो रहा था, किंतु आज की यह हसीन शाम रेहान की मन:स्थिति के प्रतिकूल थी।

वह ठिठका और काले बादलों पर दृष्टिपात किया। बारिश की कई मोटी-मोटी बूंदों ने उसके चेहरे को धो डाला। आज की रात काटने के लिये उसके पास कोई ठिकाना नहीं था, सिवाय थोड़ी दूरी पर नजर आ रहे कविता के घर के। इससे पहले कि बारिश तेज हो जाती, वह तेजी से उस ओर बढ़ा। दरवाजे पर पहुँचा। डोरबेल बजाया। थोड़ी देर के इंतजार के बाद दरवाजा खुला। सामने एक छोटा सा प्यारा बच्चा था। रेहान उसे पहचानता था। ये वही था जो मंदिर में कविता के साथ था। दरवाजे पर किसी अजनबी को पाकर बच्चा असमंजस में पड़ गया और मासूमियत से उसे घूरने लगा।

"तुम्हारी दीदी हैं?"

"दीदी।" सवाल सुनकर लड़का तेजी से चिल्लाता हुआ अंदर भाग गया और फिर अंदर से आती उसकी आवाज रेहान ने सुनी।

"दीदी देखो दरवाजे पर कौन आया है।"

थोड़ी देर बाद कविता दरवाजे पर आयी। उसकी स्थिति से लग रहा था कि वह किचन में थी। रेहान को देखते ही वह सुखद आश्चर्य से भर कर मुस्कुरा उठी।

"रेहान तुम? यहाँ? इस मौसम में?" कविता की नजर उसके बैग पर पड़ी- "ये क्या? तुम्हारे साथ तो तुम्हारा बैग भी है।"

“क्या मैं अंदर आ सकता हूँ?” रेहान ने जबरदस्ती मुस्कुराने की कोशिश की।

“ओह सॉरी।” कविता हड़बड़ा कर दरवाजे से हट गयी।

रेहान अंदर दाखिल हुआ।

“मुझे तुमसे कुछ जरूरी बात करनी थी।”

“कर लेना। फिलहाल तो बातों के लिये पूरी रात पड़ी है।”

“पूरी रात? मतलब?” रेहान ने उस पर प्रश्नवाचक दृष्टि डाली।

“मतलब ये जनाब कि शाम के पांच बजे हैं, बारिश शुरु हो गयी है। आपका रूम यहाँ से दस किलोमीटर दूर है। इस मौसम में दस किलोमीटर का सफ़र कैसे तय करेंगे आप? बेहतर यही होगा कि आप आज रात हमें मेहमानवाजी का अवसर दें।”

रेहान कुछ नहीं बोला। वह मन ही मन इस बात के लिये आह भर कर रह गया कि कविता जिस रूम की बात कर रही थी, वह रूम अब उसका नहीं रह गया था।

बातें करते हुये दोनों ड्राइंग हाल तक आ गये। सोफे पर आसीन कविता के पिता दामोदर भारद्वाज अख़बार पढ़ने में व्यस्त थे। उनके बगल में बैठा चिपू अख़बार में छपी चित्रों में झांक रहा था, शायद अपने लिये कोई सवाल तलाश रहा था।

“पापा। ये रेहान। मेरे ड्रामे के एक लीड एक्टर।” कविता ने मुस्कुराते हुये रेहान को उनसे इंट्रोड्यूज कराया।

“नमस्ते।” रेहान भी हाथ जोड़ते हुये मुस्कुराया।

"हैलो रेहान।" दामोदर जी ने अख़बार मोड़कर सोफे पर रखा और खड़े होकर उसका स्वागत किया।

"ये मेरा नटखट भाई चिपू है।"

कविता ने चिपू की ओर इशारा किया। उसने रेहान को देखते हुये एक नटखट मुस्कान होठों पर सजा ली।

"तुम्हारी मम्मी क्यों नहीं दिखाई दे रही हैं?"

इस सवाल पर गहरी खामोशी छा गयी। ऐसा लगा जैसे वहाँ मौजूद लोगों को मेहमान की ओर से इस सवाल के पूछे जाने की उम्मीद नहीं थी।

"एक्चुअली...एक्चुअली क्या है कि....।" कविता ने हिचकते हुये खामोशी तोड़ी- "वे अब इस दुनिया में नहीं हैं।"

"ओह! आई ऍम रियली सॉरी!"

"तुम बैठो। मैं नाश्ता लाती हूँ।"

कविता वहाँ से चली गयी।

□□□

बाहर बारिश जोरों पर थी। अंगीठी के पास बैठा हुआ रेहान आग की लपटों को देख रहा था। क्षितिज की यादें आंसुओं का रूप लेकर उसकी आँखों में उतर आयी थीं। अंगीठी के पास ही किसी तस्वीर की राख का ढेर पड़ा हुआ था।

"क्या मैं अंदर आ सकती हूँ?"

आवाज सुनकर रेहान ने गर्दन दरवाजे की ओर घुमाई। वहां कविता थी।

"ऑफ़कोर्स!" वह मुस्कुराया।

"तुम कुछ सोच रहे थे?"

कविता अंदर दाखिल हुई और रेहान के करीब बैठते हुये बोली।

"कुछ खास नहीं।"

"लगता है अभी-अभी तुमने कोई तस्वीर जलाई है।" उसने राख के ढेर पर दृष्टिपात करते हुये कहा।

"हाँ!" रेहान ने भावहीन स्वर में स्वीकार किया- "एक ऐसी तस्वीर थी, जिसे अपने पास रखने का हक़ मैंने थोड़ी देर पहले ही खो दिया है।"

"ओ.!" कविता अर्थपूर्ण ढंग से मुस्कुराई- "आई थिंक इट्स अ पर्सनल मैटर। राईट?"

"हाँ! ऐसा ही कुछ।" रेहान ने कंधे उचकाये- "बाई द वे आज रात मुझे रोकने का तुम्हारा फैसला सही था, क्योंकि शाम से शुरु हुई बारिश अभी तक नहीं थमी।"

"थमेगी भी नहीं।" कविता ने अंगीठी में लकड़ी के टुकड़ों को सही करते हुये कहा- "रात बढ़ने के साथ ही बारिश और तेज होती जा रही है।"

"तुमने मर्चेंट ऑफ वेनिस की स्क्रिप्ट काफी अच्छी लिखी है।"

"यह बहुत मुश्किल काम था।" कविता मुस्कुराई– "और शायद रिस्की भी। शेक्सपियर जैसे महान लेखक की महत्वपूर्ण कृति को अपनी शैली में लिपिबद्ध करने के दौरान मेरे सामने सबसे बड़ी चुनौती उसके सार को बनाए रखने की थी। स्क्रिप्ट पर काम करने के दौरान मुझे बार-बार इसी बात का डर सता रहा था कि कहीं अपने ढंग से

प्रस्तुत करने के चक्कर में मैं 'मर्चेंट ऑफ वेनिस' में निहित मूल भावना में फेर-बदल न कर डालूँ और शेक्सपियर को चाहने वालों की आलोचनाओं की शिकार न बन जाऊँ, किंतु शुक्र है कि ऐसा कुछ भी नहीं हुआ। मेरे रिसर्च गाइड ने स्क्रिप्ट को 'मर्चेंट ऑफ वेनिस' का आधुनिक संस्करण मानकर उसे अप्रूव कर दिया।"

"तुमने स्क्रिप्ट पर बहुत मेहनत की है। विशेष रूप से बेसेनियो और पोर्शिया के प्रेमपूर्ण संवादों पर। यदि मंच पर इन संवादों की अदायगी भावपूर्ण रही, तो इसमें कोई डाउट नहीं है कि तुम्हें तुम्हारी मेहनत का अपेक्षित परिणाम मिलेगा।"

"मुझे भी कभी-कभी ऐसा ही आभास होता है कि मेरी पटकथा मंच पर जीवंत होने वाली है। क्षितिज और तान्या अपने-अपने किरदार को लेकर काफी होमवर्क कर रहे हैं।"

"वैसे तुम्हें लिखने की बीमारी कैसे लगी? भावनाओं का जलवा बिखेरना
तुमने कैसे सीखा?"

"तुम लेखन को बीमारी समझते हो?" कविता जोरों से हंसी।

"बिल्कुल समझता हूँ। इस बीमारी से ग्रस्त लोगों को मैंने इस कदर कल्पना की गहराइयों में डूबते देखा है कि उन्हें खुद की भी सुध नहीं रहती।"

"हम्म! बीमारी तो है ही, लेकिन एक ऐसी बीमारी है जिसे अगर खुले दिल से स्वीकार कर लिया जाये तो इलाज की कोई जरूरत नहीं होती, क्योंकि तब बीमार को

जो सुकून मिलता है, उस सुकून का मोह उसके अन्दर ठीक होने की चाहत ही नहीं पनपने देता।"

"तुमने मेरे सवाल का जवाब नहीं दिया।"

"दरअसल..." कविता के होठों पर उसकी चिर-परिचित मुस्कान काबिज हो गयी – "...पढ़ने का शौक कब लेखन के शौक में तब्दील हो गया पता ही नहीं चला। ज्यादा पढ़ लेने के कारण जेहन में गूंजने वाले शब्द, भावनाओं के उमड़ने पर उनमें घुल कर कथानक की चाशनी बना लेते हैं। मैं उसी चाशनी को कलम के जरिये पन्ने पर उड़ेल देती हूँ।"

कविता की आवाज बहुत पतली थी। खनकती मुस्कान के साथ बात करने के उसके अंदाज पर रेहान मंत्रमुग्ध हुआ जा रहा था। वह एक ऐसी लड़की थी, जिसका सौन्दर्य किसी पाषाण-हृदय में भी प्रेम के बीज सींच सकता था।

"तुमने स्टेज शो के लिये 'मर्चेंट ऑफ वेनिस' को ही क्यों चुना? शेक्सपियर के और भी नाटक है, जैसे कि जुलियस सीजर, मैकबेथ, रोमियो-जुलियेट इत्यादि।"

"मैकबेथ मुझे पसंद नहीं। जुलियस सीजर पिछले साल किया था और रोमियो-जुलियट को अगले साल के लिये सोच रखा है। 'मर्चेंट ऑफ वेनिस' एक प्रेम कथा है, साथ ही साथ नारी की बौद्धिक क्षमता, सुन्दरता और आदर्श चरित्र का सबसे सुंदर वर्णन है इस नाटक में।"

"हम्म! ये तो है। पोर्शिया की गणना शेक्सपियर की आदर्श नायिकाओं में होती भी है, लेकिन इतने महत्वपूर्ण

किरदार को निभाने के लिये अभिनेत्री चुनने में तुमने लापरवाही बरती है।"

"कैसी लापरवाही?" कविता के माथे पर सिलवटें उभरीं।

"दरअसल तान्या मुझे पोर्शिया के रोल के लिये परफेक्ट नहीं लग रही है। पोर्शिया का किरदार तुम निभाती तो शायद ड्रामें में बेहतर इफेक्ट आता। इसमें कोई संशय नहीं है कि तुम उससे अधिक ख़ूबसूरत हो और तुममें पोर्शिया जैसी शालीनता भी है। शेक्सपीयर के लिट्रेचर की रिसर्चर होने के कारण तुम्हारे पास उनके प्रमुख चरित्रों का गहन विश्लेषण है और इसका प्रयोग करके तुम स्वयं के जरिये पोर्शिया को बेहतर ढंग से मंच पर प्रस्तुत कर सकती थी।"

कविता के कपोलों पर सुर्खी दौड़ गयी। यह प्रथम अवसर था कि किसी हमउम्र लड़के ने उसकी खूबसूरती की खुली तारीफ की थी। अपनी असहजता को छुपाने का निरंतर प्रयास करते हुये उसने कहा- "दरअसल ड्रामे में मेरे पोर्शिया न होने के पीछे कई वजहे हैं। पहली वजह तो यही है कि अभिनय और निर्देशन एक साथ करना मेरे लिये मुश्किल भरा होता। दूसरी वजह ये है कि मैं विशाल जनसमूह के सामने ज्यादा देर तक सहज नहीं रह पाती हूँ। प्रेमकथाओं में नायिका के किरदार के लिये हमेशा एक ऐसी लड़की की मांग होती है, जो थोड़ी फ्रैंक और ओपन हो, ताकि नायक के साथ हल्के-फुल्के प्रेमालाप वाले दृश्यों के समय वह नर्वस न हो सके। पोर्शिया के चरित्र के

लिये यह अनिवार्य योग्यता मुझमें जरा भी नहीं है, जबकि तान्या इन योग्यताओं पर बिल्कुल खरी उतरती है। नायक के तौर पर क्षितिज को चुनने के पीछे मुख्य वजह यही रही कि पोर्शिया का किरदार तान्या निभा रही है। वे दोनों क्लासमेट हैं, इसलिये खुद को एक दूसरे के साथ सहज महसूस कर पायेंगे और इस प्रकार उनके बीच एक अच्छी केमिस्ट्री दिखाई जा सकती है।"

'काश तुम्हें पता होता कि तुम जिस केमिस्ट्री को उन दोनों के बीच दिखाना चाहती हो, वह उनके बीच है ही नहीं। अभिनय से कोसों दूर रहने वाला वह लड़का अगर ड्रामे के क्रू में शामिल होने आया था, मात्र इस आशा के साथ कि इसी बहाने उसे तुम्हें करीब से जानने का अवसर मिलेगा।'

रेहान ने मन ही मन कहा किन्तु प्रत्यक्ष में खामोश रहा।

"खूबसूरती तो लोगों की आँखों का वहम होती है रेहान।" थोड़ी देर की खामोशी के बाद कविता ने दार्शनिक अंदाज में कहा- "खूबसूरती का असली एहसास तो लोगों की मन:स्थिति पर निर्भर करता है। किसी का भौतिक स्वरूप नहीं बल्कि उसके प्रेक्षण का हमारा नजरिया उसकी खूबसूरती को परिभाषित करता है। आकाश में नजर आता चाँद नवयुगल के लिये खूबसूरत होता है, जबकि वही चाँद विरह की आग में जल रहे लोगों को आकाश के सीने पर एक बदनुमा दाग के समान नजर आता है। ईश्वर की सृष्टि में हर चीज खूबसूरत है, किंतु अलग-अलग मानसिकताओं वाले लोगों ने खूबसूरती के अलग-अलग पैमाने निर्धारित

करके 'बदसूरत' नाम के उस शब्द को जन्म दिया, जो ईश्वर के शब्दकोष में कभी था ही नहीं। मेरे व्यक्तित्व का विश्लेषण किये बिना ही, बगैर किसी भूमिका के तुम्हारा मुझे ख़ूबसूरत कहना ये साबित करता है कि तुम उन लोगों में से हो जो सौन्दर्य का निर्धारण भौतिकता के आधार पर करते हैं। मेरी प्रौढ़ावस्था या फिर किसी दुर्घटना में मेरे चेहरे के विकृत हो जाने की दशा में मुझे दिया हुआ तुम्हारा विशेषण अपनी प्रासंगिकता गँवा देगा।"

रेहान कुछ नहीं बोला। कविता की स्पष्टवादिता पर कुछ बोल पाने की स्थिति में था भी नहीं। उसके मन में क्षितिज के प्रति ईर्ष्या ने घर कर लिया, क्योंकि कभी किसी लड़की पर न ठहरने वाली क्षितिज की निगाह कविता नाम के एक ऐसे नायाब कोहिनूर पर ठहरी थी, जिसका वाह्य सौन्दर्य से लेकर आंतरिक सौन्दर्य तक मन को मोह लेने वाला था। खूबसूरती के सभी पैमानों को ध्वस्त कर देने वाले सौन्दर्य की मल्लिका थी वह, लेकिन नापाक अहंकार उसके वजूद के एक जर्रे तक को स्पर्श नहीं कर पाया था।

"तुम्हारी मम्मी को पास हुये कितने साल हुये?" रेहान ने विषय बदलने के ध्येय से पूछा।

"चार साल।"

"तो क्या वह चिपू को जन्म देते ही चल बसी थीं?"

"नहीं। वे हार्ट पेशेण्ट थीं। दरअसल चिपू मेरे माँ-बाप की औलाद नहीं है।"

"यानि कि वह तुम्हारा सगा भाई नहीं है।"

"हाँ।" कविता ने एक गहरी साँस ली और आगे कहा- "हालांकि मम्मी ग्रेजुएट थीं, लेकिन फिर भी रुढ़िवादी सोच से ग्रस्त थीं। *'लड़कियाँ बुढ़ापे का सहारा नहीं बन सकती हैं और न ही समाज में अपने माँ-बाप को गर्व करने का अवसर प्रदान कर सकती हैं।'* यह मानसिकता उन पर इस कदर हावी थी कि वह मुझे हमेशा पराया धन समझती थीं और इसीलिये बुढ़ापे की दहलीज पर कदम रखने से पहले ही उन्होंने चिपू को गोद ले लिया था। लेकिन अफसोस! बुढ़ापे के लिये जो लाठी उन्होंने थामी थी, उसे साथ लेकर एक कदम भी चलना उनके नसीब में नहीं था। चिपू के गोद लिये जाने के कुछ दिनों बाद ही वे अपनी पुरानी बीमारी के कारण इस दुनिया से कूच कर गयीं।" कविता थोड़ी देर के लिये रुकी। फिर आग की लपटों पर दृष्टि जमाए हुये उसने आगे कहा- "चिपू अनाथ था। किसी शराबी ने उसे उस अनाथ आश्रम के दरवाजे पर छोड़ दिया था, जहाँ से उसे गोद लिया गया था। चिपू नाम की जिस जिम्मेदारी को मम्मी ने गोद लिया था, उस जिम्मेदारी को अब मुझे और पापा को ढोना था, लेकिन पापा तो मम्मी के जाने के बाद जैसे टूट कर बिखर चुके थे। कई हफ्तों तक तो वे गुमशुदा जिंदा लाश ही बने रह गये थे। ऐसी दशा में केवल मैं ही थी, जो अपने छोटे से परिवार को अस्त-व्यस्त होने से बचा सकती थी। जीवन को फिर से पुराने ढर्रे पर लाने के लिये और चिपू की परवरिश के लिये मेरा मजबूत बनना जरूरी था। मम्मी के देहावसान की घटना को एक डरावना स्वप्न मानकर मैंने चुनौतियों को

एक जिम्मेदारी के रूप में स्वीकार किया और उन्हें पूरा करने के लिये कमर कस लिया। एक नये सिरे से जिंदगी शुरू करने के बाद से लेकर आज तक मैं उन्हीं जिम्मेदारियों को पूरा करने में लगी हुई हूँ।"

कहने के बाद कविता मुस्कुराई, किंतु रेहान उसकी निश्छल मुस्कान के पीछे छिपे असीम दर्द को पहचान गया। कविता को देखकर आज उसे इस सवाल का जवाब मिल गया कि सनातन संस्कृति में स्त्री को 'शक्ति' की संज्ञा क्यों दी गयी है?

"शायद जिन्दगी में आये इस दर्दनाक मोड़ ने ही मेरे अंदर की लेखिका को उद्दात्त किया है। भावनाओं को शब्दों में ढालने की आदत डाल लेने से मुझे सुकून मिलने लगा। अपनी और चिपू की पढ़ाई तथा घर के कामों के बाद बचने वाले समय में मैंने शेक्सपियर के नाटकों का अपने शब्दों में पुनर्लेखन शुरु कर दिया, लेकिन इतने उपायों के बाद भी मैं आज तक मम्मी को मिस करती हूँ, क्योंकि मैं उनसे बहुत प्यार करती थी।"

रेहान के पास प्रतिक्रिया के लिये कोई शब्द नहीं था। आग की लपटों पर ठहरी कविता की आँखों में आंसू चमक रहे थे।

"खैर।" कविता ने आंसुओं को पोंछा और सामान्य होने की कोशिश में मुस्कुराते हुये कहा- "यह सब छोड़ो। तुम यहाँ मुझे क्या बताने आये थे?"

"क्षितिज के बारे में एक बेहद ख़ास बात बताने आया हूँ।"

□□□

डॉक्टर शक्तिस्वरूप सिंघानिया।

भारतीय मूल का एक अमेरिकी जेनेटिसिस्ट। सफाचट सर पर विग लगाने के शौकीन उस शख्स को अमेरिका में जेनेटिक्स का आधिकारिक विद्वान माना जाता था। उसका कद पाँच फीट से थोड़ा ही ज्यादा था, उम्र पैंतालीस साल से अधिक थी। गौर वर्ण चेहरे पर लाल होंठ और छोटी आँखों में मक्कारी भरी चमक, उसके व्यक्तित्व की खास पहचान थे। हालाँकि उसका वाह्य व्यक्तित्व अधिक प्रभावशाली नहीं था, किन्तु कुशल वक्ता होने के कारण जब वह अपने नवीन शोधों पर व्याख्यान प्रस्तुत करता था, तो साधारण छात्रों से लेकर स्थापित मनीषियों तक को चमत्कृत कर देता था। उससे बातें करने वाला उसकी विद्वत्ता का कायल हो जाता था, और उसके तमाम दोषों को नजरअंदाज करके केवल यही कहता था- 'ये भारत का दुर्भाग्य है कि सिंघानिया जैसे महान जेनेटिटिस्ट ने कार्यक्षेत्र के रूप में अमेरिका को चुना।'

□□□

6 अक्टूबर सन 1994 ।

क्षितिज ने रिस्टवॉच पर नजर डाली। सुबह के नौ बज रहे थे। लम्बी जम्हाई लेकर उसने एक बार फिर निगाहें पैसेजर हाल से निकलने वाले यात्रियों पर टिका ली। किसी के इंतजार में वह एयरपोर्ट के पार्किंग जोन में खड़ा था।

थोड़ी देर बाद पैसेंजर हाल से सिंघानिया को बाहर निकलता देख उसके इंतज़ार की घड़ियाँ समाप्त हो गयीं। सिंघानिया के साथ चार-पाँच की संख्या में अन्य लोग भी थे, जो उसके साथ उसी चाल से चल रहे थे, जिस चाल से किसी उच्चाधिकारी के साथ उसके मातहत चलते हैं। क्षितिज लापरवाही त्याग कर सजग हुआ। सिंघानिया का हुजूम जैसे ही उसके करीब से गुजरा उसने शालीन लहजे में पुकारा- "एक्सक्यूज मी सर।"

आवज सुनकर सिंघानिया ठहरा और साथ ही वे लोग भी, जो या तो उसके अनुयायी थे, या फिर असिस्टेण्ट्स।

"यस।" सिंघानिया ने गॉगल उतारते हुये उसे घूरा।

"क्षितिज सक्सेना। रिसर्च स्कॉलर इन फिजिक्स।" क्षितिज ने हैण्ड शेक के उद्देश्य से दाहिना हाथ उसकी ओर बढ़ा दिया।

"मिस्टर क्षितिज! बेहद खुशी हुई आपसे मिलकर।" सिंघानिया ने रुखे स्वर में कहा और असभ्यता का परिचय देते हुये क्षितिज से हाथ मिलाना जरूरी न समझकर आगे बढ़ गया।

"मुझे आपसे कुछ बात करनी है सर।"

"मैं समझ सकता हूं क्षितिज।" सिंघानिया ने अहंकार भरी एक मुस्कान

क्षितिज के हवाले किया– "आप जैसा एक रिसर्च स्टूडेंट मेरे जैसे हाई प्रोफाइल साइंटिस्ट से क्या जरूरी बात कर सकता है। आप मुझसे किसी ऐसे कांसेप्ट पर बात करना

चाहते होंगे, जिसे आपके रिसर्च गाइड ने ठुकरा दिया होगा। है ना?"

"जी नहीं! दरअसल मुझे आपके हेल्प की जरूरत है। खुद मेरे रिसर्च गाइड ने ये भरोसा जताया है कि आप मेरी हेल्प जरूर करेंगे।"

"क्षितिज।" सिंघानिया क्षितिज के करीब आया और उसके कंधे पर हाथ रखते हुये बोला– "क्या मैं आपकी यूनिवर्सिटी और आपके रिसर्च गाइड का नाम जान सकता हूँ?"

"सर मैं सेण्ट जोसेफ यूनिवर्सिटी का स्टूडेंट हूँ। प्रोफ़ेसर रामानुजन शास्त्री मेरे डॉक्टोरल एडवाइजर हैं, जो इंडिया के जाने-माने थ्योरेटिकल फिजिसिस्ट हैं।"

क्षितिज ने उत्साह के साथ उत्तर दिया, किन्तु उसका उत्साह उस वक्त धराशायी हो गया जब उसका जवाब सुनकर सिंघानिया समेत उसके सभी आदमी हँस पड़े।

"कभी नाम सुना है इस यूनिवर्सिटी का तुम लोगों ने?" सिंघानिया ने माखौल उड़ाने वाले अंदाज में अपने 'फॉलोअर्स' से पूछा।

"नो सर। नेवर।"

"और इंडिया के जाने-माने थ्योरेटिकल फिजिसिस्ट मिस्टर शास्त्री का?"

"ऑफ़कोर्स नो।"

'"देखा आपने क्षितिज? आप एक ऐसी यूनिवर्सिटी के छात्र हैं, जिसके बारे में मेरे असिस्टेंट्स कुछ नहीं जानते। और न ही मैंने कभी ऐसा कुछ सुना है कि इंडिया में

प्रोफ़ेसर रामानुजन शास्त्री नाम का भी कोई थ्योरेटिकल फिजिसिस्ट है। ऐसी स्थिति में आपकी रिसर्च कितनी एडवांस हो सकती है, इसका अनुमान मैं लगा सकता हूँ।”

“ऐसी बात नहीं है सर। हमारी यूनिवर्सिटी नैक द्वारा ए सर्टीफाइड है। हमारी यूनिवर्सिटी के प्रोफेसर्स के रिसर्च पेपर्स नेशनल और इंटरनेशनल जर्नल्स में हमेशा पब्लिश होते रहते हैं। हमारी यूनिवर्सिटी के स्टुडेण्ट्स दुनिया के कोने-कोने में फैले हुये हैं। मैं खुद अपनी यूनिवर्सिटी से पीजी गोल्डमेडलिस्ट हूँ। हमारी यूनिवर्सिटी रिसर्च के लिये अच्छी फैसिलिटी प्रोवाइड करती है।”

“तो फिर आप अपनी यूनिवर्सिटी से ही मदद क्यों नहीं मांगते हैं?”

“मेरी परिकल्पना का एक मुख्य भाग जेनेटिक्स से जुड़ा है। मुझे अपनी जिस परिकल्पना में अपार संभावनायें दिख रही हैं, उस परिकल्पना के केंद्र में एक सिंथेटिक जीन है।”

पहले सिंघानिया क्षितिज को घूरता रहा, तत्पश्चात उसने अविश्वास भरे लहजे में हंसते हुये कहा- “फिजिक्स में सिंथेटिक जीन की जरूरत? आर यू...आर यू जोकिंग मिस्टर क्षितिज?”

“नो सर!” क्षितिज उत्साह से भर उठा- “आयम नॉट जोकिंग। मैं जिस कांसेप्ट की बात कर रहा हूँ, वह यूनिक है। आज तक किसी भी रिसर्च स्कॉलर या साइंटिस्ट का ध्यान इस दिशा में नहीं गया है। अगर आपने मेरी हेल्प

की तो दुनिया एक बार वैसे ही चौंकेगी, जैसे आइंस्टीन ने सापेक्षवाद पर चौंकी थी।”

“आपके रिसर्च का ऑब्जेक्टिव क्या है?” क्षितिज का आत्मविश्वास देख सिंघानिया का लहजा गंभीर हुआ।

“फ्यूचर जानना! यदि मेरी परिकल्पना सिद्धांत का रूप ले लेती है, तो यह मानव जाति की अब तक की बड़ी उपलब्धियों में से एक होगी। इंसान अपना भविष्य जानने के लिये एस्ट्रोलॉजी पर नहीं बल्कि साइंस पर डिपेंड हो जायेगा।”

सिंघानिया अन्दर ही अन्दर रोमांचित हो उठा, किन्तु चेहरे से कोई भी भाव उजागर किये बिना वह क्षितिज को निगाहों के जरिये तौलता रहा। उसे शायद यकीन नहीं हो रहा था कि उसके सामने खड़ा लगभग चौबीस साल का एक लड़का दुनिया को चौंकाने का दावा कर रहा है।

“क्या आप साइंस फिक्शन लिखने या फिर पढ़ने के शौक़ीन हैं?”

“हर वह शख्स यही कहता है सर...।” क्षितिज मुस्कुराया- “जो पहली बार मेरे कांसेप्ट को सुनता है, लेकिन मेरा कांसेप्ट कल्पना की धरातल पर नहीं, बल्कि वैज्ञानिक तर्कों के धरातल पर खड़ा है।”

“ओके मिस्टर क्षितिज!” सिंघानिया ने निर्णायक लहजे में कहा- “आप अपने कांसेप्ट और अब तक किये गये रिसर्च की डिटेल्ड समरी मेरे असिस्टेंट के पास सबमिट कर दीजियेगा। यदि आपके कांसेप्ट में मुझे कोई संभावना

नजर आयी तो मुझे आपकी मदद करके बेहद खुशी होगी।"

"थैंक यू।" रोमांच की अधिकता के कारण क्षितिज के रोंगटे खड़े हो गये- "थैंक यू सो मच सर।"

सिंघानिया, क्षितिज के उत्साह पर कोई प्रतिक्रिया व्यक्त किये बिना ही आगे बढ़ गया।

□□□

रात के आठ बज रहे थे।

डिपार्टमेण्टल लाइब्रेरी में बैठे क्षितिज के आस-पास अनेक किताबें बिखरी हुई थीं। वह खाली पन्नों पर तेजी से कुछ लिख रहा था। शब्द जितनी तेजी से पन्ने पर उतर रहे थे, उतनी ही तेजी से पन्ने पर गणितीय समीकरणों की संख्या में इजाफा भी हो रहा था। सिंघानिया की ओर से सकारात्मक संकेत प्राप्त होने के बाद एक उज्ज्वल भविष्य की कल्पना ने क्षितिज को रोमांचित कर दिया था।

जेहन में क्षण-प्रतिक्षण जन्म ले रहे विचारों को वह बिना समय गंवाए पन्ने पर उतारने में इतना तल्लीन था कि तान्या कब उसके करीब आकर खड़ी हो गयी, उसे पता ही नहीं चला। उसकी तद्रा तब भंग हुई, जब तान्या ने उसे हल्के से स्पर्श किया।

उस पर नजर पड़ते ही क्षितिज का मूड ऑफ होने को हुआ, किन्तु फिर भी उसने संयम का लगाम थामे हुये शान्त भाव से कहा - "तुम घर नहीं गयी?"

"यही सवाल तो मैं तुमसे करने वाली थी।"

क्षितिज बगैर कुछ कहे फिर से पन्नों पर झुक गया।

"कोई जरूरी समीकरण हल कर रहे हो?"

जवाब में उसने पहले से लिखे हुये कुछ पन्नों को तान्या की ओर बढ़ा दिया। तान्या ने पहले उन पन्नों को उलटा-पलटा, फिर कहा- "किसी इनफार्मेशन को प्रकाश की गति से भी तेज गति से ब्रह्माण्ड के एक छोर से दूसरे छोर तक भेजा जा सकता है; इस अजीब से कथन को सैद्धांतिक रूप से साबित कर रहे हो?"

"हाँ।" क्षितिज ने पन्ने पर कलम चलाते हुये ही संक्षिप्त उत्तर दिया।

"मैं समझती हूँ; तुम अपना समय खराब कर रहे हो। लाइट बैरियर को लांघना

असंभव है। ये तो सीधे-सीधे सापेक्षवाद को चुनौती है।"

"हाँ; है! तुम्हारे पेट में क्यों दर्द हो रहा है?" क्षितिज ने चिढ़ते हुये कहा।

"ये हरकत बेवकूफाना है।" तान्या ने पन्नों को एक ओर रखते हुये कहा- "क्वांटम एंटेगलमेंट आज भले ही साबित हो चुका है, लेकिन अभी इस सिद्धांत में इतनी क्लेअरिटी नहीं है कि इसके आधार पर सापेक्षवाद को झुठलाया जा सके।"

"क्वांटम वर्ल्ड में कुछ भी पहले से निश्चित नहीं होता।" क्षितिज पन्ने पर झुके हुये ही बोला- "एक रिसर्च स्कॉलर होकर तुम ये कैसे भूल सकती हो कि क्वांटम लेवल पर होने वाले रिसर्च ये मानकर किये जाते हैं कि 'रियलिटी डज नॉट एग्जिस्ट'। चीजों पर हम जब तक गौर नहीं करते तब तक वे एक ही क्षण में, एक ही साथ अनगिनत अवस्थाओं

में होती हैं। उनकी इस अवस्था को 'सुपरपोजीशन स्टेट' कहा जाता है और इस अवस्था को दर्शाने वाले फंक्शन को वेव फंक्शन। जब हम किसी ऑब्जेक्ट पर गौर करना शुरू करते हैं, तो उसके वेव फंक्शन्स कोलैप्स हो जाते हैं और वह हमें किसी एक अवस्था में नजर आने लगता है। मतलब ये कि वास्तविकता पहले से तय नहीं होती। हमारा ऑब्जरवेशन इसे प्रभावित करता है।"

"तुम तो मुझे ऐसे समझाने लगे जैसे मैं क्वांटम मैकेनिक्स की एलीमेंट्री नॉलेज रखने वाली कोई डिग्री स्टूडेंट हूँ। तुम नील्स बोर के जिस अजीबोगरीब कांसेप्ट का फेवर ले रहे हो, वह आइंस्टीन को कभी हजम नहीं हुआ था। आइंस्टीन का मानना था कि वास्तविकता पहले से ही नियत होती है, इसे हमारा देखना या न देखना प्रभावित नहीं करता। क्वांटम मैकेनिक्स के जरिये आइंस्टीन के मत की व्याख्या करने के लिये मॉडर्न फिजिक्स को अभी पदार्थों के कुछ ऐसे गुणधर्म तलाशने हैं जो क्वांटम लेवल की घटनाओं के प्रति जिम्मेदार होते हैं। ये तलाश पूरी हो जाने के बाद उन घटनाओं को समझना परिवेश की घटनाओं को समझने जितना आसान हो जायेगा, और तब काम्प्लेक्स समझा जाने वाला 'क्वांटम मैकेनिक्स', 'क्लासिकल मैकेनिक्स' जितना ही आसान होगा। पदार्थ के उन्हीं गुणधर्मों अर्थात हिडन वेरिएबल्स को ढूँढना हमारे रिसर्च का ऑब्जेक्टिव है और इसी के लिये हमें यूनिवर्सिटी की ओर से हर महीने स्कॉलरशिप के तौर पर मोटी रकम मिलती है।"

"आइंस्टीन भगवान नहीं थे, इसलिये जरूरी नहीं है कि जो बात उन्हें हजम नहीं हुई वह बात आने वाली पीढ़ी को भी हजम न हो। क्वांटम वर्ल्ड के अणुओं के रहस्यमय व्यवहार को समझने के लिये किसी हिडन वेरिएबल को तलाश करने की जरूरत नहीं है, क्योंकि अगर पदार्थ के क्वांटम बिहेविअर को उनके अज्ञात गुणधर्म नियंत्रित कर रहे होते तो अब तक उन अज्ञात गुणधर्मों का पता चल चुका होता। अपने मत को साबित करने के लिये तथा उन हिडन वेरिएबल्स के वजूद को तलाशने के लिये आइंस्टीन ने बोरिस पोडोस्की और नाथन रॉजेन की मदद से 'ईपीआर एक्सपेरिमेंट' भी किया, लेकिन नतीजा क्या निकला? यही कि 'क्वांटम एंटेगलमेंट' नाम का एक नया अध्याय क्वांटम मैकेनिक्स का हिस्सा बन गया। उस 'ईपीआर एक्सपेरिमेंट' के दौरान जो आउटकम्स मिले थे, उनसे तुम अच्छी तरह वाकिफ हो। उन आउटकम्स से शॉक्ड होकर आइंस्टीन ने खुद कहा था किसी कण का अनायास ही अपने जैसे दूसरे कण को प्रभावित कर देना अविश्वसनीय है। पहले तो वे इसे गलत साबित करने की कोशिश करते रहे फिर अंत में परेशान हो कर उन्होंने इस घटना को 'स्पूकी एक्शन एट अ डिस्टेंस' यानी कि भूतिया कह दिया था। लेकिन आज 'क्वांटम एंटेगलमेंट' नाम की उस घटना की सत्यता प्रमाणित हो चुकी है। उन्हीं प्रमाणों में से एक है 'क्वांटम रॉबिन'।" तान्या ने कुछ कहने के लिये मुंह खोला लेकिन क्षितिज ने उसे अवसर न देते हुये आगे कहा- "मुझे अपने रिसर्च का ऑब्जेक्टिव पता है, चूंकि मैं नील्स बोर

का समर्थक हूँ आइंस्टीन का नहीं, इसलिये मैं उन्हीं के कांसेप्ट पर काम करना चाहता हूँ। मेरे इस फैसले पर जब मेरे एडवाइजर को कोई आपत्ति नहीं है तो तुम्हें भी कोई आपत्ति नहीं होनी चाहिये।"

"यानि कि तुम इस जिद्द पर अड़े हो कि 'क्वांटम एंटेगलमेंट' नाम की जिस घटना की अभी तक पूरी तरह व्याख्या भी नहीं की जा सकी है, मात्र उसके आधार पर तुम सापेक्षवाद को चुनौती देने में सफल हो जाओगे?"

"मैं किसी सिद्धांत को चुनौती देने की कोशिश नहीं कर रहा हूँ। मैं बस उन सम्भावनाओं को लेकर सर धुन रहा हूँ, जो 'क्वांटम एंटेगलमेंट' को लेकर मेरे मस्तिष्क में पनप रही हैं। और इस वक्त बेहतर यही होगा कि तुम मुझे डिस्टर्ब न करो।"

क्षितिज ने अंतिम वाक्य सख्त स्वर में कहा।

"ओफ्फो क्षितिज।" तान्या अब उसके बगल वाली कुर्सी पर बैठ गयी – "चलो मान लिया कि तुम सही रास्ते पर हो, लेकिन क्या दिन रात रिसर्च के बारे में ही सोचते रहना जरूरी है? जटिल सिध्दांतों और समीकरणों की दुनिया से बाहर निकलकर कभी ये जानने की कोशिश भी करनी चाहिये कि इंसानों की दुनिया में क्या चल रहा है?"

क्षितिज झल्लाया और पेन कागज पर छोड़कर तान्या की ओर घूम गया– "ठीक है। मैं तुम्हें पांच मिनट देता हूँ। चलो बोलना शुरु करो। बताओ कि इंसानों की दुनिया में क्या चल रहा है?"

क्षितिज के तेवर देखकर तान्या लापरवाह अंदाज में हँसी- “तुम जब अचानक गुस्सा हो जाते हो तो बड़े प्यारे लगते हो। आई वाज जस्ट किडिंग
यार।”

“तुम तीन सालों से मेरे साथ हो। उसके बाद भी ये नहीं समझ पायी कि काम के वक्त फालतू की बातें करने पर मुझे सरदर्द होने लगता है।”

“ओ.के.। सॉरी। वैसे मैं यहाँ तुमसे तुम्हारे ‘अस्तित्व थ्योरी’ के बारे में बात करने आयी थी, जिसके सिलसिले में सिंघानिया जैसे जेनेटिक साइंटिस्ट के साथ की जरूरत है, ताकि वे तुम्हारे रिसर्च के लिये सिंथेटिक जीन बना सके।”

“क्या तुम भूल गयी कि प्रोफ़ेसर ने मीटिंग में क्या कहा था?”

“क्या कहा था उन्होंने?” तान्या ने अनभिज्ञ होने का दिखावा किया।

“यही कि जब तक मेरा कांसेप्ट रिसर्च कमेटी के पास मेरे नाम से रजिस्टर नहीं हो जाता, उसे सार्वजनिक नहीं किया जा सकता।”

“मैं सार्वजनिक करने के लिये नहीं कह रही हूँ। तुम्हारा कांसेप्ट केवल मुझ तक रहेगा। बिलीव मी।”

“नहीं!” क्षितिज ने दो टूक लहजे में कहा- “तुम अभी मेरे विश्वास की परिधि में दाखिल नहीं हो पाई हो।”

तान्या अपमान का घूँट पीकर रह गयी, जबकि क्षितिज फिर से कागज़ पर झुक गया, जिसके कारण वह तान्या

के चेहरे पर काबिज हो उठे विषाक्त भावों को नहीं देख पाया। थोड़ी देर की खामोशी के बाद तान्या ने फिर मुंह खोला- “क्या डॉक्टर सिंघानिया तुम्हारी हेल्प करने को तैयार हो गये?”

“तो शिमला एयरपोर्ट पर तुम भी मौजूद थी। मेरी जासूसी करने के लिये; है न?”

“हाँ! लेकिन तुम्हारी जासूसी करने के लिये नहीं। दरअसल मेरे मॉम-डैड मिलने आये थे। उनकी रिटर्न फ्लाइट दस बजे की थी, इसीलिये मैं उन्हें एयरपोर्ट छोड़ने गयी थी।”

उसका स्पष्टीकरण सुन क्षितिज ने कुछ नहीं कहा।

“क्या तुम ये भी नहीं बताओगे कि सिंघानिया तुम्हारी हेल्प करेंगे या नहीं?”

“वक्त आने पर तुम्हें खुद पता चल जायेगा।”

“कब आयेगा वह वक्त?”

“तान्या!” क्षितिज ने आँखें बन्द करके गहरी साँस लेते हुये कहा।

“हम्म!”

“अगर तुम इसी वक्त यहाँ से नहीं गयी तो...।”

“तो क्या?”

“तो मजबूरन मुझे यहाँ से उठ जाना होगा, या फिर तुम्हें जबरदस्ती लाइब्रेरी से बाहर घसीटना होगा। अगर तुम चाहती हो कि मैं ऐसा कुछ न करूं तो खुद ब खुद यहाँ से चली जाओ।”

तान्या को कुछ कहने का उपक्रम करते देख क्षितिज पैर पटकते हुये चिल्ला उठा- “दफा हो जाओ। मैं कहता हूँ जाओ यहाँ से।”

वह इस कदर चीखा था कि तान्या कुर्सी से गिरते-गिरते बची।

“ओ.के.। ओ.के.। गेट रिलैक्स्ड! जा रही हूँ न।”

क्षितिज, तान्या को तब तक घूरता रहा जब तक कि वह लाइब्रेरी के दरवाजे को पार करके बाहर नहीं चली गयी।

□□□

“क्या हुआ?” तान्या जैसे ही लाइब्रेरी से बाहर आयी, कॉरिडोर में खड़े आर्यन ने उतावले लहजे में पूछा- “सब ठीक तो है न? वह इतनी तेज चीखा क्यों था?”

“कुछ नहीं।” संक्षिप्त उत्तर देने के बाद तान्या गलियारे के फर्श को रौंदते हुये ग्राउण्ड फ्लोर पर जाने वाले जीने की तरफ बढ़ गयी। आर्यन भी उसके साथ हो गया।

“उसने एक बार फिर मेरी इन्सल्ट करके मुझे भगा दिया। मुझे भगाने के लिये ही वह इतनी जोर से चीखा था।” तान्या ने चलते हुये कहा। अपमान का क्रोध उसके जर्रे-जर्रे से नुमाया हो रहा था।

“और तुम छोटी बच्ची की तरह डर कर भाग आयी?” आर्यन ने उसके साथ कदमताल करते हुये पूछा।

“क्योंकि मुझे डर था कि अगर मैंने उसे ज्यादा तंग किया तो वह मुझे पेपरवेट खींच कर मार देगा।”

“वह कुछ लिखने में व्यस्त था न?”

"हाँ! वह साबित करना चाहता है कि लाइट बैरियर को क्रॉस किया जा सकता है।"

"आखिर किस आधार पर?"

"क्वांटम एंटेंगलमेंट के आधार पर। उसका तर्क ये है कि जब क्वांटम एंटेंगलमेंट के तहत हजारों प्रकाश वर्ष की दूरी पर मौजूद एंटेंगल्ड पार्टिकल्स के बीच क्षण भर में सूचनाओं का आदान-प्रदान हो सकता है, तो ये जाहिर है कि उन सूचनाओं के संचरित होने की गति प्रकाश की गति से तेज होती होगी। उसका यह तर्क आइंस्टीन के इस सिद्धांत को गलत साबित करता है कि सूचनाओं के संचरण की अधिकतम गति प्रकाश की गति से अधिक नहीं हो सकती है।"

"आखिर ऐसी बेवकूफी वह कैसे कर सकता है?" आर्यन ने आशंकित लहजे में कहा- "वह अच्छी तरह जानता है कि क्वांटम एंटेंगलमेंट जैसी रहस्यमयी घटना के पीछे निहित वजह को अभी तक ढूंढा नहीं जा सका है और इस सवाल का आज भी विज्ञान के पास कोई जवाब नहीं है कि हजारों प्रकाश वर्ष की दूरी पर मौजूद एंटेंगल्ड पार्टिकल्स के बीच सूचनाओं का स्थानांतरण किस माध्यम होता है? अगर हम प्रचलित हाइपोथीसिस की माने तो यह जरूरी नहीं है कि सूचनाएं एक एंटेंगल्ड पार्टिकल से दूसरे एंटेंगल्ड पार्टिकल तक पहुँचने के लिये हजारों प्रकाश वर्ष की दूरी तय करती हों। संभव है कि वे कोई ऐसा शार्ट कट रास्ता अपनाती हों, जिससे वे हजारों प्रकाश वर्ष की

दूरी को पलक झपकते ही तय कर लेती हैं; जैसे कि वार्महोल।”

“तुम्हें क्या लगता है आर्यन, ये सब बातें उसके दिमाग में नहीं आयी होंगी?”

“अगर आयी होतीं तो वह सापेक्षवाद को चुनौती देने का दुस्साहस क्यों करता?”

“नहीं आर्यन!” तान्या ने विचारपूर्ण मुद्रा बनाते हुये कहा-“वह पीजी लेवल तक गोल्डमेडलिस्ट रह चुका है, उसके विचारों को दुस्साहस या मूर्खता कह कर हल्के में नहीं लिया जा सकता। उसने कुछ तो अनोखा जरूर सोचा है, जिसे वह ‘अस्तित्व थ्योरी’ कहता है।”

“ऐसा क्या अनोखी बात हो सकती है उसकी थ्योरी में?”

“यही जानने के लिये तो उसके पीछे पड़ी हुई हूँ, लेकिन कम्बख्त अपने कांसेप्ट के बारे में सांस तक नहीं लेता। आज उसने सिंघानिया से मुलाक़ात भी कर ली।”

“क्या परिणाम रहा उस मुलाकात का?”

“नहीं मालूम। इस बारे में भी उसने मुझे कुछ नहीं बताया।”

दोनों खामोश हो गये। गैलरी में केवल उनके पदचाप की गूंज ही शेष रह गयी।

“क्षितिज के दिमाग में क्या चल रहा है, ये जानने के लिये मुझे उसके करीब जाना होगा।” थोड़ी देर बाद तान्या ने कहा।

“मतलब?”

"क्या तुम करीब जाने का मतलब नहीं समझते?"

"नो! नेवर!" तान्या का मंतव्य समझते ही आर्यन ने तीखा विरोध किया– "मैं तुम्हें ऐसा नहीं करने दूँगा। वह हर छोटी-बड़ी बात पर तुम्हें जलील कर देता है। मेरा बस चले तो मैं उसका खून कर दूँ और तुम उसके साथ प्यार का झूठा नाटक करने के सपने देख रही हो?"

तान्या ठहर गयी। उसने क्रोध से परिपूर्ण दृष्टि आर्यन पर डाली और लगभग हर लफ्ज को चबाते हुये कहा- "क्या तुम ये जानना चाहोगे आर्यन कि मुझमें और तुममें मेजर डिफरेन्स क्या है?"

आर्यन कुछ नहीं बोला।

"तुम दिमाग के बजाय दिल से ज्यादा सोचते हो, जबकि मैं दिल से सिवाय धड़कनों के और कोई काम नहीं लेती। जिन्हें तुम भावनायें कहते हो, वे मेरे लिये केवल टाइमपास और मनोरंजन का जरिया हैं। मैं जीवन में सिर्फ दो चीजों को तवज्जो देती हूँ- 'शोहरत और सफलता'। जहाँ तक तुम्हारी मोहब्बत का सवाल है तो यदि जिन्दगी ने कभी मोहलत दी तो उसके बारे में जरूर सोचूंगी।"

कहने के बाद तान्या आर्यन को छोड़ कर आगे बढ़ गयी। उसके स्पष्ट लहजे को सुनकर आर्यन स्तब्ध रह गया। तान्या की मोहब्बत के पीछे आँखें बंद करके दौड़ता वह इंसान मानों आज ठहर कर ये सोचने को विवश हो गया कि कहीं दिल के हाथों मजबूर होकर उसने तान्या को समझने में कोई भूल तो नहीं कर दी?

□□□

20 अक्टूबर सन 1994।

एक हफ्ते की अवधि वाला यूनिवर्सिटी का एनुअल फंक्शन चल रहा था और 'मर्चेंट ऑफ़ वेनिस' के प्रदर्शन में मात्र एक दिन बाकी रह गया था। ऐसी दशा में कविता की व्यस्तता जायज थी। वह क्रू की एक मेम्बर के साथ रिहर्सल हाल की ओर भागी जा रही थी।

"सारे कॉस्ट्यूम्स और मेकअप किट तो आ गये है न बरखा?"

"हाँ कविता।" बरखा ने उसके कदम से कदम मिलाते हुये कहा– "लेकिन एक बड़ी प्रॉब्लम आ गयी है।"

"कैसी प्रॉब्लम?" कविता ठहर कर बरखा की ओर मुड़ी।

"क्षितिज, तान्या को जरा भी को-ऑपरेट नहीं कर रहा है। ड्रामे के अब तक
के सारे सीन्स की प्रैक्टिस के दौरान वह तान्या से चिढ़ता रहा है। मुझे तो संदेह हो रहा है कि क्षितिज की प्री-मैच्योर्ड थिंकिंग के कारण कल स्टेज पर हमारा शो मजाक का विषय न बन जाये।"

"वह तान्या से चिढ़ता जरूर है, लेकिन अब तक के सारे सीन्स उसने ठीक से किये हैं, फिर अंतिम सीन के लिये इतनी हाय-तौबा क्यों कर रहा है?"

"एक्चुअली बात ये है कि स्क्रिप्ट के मुताबिक अंतिम सीन में पोर्शिया, बेसेनियो का आलिंगन करते हुये अपने प्रेम का इजहार करती है। क्षितिज नहीं चाहता कि तान्या उससे लिपट कर डायलॉग्स बोले। उसका कहना है कि

तान्या सारे डायलॉग्स कम से कम दो फीट दूर रह कर बोले।”

“ऐसा कैसे हो सकता है?” कविता के चेहरे पर चिन्ता के बादल मंडराए– “ये सीन तो मैंने स्क्रिप्ट की डिमांड के मुताबिक लिखी है। क्लाइमेक्स में पोर्शिया और बेसेनियो के आलिंगन को मंच पर प्रदर्शित करना, एक प्रेमकथा के सुखद अंत को दर्शाने के लिये अनिवार्य है।”

“उसका तो ये भी मानना है कि एण्टोनियो और शायलॉक के मुकदमे की सुनवाई के बाद ही शो ऑफ कर देना चाहिये। ड्रामे का अंतिम सीन उसे ‘एक्स्ट्रा फिटिंग’ लग रहा है।”

“पागल हो गया है वह।” कविता भड़क गयी - “इस वक्त कहाँ है?”

“रिहर्सल हाल में प्रैक्टिस कर रहा है। वहीं पर क्रू के बाकी आर्टिस्ट भी हैं।”

“ठीक है। चलो।”

कविता और बरखा तेजी से आगे बढ़ गयीं।

□□□

“हद हो गयी। कितनी बार कहा कि थोड़ी दूरी बनाओ, लेकिन बात तुम्हारे भेजे में सरकती ही नहीं।” आपा खो कर क्षितिज ने तान्या को एक तेज धक्का दिया। वह मंच से गिरते-गिरते बची। हाल में मौजूद हर शख्स के होठों पर खामोशी का ताला लटक गया। तान्या उसे यूँ घूरने लगी, जैसे वह कोई आठवां अजूबा हो।

"साबित क्या करना चाहती हो तुम?" क्षितिज बुरी तरह चीखा- "जो भी बोलना है उसे दो फीट दूर से भी तो बोल सकती हो। लिपटते हुये डायलॉग बोल कर कौन सा एक्स्ट्राऑर्डिनरी इफैक्ट पैदा करना चाहती हो?"

चिल्लाने के बाद क्षितिज अनशन की मुद्रा में जमीन पर बैठ गया। हाल में
मौजूद लोगों के लिये अंतिम सीन के प्रति उसका रवैया हैरान करने वाला था।

'अरे यार ये तो किसी फिल्मी हीरोईन की तरह भाव खा रहा है।'

'जब तान्या को इस सीन से कोई प्राब्लम नहीं है तो फिर तू इतने नखरे क्यों दिखा रहा है?'

'अजीब आदमी है यार। इसे ड्रामे का हीरो क्यों बना दिया गया?'

'अब अगर इसकी तरह ग्रेशियानो भी नेरिसा को गले लगाने पर आपत्ति जता देगा तो ड्रामे के क्लाइमेक्स का तो सत्यानाश हो गया समझो।'

हाल में मौजूद लोगों में से कईयों के ऐसा कहने के बाद एक जबरदस्त ठहाका गूंजा। लोगों के बीच रेहान भी मौजूद था, जो अपने डायलॉग का पेज हाथ में लिये हुये बाकी मेम्बर्स के साथ सीन डिस्कस कर रहा था, किन्तु क्षितिज द्वारा भूचाल लाये जाने के बाद वह भी बाकियों की तरह उसे घूरने लगा था। उसका चेहरा भावशून्य था। क्षितिज मजाक का विषय बन गया था, इस घटना के प्रति उसके चेहरे पर कोई भी प्रतिक्रियात्मक भाव नहीं था।

"कम ऑन क्षितिज। शुरु करो ना?"

"भाड़ में जाओ तुम सब।" क्षितिज किसी विस्फोटक की तरह फट पड़ा। वह जमीन पर बैठे-बैठे ही गला फाड़ कर चीखा - "आई डोंट वांट टू एक्ट दिस सीन। कविता को बुलाओ। मैं अभी इसी वक्त इस बेहूदे सीन को स्क्रिप्ट से रीमूव करवाऊंगा।"

"मैं आ गयी हूँ।"

रिहर्सल हाल में कविता की आवाज गूंजी। उसके अन्दर कदम रखते ही खामोशी छा गयी। क्षितिज जमीन से उठ खड़ा हुआ। कविता, बरखा के साथ उसकी ओर बढ़ी।

"तुम्हारी प्रॉब्लम क्या है?" उसके निकट पहुंचते ही कविता फुंफकार उठी-"तुमने अभी-अभी तान्या को जलील क्यों किया?"

"वो मैं....वो मैं....।" कविता को बेहद करीब पाकर क्षितिज हकला उठा।

"मुझे बरखा ने सबकुछ बता दिया है। तुम ऐसे समय सीन को लेकर
आनाकानी कर रहे हो, जब मैं बेसेनियो के रूप में किसी दूसरे को कास्ट भी नहीं कर सकती। कल हमारी फाइनल परफार्मेंस है और तुम इस तरह रियेक्ट कर रहे हो? अगर तुम्हें यही करना था तो ड्रामे में आये ही क्यों?"

क्षितिज खामोश। उसे सूझा ही नहीं कि क्या जवाब दे।

"बोलो। जवाब क्यों नहीं देते?" कविता ने चिल्लाकर कहा – "आखिर तुम्हें इस अंतिम सीन से आपत्ति क्यों है?"

क्षितिज एक बार फिर खामोश। क्रू मेम्बर्स के सामने वह हास्य कलाकार बना हुआ था।

"तुम मेरे साथ आओ। मुझे तुम्हें कुछ जरूरी बात समझानी है।"

कविता, क्षितिज का हाथ पकड़कर उसे लगभग दौड़ाते हुये हाल से बाहर लेकर आयी। उसका दबंग अंदाज देखकर क्षितिज भौचक्क रह गया। वह कभी अपनी उस कलाई देख रहा था, जिसे कविता ने पकड़ा था तो कभी कविता के उस चेहरे को जहां उसे अपने लिये ढेर सारा क्रोध नजर आ रहा था।

"अब बताओ समस्या क्या है?"

"वो....वो....मैं....।" क्षितिज फिर हकलाया।

"वो....मैं क्या? साफ-साफ कहो।"

"मैं तान्या के साथ खुद को सीन के लिये असहज महसूस कर रहा हूँ।"

"उफ्फ!" कविता ने इस कदर कहा, मानो क्षितिज की समस्या साधारण हो- "ये तो बेहद मामूली सी समस्या है। मैं तुम्हें ऐसे कई तरीके बता सकती हूँ, जिससे तुम्हारी झिझक दूर हो जायेगी। तुम्हें तान्या की बेइज्जती करने या फिर ड्रामे के इस आखिरी सीन पर सवाल खड़ा करने की क्या जरूरत है?"

"बात सिर्फ इतनी सी नहीं है कविता। म....मैं...मैं तान्या को पसंद भी नहीं करता।"

"तो क्या हुआ? अपने व्यक्तिगत मामले को तुम ड्रामे के साथ क्यों जोड़ रहे हो? तुम ये क्यों नहीं समझते कि तुम

और तान्या सिर्फ ड्रामे में एक-दूसरे के साथ हो, वास्तविक जीवन में नहीं।"

कविता कहती रही जबकि क्षितिज, जो तान्या के प्रति अपने नकारात्मक रवैये से बाज आने को कतई तैयार नहीं था, केवल सुनता रहा।

"हमें ये कोई हक़ नहीं है कि हम जिसे पसंद नहीं करते, उसे सरेआम जलील करते फिरें। तान्या की कोई गलती नहीं है। जिस तरह तुमने अपने शौक के लिये ड्रामे में पार्टीसिपेट किया, उसी तरह तान्या ने भी पार्टीसिपेट किया। रोल को लेकर अगर तुम तान्या को जलील करते फिरोगे तो उंगलियाँ तान्या पर नहीं बल्कि तुम पर उठेंगी। लोग तुमसे सवाल करेंगे कि जब तुम तान्या को पसंद नहीं करते तो पोर्शिया का रोल तान्या कर रही है, ये जानते हुये भी ड्रामे में पार्टीसिपेट
क्यों किया?"

क्षितिज के चेहरे पर उलझनें नजर आने लगीं, जो इस बात का स्पष्ट संकेत दे रही थीं कि वह कविता से सहमत था, किन्तु उसे 'मर्चेंट ऑफ़ वेनिस' में अपने पार्टीसिपेशन की वजह बताने की हिम्मत अभी तक नहीं जुटा पाया था।

"तान्या की इन्सल्ट करने का सीधा सा अर्थ ये है कि तुम मानवीय कमजोरियों का शिकार होकर कला को आहत कर रहे हो। कला हमें किसी से ईर्ष्या, द्वेष या नफरत करना नहीं सिखाती। अहंकार इसका सबसे बड़ा शत्रु होता है।"

"कविता।" क्षितिज ने खामोशी तोड़ी– "तुम इस सीन को लेकर इतनी सेंसेटिव क्यों हो रही हो? ड्रामे का अन्त अगर मुकदमे की सुनवाई के साथ कर दिया जाये तो क्या बुरा है?"

कविता के चेहरे पर उलझन और क्रोध का संयुक्त रूप उभरा।

"तुम साइन्स बैकग्राउण्ड के लोगों को ड्रामे में ले लेना ही शायद मेरी सबसे बड़ी गलती थी। तुम लोग केवल गणितीय समीकरणों को ही समझने की समझ रखते हो। भावनाओं के समीकरण समझना तुम लोगों के बस का रोग नहीं है।"

"ये मेरे सवाल का जवाब नहीं है।" क्षितिज चिढ़कर बोला।

"क्षितिज।" कविता का लहजा रोष से परिपूर्ण हो उठा। उसके अंदाज से लगा कि वह क्षितिज को समझाने का आखिरी पैंतरा आजमा रही है– "कोई भी प्रेमकथा प्रेम के इजहार के बिना अधूरी होती है। कहानी के मुताबिक अपने पिता के वसीयत की शर्त के कारण पोर्शिया, बेसेनियो को चाहते हुये भी उससे कभी प्रेम का इजहार न कर सकी थी। बेसेनियो वसीयत की शर्तों को पूरा करते हुये पोर्शिया को जीत तो लेता है, किन्तु बेसेनियो को पाने का ये तरीका पोर्शिया को प्रेमविवाह न लगकर शर्तों के बंधन में बंधी एक अरेन्ज्ड-मैरिज लगती है। पोर्शिया की इस भावना को लोगों के सामने लाने के लिये ही मैंने ये अंतिम सीन लिखा है, जिसमें पोर्शिया, बेसेनियो से

अपनी शादी की अंगूठी की मांग करने के साथ ही अपनी भावनाओं का इजहार करते हुये उस पर ये जाहिर करती है कि कोर्ट में एण्टोनियो का वकील बनकर शायलॉक के खिलाफ जिरह करने वाली वह खुद...।"

"मैंने पूरी स्क्रिप्ट पढ़ी है।" क्षितिज ने कविता की बात काटते हुये कहा– "मुझे 'मर्चेण्ट ऑफ वेनिस' की कहानी पता है। प्लीज उसे मत सुनाओ।"

"तुमने मेरी स्क्रिप्ट पढ़ी है, इसके बाद भी ये नहीं समझ पा रहे हो कि ड्रामे का ये आखिरी सीन कितना अहम है? लोगों के सामने ये तथ्य लाना बेहद जरूरी है कि पोर्शिया भी बेसेनियो से छिपे तौर पर मोहब्बत करती थी, किन्तु अपने दिवगंत पिता की इच्छाओं के सम्मान के लिये उसे खामोश रहना पड़ा था।"

क्षितिज दुविधा में पड़ गया। एक तरफ वह था, जो आख़िरी सीन की आड़ में तान्या को अपने क़रीब बिल्कुल भी बर्दाश्त नहीं करना चाहता था, तो दूसरी तरफ कविता थी, जो हर हाल में आख़िरी सीन को स्टेज पर प्रदर्शित करने हेतु प्रतिबद्ध थी। अंततः जीत कविता के प्रतिबद्धता की हुई और क्षितिज ने पराजय स्वीकार कर ली। उसने गहरी साँस लेकर कहा – "तुम मुझे झिझक से उबरने का कोई उपाय बता सकती हो न?"

"बेशक।"

"तो चलो बताओ। मैं इस सीन के लिये आखिरी कोशिश करना चाहता हूँ।"

"सुनो।" कविता, क्षितिज की ओर घूमी– "तुम कुछ पलों के लिये भूल जाओ कि तुम्हारे सामने तान्या है। जिस समय वह डायलॉग बोल रही होगी, उस समय तुम अपनी कल्पना में उस शख्स को बसा लेना, जिससे तुम प्यार करते हो, नफरत नहीं। वास्तविकता को भूल कर, कल्पना के रंगों में डूबकर वह सब कुछ सुन लो, जो पोर्शिया के रूप में तान्या तुमसे कह रही होगी। इस सीन में तुम्हारा कोई डायलॉग नहीं है। ड्रामे के उन आख़िरी क्षणों में केवल तुम्हारा बॉडी लैंग्वेज ही क्लाइमेक्स का मूल्यांकन करेगा। तुम ये प्रयोग आजमा कर देखो। तुम्हें अपने अभिनय में फर्क नजर आयेगा।"

"ठीक है।"

"ये हुई न बात।" कविता मुस्कुराई - "चलो अब चलें।"

□□□

"मोहब्बत तो मैं भी तुमसे बहुत करती थी बेसेनियो। जब-जब मैंने अपने दिल से पूछा था कि वह कौन है, जो तुम्हारे बेहद करीब है, तो हर बार उसने चीख-चीखकर यही जवाब दिया था कि वह तुम हो, जो उसकी धड़कनों की राह में खड़े होकर उससे गुफ्तगू करते हो। पिता की छोड़ी गयी वसीयत की अजीब सी शर्त ने मुझे एक पल भी चैन नहीं लेने दिया। कोई अजनबी मुझे स्वयंबर में जीत कर ले जायेगा और मेरी भावनाओं की कब्र पर अपने अरमानों के दीप जलाकर मुझे तुम्हें भूलने पर मजबूर कर देगा, इस एहसास मात्र से मैं जितनी बार बेबसी के आँसू रोयी हूँ,

उसकी गिनती के लिये आज तक कोई संख्या नहीं बनी। पिता के इच्छाओं को आहुति देकर जब-जब मैंने तुमसे अपनी प्रीत का इजहार करना चाहा, तब-तब मुझे क्रूर समाज का वह चेहरा नजर आया जो मुझे चरित्रहीन करार देते हुये मेरे वजूद को घृणा की दृष्टि से देखे जा रहा था। *'प्रेम अगर सच्चा हो तो हृदय की आवाज बिना उपासना के ही ईश्वर के दरबार में हाजिरी लगा आती हैं।'* आशिकों की जमात में प्रचलित इस कहावत पर मुझे तब यकीन हो गया, जब तुमने स्वयंबर की शर्तों का पालन करते हुये, आन्तरिक सौन्दर्य को प्राथमिकता देते हुये, जस्ते की उस संदुक को चुना, जो बाह्य सौन्दर्य के उपासकों द्वारा उपेक्षित किया जा चुका था और मुझे जीत लिया। वह जीत सिर्फ तुम्हारी नहीं थी बेसेनियो बल्कि वसीयत की शर्तों में बंधकर कसमसाती भावनाओं पर मेरी विजय थी। तुम्हें पति के रूप में पाने का मेरी आँखों का सुखद स्वप्न कब यथार्थ में बदल गया, पता ही नहीं चला। मैं अब ईश्वर से यही प्रार्थना करूंगी कि गुजरते समय के साथ मैं तुम्हारे लिये और भी ख़ूबसूरत होती जाऊं।"

उपरोक्त लम्बे संवाद के बाद पोर्शिया ने खुद को बेसेनियो के आलिंगन में सौंप दिया। स्टेज पर वृत्ताकार दायरे में फैले दुधिया प्रकाश में एक दूसरे की बाहों में सिमटे युगल को देख मानो हर किसी के सम्मुख शेक्सपियर की कल्पना जीवंत हो उठी। तान्या की संवाद अदायगी ने दर्शक दीर्घा की हर छोटी-बड़ी हस्ती को ताली बजाने पर मजबूर कर दिया।

और क्षितिज!

उसे आभास तक नहीं था कि उसकी बाहों में तान्या थी। उसे तो अपने आगोश में सिर्फ एक ही चेहरा नजर आ रहा था, कविता का चेहरा।

□□□

"गजब हो गया।" बरखा लगभग भागते हुये ड्रेसिंग रुम में आयी और कविता को देखते ही उत्साहित होकर दुगनी तेजी से चिल्ला पड़ी– "तुम्हारा आइडिया काम कर गया कविता। स्टेज पर क्षितिज और तान्या ने इतने अच्छे एक्सप्रेशन्स दिये कि उनके अभिनय के सम्मान में तालियाँ बजाने के लिये चीफ गेस्ट तक खड़े हो गये। क्षितिज को देखकर ऐसा लग रहा था, जैसे वह भी तान्या की संवाद अदायगी का मुरीद हो गया हो। बोल तक नहीं फूटे उसके मुँह से। बिल्कुल उसी पोज में स्टेज पर खड़ा रह गया, जैसा तुमने स्क्रिप्ट में लिखा था। अब ये तान्या के सजीव अभिनय का असर था या फिर तुम्हारे दिये हुये ट्रिक का, ये तो नहीं मालूम, लेकिन इस अंतिम सीन के लिये क्षितिज का रवैया देखकर हमें ड्रामे के पिट जाने का जो डर सता रहा था, वह व्यर्थ साबित हुआ।"

शताब्दी एक्सप्रेस जैसी तेजी के साथ बोलती जा रही बरखा के अल्फाजों को उस वक्त ब्रेक लग गये, जब उसने कविता के चेहरे खुशी या उत्साह का कोई भाव नहीं देखा।

"ऐ हैलो! मिस कविता, आपको क्या हो गया?" उसने कविता के भावशून्य चेहरे के सामने चुटकी बजाई।

"लो पानी पी लो।" उसने पानी का ग्लास बरखा की ओर बढ़ा दिया।

"पानी क्यों?"

"तुम्हें नहीं लगता कि तुम कुछ ज्यादा ही फुदक रही हो?" कविता ने भावरहित लहजे में कहा – "अभी अवार्ड सेरेमनी बाकी है। सिर्फ सफल मंचन के लिये मैंने मर्चेण्ट ऑफ वेनिस की स्क्रिप्ट नहीं लिखी थी।"

"अरे हाँ। याद आया। अभी तो अवार्ड की घोषणा होनी बाकी है।"

कविता आज दुखी नजर आ रही थी। उसके ड्रामे का मंचन हो रहा था, बावजूद इसके उसने अपने चरित्रों का अभिनय देखना आवश्यक न समझकर पूरे ड्रामे के दौरान ड्रेसिंग रूम में ही रही थी। इससे पहले कि बरखा, उससे उसकी उदासी का कारण पूछती, क्रू के सारे आर्टिस्टों ने लगभग एक साथ ड्रेसिंग रूम में प्रवेश किया।

'मजा आ गया।'

'ये ड्रामा तो जिन्दगी भर याद रहेगा।'

'हमारे अभिनय पर कविता की बारीक दृष्टि का ही ये नतीजा है कि हमने स्टेज पर इस नाटक की 'एररफ्री परफार्मेंस' दी।'

'शायलॉक के रूप में मैं तो खुद को सच का विलेन समझने लगा था।'

ऐसे न जाने कितने वाक्य कविता के कानों में पड़े, परन्तु उसके चेहरे के भावों में कोई परिवर्तन नहीं हुआ। अन्ततः वह अपनी कुर्सी से उठी और क्रू मेंबर्स का आभार व्यक्त

करने के उद्देश्य से मुस्कुराते हुये बोली - "इस ड्रामे के सफल मंचन में, मेरे निर्देशन और पटकथा लेखन से कहीं ज्यादा महत्वपूर्ण योगदान आप लोगों के संजीदे अभिनय का रहा। क्षितिज और तान्या के अभिनय ने तो बेसेनियो और पोर्शिया के करेक्टर में जान डाल दिया।"

कविता की बात सुनकर क्रू के सारे आर्टिस्ट जहाँ चहक उठे, वहीं क्षितिज
अपना नाम तान्या के साथ सुनकर चिढ़ गया।

"क्या तुम उदास हो कविता?" रेहान से कविता की उदासी छिपी न रह सकी।

"नहीं तो?" कविता ने खुद को सामान्य दिखाने की कोशिश करते हुये कहा- "अवार्ड सेरेमनी का समय नजदीक आ रहा है, इसलिये थोड़ी सी नर्वस हूँ और कुछ नहीं।"

"डोंट वरी कविता। अवार्ड अपना ही है। बाकी यूनिवर्सिटीज के छात्रों के अभिनय और संवाद में काफी विसंगतियाँ थी।" क्षितिज ने कहा।

"आई होप सो। आप लोग कुछ देर आराम कर लिजिए। अवार्ड सेरेमनी के समय हमें साथ रहना है।"

□□□

कविता ने 'मर्चेण्ट ऑफ वेनिस' को जीवंत करने के लिये लगन की परकाष्ठा और परिश्रम की सारी हदों को पार कर दिया था। ऐसी स्थिति में उसकी सफलता की राह में रोड़े बनने का साहस भला कौन कर सकता था? क्रू मेंबर्स की खुशी की ठिकाना नहीं रहा, जब 'मर्चेण्ट ऑफ

वेनिस’ को उनकी आशाओं के अनुरूप प्रथम स्थान प्राप्त हुआ। हफ्ते भर में मंचित हुये ड्रामों के बीच ‘मर्चेण्ट ऑफ वेनिस’ को सर्वश्रेष्ठ करार दिया गया था। ये कविता के रचनात्मक जीवन की पहली उपलब्धि थी, जिसने उसके रग-रग में उत्साह का संचार कर दिया था। अवार्ड सेरेमनी के दौरान उसने धन्यवाद ज्ञापन के तहत क्रू के हर सदस्य का नाम लिया था। सब कुछ कुशलतापूर्वक सम्पन्न हुआ था।

इस समय कविता की आँखों में नींद के कोई लक्षण नहीं थे। वह बेड पर पड़ी हुई सीलिंग को अपलक निहार रही थी। उसके चेहरे पर इस वक्त भी वही उदासी काबिज थी, जो आज हर किसी को उसके चेहरे पर दिन भर नजर आयी थी। अवार्ड सेरेमनी और अन्य औपचारिकताओं को पूरा करते-करते रात के बारह बज गये थे। वह लगभग एक बजे घर पहुँची थी। इसीलिये हमेशा उसके साथ सोने वाला चिपू आज पापा के साथ सोया हुआ था। अर्थात आज की रात वह कमरे में अकेली थी।

उसने वॉलक्लॉक पर नजर डाली। दो बज चुका था। गहरी साँस लेते हुये उसने करवट बदला और लगभग पंद्रह मिनट तक उसी अवस्था में पड़ी रही। नींद फिर भी न आयी तो बिस्तर से उठी, आलमारी तक पहुँची। आलमारी से एक फाइल निकालकर वापस बिस्तर पर आयी, उसके कुछ पन्ने बाहर निकाली और एक-
एक करके उनका निरीक्षण करने लगी।

‘ये मेरे साथ ही क्यों हुआ?’

उसने व्यथित होकर फाइल के पन्नों को बिखेर दिया और आँखें बंद कर ली, किन्तु फिर भी आँसू बंद पलकों की कोरों से निकलकर गालों पर लुढ़क आये।

'मैं जीना चाहती हूँ।' उसके होठों से अस्फुट सा स्वर निकला।

वह देर तक आँखें मूंदे हुये विचारों में ही खोयी रहती, अगर उसने कमरे के उस दरवाजे पर दस्तक नहीं सुनी होती, जो घर के पिछले बरामदे में खुलता था। उसने चौंककर आँखें खोल दी। जाहिर था कि दस्तक देने वाला जो कोई भी था, सीधे रास्ते से न आकर बगीचे में से बरामदे तक चढ़ आया था। आगंतुक का यह कृत्य उसे शरीफ का दर्जा नहीं देता था।

'कौन हो सकता है?'

कविता किसी अंजाने भय से कांप उठी, जबकि दरवाजे पर दस्तक क्षण-प्रतिक्षण तेज होने लगी।

"कौन है?" उसने डरते हुये पूछा।

"मैं हूँ यार। दरवाजा खोलो।"

कविता की जान में जान आई, क्योंकि दरवाजे के उस पार से आई आवाज को वह पहचानती थी।

'इतनी रात को ये क्यों आया है?' खुद से ही पूछते हुये उसने पन्नों को फिर से फाइल में लगाया और उसे अलमारी में रखने के बाद दरवाजा खोला।

दरवाजा खुलते ही बाहर मौजूद शख्स इतनी तेजी से अंदर आया कि कविता घबरा गयी। आगंतुक ठंड से कांप रहा था। अंदर आते ही उसने राहत की साँस लेते हुये

कहा– "थैंक गॉड। तुमने मुझ पर विश्वास करके दरवाजा खोल दिया, वरना मैं तो बाहर ठंड से मर ही जाता और सुबह तुम्हारे बरामदे में मेरी लाश मिलती।"

आगंतुक लम्बे कद का दुबला-पतला शख्स था। उसकी रंगत सांवली थी। यदि उसे ढंग से बाल काढ़ने आता और अपने लुक को लेकर वह थोड़ा भी गंभीर होता, तो मासूमियत से भरा उसका चेहरा निःसंदेह आकर्षक नजर आता।

"क्षितिज तुम...? तुम...तुम यहाँ क्यों आये हो?" कविता ने दरवाजा बंद करने के बाद चेहरे पर असमंजस का भाव लिये हुये उसे घूरा।

"एक मिनट।" क्षितिज ने ओवरकोट की जेब से एक रिस्टवॉच निकालकर उसकी ओर बढ़ा दिया।

"य..ये तो मेरी रिस्टवॉच है, तुम्हें कहाँ मिली?" रिस्टवॉच देखते ही कविता चहक उठी।

"ड्रेसिंग रुम में छोड़ आई थी तुम।"

सफेद झूठ बोला था लड़के ने। सच्चाई तो ये थी कि जब कविता रिस्टवॉच को ड्रेसिंग रुम में छोड़ कर वाशरुम गयी थी तो खुद उसी ने मौका देखकर उस पर हाथ साफ कर दिया था। उसकी नजर में, इतनी रात को कविता के घर आने के लिये रिस्टवॉच पहुँचाना ही सबसे बेहतर बहाना था।

"थैंक यू सो मच।" कविता ने क्षितिज के हाथ से रिस्टवॉच छीन लिया- "मैं भी कितनी लापरवाह होती जा

रही हूँ। वैसे ये रिस्टवॉच तुम कल सुबह भी तो दे सकते थे? इतनी देर रात चोरों की तरह पीछे के रास्ते से आने की क्या जरूरत थी?"

"अगर ये मुझसे भी कहीं गुम हो जाती तो? सामने से दरवाजा पीट कर पूरे परिवार की नींद भला क्यों खराब करता?"

कविता के चेहरे उमड़ती खुशी को देखकर क्षितिज सुखद एहसास से भर उठा था। उसे कविता उस वक्त और अधिक ख़ूबसूरत लगती थी, जब वह खिलखिला कर हंसती थी और उसके महताबी गाल पर बनने वाला भंवर सामने वाले पर बिजली बनकर गिरता था।

"क्या तुम जानना चाहोगे कि मैं इस रिस्टवॉच को क्यों पसंद करती हूँ?" कविता ने रिस्टवाच पर उंगलियाँ फेरते हुये कहा। इस वक्त वह अपनी सारी उदासी भूल गयी थी।

"क्यों?"

"क्योंकि इसे मेरे पिछले जन्मदिन पर चिपू ने मुझे गिफ्ट किया था। अपनी छः महीने की पॉकेटमनी बचाकर।"

"चिपू कौन है?"

"मेरा छोटा और नटखट भाई।"

"क्या मैं तुम्हारा जन्मदिन जान सकता हूँ?" क्षितिज ने उसका जन्मदिन पूछने का मौक़ा लपक लिया।

"थर्टी फर्स्ट अक्टूबर।"

"ओह! यानि कि इसी महीने का आख़िरी दिन।"

"हाँ। लेकिन अब ये मत पूछ बैठना कि मैं किस साल पैदा हुई थी, क्योंकि यदि मैंने ये बता दिया तो तुम मेरी

सही उम्र पता कर लोगे।" कविता मुस्कुराई, किन्तु अगले ही पल उसने चौंक कर क्षितिज की ओर देखा- "तुम गये नहीं अभी तक?"

"म....मतलब?" क्षितिज हकलाया।

"मतलब गया पानी पीने। तुमने रिस्टवॉच तो पहुँचा दी न? अब जाओ। अगर लोगों को ये पता चल गया कि एक लड़की के बेडरूम में रात के दो बजे कोई लड़का आया था, तो लोग कैसी बातें करेंगे; इसका अंदाजा भी है तुम्हें?"

सुनते ही क्षितिज को शॉक लगा। जो कहने के लिये उसने कविता की रिस्टवाच चुरायी थी, उसे कहने का मौका हाथ से फिसलता देख वह बौखला गया। इससे पहले कि कविता उसे दोबारा जाने के लिये कहती, वह बोल पड़ा- "इस सर्द काली रात में मैं पहली बार तुम्हारे घर आया हूँ। और तुम मुझे बिना चाय-कॉफी.....!"

"चाय-कॉफी?" कविता ने आँखें फाड़कर क्षितिज को घूरा – "तुम चाहते हो कि इतनी रात गये मैं तुम्हारे लिये किचन में जाकर चाय या कॉफी बनाऊँ।"

क्षितिज कुछ बोलने के बजाय मूर्खों की तरह उसे घूरता रहा।

"ओह! हाँ! शायद मैं ही मूर्ख हूँ। तुम पहली बार मेरे घर आये हो। ऐसे में चाय पीने का तुम्हारा हक तो बनता ही है। मैं एक काम करती हूँ....।" कविता ने तकिये के नीचे से दस का नोट निकालकर क्षितिज की ओर बढ़ा दिया – "ये लो। कल कैंटिन में चाय पी लेना। प्लीज मुझे गलत मत

समझना, मैं थक गयी हूँ और इस वक्त तुम्हारे लिये चाय नहीं बना सकती।"

क्षितिज मासूमियत के साथ कविता के हाथ में थमे दस के नोट को देखने लगा।

"क्या हुआ? कम है?" क्षितिज के नोट घूरने के अंदाज पर कविता को हँसी आ गयी।

"मुझे तुमसे कुछ बात करनी थी।"

"कर लेना। लेकिन अभी नहीं। कल मिलेगे न?"

"नहीं। मुझे अभी करनी है। बहुत जरुरी है।" क्षितिज ने छोटे बच्चे की तरह जिद्द की।

"पागल हो गये हो तुम? इतनी रात को एक लड़की के बेडरूम में घुसकर

जरूरी बात करना चाहते हो? लोग सुनेंगे तो क्या कहेंगे?"

"ओह सॉरी। बेडरूम सही जगह नहीं है तो कहीं और चलकर बात करते हैं। ये बरामदा तो ठीक रहेगा न?"

"क्षितिज।" कविता थोड़ी सख्त हुई - "मैं मजाक नहीं कर रही हूँ।"

"मजाक तो मैं भी नहीं कर रहा हूँ कविता।" क्षितिज भी गंभीर हुआ- "तुम्हीं ने तो कल मुझसे कहा था कि कोई भी प्रेमकथा प्रेम के इजहार के बिना अधूरी रहती है।"

"हाँ। कहा था।"

"इसीलिये तो इतनी रात को यहाँ आया हूँ। रिस्टवॉच तो बस एक बहाना था।"

"क्या अनाप-शनाप बके जा रहे हो तुम?" कविता, जिसे क्षितिज की 'जरूरी बात' का थोड़ा बहुत मतलब समझ में आने लगा था, हैरान होते हुये बोली।

"ये अनाप-शनाप बातें नहीं हैं कविता। ये मेरी भावनायें हैं, जिनसे मैं आज तुम्हें अवगत कराने आया हूँ।" क्षितिज का स्वर थोड़ा स्वर ऊंचा हुआ।

"धीरे बोलो।"उसका ऊंचा स्वर सुन कविता घबरा गयी- "पापा बगल वाले कमरे में सो रहे है।"

"ठीक है। धीरे ही कहता हूँ। आई.....।"

"जस्ट शटअप। तुम यहाँ से दफा होते हो या फिर मैं शोर मचाऊँ?"

"तो मचा दो न? क्या फर्क पड़ता है? जो बातें अकेले में कहने आया हूँ, वही लोगों के सामने भी कहूँगा।"

कविता, क्षितिज को ऐसे घूरने लगी जैसे साँप, मेढक को निगल जाने की नियत से घूरता है, लेकिन वह कहता चला गया – "डरते तो वे लोग हैं, जिनकी नियत में खोट होता है। मैं तो हम-दोनों के रिश्ते की बात पक्की करने के लिये सीधा मम्मी-डैडी को लेकर तुम्हारे घर आने वाला था, लेकिन कल जब तुम्हारे मुँह से सुना कि कोई भी प्रेम इजहार के बगैर अधूरा होता है, तो मुझे लगा कि अगर मैं अपने दिल की बात बिना तुमसे कहे रिश्ता तय कर लूँगा तो ये लव मैरिज नहीं बल्कि बोरिंग सी अरेन्ज्ड मैरिज लगेगी। जिसमें एक-दूसरे को ठीक से न जानते हुये भी जीवन भर साथ चलने की कसमें खानी पड़ती हैं। इसीलिये जान हथेली पर लेकर यहाँ आया हूँ।"

"कह दिया?"

"हाँ।"

"तो फिर अब जाओ।" कविता ने दरवाजा खोल दिया।

"मुझे तुम्हारा जवाब चाहिये।"

"अजीब नमूने हो? क्या तुम्हें मेरी हरकतों से जवाब नहीं मिल गया? कभी शक्ल देखी है आईने में तुमने?"

"मैं आइना नहीं देखता। टेंशन होती है अपनी शक्ल देखकर। लेकिन इतना जरूर जानता हूँ कि मैं इतना आकर्षक नहीं हूँ कि तुम जैसी ख़ूबसूरत लड़की को केवल सूरत के बल पर रिझा सकूं। मेरी और तुम्हारी रंगत में जमीन आसमान का अन्तर है।"

"फिर भी चले आये अपनी मोहब्बत जताने के लिये?"

"अगर दिल के हाथों मजबूर नहीं होता तो पागल कुत्ते के काटने पर भी तुम्हारे घर नहीं आता। मेरे पास तुम्हें देने के लिये कुछ नहीं है, सिवाय बेपनाह मोहब्बत के। यदि तुम मन की खूबसूरती पर यकीन करती हो तो एक बार मुझमें अपने हमसफ़र को तलाश कर देखो, तुम कभी निराश नहीं होगी।" क्षितिज अपने अल्फाजों में रुमानियत घोलने का पूरा प्रयास कर रहा था, किन्तु कविता पर इसका कोई असर नहीं नजर आ रहा था। उसने आगे कहा- "तुम्हारे हैंडबैग के चक्कर में जब मैं कीचड़ से भरे गड्ढे में गिरा तो कीचड़ तो धुल गया लेकिन उस दिन से तुम्हारी मोहब्बत का जो रंग मुझ पर चढ़ा वह कभी नहीं धुल सकता।"

"तुम जाते हो या नहीं?"

"बिना जवाब लिये नहीं जाऊँगा।"

"तो फिर सुनो।" कविता झल्ला उठी- "तुम्हारे जैसे जिद्दी लोगों से मुझे सख्त नफरत है। आई हेट यू।"

"ठीक है।" क्षितिज ने दृढ़ लहजे में कहा- "कल तुम्हारे बगीचे में एक लाश मिलेगी। क्षितिज सक्सेना की लाश। फिर ढोती रहना अपनी खूबसूरती पर मेरे जैसे एक मासूम इंसान की हत्या का बोझ।"

"तुम क्या करने वाले हो?"

"अब तुम्हारे बरामदे से कूदकर सुसाइड करूँगा।"

इससे पहले कि कविता कुछ कहती, क्षतिज बरामदे में जाकर अंधेरे में गुम हो गया।

'ये बेवक़ूफ़ क्या करने जा रहा है?'

इससे पहले कि उलझनों में फंसी कविता आगे कुछ सोच पाती; बगीचे में से आयी 'धप्प' की आवाज ने उसे चौंका दिया। तात्पर्य ये था कि वह जिद्दी लड़का बगीचे में कूद गया था। कविता के हाथ-पांव काँपे, साँसों की गति उग्र हुई और वह बौखलाई हुई रेलिंग तक आयी। बगीचे में झांकी। मगर सिवाय अंधेरे के कुछ नहीं दिखाई दिया।

"क्षितिज।" आवाज गूँज न उठे, इस डर से उसने धीमें स्वर में पुकारा, किन्तु बदले में कोई आवाज नहीं आयी।

"त...तुम ठीक तो हो?" इस बार उसने बगीचे में धड़ लटकाकर पूर्व की अपेक्षाकृत थोड़े ऊंचे स्वर में कहा- "कहाँ हो तुम?"

"मैं यहाँ हूँ।"

कविता को चार सौ चालीस वोल्ट का झटका लगा, जब किसी ने पीछे से उसके कंधे पर हाथ रखा। वह तुरंत पलटी। पीछे क्षितिज खड़ा था। पहले तो उसे लगा कि यह उसका वहम है, लेकिन क्षितिज के होठों पर मुस्कान देख उसका वहम क्रोध में तब्दील हो गया।

"ये सब क्या था?" उसने खीझते हुये अपने आंसुओं को छुपाने की कोशिश की, हालांकि वह समझ चुकी थी कि क्षितिज की नजर उन पर पड़ चुकी थी।

"तुम्हारे जज्बातों को परखने के लिये की गयी एक छोटी सी शरारत थी। तुम्हारा फूलों का गमला टूट गया, आयम रियली सॉरी फॉर दैट, लेकिन इतना तो समझ में आ गया कि फीलिंग्स तुम में भी हैं। तुम्हारे आंसू उस सच्चाई को बयां कर रहे हैं, जिसे तुम न जाने क्यों होठों पर नहीं लाना चाहती। उस बात को झुठलाने की कोशिश कर रही हो, जिसे तुम्हारा दिल स्वीकार कर चुका है।"

"अपनी बेवकूफाना दलीलें अपने ही पास रखो। मैं केवल इसलिये घबरा गयी थी कि अगर तुम्हें कुछ हो जाता तो इल्जाम सीधा मुझ पर आता। पूरे कस्बे में ये बात जंगल में लगे आग की तरह फ़ैल जाती कि रात के दो बजे दामोदर की बेटी से मिलने कोई लड़का उसके बेडरूम में आया था।"

"झूठ मत बोलो। तुम्हारी आँखों में आंसू बदनामी के डर से नहीं आये। वह मेरी मौत की कल्पना थी, जिसने तुम्हें भावुक कर दिया, जबकि तुम ये आसानी से समझ सकती थी कि दस फीट की ऊंचाई से कूद कर कोई मरा नहीं

करता, ज्यादा से ज्यादा पैरों में गंभीर मोच आ जाती है या फिर हड्डी टूट जाती है।"

कविता ने बगैर कुछ कहे, चेहरा दूसरी ओर घुमा लिया। थोड़ी देर तक

क्षितिज भी खामोश रहा तत्पश्चात उसने कहा- "मैं जानता हूँ कि तुम माँ के साये से महरूम लड़की हो, इसलिये पिता की गृहस्थी और चिपू की परवरिश को तुम अपनी जिम्मेदारी समझती हो। इन जिम्मेदारियों से मुंह मोड़कर मेरे या किसी और के साथ दुनिया बसाना तुम्हारी नजर में स्वार्थ है, लेकिन तुम ये नहीं समझ पा रही हो कि मैं या कोई और, जो भी तुम्हारी जिन्दगी में आयेगा उसे तुम्हें तुम्हारे परिवार से अलग करने का कोई हक़ नहीं होगा। बल्कि तुम्हारा हाथ थाम लेने के बाद तुम्हारी जिम्मेदारियां उसकी भी हो जाएँगी।"

"हर इंसान तुम्हारी जैसी सोच रखने वाला नहीं होता क्षितिज।" कविता भावावेश में कह तो गयी, किन्तु जब उसने क्षितिज पर अपने कथन के प्रभाव की कल्पना की तो लज्जा से सिहर उठी। उसके कथन का स्वाभाविक परिणाम सामने आया। क्षितिज बुरी तरह उत्साहित हो उठा।

"तुम अगर मेरी इस सोच से इत्तेफाक रखती हो तो मेरी ये सोच जीवनपर्यंत नहीं बदलेगी। मैं मरते दम तक तुम्हारा साथ दूंगा। मैं मुसीबत की घड़ी में तुम्हें तुम्हारे परिवार के साथ कभी अकेला नहीं छोडूंगा। तुम बस एक बार मुझे अपनी काँटों भरी राह का हमसफ़र बनाकर तो देखो। मैं

तुम्हें अपनी साँसों में इस कदर बसा लूँगा कि तुम्हारा हर एक दर्द मेरे हिस्से में आ जायेगा और तुम्हारे मुकद्दर पर फ़ैली काली स्याही मेरी नियति बन जायेगी। मैं तुम्हारे लबों की मुस्कराहट बनकर तुम्हारी जिन्दगी से ग़मों के अँधेरे को हमेशा के लिये दूर कर दूंगा और फिर हम समय के सीने पर एक ऐसी दास्तान लिख जायेंगे, जिन्हें सदियाँ भी नहीं मिटा पाएंगी।"

"क्षितिज।" कविता का लहजा दोबारा सख्त हो गया- "मेरे साथ मेरे पिता हैं, इसलिये मैंने अभी तक किसी दूसरे सहारे की जरूरत नहीं महसूस की है।"

क्षितिज थोड़ी देर तक उस जिद्दी लड़की के भावों को परखता रहा, जो ये वहम पाल बैठी थी कि किसी लड़की का दाम्पत्य जीवन उसके और उसके परिवार के बीच दीवार बन जाता है, फिर आगे बोला- "ठीक है! मैं इंतज़ार करूंगा। उस वक्त का इंतज़ार करूंगा, जब तुम्हें किसी के सहारे की जरूरत
महसूस होगी।"

"तुम पागल हो गये हो।"

"मैं पागल हूँ या फिर जो कुछ भी हूँ इसकी वजह सिर्फ तुम हो। तुम मेरी जिन्दगी में आयी एकलौती लड़की हो, जिसे देखकर मेरे अंदर उपासना का भाव जागृत हुआ। मुझे प्यार, पागलपन, दीवानगी और ईश्वर जैसे शब्दों पर यकीन होने लग गया। गलत कामों से डरने लगा मैं। जब कभी तुम्हारे प्रति मेरे मन में कोई गलत ख्याल आया; मुझे अपने आपसे घृणा हुई। मुझमें यह परिवर्तन क्यों आया;

ये मैं नहीं जानता, लेकिन अगर इस परिवर्तन की वजह तुम हो तो मैं तुम्हें कभी खोने नहीं दे सकता। इस प्यार के इकरारनामे को लेकर मुझे कोई खौफ नहीं है, क्योंकि मैं जानता हूँ कि मैंने कोई गुनाह नहीं किया है और न ही भविष्य में ऐसा कुछ करूँगा, जिसे समाज गुनाह की संज्ञा देता हो।"

जज़्बातों के तूफान में बहकर क्षितिज धाराप्रवाह कहता चला गया। जबकि विचित्र से असमंजस से जूझती कविता शांत खड़ी रही। जब क्षितिज खामोश हो गया तो उसने खुद को व्यवस्थित किया और उसकी ओर पलटी।- "तुम एक स्वार्थी इंसान हो क्षितिज। इस दर्जे के स्वार्थी हो कि अपने आवागमन को सहज बनाने के लिये तुमने प्रोफ़ेसर शास्त्री की बाउंड्री वाल में सेंध लगा डाली है। तुमने तो अपने दोस्त रेहान को भी नहीं छोड़ा। तुमने उसके साथ भी बदसलूकी की।"

"ओह।" क्षितिज की आंखों में क्रूर चमक उभरी - "तो इसका मतलब ये है कि उस हरामजादे ने तुम्हें मेरे खिलाफ भड़काया है, लेकिन क्या उसने तुम्हें अपने साथ हुई बदसलूकी का कारण नहीं बताया?"

"माइंड योर लैंग्वेज। रेहान एक अच्छा इंसान है। तुम्हें अभिनय की ए बी सी डी तक नहीं आती थी, बावजूद इसके अगर मैंने तुम्हें ड्रामे के मुख्य किरदार की भूमिका के लिये चुना तो इसकी वजह रेहान ही था। उसने तुम्हें ड्रामे में लेने की मुझसे सिफारिश की थी।"

रेहान के जिक्र से क्षितिज तिलमिला उठा। कविता के मुँह से उसके लिये निकले प्रशंसा भरे लफ्जों ने उसे बेचैन कर दिया। वह ईर्ष्या नाम की दुर्भावना का शिकार हो गया।

"मैं उस जाहिल इंसान से नफरत करता हूँ।" क्षितिज ने मानो हर एक लफ्ज को रेहान के प्रति अपने मन में व्याप्त नफ़रत से सराबोर करते हुये कहा- "उसने तुम्हारे प्रति मेरे सच्चे प्यार को गाली दी थी। उसने मेरे प्यार को महज एक आकर्षण कहा था। उसने कहा था कि मैं तुमसे नहीं बल्कि तुम्हारी खूबसूरती से प्यार करता हूँ। मैं उस शख्स को अपनी जिन्दगी में कैसे बर्दाश्त कर सकता था कविता, जो मेरा करीबी होकर भी मेरे प्यार को ठीक से समझ नहीं पाया?"

"सच जानना चाहते हो?" कविता ने यूँ मुस्कुराते हुये पूछा, मानो उसे क्षितिज
की गलतफहमी पर तरस आ गया हो।

"कैसा सच? कौन सा सच?"

"बस स्टैण्ड पर मुझसे मिलने के बाद पहली बार प्यार के एहसास से रुबरु हुये थे तुम। मुझसे करीबी बढ़ाने के लिये तुम रेहान की सहायता से ड्रामे में शरीक हुये थे और फिर मुझे रिझाने के चक्कर में तुमने उसे भिखारी तक बनने को बाध्य कर दिया था।"

क्षितिज चौंक गया।

"इसका मतलब....इसका मतलब कि वह तुम्हें सब कुछ बता चुका है?"

“जिस दिन तुमने उसे जलील करके किराये के कमरे से बाहर निकाला, उसी शाम वह यहाँ आया था। मौसम खराब होने के कारण उसे एक रात यहाँ ठहरना भी पड़ा था। उसी रात उसने मुझे सबकुछ बताया। और ये भी बताया कि तुम्हें आवेशित करने के पीछे उसका मकसद मात्र ये जानना था, तुम्हारा प्रेम रोग किस चरण तक पहुँच चुका है।” क्षितिज के हैरत की सीमा नहीं रही, जबकि कविता ने आगे कहा- “तुम्हारी प्रतिक्रिया देखने के बाद वह इस नतीजे पर पहुंचा था कि जो लड़का अपने सबसे करीबी दोस्त के मुंह से भी अपनी मोहब्बत के बारे में बुरा नहीं सुन सकता और ऐसा करने पर उसे अपनी जिन्दगी से बेदखल कर सकता है, उसका प्यार साधारण लोगों के प्यार से कुछ तो अलग जरूर होगा।”

“क्या तुम भी उसकी इस सोच से इत्तेफाक रखती हो?” क्षितिज का रोम-रोम पुलकित हो उठा।

“बिल्कुल भी नहीं!” कविता ने दो टूक लहजे में कहा- “मेरी जिन्दगी किसी ड्रामे की कास्टिंग नहीं है, जो तुम रेहान की सिफारिश से इसका हिस्सा बन जाओगे। मैं रेहान के नतीजे से इत्तेफाक रखने की कोई जरूरत नहीं महसूस करती।”

“आखिर क्यों?” क्षितिज ने अधीर लहजे में पूछा- “जब तुम सब कुछ जान चुकी हो तो फिर कौन सी वजह है, जो...?”

“मैं वजह बता चुकी हूँ।”

“नहीं! वह वजह पर्याप्त नहीं है।”

इस बार कविता ने बिना किसी प्रतिक्रिया के गर्दन दूसरी दिशा में घुमा लिया। ऐसा करके वह क्षितिज की निगाहों का सामना करने से बच रही थी, क्योंकि उसकी आँखों में एक बार फिर आंसू भर आये थे।

“बिना असली वजह जाने मैं यहाँ से नहीं जाऊँगा।”

कविता एक बार फिर कुछ नहीं बोली। कमरे में व्याप्त मध्यम रोशनी में क्षितिज, उसकी शारीरिक भाषा से उसके मनोभावों को समझने की असफल चेष्टा कर रहा था।

“जवाब दो कविता।”

“क्षितिज..।” क्षितिज का वाक्य पूरा भी नहीं हुआ था कि कविता लगभग चीखते हुये उसकी ओर पलट गयी, और तब उसने एक जोड़ी ख़ूबसूरत आँखों में भर आये आंसुओं को देखा, जो थोड़े समय के अन्तराल में ही अस्तित्व में आये थे।

“तुम वजह जानना चाहते हो न मेरे इंकार की?... ठीक है....रुको...मैं तुम्हें वजह बताती हूँ।”

कविता आलमारी तक पहुँची और उसी फाइल को निकालकर क्षितिज की ओर बढ़ा दिया, जिसे वह उसके आने से पहले देख रही थी।

“ये क्या है?”

“मेरे मेडिकल टेस्ट की रिपोर्ट। आज दोपहर को आई है।”

“क्या है इसमें?”

“खुद ही देख लो।”

क्षितिज ने फाइल खोला। काफी देर तक अवलोकन के बाद उसके मुँह से हैरत भरा स्वर निकला- "इस रिपोर्ट के अनुसार तो तुम्हें 'ब्रेन ट्यूमर' है।"

"और मैं बस कुछ ही दिनों की मेहमान हूँ।"

क्षितिज ने फाइल को लापरवाही से बिस्तर पर फेंकते हुये कहा- "किस मूर्ख ने कहा कि ब्रेन ट्यूमर के मरीज कुछ ही दिनों के मेहमान होते हैं?" कविता कुछ नहीं बोली तो उसने खुद कहा - "ब्रेन ट्यूमर लाइलाज नहीं है कविता। मैं तुम्हारी ब्रेन सर्जरी के लिये तुम्हें अच्छे से अच्छे सर्जन के पास ले जाऊँगा।"

"मुझे झूठे दिलासे देने की कोशिश मत करो। मेरे साथ तुम्हारा कोई फ्यूचर नहीं है।" क्षितिज ने कुछ कहना चाहा, लेकिन कविता ने उसे कहने का मौक़ा नहीं दिया- "बस क्षितिज! तुम्हारी जिद्द से सच्चाई बदल नहीं सकती। प्लीज गो नाउ। और फिर कभी मुझसे मिलने की कोशिश मत करना।"

कविता ने क्षितिज को बरामदे में धकेलकर दरवाजा अन्दर से बन्द कर लिया और फूट-फूट कर रो पड़ी।

□□□

"रेहान।"

किसी के द्वारा पुकारे जाने पर रेहान पीछे पलटा। कुछ दूरी पर क्षितिज खड़ा था। उसके होठों पर मुस्कान देख कर भी रेहान ने उसे नजरअंदाज करके पलटकर आगे बढ़ जाना चाहा।

"मैं आप से ही से बात कर रहा हूँ डॉक्टर साहब।"

रेहान ठिठक गया किन्तु क्षितिज की ओर मुड़ना जरूरी नहीं समझा।

“कहाँ जा रहे हो?” क्षितिज उसके सामने पहुंचा।

“तुमने मुझे रोका क्यों?” सवाल का जवाब देने के बजाय रेहान ने रुखेपन के साथ कहा।

“चीयर अप यार। क्या तुम्हें ऐसा नहीं लग रहा कि मैं अपने किये पर शर्मिन्दा होकर तुम्हारे पास आया हूँ?”

“हाँ! लग तो रहा है कि एक बार फिर बकरे को जिबह करने से पहले खिलाया-पिलाया जा रहा है।”

“वह मेरी गलती थी रेहान। मैं तुम्हें समझ नहीं पाया।”

“मैं कोई उलझी हुई पहेली नहीं हूँ, जिसे तुम्हारे जैसा होनहार रिसर्च स्कॉलर भी न सुलझा पाए।”

“तुम इतने सीरियस क्यों हो रहे हो यार? मैंने कहा न कि मैं शर्मिन्दा हूँ।” रेहान कुछ नहीं बोला तो क्षितिज ने आगे कहा – “मैं कल रात कविता से मिला था।”

“ओह! यानि कि उसने तुम्हें सबकुछ बता दिया?”

“हाँ।” क्षितिज मुस्कुराया – “इसीलिये तो आया हूँ तुम्हारे पास।”

“क्या चाहते हो मुझसे?”

“जो बदतमीजी मैंने तुम्हारे साथ की थी, उसके लिये सॉरी बोलना चाहता हूँ।”

“ओके! सॉरी एक्सेप्टेड।”

रेहान आगे बढ़ गया।

"सुनो तो।" क्षितिज ने उसकी बांह पकड़कर अपनी ओर खींच लिया - "इतने रुखे कब से हो गये तुम? क्या तुम ये नहीं पूछोगे कि मैंने उसे प्रपोज किया कि नहीं?"

"ठीक है। चलो ये भी बता दो।"

"प्रपोज तो किया यार, लेकिन उसने स्वीकार नहीं किया।"

रेहान कुछ नहीं बोला। उसके अंदाज से ऐसा लग रहा था कि वह जल्द से जल्द क्षितिज से पीछा छुड़ा लेना चाहता था।

"क्या हम कहीं बैठ कर बात कर सकते हैं?"

"मुझे जल्दी है। अगर शाम घिर आई या बारिश शुरु हो गयी तो मुझे सोलन पहुँचने में कठिनाइयों का सामना करना पड़ जायेगा।"

"मैं तुम्हारा ज्यादा समय नहीं लूँगा। दरअसल मुझे कविता के सम्बन्ध में तुमसे जरूरी बात करनी है।"

हालांकि रेहान का बैठने का इरादा नहीं था, किन्तु क्षितिज के जिद्द करने पर वह अनिच्छापूर्वक सड़क के किनारे बने पत्थर की बेंच पर बैठ गया।

"उसने अपनी एक कमी का हवाला देकर मेरा प्रपोजल ठुकरा दिया। उसने कहा कि वह अब बस कुछ ही दिनों की मेहमान है, इसलिये उसके साथ मेरा कोई फ्यूचर नहीं है।"

"ऐसा क्या हो गया?" रेहान चौंका- "अभी कल सुबह तक तो सबकुछ ठीक था फिर अचानक?"

"कल दोपहर को उसके मेडिकल टेस्ट की रिपोर्ट आई है। जिसके अनुसार वह ब्रेन ट्यूमर ये जूझ रही है।"

"ओह।" रेहान ने एक गहरी साँस ली – "अब समझ में आया कि कल वह ड्रामे की फाइनल परफॉरमेंस के दौरान उदास क्यों थी।"

"तुम तो ऐसे लम्बी साँस ले रहे हो जैसे कि यह कोई साधारण घटना है।"

"मेरे साँसों की लम्बाई घटने या बढ़ने से सच्चाई तो नहीं बदल जायेगी न?"

"मुझे माफ़ कर देने के बाद भी तू मुझसे पराये जैसी बातें क्यों कर रहा है? क्या तू नहीं जानता कि कविता मेरे लिये कितनी अहमियत रखती है?"

"तुम्हारी प्रेमिका गंभीर बीमारी से जूझ रही है, इसमें मैं तुम्हारी क्या मदद कर सकता हूँ?" रेहान का लहजा पूर्ववत गंभीर था।

"अजीब है। वाकई बेहद अजीब है।" क्षितिज अब रेहान के रूखे बर्ताव पर चिढ़ गया- "न्यूरोसर्जरी का एक स्टूडेंट पूछ रहा है कि वह ब्रेन ट्यूमर के पेशेंट की क्या हेल्प कर सकता है।"

रेहान एक बार फिर खामोश।

"तू चाहता क्या है यार?" इस बार क्षितिज चीख उठा। लगा ही नहीं कि वह

थोड़ी देर पहले रेहान से अपने किये के लिये माफी मांग रहा था- "तुझसे एक बार मैंने ऊंची आवाज में बात क्या कर ली, इतने भाव खाने लगा? तुझे पुराने टोन में लाने के लिये अब क्या करूँ? तेरी आरती उतारुं या तेरे चरण धो कर पीऊँ?"

"हा...हा...हा...!" रेहान अट्टहास कर उठा। उसने किसी तरह अपनी हंसी रोकी और बड़ी मुश्किल से कहा- "तू जब किसी माशूका की तरह बहुत जल्दी रुठ जाता है तो बेहद क्यूट लगता है। मैं तेरा वही रुप देखना चाहता था।"

"तेरी होने वाली भाभी को ब्रेन ट्यूमर है। इलाज तुझे ही करना है।"

"देखो क्षितिज।" रेहान ने उसे समझाने वाले अंदाज में कहा- "हर किसी के लिये ब्रेन ट्यूमर का इलाज एक जैसा नहीं होता। ट्रीटमेंट के कई तरीके हैं, जैसे सर्जरी, रेडिएशन थेरेपी, रेडियो सर्जरी और कीमोथेरेपी। पेशेंट को किस तरह के इलाज की जरुरत होगी, ये उसके हेल्थ, ट्यूमर के लोकेशन और टाइप पर निर्भर करता है। कॉम्प्लेक्स सिचुएशन में एक्सपर्ट न्यूरोसर्जंस मॉलिक्यूलर डाईग्नोसिस का भी सहारा लेते हैं। इसके तहत वे ट्यूमर के डीएनए की एनालिसिस करते हैं। इस जेनेटिक टेस्ट के बाद उन्हें ये समझने में आसानी हो जाती हैं कि ट्यूमर को किस विधि से ऑपरेट करना सफल रहेगा। क्या तुमने कविता की रिपोर्ट देखी है?"

"देखी है; बट मेडिकल टर्म्स की अधिक जानकारी न होने के कारण ज्यादा कुछ समझ नहीं पाया। रिपोर्ट में इम्प्रेशंस के अंतर्गत लिखे पॉइंट्स में ट्यूमर का जिक्र था।"

"कविता का केस समझने के लिये पहले मुझे उसकी मेडिकल रिपोर्ट देखनी होगी। क्या तुम बता सकते हो कि उसने किस हॉस्पिटल में डायग्नोसिस कराई थी?"

"सिंघानिया हॉस्पिटल एंड रिसर्च सेंटर।"

"ओह रियली? ये तो वही हॉस्पिटल है, जिसके ओनर जाने-माने जेनेटिक साइंटिस्ट डॉक्टर शक्तिस्वरुप सिंघानिया हैं, और जिनके साथ मिलकर तू किसी कांसेप्ट पर काम करना चाहता है।"

"हाँ! मैंने उनके असिस्टेंट के पास अपने रिसर्च थीम की समरी सात अक्टूबर को ही सबमिट भी कर दी है। अब उनकी ओर से रिस्पांस आने का वेट कर रहा हूँ। लेकिन तू इस तरह उछल क्यों रहा है?"

"हॉस्पिटल मैनेजमेंट ने स्टाफ वैकेंसी फिल करने के लिये छः महीने पहले

एक नोटीफिकेशन जारी किया था। मैंने भी जूनियर रेजिडेंट के रूप में प्रैक्टिस के लिये एप्लाई किया था। आज ही अपॉइंटमेंट लैटर मिला है। एमएस कम्पलीट करने के बाद हॉस्पिटल की सर्जरी यूनिट में प्रैक्टिस का मौक़ा मिल सकता है, इसलिये मैं उस हॉस्पिटल को अभी से ज्वाइन करने की सोच रहा हूँ।"

"ओह! कब से ज्वाइन कर रहा हा तू?"

"कल से।"

"कांग्रेट्स।"

"थैंक यू।" रेहान मुस्कुराया- "मुझे अब चलना चाहिये। कल फिर मिलते हैं।"

"कविता का मैटर ज्यादा सीरियस तो नहीं होगा न?"

"डोंट वरी!" रेहान ने उसका कन्धा थपथपाया- "ईश्वर पर भरोसा रखो। अगर कुछ सीरियस हुआ भी तो आई विल हैंडल। कविता की जिन्दगी तुम्हारे लिये महफूज है। कुछ नहीं होगा उसे।"

रेहान का आत्मविश्वास देख क्षितिज के चेहरे की रौनक बढ़ गयी। उसने थोड़े भावुक लहजे में कहा- "तुझे न समझ पाना मेरे जीवन की सबसे बड़ी भूल थी। आय एम रियली सॉरी फॉर दैट।"

"इट्स ओके! लाइफ में दोस्तों से झगड़े जरूरी होते हैं। क्योंकि इन झगड़ों के बाद ही हमें अपने जीवन में उनकी इम्पोर्टेंस का पता चलता है।"

"ओके! ओके! चल अब तू जा, नहीं तो रात हो जायेगी।"

क्षितिज ने इस कदर घबराकर जल्दी से कहा, मानो रेहान को आगे उस टॉपिक पर बोलने से रोकना चाहता हो। वह हर बार इसी तरह टॉपिक चेंज कर देता था, जब रेहान दार्शनिकों जैसी बातें करने लगता था। कभी-कभी उसे रेहान के गंभीर व्यक्तित्व और आदर्श विचारों से इसी तरह चिढ़ होती थी। उसे लगता था कि रेहान समय से पहले ही युवावस्था को अलविदा कह चुका है।

□□□

क्षितिज के कमरे में प्रकाश का कोई स्रोत नहीं था, सिवाय एक नाइट बल्ब के।

'क्षितिज।' अचानक अंधेरे में कोई आवाज गूंजी।

गहरी नींद में होने के कारण वह जरा भी नहीं हिला।

'उठो क्षितिज।' इस बार आवाज पहले की अपेक्षा तेज़ थी।

उसके जिस्म में थोड़ी हलचल हुई।

'क्षितिज।'

कानों में तीसरा संबोधन जाते ही, वह नींद की खुमारी से बाहर आ गया।

"कौन है?" उसने दरवाजे को लक्ष्य करके अलसाये स्वर में पूछा, क्योंकि उसे लगा था कि पुकारने वाला बाहर मौजूद है। प्रत्युत्तर में उसे कुछ नहीं सुनाई दिया। भन्नाते हुये वह बिस्तर से उतरा और बल्ब ऑन किया। जैसे ही उसकी दृष्टि वालक्लॉक पर पड़ी, उसका दिमाग चकरा गया।

रात के बाहर बज रहे थे।

क्षितिज की नींद हवा हो गयी। दरवाजे को लक्ष्य करके उसने फिर से आवाज लगाई- "कौन है?"

परिणाम पूर्ववत रहा।

"कोई बोलता क्यों नहीं भाई?"

इस बार भी कोई प्रतिक्रिया न पाकर वह झल्ला उठा। पैर पटकते हुये उसने दरवाजा खोला।

बाहर कुछ नहीं था।

कॉरिडोर में सन्नाटा पसरा हुआ था। दरवाजा खुलने की आवाज और बाहर आती क्षितिज की परछाईं देखते ही मकान मालिक का कुत्ता जोर-जोर से भौंकने लगा। क्षितिज ने घबराकर बाहर निकलने के लिये बढ़ाया हुआ

कदम वापस खींच लिया। हालांकि कुत्ता बंधा हुआ था, किन्तु क्षितिज उसके भौंकने से भी डरता था। उसने चौखट से ही मुआयना किया। बाहर सचमुच कोई नहीं था।

'रेहान की गैरमौजूदगी का असर है, जो अब नींद में भी वहम होने लगे हैं मुझे।'

दोबारा बिस्तर पर जाने से पहले उसने कमरे का मुआयना किया। सबकुछ सामान्य था। खिड़की और दरवाजे विधिवत बन्द थे। आश्वस्त होने के बाद वह बिस्तर की ओर पलटा ही था कि कमरे में अचानक गूंज उठी हँसी ने उसके रोंगटे खड़े कर दिये।

"कौन है? सामने क्यों नहीं आता?" क्षितिज घबरा कर बुरी तरह चीख पड़ा।

हंसी थम गयी। क्षण भर की खामोशी के बाद किसी अज्ञात उद्गम स्थल से एक गंभीर आवाज आयी- "मेरा कोई आकार नहीं है।"

क्षितिज सहम गया। आवाज स्पष्ट सुनाई पड़ी थी। वहम होने का कोई सवाल ही नहीं पैदा होता था। भय के आगोश में कसमसाते हुये उसने कमरे का कोना-कोना देखा, किन्तु आवाज का स्वामी उसकी दृष्टि में नहीं आया।

"तुम मुझे नहीं देख पाओगे क्षितिज। मैं निराकार हूँ। लोगों की दृष्टि से परे हूँ मैं।"

"क...कौन हो तुम?" क्षितिज ने हवा में नजरें घुमायी। उसे अब यकीन होने लग गया कि वह जो भी था, हवा में घुला हुआ था।

"मैं 'वो' हूँ, जिसके कदमों के निशान इस संसार की इहलीला बन जाते हैं।"

"मैंने पूछा कौन हो तुम?" सर्द आलम के बावजूद क्षितिज का जिस्म पसीने से तर हो गया। उसकी निगाहें कमरे में मौजूद हर उस सुराख, हर उस स्थान पर थिरकने लगी थीं, जहाँ चींटी के भी छिपे होने की संभावना हो सकती थी।

"काल हूँ मैं। जिसे तुम्हारा विज्ञान समय कहता है।"

"स...स...म...य..? क..काल..?" क्षितिज चकरा गया। हलक पहले ही सूख चुका था, अब जुबान ने भी किसी भी किस्म की हरकत करने से इंकार कर दिया।

"हाँ! समय हूँ मैं। सार्वभौम सत्य हूँ मैं। मैं ही हूँ जिसका न आदि है न अंत। मैं ही निराकार हूँ। मैं ही अविनाशी हूँ। मैं तब भी था, जब ब्रह्माण्ड नहीं था; मैं तब भी रहूँगा, जब ब्रह्माण्ड नहीं रहेगा।"

क्या ये उसकी कल्पना थी, जो उसके सपने में आ गयी थी?

क्षितिज उपरोक्त संभावना पर अधिक देर तक नहीं सोच पाया। स्वयं को काल कहने वाले रहस्यमयी प्राणी का स्वर दोबारा गूंजा।

"मैंने सृष्टि का आरम्भ देखा है और अन्त देखने के लिये भी केवल मैं ही शेष रहूँगा। सभ्यताओं को बनते और पतन के गहरे गर्त में विलीन होते देखा है मैंने। किसी अनजान शक्ति को अनेक नामों से पुकारने वाले लोगों के बीच क़त्ल-ए-आम भी देख रहा हूँ मैं।"

“क्या तुम्हीं ईश्वर हो?” क्षितिज किसी अज्ञात प्रेरणा के वशीभूत होकर पूछ बैठा।

“मुझे नहीं मालूम कि तुम लोग किसे ‘ईश्वर’ कहते हो। ‘ईश्वर’ जैसा कोई शब्द मेरे शब्दकोश में नहीं है। मैं सिर्फ ‘मैं’ हूँ, दूसरा कोई नहीं।”

“तुम...तुम यहाँ क्यों आये हो?” क्षितिज किसी अज्ञात भय से काँप गया।

“क्योंकि इस संसार में निर्धारित तुम्हारी अवधि पूरी हो चुकी है।”

“नहीं...!” क्षितिज चीख पड़ा- “ये बकवास है। मैं.....मैं इतनी जल्दी....मैं इतनी जल्दी नहीं मर सकता हूँ।”

“स्वयं काल कह रहा है तुमसे, फिर भी यकीन नहीं हो रहा? क्या तुम नहीं जानते कि काल का दूसरा अर्थ मृत्यु है।”

“क..कौन मारेगा मुझे? मुझे कोई नहीं मार सकता। मुझे कोई गंभीर बीमारी नहीं है। और...और न ही मेरी किसी के साथ कोई दुश्मनी है। ऐसे में कौन है, जो मेरी मौत चाहेगा।”

“मैं!” अदृश्य काल का लहजा पूर्व की अपेक्षा अधिक डरावना हो उठा- “मैं ही हूँ, जो तुम्हारी मौत चाहता है। वास्तव में संसार के प्रत्येक प्राणी की मौत मेरी ही इच्छा पर निर्भर होती है। घटनायें, जिसे तुम लोग किसी व्यक्ति के मौत की वजह कहते हो, वे तो निमित्त मात्र होती हैं। असली कर्ता-धर्ता तो मैं ही हूँ।”

"तो मेरी मौत के लिये तुमने किसे निमित्त चुना है?"

"शक्तिस्वरूप सिंघानिया को।"

"नहीं।" क्षितिज के होठों से सिसकारी छूट गयी- "यह असंभव है। सिंघानिया तो एक रेपुटेड साइंटिस्ट हैं। मेरी मौत से उन्हें क्या हासिल होगा?"

"तुम्हें तुम्हारे सवालों का जवाब भविष्य देगा, जो हमेशा मेरे सीने में कैद होता है।"

"ये सब कुछ अजीब है। मैं...मैं शायद कोई बुरा सपना देख रहा हूँ।"

"स्वप्न तो वह है क्षितिज, जिसे आज तक तुम यथार्थ समझते आये हो। ये समूचा ब्रह्माण्ड स्वप्न है। मेरी रची हुई माया है। मानव-जीवन में केवल वही क्षण यथार्थ होते हैं, जब मैं उनसे वार्तालाप करता हूँ।"

"तो क्या तुम सिंघानिया सर को मेरी हत्या करने पर मजबूर करोगे?"

"मैं इंसान से कुछ भी करवा सकता हूँ क्षितिज।"

"तुम मेरे साथ ऐसा क्यों कर रहे हो? मैं जीना चाहता हूँ। कविता के साथ कुछ सपने संजोये है मैंने, उन्हीं सपनों की खातिर मुझे बख्श दो। मेरी जिन्दगी मुझे सौंप दो। तुम इतने क्रूर नहीं हो सकते।"

"अपने निर्णय मैं भी नहीं बदल सकता हूँ क्षितिज। यदि मैं किसी मानव-जीवन की पटकथा में फेर-बदल करने लगूंगा तो इसका प्रभाव सृष्टि के सञ्चालन पर पड़ने लगेगा। तुम्हारी मौत से कई जिंदगियां प्रभावित होने वाली

हैं। यदि मैंने तुम्हारी मौत को टाल दिया तो उन जिंदगियों में व्यतिक्रम उत्पन्न हो जायेगा।"

क्षितिज खौफजदा नजर आने लगा। उसके माथे पर पसीने की बूंदे छलछला उठीं।

"तुमने मेरे जीवन की पटकथा इतनी निर्दयतापूर्वक क्यों लिखी? तुम..तुमने....मेरे साथ ही ऐसा क्यों किया? क्या तुम नहीं जानते कि मैं जीवन के उस पड़ाव में हूँ, जहाँ हर युवाओं के मन में अपने भविष्य को लेकर रंगीन सपने होते हैं। उनके माँ-बाप के मन में उनके प्रति कुछ अरमान होते हैं। तुम कम उम्र में ही मुझसे मेरा जीवन क्यों छीन लेना चाहते हो?"

"क्योंकि तुम विशेष हो। आश्चर्यजनक और उल्लेखनीय घटनायें विशेष लोगों के साथ ही घटित होती हैं। साधारण लोग तो गुमनामी के अंधेरे में भटकते हुये लंबा जीवन गुजार देते हैं तथापि जीवन-मरण के चक्र से मुक्त नहीं हो पाते हैं। अनगिनत बार जन्म लेना और अनगिनत बार मेरा अर्थात काल का ग्रास बनना ही उनकी नियति होती है।"

"तो क्या मेरी विशेषता ही सिंघानिया सर को मेरी हत्या करने पर मजबूर करेगी?"

"हाँ।"

"तुमने मेरी नियति में ऐसी कौन सी विशेषता अंकित की है?"

"भविष्य के गर्भ में है ये।"

"मेरे पास कितने दिन का समय है?"

“इस माह के अंतिम दिन, रात के दस बजे एक सुनसान रास्ते पर तुम्हारे शरीर को छलनी कर दिया जायेगा।”

“कहीं तुम मुझे ये संकेत तो नहीं देना चाहते हो कि मैं अपनी मौत को टाल सकता हूँ?”

“हा..हा..हा।” अदृश्य काल की अट्टहास गूंजी- “मूर्खों जैसी बातें मत करो क्षितिज। मृत्यु अटल है, इसे कोई नहीं टाल सकता।”

“तो फिर तुम्हारे मुझसे बात करने के पीछे वजह क्या है?”

“दर्पण के सम्मुख आओ।” इस बार काल का लहजा आदेशात्मक था।

क्षितिज विचित्र पहेली में उलझ गया। सब-कुछ किसी फैंटेसी कहानी जैसा लग रहा था, जिसका दूर-दूर तक सच्चाई से कोई वास्ता नहीं होता। बावजूद इसके; स्वयं को ‘काल’ कहने वाले निराकार शख्स के लहजे में आकर्षण था, रहस्य था और कहीं न कहीं ये विश्वास समाहित था कि वह जो कह रहा था, वह सच था।

□□□

सीटी स्कैन की फिल्म रेहान के हाथ में थी और रिपोर्ट टेबल पर पड़ा हुआ था। सामने वाली कुर्सी पर मौजूद कविता उसके मुंह खोलने का इंतज़ार कर रही थी। टेबल पर कॉफ़ी के दो मग थे, जिन्हें उन दोनों में से किसी ने भी होठों से नहीं लगाया था।

“एकॉस्टिक न्युरोमा!” रेहान ने फिल्म का बारीक मुआयना करते हुये कहा- “अगर मुझे इस इमेजिंग को

सही मानते हुये कोई डिसिजन लेना हो तो मैं यही कहूँगा कि तुम्हारे नर्व सेल को सुरक्षा खोल प्रदान करने वाली कोशिकाओं में ट्यूमर के पनपने की संभावना नजर आ रही है। यह नॉन-कैंसरस ट्यूमर है, जो बाइसवें क्रोमोजोम के जीन में खराबी के कारण जन्म लेता है। ये जीन स्च्वान सेल्स के एब्नार्मल ग्रोथ को दबाने वाले प्रोटीन की सिंथेसिस करता है, किन्तु मालफंक्शनिंग के कारण जब यह उचित प्रोटीन का निर्माण नहीं कर पाता, तो स्च्वान सेल्स धीरे-धीरे बढ़ कर ट्यूमर का रुप ले लेते हैं। मेडिकल टर्मिनोलॉजी में इस बीमारी को एकॉस्टिक न्युरोमा के नाम से जाना जाता है। हालांकि ये मिनिमम रिस्क फैक्टर के साथ ऑपरेटेबल है, लेकिन कुछ रेयर केसेज में जब ये ब्रेनस्टेम को भी प्रभावित करने लगता है तो जानलेवा हो जाता है।"

"यदि इमेजिंग को सही माने तो!" कविता के नेत्र सिकुड़कर गोल हो गये- "यानि की तुम्हें इस इमेजिंग के सही होने को लेकर कोई संदेह है?"

"ऑफ़कोर्स! मुझे संदेह ही नहीं पूरा विश्वास भी है कि तुम्हें सौंपी गयी ये रिपोर्ट, तुम्हारी नहीं है।"

"तुम्हारे इस विश्वास की वजह?"

"पहले मेरे कुछ सवालों के जवाब दो।"

"पूछो।"

"तुम किस समस्या के तहत 'सिंघानिया हॉस्पिटल एंड रिसर्च सेंटर' गयी थी? और तुम पहली दफा वहां ही क्यों गयी, किसी दूसरे हॉस्पिटल या क्लिनिक क्यों नहीं?"

"इस सवाल का मेडिकल रिपोर्ट से क्या ताल्लुक?"

"पहले जवाब दो कविता।"

"दरअसल उस हॉस्पिटल के फाउंडर सिंघानिया अंकल, मेरे पापा के अच्छे दोस्त हैं। वे जब भी इंडिया आते हैं तो हमारे साथ एज अ फॅमिली मेम्बर कुछ दिन जरूर गुजारते हैं। उन्हें जब मेरी प्रॉब्लम के बारे में पता चला....।"

"ओह!" कविता की बात पूरी होने से पहले ही रेहान कह उठा- "मैं समझ गया।"

"क्या समझ गये तुम?"

"क्या सिंघानिया सर की पहुँच तुम्हारे खाने-पीने की चीजों तक है?" रेहान ने कविता के सवाल को नजरअंदाज करते हुये अगला सवाल किया।

"दरअसल वे बैचलर हैं, इसलिये उन्हें कुकिंग की आदत है। कभी-कभी जब वे रात में हमारे यहाँ रुकते हैं तो डिनर वही बनाते हैं।"

"अंतिम बार तुमने कितने दिन पहले उनके हाथ का बना खाना खाया था?"

"एक हफ्ते से उनका रुकना हमारे यहाँ ही हो रहा है, इसलिये एक हफ्ते से डिनर वही बना रहे हैं।"

रेहान ने एक गहरी सांस ली। उसने इत्मीनान से कविता के सीटी स्कैन की फिल्म को लिफाफे में रखा और फिर अपने साथ लाये हुये दूसरे बड़े लिफ़ाफ़े को उसकी ओर बढ़ाते हुये कहा- "इसमें मौजूद दूसरे सीटी स्कैन की फिल्म बाहर निकलो।"

कविता ने रेहान के कहे का अनुसरण किया।

"ये...ये फिल्म तो हू-ब-हू मेरी फिल्म की तरह है।"

"अब लिफाफे पर लिखी पेशेंट की डिटेल पढ़ो।"

कविता ने पढ़ा।

"ये तो किसी दूसरे पेशेंट की रिपोर्ट है।"

"जो डाईग्नोसिस रिपोर्ट तुम्हारी है, वही इस पेशेंट की भी है। क्या हॉस्पिटल के किसी प्रभावी कर्मचारी द्वारा किसी पेशेंट के डाईग्नोसिस रिपोर्ट की दो कॉपी तैयार कराना पॉसिबल नहीं है?"

"तो क्या तुम ये कहना चाहते हो कि हॉस्पिटल की ओर से डाईग्नोसिस की जो रिपोर्ट मुझे सौंपी गयी है, वह मेरी न होकर इस पेशेंट की है?"

"एग्जैक्टली! मैं यही समझाना चाहता हूँ तुम्हें। तुम्हारे सीटी स्कैन की जेन्युइन रिपोर्ट जो तुम तक पहुँची ही नहीं; मैंने आज ही देखी है और वह रिपोर्ट बिल्कुल नार्मल है।"

"तो फिर मेरे हेडेक और मुझ तक फर्जी रिपोर्ट पहुंचाए जाने की वजह?"

"शायद किसी नाइट्रेट या दूसरे मेडिसिन की साइड इफ़ेक्ट की वजह से तुम्हें हेडेक हुआ। हेडेक जैसी साइड इफ़ेक्ट वाली दवा तुम्हारे शरीर में कैसे पहुँची? वह कौन है, जिसने तुम्हें फर्जी रिपोर्ट थमायी? इन दो सवालों के जवाब तुम्हें ही तलाशने होंगे।"

कविता कुछ नहीं बोली। उसके चेहरे पर तनाव व्याप्त हो गया था। वह निचले होंठ को दांतों तले दबाकर कुछ सोचने लगी थी। दोनों में से किसी ने अभी तक कॉफ़ी नहीं सिप की थी। थोड़ी देर बाद कविता ने रेहान पर दृष्टिपात

किया- "तुम्हें ये डाउट कैसे हुआ कि जो रिपोर्ट मुझे सौंपी गयी है, वह मेरी नहीं है?"

"हालांकि रेगुलर हेडेक ब्रेन ट्यूमर के प्राइमरी सिम्प्टम्स में से एक जरूर है लेकिन बिना प्रॉपर डाईग्नोसिस के इसे ब्रेन ट्यूमर का कन्फर्मेशन मान लेना अव्वल दर्जे की बेवकूफी है। तुम्हारे रिपोर्ट में जो ट्यूमर दर्ज है, उसके सिम्प्टम्स अलग होते हैं। इसमें पेशेंट को हियरिंग लॉस, टीनाईटस[7] और चलने में असंतुलन की शिकायत होती है। जब मुझे पता चला कि केवल हेडेक जैसे मामूली सिम्प्टम की वजह, ब्रेन ट्यूमर रिपोर्ट की गयी है, तब मुझे डाउट हुआ। संयोग से जिस हॉस्पिटल में तुमने इमेजिंग कराई, मैंने उसी हॉस्पिटल में प्रैक्टिस शुरू की है। यही वजह रही कि मैंने तुमसे मिलने से पहले ही हॉस्पिटल के रिकॉर्ड से तुम्हारी जेन्युइन रिपोर्ट बरामद कर ली और समय रहते ही तुम्हारे साथ होने जा रहे एक बड़े फ्रॉड का पता लगा लिया।"

"कौन कर सकता है मेरे साथ ऐसा फ्रॉड?" कविता ने मानो खुद से पूछा।

"यही सवाल मैं तुमसे पूछ रहा हूँ। तुम्हारे मन में ये बात बैठाकर कि तुम ब्रेन ट्यूमर की पेशेंट हो; किसी को क्या फायदा हो सकता है?" रेहान थोड़ा ठहरा। आगे कुछ बोलने से पहले उसने कविता के चेहरे के भावों को परखा, मानो उसे उसकी नाराजगी का भय हो; फिर आगे बोला- "अगर मैं अपने विचार रखूँ तो मेरे शक की सुई सिंघानिया

सर पर ठहरती है। इस पूरे प्रपंच से उन्हें क्या फायदा हो सकता है? इसका पता तुम ही लगा सकती हो।"

कविता ने खामोश रह कर प्रदर्शित किया कि जिस दिशा में रेहान सोच रहा था, वह खुद भी उसी दिशा में सोच रही थी।

थोड़ी देर बाद वह प्रस्थान के ध्येय से खड़ी होती हुई बोली – "थैंक यू रेहान। मैं इस बारे में पापा से बात करूंगी।"

"लेकिन कॉफी.....।"

"फिर कभी। मुझे एक जरूरी काम याद आ गया है।"

कहने के बाद कविता ने अपना पॉलिबैग उठाया और कैंटीन के दरवाजे की ओर बढ़ गयी।

□□□

"डोंट बी नर्वस।" दामोदर के सम्मुख बैठे सिंघानिया ने सहानुभूति भरे स्वर में कहा- "तुम्हें कविता के इलाज के खर्च की चिंता करने की कोई जरूरत नहीं है। आई विल अफोर्ड इट।"

सिंघानिया पिछले दस मिनट से दामोदर को सांत्वना देने की कोशिश कर रहा था, लेकिन उनके चेहरे पर छाये अवसाद के काले बादल छंटने का नाम नहीं ले रहे थे। सिंघानिया ने चाय का कप खाली करके ट्रे में रख दिया और दामोदर के चेहरे पर दृष्टि जमाए हुये ही आगे कहा – "हमारे देश में ब्रेन ट्यूमर के इलाज के नाम पर अभी तक कोई विश्वसनीय तकनीक नहीं है। अगर है भी, तो हम

ब्रेन ट्यूमर जैसी गंभीर समस्या के निदान के लिये यहाँ के डॉक्टर्स पर भरोसा नहीं कर सकते।"

"क्या तुम्हारे हॉस्पिटल में भी ब्रेन सर्जरी की फैसिलिटी नहीं है?"

दामोदर के अचानक पूछे गये सवाल पर सिंघानिया हड़बड़ा गया, फिर तुरंत संभल कर बोला – "दरअसल मेरे हॉस्पिटल की सर्जरी यूनिट के वेल फंक्शन्ड होने में कम से कम दो महीने का समय है। स्किल्ड सर्जन्स की वैकेंसी फील करने और इक्वीपमेंट्स के सेट अप में दो महीने तो लग ही जायेंगे।" सिंघानिया थोड़ा ठहर कर दामोदर के भावों को परखा फिर आगे बोला- "कविता के इलाज के लिये अमेरिका से बेहतर जगह कोई और नहीं है। वहां उसका इलाज उच्च तकनीकी से लैस सुविधाओं द्वारा होगा और वह थोड़े ही दिनों में......।"

"मैं कहीं नहीं जाऊंगी।"

ड्राइंग हाल में कविता की आवाज गूंजते ही सिंघानिया और दामोदर की बातों का सिलसिला थम गया। सिंघानिया ने दरवाजे की ओर गर्दन घुमायी। वहां खड़ी कविता का मुखमंडल क्रोधातिरेक के कारण रक्तिम पड़ चुका था। उसके हाथ में पॉलिबैग देख सिंघानिया समझ गया कि वह मेडिकल रिपोर्ट्स के साथ बाहर गयी थी। इससे पहले कि वह या दामोदर कुछ कहते, कविता गुस्से में पैर पटकती हुई अंदर चली गयी।

"तुम ठहरो! मैं देखता हूं।"

सिंघानिया उठा और कविता के पीछे-पीछे उसके कमरे तक चला गया। दरवाजे पर पहुँचकर वह ठिठका; नॉक किया। कविता पलटी तो जरूर किन्तु उस पर नजर पड़ते ही क्रोध में बिफरकर चेहरा दूसरी ओर घुमा लिया।

"अच्छा हुआ जो आप यहीं चले आये, वरना पापा के सामने आपको जलील होना पड़ता।"

"बात क्या है?" आशंकित लहजे में सवाल करते हुये सिंघानिया कमरे में दाखिल हुआ- "तुम इतना बल क्यों खा रही हो?"

"वजह आप जानते हैं।"

कविता ने फाइल को सिंघानिया की ओर उछाल दिया। पन्ने हवा में उड़ते हुये उसके चारों ओर बिखर गये।

"ये..ये क्या है?"

"एक फर्जी मेडिकल रिपोर्ट।" कविता के होठों से किसी शेरनी सी गुर्राहट निकली।

सिंघानिया पर मानो वज्रपात हुआ। उसने कई क्षणों की स्तब्धता के बाद मुंह खोला- "किसने कहा कि ये रिपोर्ट फर्जी है?"

कविता ने जवाब नहीं दिया।

"जिंदगी के साथ खिलवाड़ मत करो कविता। क्या तुम उस हेडेक को भूल गयी, जो तुम्हें रातों में सोने नहीं देता था?"

"नहीं! उसे तो मैं कभी नहीं भूल सकती। आखिरकार वह सरदर्द भी तो आप के ही षडयंत्र का हिस्सा था।"

"किस षडयंत्र की बात कर रही हो तुम?"

"एक स्त्री किसी मर्द की आँखों में नजर आने वाले वहशी चमक को अच्छी तरह पहचानती है। मुझे अमेरिका ले जाने के लिये आपके पास इससे परफेक्ट प्लानिंग हो ही नहीं सकती थी।"

"कैसी वहशी चमक? कैसी परफेक्ट प्लानिंग? साफ़-साफ कहो।" सिंघानिया ने अनभिज्ञ होने का सफल अभिनय किया।

"यही कि मेरी डाईग्नोसिस की गलत रिपोर्ट दिखाकर मेरे भावुक पिता को इस बात के लिये मजबूर कर देना कि वे मुझे आपके साथ अमेरिका भेजें।"

अब सिंघानिया की भावभंगिमाओं में थोड़ी तब्दीली हुई। वह कविता के चेहरे को इस कदर घूरने लगा, मानो उसकी आँखों को पढ़कर, उसके मन में क्या
चल रहा है; ये जानना चाहता हो।

"आप मेरे खाने की चीजों में कोई ऐसी दवा मिलाते रहे, जिसके दुष्प्रभाव से मैं कई रातों तक सो नहीं पायी। हेडेक जैसे मामूली से साइड इफ़ेक्ट की डाईग्नोसिस के लिये आपने अपने ही हॉस्पिटल को रिकमेंड किया। रिपोर्ट नॉर्मल आने के बाद भी आपने अपने नापाक मंसूबे को अंजाम देने के लिये मुझे किसी ऐसे पेशेंट की रिपोर्ट सौंपी, जिसे एकॉस्टिक न्युरोमा जैसी गंभीर बीमारी थी।"

"तुम कहानियाँ अच्छी गढ़ लेती हो।" सिंघानिया कुटिल अंदाज में मुस्कुराया- "लेकिन क्या तुमने ये नहीं सोचा कि इससे मुझे फायदा क्या होगा?"

“ब्रेन ट्यूमर जैसी गंभीर बीमारी का हवाला देकर आप पापा को इस बात के लिये कन्विंस करना चाहते हैं कि वे मुझे आपके साथ अमेरिका भेजें, ताकि वहां आप मुझे आसानी से अपनी हवस का शिकार बना सकें।”

कहने के बाद कविता ने घृणा से मुँह फेर लिया।

सिंघानिया समझ गया कि उसका षड़यंत्र समय से पहले ही शिकार पर जाहिर हो चुका है। वह धीमें-धीमें चलते हुये कविता के निकट पहुंचा।

“देखो कविता...!” उसने कविता का कन्धा पकड़कर उसे अपनी ओर घुमाना चाहा किन्तु कविता ने उसका हाथ झटक दिया।

“मुझे अब आपकी परछाईं से भी नफ़रत हो चुकी है। प्लीज आप हमारी छोटी और खुशहाल जिन्दगी से दूर चले जाईये।”

“ऐसे कैसे दूर चला जाऊं मैं....?” सिंघानिया ने इस कदर कहा, मानो उसे अपना कीमती सामान खो जाने का भय हो- “ऐसे कैसे? क्या तुम अपने किसी ख़ूबसूरत सपने को टूटते हुये देख सकती हो?...नहीं न? फिर तुम मुझसे ये उम्मीद कैसे कर सकती हो कि मैं तुम्हें भूल जाऊं? क्या मैं उन रातों को भूल जाऊं जो मैंने तुम्हारे साथ संसर्ग की कल्पना में बिस्तर पर करवटें बदल-बदल कर गुजारी हैं?” सिंघानिया की सांसें तेज हो गयीं। आँखों में वासना के सुर्ख डोरे तैरने लगे। वह कविता के इतने करीब आ गया कि उसके साँसों की गर्मी कविता अपने चेहरे पर महसूस करने लगी- “मैं....मैं तो तुम्हें तब से चाहता हूँ....।”

चटाक।

इससे पहले कि सिंघानिया अपना वाक्य पूरा कर पाता, कविता के संयम का बांध टूट गया। अगले ही पल उसके हैरतअंगेज कृत्य ने सिंघानिया से उसके होश छिन लिये। उसके हवा में लहराये पंजे की छाप कब सिंघानिया के गाल पर पड़ी, ये खुद कविता भी नहीं समझ पायी। सिंघानिया गाल सहलाते हुये कविता के उस चेहरे को घूरता रह गया, जहाँ क्रोध की ज्वाला भयानक लपटें बिखेर रही थी।

थप्पड़ खाने के बाद भी सिंघानिया बेशर्मी की सारी हदें पार करता गया।

"खूब। बहुत खूब।" वह बदहवास सा चीखा।

"मैं पीछे का दरवाजा खोल दे रही हूँ। चुपचाप यहाँ से निकल जाइए।"

"नहीं...नहीं...नहीं।" सिंघानिया के लहजे में मानो जुनून घुल गया- "अब मैं कहीं नहीं जाऊँगा।"

चिंघाड़ते हुये वह आमरण अनशन की मुद्रा में फर्श पर धुनी रमाकर बैठ गया। उसकी हरकत पर कविता को उसके मानसिक संतुलन पर संदेह हो गया।

"त...तू....ख...खुद को सम...झती क्या है?" क्रोध की अधिकता के कारण सिंघानिया के होठों से लफ्ज भी ठीक से नहीं निकले- "तेरे लिये। सिर्फ तेरे लिये दौलत और शोहरत की बुलन्दियों पर बैठा हुआ होने के बावजूद भी मैंने शादी नहीं की। तेरे दरिद्र बाप से रिश्ता रखा तो सिर्फ तेरे लिये। और आज, जब मैंने अपनी भावनायें जाहिर की

तो तूने मुझ पर ही हाथ उठा दिया?” सिंघानिया के मुँह से झाग निकलने लगा- “कमी क्या है मुझमें? तुझे वो हर खुशी दे सकता हूँ, जिसकी कल्पना तेरे उम्र की लड़कियाँ करती हैं।”

कविता को सिंघानिया की शक्ल से बेइंतहा नफरत हो गयी।

“वासना की आग में जलकर आपकी विद्वता भस्म हो चुकी है। पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव आपके नैतिक मूल्यों पर इस कदर हावी हो गया है कि आप मेरे साथ वह रिश्ता जोड़ना चाहते हैं, जिसके लिये हमारा समाज किसी भी कीमत पर अनुमति नहीं देता।”

सिंघानिया तेजी से फर्श से उठा और एक बार फिर कविता के बेहद करीब आ गया।

“इस पिछड़े हुये समाज में रहना किसे है? हम यहाँ नहीं रहेंगे। अमेरिका में मेरा सुनहरा भविष्य है। मेरे उस सुनहरे भविष्य की ख़ूबसूरत हमसफर बनोगी तुम।”

“आपकी मानसिकता इस हद तक दूषित हो चुकी है कि आप ये समझ ही नहीं सकते कि दौलत के अलावा और कौन सी चीजें हैं, जो एक लड़की के जीवन में अहमियत रखती हैं।”

“मैं सुन रहा हूँ। तुम बोलो। तुम बताओ मुझे कि तुम्हें और क्या चाहिये? ऐसी क्या भेंट रख दूं मैं तुम्हारे कदमों में कि तुम खुद को मेरी बाहों में सौंप दो।”

अपने स्वाभिमान पर सिंघानिया की लगातार चोट को कविता बर्दाश्त नहीं कर सकी। उसने उसे तेज धक्का दिया

और वह किसी शराबी की भांति लड़खड़ाते हुये दूर चला गया।

"आप चले जाइए वरना..।"

"वरना क्या?"

"वरना मैं पापा को बुलाऊँगी।"

"हा....हा....हा.....।" सिंघानिया ने राक्षसों की तरह अट्टहास किया– "बुलाओ। जरूर बुलाओ। मेरे भोले-भाले दोस्त को भी तो पता लगना चाहिये कि उसकी बेटी उसके पीठ पीछे क्या गुल खिला रही है।"

कविता चौंकी।

"चौंक क्यों गयी 'मिस कविता'?" धूर्तता भरी मुस्कान थिरक उठी सिंघानिया के होठों पर- "बगीचे में टूटा हुआ गमला और वहां से बाहर जाते कीचड़ में सने पैरों के निशान तो अभी भी वहीं हैं न?"

कविता को काटो तो खून नहीं। क्षितिज की एक बेवकूफी उसके खिलाफ सिंघानिया का हथियार बनने जा रही थी; इसकी कल्पना मात्र से वह सिहर उठी। सिंघानिया उसकी मनोदशा भांप गया। उसे कुछ बोलने का मौका दिये बगैर उसने आगे कहा – "रात के दो बजे क्षितिज ही तुमसे मिलने आया था न?"

कविता खामोश।

"बंद बेडरूम में अपने सरफिरे आशिक के साथ बातें करते वक्त तुम ये क्यों भूल गयी थी मिस कविता कि उस रात मैं तुम्हारे बेडरूम के बगल वाले कमरे में ही था।" अचानक सिंघानिया की आँखों में लहू उतर आया। उसने

चेतावनी भरे लहजे में एक-एक हर्फ़ को चबाते हुये कहा- "क्षितिज नाम का वह छोकरा तुम पर आशिक होकर तुम्हारे ड्रामे में आया, मुझे कोई एतराज नहीं हुआ। लेकिन अगर उसने ड्रामे को जरिया बनाकर तुम्हारी जिन्दगी में दाखिल होने की कोशिश की तो कहीं का नहीं छोड़ूंगा उसे। जवाब दो, वह तुमसे अपने प्रेम का इजहार करने आया था न?"

"मैं आपके सवाल का जवाब देना जरूरी नहीं समझती।"

"मैं जानता हूँ कि क्षितिज ही वह लड़का है, जिसकी मोहब्बत के रेशमी फंदे में उलझकर तुम मुझे दरकिनार कर रही हो। तुम उस सनकी लड़के पर भरोसा कर रही हो, जो रिसर्च के नाम पर सिर्फ अनाप-शनाप कल्पनायें करता है? क्या वह अनाड़ी तुम्हें जीवन की सारी खुशियाँ दे पाएगा, जो प्रोफेसर शास्त्री के साथ कोई भविष्य न पाकर अपने कांसेप्ट के साथ मेरे पास आया था?"

"तुममें और क्षितिज में जमीन-आसमान का अन्तर है।"

कविता की नफरत उस हद को पार कर गयी, जिसमें रहकर वह सिंघानिया को 'आप' कह कर सम्बोधित कर रही थी।

"बेशक अंतर है। वह जमीन है और मैं आसमान हूँ। मेरा 'प्रेम निवेदन' स्वीकार करके आसमान में उड़ने वाली परी बन जाओ।।"

"अगर नहीं किया तो?"

"तो तुम्हारे बगीचे में मौजूद कीचड़ में सने पैरों के निशान और टूटा हुआ गमला..।" आगे का वाक्य सिंघानिया ने जानबूझकर अधूरा छोड़कर जहरबुझे लहजे में कहा – "आगे तुम खुद समझदार हो।"

कविता कुछ नहीं बोली।

"मैं जानता हूँ कि एक लड़की के लिये अधिक उम्र के व्यक्ति से शादी करने का फैसला लेना कठिन काम होता है, इसलिये तुम्हें कल शाम तक का वक्त देता हूँ। सोचकर बताना।"

"मेरा फैसला कल भी वही होगा जो आज है।"

जवाब सुनकर बाहर जाने लिये पलटा सिंघानिया ठहर गया।

"अगर ऐसा हुआ तो क्षितिज और अपने परिवार की तबाही की जिम्मेदार तुम खुद होगी।"

उसने बगैर कविता की ओर मुड़े हुये कहा, और बाहर निकल गया।

□□□

सिंघानिया अपने केबिन में था। उसके हाथ में क्षितिज के रिसर्च सम्बन्धी दस्तावेजों का आखिरी पेज था। अन्य डाक्यूमेंट्स सामने मेज पर बिखरे हुये थे।

"जीनियस है ये लड़का।" सिंघानिया मंत्रमुग्ध सा कह उठा- "और मेरे लिये उतना ही खतरनाक भी।"

उसने व्यग्र भाव से पहलू बदला। और मेज पर पड़े कागजों को इस कदर लापरवाही से उठाया, मानो वे रिसर्च डाक्यूमेंट्स न होकर रद्दी के ढेर हों।

"चौबीस साल का एक लड़का जीन क्लोनिंग को आधार बनाकर पर मल्टीपल ब्रेन की कल्पना कर बैठा और मैं जेनेटिक्स में महारत हासिल करने के बाद भी इस दिशा में कुछ नहीं सोच पाया? हाउ कैन इट पॉसिबल?" सिंघानिया की छोटी-छोटी आँखों में लालच भर गया- "अगर यह मात्र एक संयोग है तो ये संयोग मुझे मालामाल कर सकता है। मकबूलियत की बुलंदी पर पहुंचा सकता है।"

चेहरे पर वहशी भाव लिये हुये उसने उन दस्तावेजों पर दृष्टिपात किया, जो सामान्य व्यक्तियों के लिये मात्र कागजों का पुलिंदा थे। वे पेपर्स अब सिंघानिया के लिये कारूं का खजाना बन चुके थे।

"तुम दो घातक गलतियाँ कर बैठे हो क्षितिज।" उसने एक-एक हर्फ़ चबाते हुये डरावने लहजे में कहा- "पहली गलती के रूप में तुमने कविता से मोहब्बत की और दूसरी गलती के रूप में तुमने दिमाग का जरूरत से अधिक प्रयोग करके मल्टीपल ब्रेन थ्योरी जैसी एक ऐसी परिकल्पना को जन्म दिया, जो अगर सिद्धांत में तब्दील हो गयी तो यह विज्ञान के क्षेत्र में मानव-जाति की अविश्वसनीय छलांग होगी।"

सिंघानिया का गौरवर्ण चेहरा रक्तिम हो उठा। ऐसा लगा मानो उसके जिस्म के हर एक कोने का लहू उसके चेहरे पर ही सिमट आया हो। कुछ देर तक शून्य को घूरने के बाद उसने कॉल बेल बजाया।

"सेण्ट जोसेफ यूनिवर्सिटी का एड्रेस जानते हो?" आने वाले शख्स से उसने कड़े स्वर में पूछा।

"यस सर।"

"वहां के फिजिक्स डिपार्टमेंण्ट में क्षितिज सक्सेना नाम का एक रिसर्च स्कॉलर है। उसे मैसेज पहुंचा दो कि हम उससे मिलना चाहते हैं।"

"ओ. के. सर।"

सहमति प्रदान करने के बाद नौकर केबिन से बाहर चला गया।

"यू आर फिनिश्ड मिस्टर क्षितिज सक्सेना! यू आर टोटली फिनिश्ड।"

आखिरी हर्फों को बोलते समय सिंघानिया का चेहरा बेहद डरावना हो उठा।

□□□

"मेरे साथ काम करने का तुम्हारा फैसला, तुम्हारी जिन्दगी का बेहतरीन फैसला साबित होने वाला है मिस्टर क्षितिज सक्सेना।"

क्षितिज की आंखों पर काली पट्टी बंधी हुई थी, अन्यथा वह देख सकता कि इस समय सिंघानिया के होठों पर विषाक्त मुस्कान थी। चेहरे पर वैसे ही खौफनाक भाव थे, जैसे बकरा हलाल करने जा रहे कसाई के चेहरे पर होते हैं।

"मैं तुम्हारी नजर में एक ऐसा शाहकार पेश करने जा रहा हूं, जो एक फिजिसिस्ट के लिये आठवें अजूबे से कम नहीं है।"

क्षितिज कुछ नहीं बोला। उसने अभी-तक सिंघानिया की बातों पर केवल खामोश प्रतिक्रिया व्यक्त की थी। आने वाले क्षणों को लेकर वह किसी भी किस्म के रोमांच का प्रदर्शन नहीं कर रहा था। शायद उसे पता था कि अगले पल क्या होने वाला है। यहां तक आने के दौरान उसके कानों में सिंघानिया की बातों के अलावा कुछ इलेक्ट्रॉनिक दरवाजों के खुलने और बन्द होने की आवाजें पड़ी थीं। यदि वह कुछ देख पाने में सक्षम होता तो उसे नजर आता कि वह इस वक्त उच्च स्तर की डिजिटल सिक्योरिटी से लैस एक ऐसी अण्डरग्राउण्ड लैबोरेटरी में खड़ा था, जिसमें प्रवेश करने के लिये सिंघानिया कई बार रेटिना स्कैनर से होकर गुजरा था।

“मैं तुम्हारी आंखों से पट्टी हटाने जा रहा हूं। क्या तुम तैयार हो?”

क्षितिज इस बार भी खामोश रहा।

“क्या तुम तैयार हो क्षितिज?” सिंघानिया ने सवाल दोहराया।

“ऑफकोर्स मिस्टर सिंघानिया।” अंततः क्षितिज को कहना पड़ा- “मैं आपके टेलीपोर्टिंग सिस्टम को देखने के लिये बेचैन हूं।”

क्षितिज के कथन पर सिंघानिया यूं चौंका, मानो उसने किसी गूंगे को बोलते सुन लिया हो।

“मेरी आंखों से ब्लैक स्ट्रीप हटाइए सर।” इस बार क्षितिज के लहजे में हंसी का पुट था। बन्द आंखों के बावजूद उसे सिंघानिया के चौंकने का भान हो गया था।

सिंघानिया ने अधरों पर जुबान फेरी और ब्लैक स्ट्रिप हटाने के बाद आँखों में हैरत लिये हुये उस विचित्र लड़के को देखने लगा।

क्षितिज के सामने कांच का सात फीट ऊंचा आलमारीनुमा चैम्बर था, जिसके
आगे के फलक के ऊपरी सिरे पर मानवीय स्पर्श के प्रति संवेदनशील ट्वेल्व बाई ट्वेल्व इंच का एक वर्गाकार ऑपरेटिंग पैनल बना हुआ था। पैनल के ठीक ऊपर एक स्लीप चिपका हुआ था, जिस पर 'ऑपरेटिंग चैम्बर' अंकित था। पारदर्शी कांच के उस पार इतना पर्याप्त स्थान नजर आ रहा था कि चैम्बर में किसी अच्छी सेहत वाले, ऊंचे कद के आदमी को खड़े होने में कोई तकलीफ नहीं हो सकती थी। इसी चैम्बर के समरूप दो चैम्बर और थे, जिन पर 'एंटेंगलमेंट चैम्बर' तथा 'टारगेट चैम्बर' का स्लीप चिपका हुआ था, और जो इस चैम्बर से क्रमशः दस और बीस मीटर के फासले पर थे। अर्थात तीनों चैम्बर परस्पर दस मीटर के अंतराल पर अवस्थित थे। 'टारगेट चैम्बर' पर भी 'ऑपरेटिंग चैम्बर' की तरह ऑपरेटिंग पैनल बना हुआ था, जबकि 'एंटेंगलमेंट चैम्बर' पर कोई ऑपरेटिंग पैनल नहीं बना हुआ था।

क्षितिज ने चारों ओर नजर घुमाकर लैब का मुआयना किया। लैब हर उन मापदंडों पर खरा उतर रहा था, जो किसी लैब के विश्वस्तरीय और आधुनिक कहलाने के लिये आवश्यक होते हैं। उसने ऐसे ही अत्याधुनिक लैब में रिसर्च करने के सपने देखे थे, किन्तु आज अपने सपने के यथार्थ

रूप से अवगत होने के पश्चात भी उसके चेहरे पर उत्साह नहीं नजर आ रहा था। ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो यह लैब उसके मतलब की जगह नहीं थी।

वह भावहीन मुद्रा में तीनों चैम्बर्स को देखता रहा। उसकी तन्द्रा तब भंग हुई जब सिंघानिया ने 'ऑपरेटिंग चैम्बर' का पॉवर बटन ऑन किया। बटन ऑन होते ही चैम्बर नीले प्रकाश से भर गया और ऑपरेटिंग पैनल पर लाल रंग के डिजिटल फॉण्ट में अंग्रेजी का ये वाक्यांश नजर आने लगा-

स्टेप-1: कन्फर्मेशन ऑफ़ आइडेंटिटी

"वाउ....टेलीपोर्टिंग सिस्टम!" तीनों चैम्बर का मुआयना करने के उपरांत क्षितिज की आँखों में एक विचित्र चमक उभरती चली गयी। मंत्रमुग्ध सा आगे बढ़कर उसने 'ऑपरेटिंग चैम्बर' पर यूं हाथ फेरा मानो रफ़्तार के शौकिन किसी टीनएजर को महंगी रेसर बाइक मिल गयी हो, और फिर सिंघानिया की ओर रुख करते हुये रहस्यमयी स्वर में कहा उठा- "मुझे मालूम था सिंघानिया सर कि क्वांटम भौतिकी की रहस्यमयी दुनिया में खोये रहने वाले मुझ जैसे रिसर्च स्कॉलर की नजर में आप आठवें अजूबे के रूप में कौन सा शाहकार पेश करने वाले हैं।"

इस वक्त क्षितिज के चेहरे पर ऐसा कोई भाव नहीं नजर आ रहा था, जो यह इंगित करता कि वह सिंघानिया की मदद के लिये लालायित एक शोध छात्र था। सिंघानिया उसे आशंकित नेत्रों से घूरता रहा, जबकि उसने बेबाक

अंदाज में उसके कोट की जेब से इम्पोर्टेड पेन बाहर खींच लिया।

"सिस्टम का फंक्शन स्टार्ट कीजिये सर।" कहते हुये क्षितिज ने *'स्टेप-1: कन्फर्मेशन ऑफ़ आइडेंटिटी'* पर अपनी उंगली फिराई। पुराना टेक्स्ट गायब हो गया और अब पैनल पर एक जोड़ी आँखों की आकृति नजर आने लगी। सिंघानिया स्तब्ध रह गया। उसे सहसा विश्वास ही नहीं हुआ कि क्षितिज उसके नये आविष्कार से परिचित था।

"सिस्टम का फंक्शन स्टार्ट कीजिये सर।" क्षितिज ने अपना कथन दोहराया।

उलझन और उत्सुकता के विरोधाभास में जकड़ा सिंघानिया बेबस अंदाज में आगे बढ़ा। वह पैनल पर प्रकट हुई आँखों की रूपरेखा में तब तक झांकता रहा जब तक कि उन आँखों के स्थान पर अंग्रेजी में ये टेक्स्ट नहीं आ गया-

रेटिना स्कैन कम्प्लीटेड;आइडेंटिटी कन्फर्म्ड।

स्टेप-2: इंसर्शन ऑफ़ ऑब्जेक्ट।

पैनल पर उपरोक्त पाठ्य के चमकते ही 'एंटेंगलमेंट चैम्बर' और 'टारगेट चैम्बर' भी नीले प्रकाश से भर उठे। क्षितिज ने सिंघानिया की किसी हरकत की प्रतीक्षा किये बगैर 'इंसर्शन ऑफ़ ऑब्जेक्ट' पर उंगली फिरा दी।

लैब में 'सू' की ध्वनि उत्पन्न करती हुई एक आवाज उभरी और 'ऑपरेटिंग चैम्बर' में पहले से मौजूद नीला प्रकाश हरा हो गया। कुछ ही क्षणों बाद उस चैम्बर के

बगल से एक 'ऑब्जेक्ट पीस' बाहर आया। क्षितिज ने सिंघानिया की जेब से निकाले हुये पेन को उस पीस पर रखा। एक ब्लीप हुआ और पेन को लिये हुये पीस अन्दर चला गया। पैनल पर अगले स्टेप का नोटीफिकेशन आया-

ऑब्जेक्ट एक्सेप्टेड

स्टेप-3: इनिशिएट द प्रोसेस ऑफ़ एंटेंगलमेंट

बिटवीन इंट्रोड्यूज्ड सप्लीमेंट एंड टारगेट

नोटीफिकेशन की लाइन को टच करते ही हल्की सी ब्लीप के साथ 'एंटेंगलमेंट चैम्बर' और 'टारगेट चैम्बर' में मौजूद नीला प्रकाश भी हरे प्रकाश में बदल गया और साथ ही 'ऑपरेटिंग चैम्बर' के पैनल पर *'प्रॉसेसिंग'* लिखा नजर आने लगा। लगभग दस मिनट बाद *'प्रॉसेसिंग'* के तहत चलने प्रोग्रेस बार पूरा हरा हो गया और पैनल पर ये लिखा नजर आया-

एंटेंगलमेंट हैज बीन इस्टेब्लाइज्ड बिटवीन

इंट्रोड्यूज्ड सप्लीमेंट एंड टारगेट।

स्टेप-4 स्कैन इनफार्मेशन्स फ्रॉम

ऑब्जेक्ट टू इंट्रोड्यूज्ड सप्लीमेंट।

क्षितिज ने पूर्ववर्ती क्रिया को दोहराया और पैनल पर 'स्कैनिंग इन प्रोग्रेस' के साथ स्कैन का प्रोग्रेस बार नजर आने लगा। पिछली बार की तरह इस बार भी प्रोग्रेस बार के कम्पलीट होने में दस मिनट का समय लगा और फिर पैनल पर *'ट्रांसफरिंग इनफार्मेशन्स फ्रॉम सप्लीमेंट टू*

टारगेट' नजर आने लगा। कुछ सेकंड बाद ही पैनल पर बोल्ड फॉण्ट में ये नजर आया-

इनफार्मेशन्स आर टेलीपोर्टेड फ्रॉम
ऑब्जेक्ट टू टारगेट सक्सेजफुली।

क्षितिज ने उपर्युक्त वाक्य को टच किया। पैनल पर उस वाक्य के स्थान पर हरे रंग का बड़ा सा करेक्शन मार्क नजर आने लगा। ठीक इसी क्षण हल्के से ब्लीप के साथ 'ऑपरेटिंग चैम्बर' और 'एंटेंगलमेंट चैम्बर' में फिर से नीला प्रकाश फ़ैल गया। अब केवल 'टारगेट चैम्बर' में ही हरा प्रकाश फैला हुआ था, जो इस बात का द्योतक था कि उस चैम्बर का फंक्शन अभी भी ऑन था। 'टारगेट चैम्बर' पर बने ऑपरेटिंग पैनल पर कोई नोटीफिकेशन उभर रहा था।

क्षितिज के होठों पर रहस्यमयी मुस्कान थिरक उठी। उसने 'ऑपरेटिंग चैम्बर' के पारदर्शी कांच के अन्दर देखा। जहाँ सिंघानिया का पेन था, वहां अब पेन की त्रिआयामी आकृति में लाल प्रकाश फैला हुआ था। इस वक्त सिंघानिया के चेहरे पर ऐसे भाव थे जैसे वह आँखों के सामने अपना खजाना लुटते देख रहा हो, किन्तु कुछ कर पाने की स्थिति में न हो।

क्षितिज 'टारगेट चैम्बर' के सम्मुख पहुंचा। उसके ऑपरेटिंग पैनल पर लिखा हुआ था- *'रिकंस्ट्रक्ट ओरिजिनल ऑब्जेक्ट'*।

क्षितिज ने उंगली फिराने की क्रिया को यहाँ भी दोहराया। लगभग दो मिनट बाद एक ब्लीप हुआ और 'टारगेट चैम्बर' का हरा प्रकाश भी नीला हो गया।

चमत्कार हो चुका था।

'टारगेट चैम्बर' में सिंघानिया का वही पेन नजर आ रहा था, जिसे क्षितिज ने 'ऑपरेटिंग चैम्बर' में इन्सर्ट किया था। इस घटना के बाद 'ऑपरेटिंग चैम्बर' में नजर आ रही पेन के आकार वाली त्रिआयामी लाल रोशनी धीरे-धीरे क्षीण पड़ते हुये गायब हो गयी। और उसके ऑपरेटिंग पैनल पर लिखा हुआ आया- 'टेलीपोर्टेशन सक्सीडेड'। अब तीनों चैम्बर नीले प्रकाश से परिपूर्ण थे, क्योंकि वे अपने-अपने हिस्से के कार्यों को समाप्त कर चुके थे।

'टारगेट चैम्बर' से सिंघानिया का पेन बाहर निकालने के बाद क्षितिज ने 'टेलीपोर्टिंग सिस्टम' का पॉवर बटन ऑफ कर दिया और पेन को फिर से उसकी जेब में लगा दिया।

"कौन हो तुम?" सिंघानिया के चेहरे पर खूंखार भाव उभरे। उसे सामने मौजूद शख्स के क्षितिज होने पर संदेह हो गया।

"क्षितिज सक्सेना, रिसर्च स्कॉलर इन फिजिक्स।" क्षितिज ने उसी अंदाज में कहा, जिस अंदाज में उसने पहली बार एअरपोर्ट पर उसे अपना परिचय दिया था।

"बकवास!" सिंघानिया दहाड़ उठा- "तू क्षितिज नहीं हो सकता। तुझे टेलीपोर्टिंग सिस्टम के बारे में कैसे मालूम? तूने इसे बिना मेरी मदद के कैसे ऑपरेट किया? तुझे कैसे पता चला कि इस सिस्टम का फंक्शन मेरे रेटिना स्कैन के बिना स्टार्ट नहीं होता?"

"कूल डाउन सर।" क्षितिज ने उसका कन्धा थपथपाते हुये कहा- "इतनी जल्दी संयम खोना आप जैसे लीजेंड को शोभा नहीं देता।"

"स्टॉप! आई से स्टॉप!" सिंघानिया दांत पीसते हुये झुंझलाया। लगातार बढ़ती जा रही बदहवासी के कारण उसकी सांसें तेज हो चली थीं- "सीधे-सीधे बता कि कौन है तू? अगर तू सचमुच क्षितिज है तो तुझे टेलीपोर्टिंग सिस्टम के बारे में कैसे पता चला?"

"सिर्फ टेलीपोर्टिंग सिस्टम ही नहीं....।" क्षितिज का लहजा गंभीर हुआ- "मुझे तो आपके और भी कई राज मालूम हो चुके हैं।"

"ठीक है।" सिंघानिया ने पलकें भींच ली। थोड़ी देर बाद जब उसने आँखें खोली तो उन आँखों में जानवरों जैसी वहशी चमक थी- "अगर पहेलियों में बातें करना तेरा शौक है तो बेशक अपना शौक पूरा कर, लेकिन मेरी एक चेतावनी याद रखना।" दृढ़ता तांडव करने लगी सिंघानिया के चेहरे पर- "जब-तक मैं नहीं चाहूँगा तू इस लैब से बाहर नहीं निकल सकता। अगर मैं इस लैब में तेरा क़त्ल भी कर दूं तो बाहर वाले ये कभी नहीं जान पायेंगे कि क्षितिज नाम का एक नमूना अचानक कहाँ गायब हो गया?"

"एग्री विद यू।" क्षितिज ने कंधे उचकाए- "दुनिया वालों को बेशक ये नहीं पता है कि दगशाई के एक पुराने खण्डहर के नीचे ऐसी मॉडर्न लेबोरटरी है, जो शायद पूरे देश में कहीं नहीं है।"

"तो तू...तो तू ये भी जानता है कि ये लैब कहाँ है?"

"मैं तो ये भी जानता हूँ सिंघानिया सर कि एक ऐसी लैब, जिसे आज-तक हमारे देश की गवर्नमेंट भी हमारे वैज्ञानिकों को नहीं दे पायी, बनाने के लिये आपको फण्ड कहाँ से हासिल हुआ? मैं तो ये भी जानता हूँ कि अमेरिका में चल रहे दुनिया के सबसे बड़े साइंस प्रोजेक्ट 'ह्यूमन जीनोम प्रोजेक्ट' के डेटा एनालिस्ट के पद से इस्तीफा देकर इंडिया आने का आपका असली मकसद क्या है? मैं तो ये भी जानता हूँ कि आपने अपने जूनियर साइंटिस्ट की बीवी की कोख में पल रहे बच्चे पर कौन सा जेनेटिक एक्सपेरिमेंट किया है? मैं तो ये भी जानता हूँ कि न्यूजीलैंड में हुई क्वांटम रॉबिन नाम की गौरैया पक्षी की तस्करी में किस आतंकी संगठन का हाथ था और उसमें आपकी क्या भूमिका थी? मैं तो....।"

"बस!" सिंघानिया चीख पड़ा। उसका जिस्म पसीने से तर हो गया। समूचा लहू मानो उसके चेहरे पर सिमट आया- "तुझे ये सब कैसे पता? तू है कौन?"

"मुझे तो ये भी पता है सर....।" अचानक क्षितिज के होठों से दर्द भरी मुस्कान फिसलती चली गयी- "कि आपने कविता को किसी दूसरे पेशेंट की मेडिकल रिपोर्ट क्यों भेजी?"

जब वह खामोश हुआ तो लैब में केवल सिंघानिया के हांफने का स्वर गूँज रहा था। थोड़ी देर बाद मानो उसकी चेतना वापस लौटी। उसने जल्दी से अपने पतलून की जेब टटोली।

"रिवाल्वर मेज की दराज में है।" क्षितिज ने कहा।

सिंघानिया मेज की ओर दौड़ा। दराज से रिवाल्वर निकाला और उसका रुख क्षितिज की ओर करते हुये पागलों की तरह हंसा- "गुडबाय क्षितिज! मुझे नहीं मालूम कि तुझे मेरी हिस्ट्री कैसे पता चली, लेकिन इतना जरूर मालूम है कि तेरी मौत के बाद मेरे सारे राज हमेशा के लिये तेरे सीने में दफ़न हो जायेंगे।"

ट्रिगर पर सिंघानिया की उंगलियाँ सख्त होने लगीं।

"नहीं सर!" रिवाल्वर की नोक पर होने के बाद भी क्षितिज के चेहरे भय की हल्की छाया तक नजर नहीं आयी- "मेरी मौत होगी; लेकिन अभी नहीं; इस लैब में नहीं। मेरे पास अभी चौबीस घंटे और हैं। काल ने मेरी मौत का वक्त कल रात दस बजे मुक़र्रर किया गया है। जगह दगशाई की एक वीरान सड़क होगी। मैं उस अंधेरी सड़क पर भाग रहा होऊंगा। अचानक मेरे पैरों को ठोकर लगेगी। मैं मदद की गुहार लगाते हुये गिर पड़ूंगा। फिर मैं पीछे देखूँगा। पीछा करने वालों को वहां न पाकर मैं अपनी टॉर्च जला लूँगा, ठीक उसी क्षण अनगिनत फायरों से मेरा जिस्म छलनी कर दिया जायेगा और मेरी वे आँखें हमेशा के लिये बंद हो जायेंगी

जिनमें मैंने कविता के साथ एक हसीन जिन्दगी गुजारने के सपने संजोये हैं।"

"त...तू....है ...क्या...चीज?" आँखों में दहशत लिये हुये सिंघानिया ने क्षितिज को यूं घूरा मानो उसके सामने क्षितिज न होकर कोई परग्रही खड़ा हो।

खौफ और उलझन के प्रभाव में फंसकर वह भूल गया कि उसने किस उद्देश्य से क्षितिज को गनपॉइंट पर लिया है। वह एक बार असंतुलित हुआ तो फिर क्षितिज ने उसे दोबारा संतुलित होने का अवसर नहीं दिया। वह फूर्ती के साथ उसके रिवाल्वर वाले हाथ पर झपटा। सिंघानिया की रिवाल्वर पर पकड़ पहले ही कमजोर पड़ चुकी थी, इसलिये क्षितिज को उस पर कब्ज़ा जमाने में अधिक संघर्ष नहीं करना पड़ा।

“अगर तुमने मुझे मार दिया तो इस लैब से कभी बाहर नहीं निकल पाओगे। बेहतर होगा कि गन मुझे वापस कर दो।” सिंघानिया ने क्षितिज की ओर हथेली फैलायी।

“काम डाउन सिंघानिया सर!” क्षितिज ने रिवाल्वर को उंगलियों पर नाचते हुये कहा- “मैं चाह कर भी आपको नहीं मार सकता, क्योंकि मुझे रिवाल्वर चलानी नहीं आती। कभी सोचा ही नहीं था कि कलम थामने वाले हाथ एक दिन हथियार भी थामेंगे।”

सिंघानिया के चेहरे पर राहत नजर आयी।

“अब मैं आपको बेहोश करूंगा। जब आप आराम फरमाएंगे तब मैं आपके लैब की डिजिटल सिक्योरिटी सिस्टम का डेटाबेस चेंज कर दूंगा।”

“नहीं! तुम ऐसा नहीं कर सकते।” सिंघानिया दहल गया।

“मैं ऐसा ही करूंगा। आपकी रगों में इतनी ताकत नहीं है कि आप मुझे रोक सकें।” क्षितिज उसकी ओर बढ़ा।

"हम आपस में सुलह कर सकते हैं क्षितिज।" सिंघानिया पीछे खिसकते हुये बोला। वह भयभीत था, क्योंकि उसे इस बात पर यकीन नहीं था कि क्षितिज को रिवाल्वर चलानी नहीं आती- "मेरा यकीन करो। मैं कविता की जिन्दगी से दूर चला जाऊंगा। मैं रिसर्च में तुम्हारी हेल्प करूंगा। मेरी पहुँच अमेरिका की टॉप ग्रेड की यूनिवर्सिटीज तक हैं। मैं तुम्हें फर्श से अर्श तक पहुंचा सकता हूँ।"

"अब मेरे पास वक्त नहीं बचा सिंघानिया सर।" क्षितिज का लहजा फिर से भावुक हो गया- "न ही कविता के साथ जिन्दगी बिताने का और न ही फर्श से अर्श तक पहुंचने का। मेरे पास अब केवल चौबीस घंटे हैं और इन चौबीस घंटों में
मुझे कई जरूरी काम करने हैं।"

क्षितिज रिवाल्वर का रुख सिंघानिया की ओर किये हुये आगे बढ़ता रहा।

"वहीं रुक जाओ क्षितिज। लैब के सिक्योरिटी सिस्टम को बदलना इतना आसान नहीं है। मुझे मारने के बाद तुम भी इसी लैब में दफ़न हो जाओगे।"

क्षितिज पर चेतावनी का असर न होता देख सिंघानिया ने आक्रामक रुख अख्तियार किया। अब वह किसी भी हमले के जवाब के लिये तैयार नजर आने
लगा।

क्षितिज उससे लगभग दो फर्लांग की दूरी पर ठहर गया।

"इससे पहले कि आप निहत्थे पर वार न करने की दुहाई देते हुये कोई घिसा-पिटा फ़िल्मी डायलॉग दोहरायें, मैं खुद ही रिवाल्वर फेंक देता हूँ।"

क्षितिज के होठों पर एक कुटिल मुस्कान क्षण भर के लिये नजर आकर लुप्त हो गयी। उसने रिवाल्वर सीलिंग की ओर उछाला। आगे की घटना उसके आशा के अनुरूप घटी। रिवाल्वर को हवा में ही लपक लेने के ध्येय से ज्यों ही सिंघानिया की निगाह ऊपर उठी, त्यों ही क्षितिज के शक्तिशाली ठोकर का प्रहार उसके दाहिने घुटने पर पड़ा। परिणामस्वरुप वह संतुलन गंवाकर द्रुतगति से मुंह के बल फर्श से टकराया।

क्षितिज ने हवा में ही रिवाल्वर को लपका और उसे खड़े होने का अवसर दिये बिना ही उसकी खोपड़ी के पश्च भाग पर रिवाल्वर के बट के अनगिनत भीषण प्रहार कर डाले। उसके हाथ तब रुके जब उसे आभास हो गया कि सिंघानिया अपनी चेतना गँवा चुका है।

□□□

31 अक्टूबर सन् 1994, इसी तारीख को क्षितिज और तान्या की हत्या का रहस्यमयी अध्याय लिखा गया था।

जिस वक्त सिंघानिया की चेतना वापस लौटी, उस वक्त सूरज की तेज किरणें उसके चेहरे को झुलसा रही थीं। दिन चढ़ चुका था। उसने धीरे-धीरे आँखें खोली किन्तु परिवेश का दृश्य स्पष्ट होते ही चौंक कर तेजी से उठ बैठा। ये वही खण्डहर था, जिसकी जमीन के नीचे उसने

अपने गुनाहों की सल्तनत बसाई हुयी थी। पिछली रात लैब में घटी घटनायें उसके स्मृति पटल पर ताजा हो गयीं।

'मैं लैब से बाहर हूँ, तो क्या इसका मतलब क्षितिज ने मेरे लैब के सिक्योरिटी सिस्टम पर फतह हासिल कर लिया?'

प्रश्न का उत्तर 'हाँ' था।

सिंघानिया का जिस्म थरथरा उठा, आँखों के आगे अंधेरा छाने लगा और दुनिया खत्म होती नजर आने लगी। उसके बदन के हर हिस्से में असहनीय पीड़ा हो रही थी, जिस पर पड़े नीले निशान इस बात के गवाह थे कि उस पर बेहोशी की हालत में निर्दयतापूर्वक चाबुक बरसाया गया था। कपड़ों का सही सलामत होना इस बात का प्रमाण था कि पिटाई के दौरान वे उसके जिस्म पर नहीं थे।

उस वक्त की अपनी नग्न अवस्था की कल्पना करके सिंघानिया भन्ना उठा, किन्तु अगले ही पल उसने ये सोच कर राहत की साँस ली कि क्षितिज नाम के उस विचित्र लड़के ने उसे बिना कपड़ों में अवश्य पीटा था, किन्तु अपनी भड़ास निकालने के बाद उसे कपड़े पहनाना नहीं भूला था।

वह दर्द से कराहते हुये अपनी जगह से उठा। कमर में तेज दर्द के कारण उसे चलने में कठिनाई हो रही थी। लड़खड़ाते कदमों के साथ वह खण्डहर की एक जर्जर दीवार के पास पहुँचा। एक ईंट बाहर निकालकर दीवार में सुराख बनाया और उसमें हाथ डाल कर कोई यंत्र घुमाया। फर्श के उस हिस्से का छोटा सा भाग एक ओर हट गया, जो दीवार के दूसरी ओर था।

सिंघानिया जर्जर दीवार को फांदकर उस हिस्से में पहुंचा। फर्श एक ओर हट जाने के कारण उसके नीचे मौजूद छोटा सा स्क्रीन स्पष्ट नजर आ रहा था। पंजों के बल बैठ कर उसने स्क्रीन पर नजर डाली, जहाँ अंग्रेजी में लिखा हुआ था–*'कन्फर्मेशन ऑफ आइडेंटिटी'*

उसने उपरोक्त वाक्य को टच किया। स्क्रीन से वाक्य गायब हो गया। अब वहाँ पर लिखा था– *'प्लीज वेट'*। थोड़ी देर बाद वहां एक जोड़ी आँखों की वैसी ही अनुकृति नजर आने लगी, जैसी 'टेलीपोर्टिंग सिस्टम' के 'मदर चैम्बर' के ऑपरेटिंग पैनल पर नजर आयी थी। सिंघानिया ने उस क्रिया को यहाँ पर भी दोहराया, जो उसने 'टेलीपोर्टिंग सिस्टम' का फंक्शन स्टार्ट करने के लिये लैब में की थी। अगले ही क्षण यह संभावना हकीकत में बदल गयी कि क्षितिज ने लैब का सिक्योरिटी कण्ट्रोल अपने हाथ में ले लिया था, क्योंकि स्क्रीन पर ये लिखा हुआ था-*'कन्फर्मेशन ऑफ आइडेंटिटी फेल्ड'*

"क्षि...ति...ज....!" सिंघानिया ने इस कदर दांत पीसा मानो उसके दांतों के बीच क्षितिज की हड्डियां हों।

□□□

सिंघानिया की गाड़ी आनन-फानन में 'सिंघानिया हॉस्पिटल एण्ड रिसर्च सेण्टर' के सामने आकर रुकी। गाडी से उतरने और हॉस्पिटल में दाखिल होने का उसका अंदाज देख रिसेप्शन पर मौजूद लड़की घबरा गयी। वह कई पलों तक उसे घूरती रह गयी। रिसेप्शनिस्ट के चेहरे को देख कर

लग रहा था कि वह न तो रो पाने की स्थिति में थी और न ही हँस पाने की स्थिति में।

"सारे स्टाफ मेम्बर्स को मीटिंग हाल में बुलाओ।" सिंघानिया ने दहाड़ते हुये
रिसेप्शनिस्ट को आदेश दिया।

चूंकि सुबह का समय था, इसलिये हॉस्पिटल में नाइट शिफ्ट की ड्यूटी करने वाले ही कर्मचारी थे, जो थोड़ी देर बाद ही मीटिंग हाल में जमा थे। मीटिंग हाल तक पहुँचने के दौरान सिंघानिया ने गौर किया था कि सारे कर्मचारी उसे अजीब नजरों से देख रहे थे। कुछ मुँह छुपाकर हँस भी रहे थे। उस पर बेचैनी और घबराहट हावी थी, इसलिये उसने इस बात को कोई तवज्जो दिये बगैर पहला सवाल किया - "कल रात क्षितिज सक्सेना नाम का कोई लड़का यहाँ आया था?"

"कल रात आप कहाँ थे सर?"

"जस्ट शटअप। मेरे सवाल का जवाब दो।" अपने सवालों के बदले में हमेशा जवाब की उम्मीद रखने वाला सिंघानिया प्रत्युत्तर में एक नया सवाल सुनकर बौखला गया।

"बुरी नजर वाले, तेरा मुँह काला।" कर्मचारियों में से किसी एक ने कहा।

"ये क्या बकवास है?"

"आपकी पीठ पर यही लिखा है सर।"

"व्हाट?" सिंघानिया भौचक्क।

“अब तक हम लोग ऐसे वाक्य वाहनों के पीछे लिखा हुआ देखते आये थे, किसी आदमी की पीठ पर पहली बार देख रहे हैं।”

सिंघानिया खामोश।

“इतना ही नहीं सर; आप उस घटना की शायद कल्पना भी नहीं कर सकते जो कल रात आपके साथ घटी।”

“पहेलियाँ मत बुझाओ। तुम लोगों को ऐसा क्या दिख रहा है, जो मुझे नहीं दिख रहा है?” सिंघानिया सांप की भाँति फुफकार उठा।

“आपको वॉशरूम जाना चाहिये। हम अपने मुँह से बताएंगे तो अच्छा नहीं लगेगा आपको।”

सिंघानिया एक पल भी मीटिंग हाल में नहीं ठहरा। उसके बाहर निकलते ही हाल में मौजूद लोग ठहाके लगाकर हँस पड़े।

□□□

वाशरूम में आईने के सामने खड़ा सिंघानिया अपना अक्स निहार रहा था। आईने में उसका चेहरा कालिख से रंगा हुआ नजर आ रहा था। जिसका तात्पर्य ये था कि पिछली रात क्षितिज ने उसे पीटा ही नहीं था, बल्कि उसका मुँह भी काला
कर दिया था।

“क्षि....ति....ज।” सिंघानिया का कालिख पुता चेहरा नफरत की आग में जल कर और काला हो गया।

□□□

शाम के छः बज रहे थे।

क्षितिज दौड़ते हुये सीढियां चढ़ा और रेहान के कमरे के सामने पहुँच कर डोरबेल को दबा दिया।

"आता हूँ।"

रेहान की आवाज सुन कर उसने इत्मीनान की सांस ली और हाथ में लिये हुये बैग को जमीन पर रखने के बाद जेब से एक मुड़ा-तुड़ा कागज़ निकालकर उस पर लिखी हुयी सूची को पढ़ने लगा।

"सारे काम निपटा चुका हूँ। और अब रेहान से मिलने का ये आखिरी काम भी ख़त्म होने वाला है।"

बड़बड़ाते हुये उसने सूची में नीचे से दूसरी पंक्ति में दर्ज *'रेहान से मिलना है'* पर क्रॉस का चिह्न लगा दिया। सूची की आख़िरी पंक्ति में *'माँ से बात करनी है'* लिखा हुआ था। अन्दर से दरवाजा खुलने की आवाज आते ही उसने जल्दी से कागज को मोड़कर जेब में रख लिया।

रेहान दरवाजा खोलते ही चौंक पड़ा। उसके सामने खड़ा क्षितिज किसी भी कोण से वह क्षितिज नहीं लग रहा था, जो उससे कुछ दिन पहले ही मिला था।

उसके लंबे बाल बेतरतीबी से बिखरे हुये थे। जिस्म पर मौजूद कपड़ा गंदा हो गया था। लाल आँखें और चेहरे पर थकान के लक्षण बता रहे थे कि न तो वह रात भर सोया था और न ही उसका आज का दिन सामान्य गुजरा था।

"त...तुझे क्या हुआ? तेरी हालत ऐसी क्यों है, जैसे कोई लड़की ससुराल से भाग कर मायके आ गयी हो?" रेहान ने उसके बैग को घूरते हुये पूछा।

क्षितिज उसे रास्ते से हटाकर बैग सहित अंदर दाखिल हो गया और सोफे पर बैठकर आँखें बंद करके लंबी-लंबी सांसें लेने लगा।

"ओह। अब समझा।" दरवाजा बंद करने के बाद रेहान उसके करीब आया–"जनाब रिसर्च और गर्लफ्रेंड को एक साथ एडजस्ट नहीं कर पा रहे हैं। व्यस्तता का आलम ये हो गया है कि न तो रातों को सो पा रहे हैं और न ही दिन में चैन की सांस ले पा रहे हैं।"

"मुझे तुमसे कुछ बात करनी है।" क्षितिज ने गंभीर स्वर में कहा।

"तो बोल ना। बिना मतलब के तो तू मुझसे सपने में भी नहीं मिलता है।"

"मैं मरने वाला हूँ रेहान।"

सुनते ही रेहान के हाथ से चाय का कप छूटते-छूटते बचा। उसने क्षितिज को घूरा। उसके चेहरे पर परिहास के भाव नहीं थे।

"कविता पर तो तू पहले ही मर चुका है, अब किस पर मरने वाला है?"

"मैं मजाक नहीं कर रहा हूँ रेहान। मैं वास्तव में मरने वाला हूँ।" क्षितिज ने आँखें खोली।

"क्यों? तुझे एड्स है क्या?"

"रेहान....!" क्षितिज ने सख्त लहजे में कहा- "मैंने कहा ना कि मैं मजाक नहीं कर रहा हूँ।"

इस बार रेहान खामोश रह गया। उसने क्षितिज की भाव-भंगिमाओं का मुआयना किया। वह सचमुच अपसेट नजर आ रहा था।

"मैं मरने वाला हूँ यार।" क्षितिज का लहजा भावुक हुआ।

"कैसे?"

"आज रात दस बजे मेरी हत्या होने वाली है।"

"किसने कहा ऐसा?"

"समय ने कहा मुझसे।"

"ये तेरे नये रिसर्च एडवाइजर का नाम है?"

"नहीं। ये ब्रह्माण्ड की सबसे बड़ी पहेली का नाम है।"

"किस समय की बात कर रहा है तू?" रेहान के चेहरे पर शंका के बादल मंडराए।

"उसी समय की, जो समूचे ब्रह्माण्ड की गति को नियंत्रित करता है।"

"पागल हो गया है क्या?" रेहान झल्ला उठा- "समय, समय और सिर्फ समय। चौबीस घंटे समय के बारे में ही सोचते रहने के कारण तेरी खोपड़ी खिसक गयी है। समय भी किसी से बात करता है क्या?"

"केवल उन्हीं से करता है, जो उसकी भाषा को समझ पाते हैं।"

"तू रात भर सोया नहीं है, इसलिये पहले अपनी नींद पूरी कर ले। ताकि तू पागल न होने पाये।" रेहान ने गहरी साँस लेते हुये कहा।

"उसकी जरूरत नहीं है। कुछ ही घंटों में मैं लंबी नींद सो जाऊँगा, फिर कभी

नहीं उठूंगा। तू कल्पना भी नहीं कर सकता रेहान कि पिछले कुछ दिनों में मेरी जिन्दगी कितनी बदल चुकी है।" क्षितिज की आँखों में रेहान को आँसू नजर आये। उसने आगे कहा- "तूने बिल्कुल सही कहा था कि अगर प्यार में सफल होना इतना ही आसान होता तो आज मजनूं की गिनती अमर आशिकों में नहीं होती। शक्तिस्वरूप सिंघानिया, कविता के पापा का बहुत अच्छा दोस्त है या फिर ये कहो कि वह हरामजादा दोस्ती के नाम पर एक कलंक है। उसकी नियत कविता के प्रति गंदी थी। उसने उसके ब्रेन ट्यूमर की झुठी अफवाह उड़ाई। ट्यूमर के इलाज के बहाने वह कविता को अमेरिका ले जाना चाहता था। उसने विरोध किया तो उस कमीने ने हमारे खिलाफ ही साजिश रच डाली।"

रेहान के जेहन को तेज झटका लगा। उसे सिंघानिया पर पहले ही शक था, किन्तु कविता की ओर से कोई सूचना न मिलने के कारण उसका शक अब तक यकीन में नहीं बदल पाया था।

"तु...तु...तुझे ये सब कविता ने बताया?"

"नहीं! मुझसे समय मिला था। वह मेरे दर्पण में उतरा था।"

"ओह! 'पैरेलल यूनिवर्स' के बाद 'टाइम मिरर' नाम की नयी कल्पना।"

"ये कल्पना नहीं है।" इस बार क्षितिज इतनी तेजी से चीखा कि रेहान चौंक गया। इस बार वह क्षितिज के दावे पर टिप्पणी न कर सका, जबकि क्षितिज ने आगे कहा- "सिंघानिया का एक अंडरग्राउंड जेनेटिक लैब भी है। अपनी साजिश के तहत उसने मेरी हेल्प करने का नाटक किया था और आँखों पर पट्टी बांधकर मुझे उसी लैब में ले गया था।"

"क्या थी उसकी साजिश? तू बचा कैसे?"

"वह मुझे अपने लैब में ही शूट करने वाला था। मुझे रास्ते से हटाने बाद वह ब्रेन ट्यूमर के इलाज के बहाने कविता को लेकर अमेरिका भाग जाता। मैं उसकी साजिश से इसलिये बच गया क्योंकि समय ने मुझे आगाह कर दिया था। मेरी नियति के अनुसार मुझे उसके लैब में नहीं मरना था। बल्कि आज रात दस बजे दगशाई के एक सुनसान सड़क पर गोलियों से छलनी होकर मरना है।"

"समय ने तुझे क्यों आगाह किया? वह मरने वाले हर इंसान को क्यों नहीं आगाह करता?"

"वह सबको आगाह करता है। संकेत सबको देता है, लेकिन साधारण लोग उसके संकेतों को नजरअंदाज कर देते हैं।"

"मेरा मतलब है कि जैसे वह तेरे दर्पण में उतरा, वैसे ही सभी के दर्पण में क्यों नहीं उतरता?"

"उसने कहा कि मैं विशेष हूँ। किस प्रकार विशेष हूँ, ये अभी भविष्य के गर्भ में है।"

"जिस तरह तूने सिंघानिया की लैब में खुद को बचाया, उसी तरह आज रात....।"

"नहीं कर सकता।" क्षितिज ने रेहान की बात काट दी- "समय ने कहा है कि मृत्यु अटल है। नियति के अनुसार जिस क्षण मौत आनी तय होती है, उस क्षण वह आकर ही रहती है। अगर मैंने इस यूनिवर्सल ट्रुथ को झुठलाने की कोशिश की तो उस उद्देश्य को नहीं पूरा कर पाऊंगा, जिसे बताने के लिये समय मेरे पास आया था।"

"समय किस उद्देश्य से तुम्हारे पास आया था?"

"जिस उद्देश्य को समझने की कीमत मुझे अपनी जिन्दगी के रूप में चुकानी पड़ रही है, उसे समझना इतना आसान नहीं है।"

"सिंघानिया तो अमेरिका में था, उसने यहाँ इंडिया में करोड़ों की लागत वाला जेनेटिक लैब कैसे तैयार कर लिया?"

"ये बहुत बड़ा राज है। पूरी बात बताने का मेरे पास वक्त नहीं है। बस इतना समझ लो कि सिंघानिया इंसान नहीं हैवान है। वह कलियुग का रावण है।"

"तो क्या सिंघानिया तुम्हें सिर्फ इसलिये रास्ते से हटाना चाहता है क्योंकि तुम कविता से प्यार करते हो?"

"कल तक उसके सामने मेरे हत्या की मात्र यही एक वजह थी, किन्तु अब ऐसी कई वजहें है, जो उसे हर कीमत पर मेरी हत्या करने को विवश करेंगी। सबसे
अहम वजह तो यही है कि मैं उसके लैब के सारे सीक्रेट्स जान गया हूँ।"

रेहान के जेहन में सवालों का सैलाब मचल उठा था, लेकिन वह कुछ पूछ पाता इससे पहले ही क्षितिज ने बैग खोलकर उसमें मौजूद चीजों को सेंटर टेबल पर पलट दिया।

"य....ये सब क्या है?" हतप्रभ रेहान ने पूछा।

"शादी का सामान।"

"किसलिये?"

उपरोक्त सवाल के जवाब में क्षितिज का लहजा कांप गया।

"मरने से पहले मैं एक बार कविता को अपना बनाना चाहता हूँ। आज रात संत थामस चर्च में मैं उससे शादी करना चाहता हूँ।"

"होश में आओ क्षितिज।" रेहान उसे झकझोरते हुये चिल्ला पड़ा - "ये क्या अनाप-शनाप बके जा रहे हो तुम? तुम्हें कुछ नहीं होगा। आज रात तुम मेरे साथ रहोगे। मैं किसी को तुम्हारी हत्या नहीं करने दूंगा।"

"तुम इतनी बड़ी गलती नहीं कर सकते रेहान और ना ही मैं तुम्हें ऐसी गलती करने दूँगा। समय ने मुझसे कहा है कि मृत्यु अटल है, उसे कोई नहीं टाल सकता है। तुम अपना दिमाग मत लगाओ। सिर्फ वही करो जो मैं कहता हूँ।"

"तुम बहुत स्वार्थी हो क्षितिज।" रेहान खिझते हुये बोला- "जब तुम जानते हो कि तुम आज रात मरने वाले हो और तुम्हारी मौत को टाला नहीं जा सकता तो फिर कविता से शादी करके उसे विधवा क्यों बनाना चाहते हो? आखिर इस बेवकूफी के पीछे तुम्हारा मकसद क्या है?"

"मैं अपने जीवन का आख़िरी प्रयोग करना चाहता हूँ। मैं अपनी मौत को अंगूठा दिखाने की कोशिश करूंगा, लेकिन ये काम मैं खुद करूंगा, किसी को हस्तक्षेप नहीं करने दूंगा। ताकि अगर प्रयोग असफल रहे तो मेरी प्लानिंग पर इसका असर न पड़े।"

"ल...लेकिन।"

"लेकिन-वेकिन कुछ नहीं। जितना कहता हूँ, उतना सुनो। तुम अभी इसी वक्त कविता के घर जाओगे। आज रात दस बजे उसे चर्च में आने के लिये तैयार करोगे। भूल कर भी उसे ये नहीं बताओगे कि आज रात सिंघानिया उसके घर में आग लगाने वाला है।"

"तू किसी बीमारी से ग्रस्त हो गया है। आज रात कविता के घर में आग लगने
वाली है, और तू चाहता है कि मैं उसे आगाह करने की बजाय उसे तेरे साथ शादी
करने के लिये राजी करूं?"

"हाँ! क्योंकि नियति में यही लिखा है। कविता को चर्च में आने का सन्देश देने के बाद तुम तान्या के घर जाओगे। मेरी थीसिस उसके पास है। तुम उससे थीसिस मांगोगे, अगर वह देने में आनाकानी करेगी तो तुम उसके पीछे वक्त जाया नहीं करोगे क्योंकि तुम्हें फिर से कविता के घर आना है। जब-तक तुम दोबारा उसके घर पहुंचोगे तब-तक आग लग चुकी होगी। तुम उसके पिता जी को नहीं बचा पाओगे, लेकिन चिपू को बचा लोगे। इसके बाद तुम्हें चिपू और मेरी थीसिस; दोनों को प्रोफेसर शास्त्री को सौंप देना

है। किन्तु ध्यान रहे; कविता को ये बात कभी पता नहीं चलनी चाहिये कि उसका भाई जिन्दा है।” रेहान ने कुछ कहने के लिये मुँह खोला ही था कि क्षितिज ने उसके मुँह पर हाथ रखते हुये आगे कहा - “उस बच्चे का क्या करना है; ये प्रोफ़ेसर शास्त्री को पता चल जायेगा।”

“लेकिन अगर मैं तान्या से थीसिस लेने में कामयाब न हो सका तो?”

“तुम कामयाब होगे। तुम जरूर कामयाब होगे। क्योंकि मुझे भविष्य दर्पण में नजर आया था कि मेरी थीसिस तुम्हारे हाथ में थी। अगर तुम्हें थीसिस तान्या के जरिये नहीं मिलेगी तो किसी और जरिये से मिलेगी; लेकिन मिलेगी जरूर।”

रेहान क्षितिज से ‘भविष्य-दर्पण’ के बारे में जरूर पूछता अगर क्षितिज ने उसे पूछने का मौका दिया होता।

“चिपू और थीसिस को प्रोफेसर शास्त्री तक पहुंचाने के बाद तू वापस यहाँ आयेगा। अगर शादी का ये सामान यहीं पर रहा तो समझ लेना कि मेरी हत्या हो चुकी है और ये सामान लेकर चर्च में कविता के पास चले जाना। उससे कहना कि तुम्हारा क्षितिज कहीं नहीं गया है। वह वापस आयेगा। आज के ठीक इक्कीस साल बाद; 31 अक्टूबर के ही दिन वह एक नयी शक्ल में संत थॉमस चर्च आयेगा। आज की तारीख उसके नये जन्म की तारीख होगी।”

“यानि....यानि कि तेरा पुनर्जन्म भी होगा?” रेहान को महसूस हुआ कि अगर उसने क्षितिज की फैंटेसी कुछ देर और सुनी तो पागल हो जायेगा।

"नहीं! मेरा पुनर्जन्म नहीं होगा, लेकिन तू कविता को यही विश्वास दिलायेगा कि मैं पुनर्जन्म लेकर उसके पास आऊँगा। उस जन्म में मेरा और उसका जन्मदिन एक ही होगा। यानि कि इक्तीस अक्टूबर। वह धार्मिक स्वभाव की भावुक लड़की है, इसलिये मेरे पुनर्जन्म पर वह यकीन कर लेगी।"

"लेकिन तू कविता को ये विश्वास क्यों दिलाना चाहता है कि तू उसकी जिन्दगी में इक्कीस साल बाद वापस आयेगा?"

"क्योंकि...।" क्षितिज की मुट्ठियाँ भींच गयी- "मरने से पहले मैं सिंघानिया की जिन्दगी में जो आग लगाकर जा रहा हूँ, उस आग की लपटों को इक्कीस साल तक हवा मिलती रहे; उसके लिये जरूरी है कि कविता संत थॉमस चर्च में इक्कीस साल तक इस विश्वास के साथ जिये कि उसका क्षितिज वापस आयेगा।"

हालांकि रेहान को उसकी बातें नहीं समझ में आयीं, लेकिन फिर भी उसने इस विषय पर कुछ और न पूछकर अगला सवाल किया- "अगर ये सामान यहाँ
नहीं रहा तो?"

"तो समझ लेना कि 'मृत्यु अटल है', इस सार्वभौम सत्य को झुठलाकर मैं चर्च में कविता के साथ शादी रचा रहा हूँ।"

रेहान के दिमाग में तमाम उलझने थीं, बावजूद इसके उसने क्षितिज की सहमति में सर हिला दिया।

"मैं जा रहा हूँ। मुझे सोलन के एक नर्सिंग होम में पहुँचना है और उस मासूम बच्चे की जान बचानी है, जिसके माँ-बाप की सिंघानिया हत्या करने वाला है।"

क्षितिज उठा और लगभग दौड़ते हुये बाहर निकल गया। कमरे में अकेले रह गये रेहान को अब लगने लगा था कि या तो क्षितिज पागल हो गया है या फिर वह खुद।

□□□

"क्या आपकी बीवी प्रेग्नेट है?"

सवाल सुनकर वह आदमी चौंका, जो नर्सिंग होम के बिलिंग काउण्टर के सामने लगी लम्बी लाइन में सबसे पीछे खड़ा था। उसने अजीबोगरीब सवाल करने वाले आदमी को घूरा।

सवाल की तरह आदमी भी अजीबोगरीब था। वह लगभग छः फीट लम्बा और गन्ने की तरह पतला इंसान था। उसके गर्दन तक लम्बे बाल बेतरतीबी से बिखरे हुये थे। दाढ़ी के बाल भी जरूरत से ज्यादा बढ़े हुये थे। प्रथम दृष्टया देखने पर वह कोई अर्ध्दविक्षिप्त व्यक्ति जान पड़ता था।

"क्या आपकी बीबी प्रेग्नेट है?" अजीबोगरीब आदमी ने अपना सवाल दोहराया।

"सिक्योरिटी।" लाइन में खड़ा आदमी उसे पागल समझकर चीखा।

"प्लीज।" शोर मच जाने के डर से उस अजीबोगरीब आदमी ने लाइन में खड़े आदमी के मुंह पर अपनी हथेली रख दी और घबराकर बोला- "आप मुझे पागल मत

समझिए। मेरे जीवन में एक रहस्यमयी घटना घटी है और उस घटना के बाद मैं आपके जीवन के कई राज जान चुका हूं। मैं.....मैं ये भी जान चुका हूं कि आपकी बीवी आज जिस बच्चे को जन्म देने वाली है, वह बच्चा जेनेटिकली मॉडिफाइड है।"

आदमी के चेहरे पर हैरत के भाव उभरे। उसने आंख के इशारे से मुंह से हथेली हटाने को कहा। अजीबोगरीब आदमी ने तुरन्त उसके मुंह से हथेली हटायी। लाइन में खड़े आदमी ने आस-पास देखा। कई व्यक्तियों की निगाहें उन दोनों पर ठहरी हुई थीं, किन्तु जो कुछ हो रहा था उसे उनका व्यक्तिगत मामला समझकर कोई हस्तक्षेप नहीं करना चाहता था।

"कौन हो तुम?" लाइन में खड़ा आदमी गुर्राया।

"मेरा नाम क्षितिज सक्सेना है और मैं इस वक्त अमेरिका के ह्यूमन जीनोम प्रोजेक्ट में काम करने वाले एक जूनियर साइंटिस्ट डॉक्टर अश्विनी चतुर्वेदी से मुखातिब हूं।"

"तुम्हें मेरे बारे में कैसे मालूम हुआ?"

"ये सब-कुछ जानने के लिये आपको अकेले में मुझसे दो मिनट बात करनी होगी।"

"मेरे पास टाइम नहीं है। मेरी पत्नी ऑपरेशन थियेटर में है और मुझे उसके ऑपरेशन का बिल भरना है। जो कुछ कहना है यहीं कहो।"

"वह सब यहां नहीं कहा जा सकता। प्लीज आप मेरे साथ आइये। मैं आपको शक्तिस्वरूप सिंघानिया की एक गहरी साजिश से आगाह करने आया हूं।"

सिंघानिया का नाम सुनकर अश्विनि नाम का वह शख्स चौंका।

"हां! ये सच है। सिंघानिया, जो आपका सीनियर साइंटिस्ट है, आपके बच्चे की जान का दुश्मन बन चुका है।"

"कहां चलना होगा मुझे?"

अश्विनी को अब क्षितिज की बातों में सच्चाई का आभास होने लगा था।

"मेरे साथ आइये।"

कहने के बाद क्षितिज कॉरिडोर के उस छोर की ओर बढ़ चला, जहां पब्लिक वॉशरूम बना हुआ था। असमंजस में फंसा अश्विनी भी उसके पीछे बढ़ा। अंततः वही हुआ जिसका उसे अंदेशा था। क्षितिज वॉशरूम में प्रवेश कर गया। जिस वक्त अश्विनी वॉशरूम में पहुंचा उस वक्त क्षितिज टॉयलेट रुम्स की कतार के पास खड़ा था।

"ये खाली है।" क्षितिज ने टॉयलेट रुम की ओर इशारा किया।

"आर यू मैड?" अश्विनी ने घृणित स्वर में कहा- "तुम...तुम चाहते क्या हो? आखिर....।"

"प्लीज सर। ये जरूरी है। बात करने के लिये पूरे हॉस्पिटल में यही सबसे सुरक्षित जगह है।" क्षितिज गिड़गिड़ा उठा।

अश्विनी विचित्र परिस्थिति में फंसा नजर आने लगा। शायद उसने सपने भी नहीं सोचा था कि उसके वैज्ञानिक जीवन में कुछ ऐसी बातें भी हो सकती हैं, जिन्हें करने के लिये टॉयलेट रूम को सबसे सुरक्षित स्थान करार दिया जायेगा।

"मुझे भी ऐसा लग रहा है सर कि मैं कुछ दिनों से पागलों जैसा बर्ताव कर रहा हूं, लेकिन मेरा यकीन कीजिये। मैं पागल नहीं हूं। मेरे साथ एक हादसा हुआ है और उस हादसे में मुझे मेरा भविष्य दिख गया है।"

"कुछ भी हो...।" अश्विनी झुंझलाया- "मैं इस बेहूदी हरकत में तुम्हारा साथ नहीं दे सकता। अगर हमें किसी ने एक साथ अन्दर जाते या बाहर आते देख लिया तो वह समझेगा....तो वह समझेगा कि हम दोनों....।" अश्विनी ने जानबूझकर आगे का शब्द नहीं कहा।

"लगता है आपको अब भी मुझ पर यकीन नहीं है।"

अश्विनी केवल उसका चेहरा घूरता रहा।

"ठीक है।" क्षितिज ने निर्णायक लहजे में कहा- "अब मैं आपको आपके मैरिड लाइफ की एक ऐसी प्राइवेट बात बताने जा रहा हूं जिसे सिवाय आप दोनों हसबैण्ड-वाइफ के और कोई नहीं जानता।"

"कौन सी बात?" अश्विनी ने आशंकित लहजे में पूछा।

"आप दोनों ने अपने होने वाले बच्चे का नाम शैल डिसाइड किया है, और ये बात आप दोनों के सिवाय कोई तीसरा नहीं जानता।"

अश्विनि ने राहत की सांस ली।

"तुम और क्या जानते हो हमारे होने वाले बच्चे के बारे में?"

"वह जेनेटिकली मॉडिफाइड बच्चा है। उसका फर्टिलाइजेशन लैब में हुआ है। उसके अन्दर सेन्थेटिक जीन....।"

"बस।" अश्विनि ने घबराकर उसे खामोश कर दिया- "मेरे आखिरी सवाल का जवाब दो। तुम्हें ये सब बातें कैसे पता कैसे चलीं?"

"अगर मैंने आपको वास्तविकता बता दी तो मेरे अगले दस मिनट आपको उस वास्तविकता पर यकीन कराने में व्यर्थ चले जायेंगे। बुध्दिमत्ता इसी में है कि हम जल्द से जल्द वे बातें कर लें, जिसके लिये मैं आपको यहां लेकर आया हूं। मुझे ये भी मालूम है कि ह्यूमन जीनोम प्रोजेक्ट के जुनियर साइंटिस्ट के पद से आपने इस्तीफा क्यों दिया और सिंघानिया हॉस्पिटल के इनऑगुरेशन की आड़ में इण्डिया क्यों आया? अब शायद मुझ पर आपका यकीन और पुख्ता हो गया
होगा।"

अश्विनी ने कई सेकेण्ड तक खामोशी के साथ क्षितिज को घूरा और फिर कहा- "पहले तुम अन्दर चलो।"

□□□

"आखिर ऐसी क्या बात है रेहान, जो तुम पापा के सामने नहीं कर सकते?"

"मैं एक अजीब पहेली में उलझा हुआ हूँ कविता। मुझे समझ में नहीं आ रहा कि मैं बात कहाँ से शुरू करूँ?"

रेहान कविता के नजदीक आया।

"कैसी पहेली में उलझे हुये हो तुम? मैं इस बात की पुष्टि कर चुकी हूँ कि मुझे हेडेक की साइड इफ़ेक्ट वाले ड्रग कौन दे रहा था?"

"मैं उस टॉपिक पर बात करने नहीं आया हूँ। दरअसल मुझे क्षितिज का एक सन्देश तुम तक पहुँचाना है।"

क्षितिज का नाम सुनते ही कविता के चेहरे के भाव बदले।

"उस पागल का कौन सा सन्देश तुम मुझे देना चाहते हो, जिसने मुझे इम्प्रेस करने के लिये तुम्हें भिखारी बनने को मजबूर किया था।"

"तुमने क्या सोचा है उसके बारे में?"

"कुछ नहीं।" कविता ने दो टूक लहजे में कहा- "मैं उसके साथ नयी जिन्दगी नहीं शुरु कर सकती। ये बात मैं उसे भी बता चुकी हूँ।"

"दिल की बातों को दरकिनार करके जिम्मेदारियों के बोझ तले दबी एक लड़की जैसी बातें क्यों कर रही हो? हालांकि हर जगह दिल से सोचना सही नहीं होता, लेकिन ये भी एक सच है कि दिल और दिमाग के अपने दायरे होते हैं। जब बात दिल से सोचने की होती है तो दिमाग से सोचना पागलपन होता है और जब बात दिमाग से सोचने की होती है तो दिल से सोचना मूर्खता।"

"तुम कहना क्या चाहते हो?"

"मैं वही कहना चाहता हूँ, जो बारीश वाली रात पहले भी कह चुका हूँ।"

"लेकिन आज तुम्हारे सुर बदले हुये लग रहे है।"

"हाँ! क्योंकि तुम उन बातों को छुपाने की कोशिश कर रही हो, जिन्हें आज तक कोई नहीं छुपा पाया।"

"साफ-साफ कहो कि कहना क्या चाहते हो?"

"कहूँगा, लेकिन इससे पहले तुम्हें मेरे एक सवाल का जवाब देना होगा; क्या
तुम्हारे दिल में क्षितिज के लिये सचमुच कोई फीलिंग नहीं है?"

"ये कैसा बेहूदा सवाल है?"

"सवाल बेहूदा नहीं है कविता। या तो तुम इस सवाल का जवाब नहीं देना चाहती हो या फिर तुम खुद इस सवाल का जवाब तलाश रही हो।"

"क्या तुम मुझसे इसी मुद्दे पर बहस करने आये हो?"

"मैं कोई बहस करने नहीं आया हूँ। मैं पहले ही कह चुका हूँ कि मैं क्षितिज का एक सन्देश तुम तक पहुंचाने आया हूँ।"

"क्या है उसका सन्देश?"

"आज रात दस बजे उसने तुम्हें संत थॉमस चर्च बुलाया है।"

"किसलिये?"

"वह तुमसे शादी करना चाहता है।"

कविता ने रेहान को ऐसे घूरा मानो उसके सामने कोई पागल खड़ा हो।

"बेवक़ूफ़ तो है ही वह। कहीं ऐसा तो नहीं कि पागल भी हो गया?"

"मुझे भी ऐसा ही लग रहा है कि वह तुम्हारे प्यार में पागल हो गया है।"

"तो तुम उसे समझाते क्यों नहीं? तुम...तुम उसे ये क्यों नहीं बताते कि मेरे साथ...मेरे साथ उसका कोई फ्यूचर नहीं है।"

"इश्क नाम की गंभीर बीमारी 'समझ' नाम की दवा से ठीक नहीं होती।"

"तो फिर तुम उसे किसी साइकोलॉजिस्ट के पास ले जाओ।" कविता झल्ला उठी- "मुझे तो अब तुम भी बेवक़ूफ़ लगने लगे हो, जो घर से भाग कर शादी करने का उसका पैगाम लेकर मेरी खोपड़ी पर सवार हो गये।"

"मैंने अब-तक वही कहा जो मुझे कहने को बोला गया, लेकिन अब मैं जो कुछ कहने वाला हूँ; अपनी मर्जी से कहने वाला हूँ।"

मौन कविता रेहान को घूरती रही।

"क्षितिज से तुम भी मोहब्बत करती हो।" रेहान के चेहरे पर नजर आता दृढ़ आत्मविश्वास देख कविता के होठों से एक भी लफ्ज नहीं फिसले, जबकि वह बिना रुके कहता चला गया- " 'मर्चेण्ट ऑफ वेनिस' के लिये ऑडिशन देने आये हर उस चेहरे को तुमने रिजेक्ट कर दिया जिसमें जरा भी कमी थी। लेकिन क्षितिज...? उसे तुमने क्यों नहीं रिजेक्ट किया? वह तो खामियों से भरा एक झोला था। डायलॉग डिलीवरी तक अच्छी नहीं थी उसकी। उसे तुमने ड्रामे में क्यों कास्ट कर लिया? वह भी लीड रोल के लिये?"

"क्योंकि उसे तुमने रिकमेण्ड किया था।"

"मैंने तो कई लोगों को रिकमेंण्ड किया था। मेरी छोटी सी रिकमेंडेशन के कारण तुमने क्षितिज पर भरोसा करके अपनी पूरी मेहनत को दांव पर क्यों लगा दिया था?"

"रेहान...।" कविता का लहजा सख्त हो गया- "कोर्ट रूम के वकिलों की तरह मुझसे जिरह मत करो प्लीज।"

"ठीक है।" रेहान ने निर्णायक लहजे में कहा- "मुझे ये साबित करने में जरा भी दिलचस्पी नहीं है कि तुम्हारे दिल में क्षितिज के लिये कोई फीलिंग है या नहीं; मैं तुम्हें केवल इतना बताने आया हूँ कि अगर संभव हो तो दिमाग के आगे दिल को हारने मत देना। शादी के फैसले पर अमल करना या न करना; लेकिन चर्च में जरूर जाना।"

कहने के बाद रेहान वहां नहीं रुका।

□□□

"इन पेपर्स पर सिग्नेचर कर दो दामोदर।"

सिंघानिया ने कुछ पेपर्स दामोदर की ओर बढ़ाये, किन्तु दामोदर ने उन्हें थामने के लिये अपना हाथ आगे नहीं बढ़ाया।

"ये कविता के ट्रीटमेंट से जुड़े कुछ पेपर्स है। बिना तुम्हारे सिग्नेचर के...।"

"कविता कहीं नहीं जायेगी।" सिंघानिया की बात काटकर दामोदर ने सख्त लहजे में कहा।

सिंघानिया ने चौंक कर क्रोध के कारण लाल हो चुके दामोदर के चेहरे को

देखा। वे इस कदर रुष्ट थे कि उसकी ओर देखना भी जरूरी नहीं समझ रहे थे। सिंघानिया का कलेजा हलक में आ फँसा। उसे संदेह हुआ कि कहीं कविता ने उन्हें सच्चाई तो नहीं बता दिया है। उसने हाथ में लिये हुये पेपर्स को सेण्टर टेबल पर रख दिया।

"मैं समझ सकता हूँ दामोदर कि..।"

"तुम कुछ नहीं समझ सकते।" दामोदर ने पहली दफा अपने क्रोधित नेत्रों को सिंघानिया के चेहरे पर केन्द्रित किया- "तुम कुछ भी नहीं समझ सकते। बेटी की उम्र की लड़की के प्रति वहशी सोच रखने वाले बेहद घटिया किस्म के इंसान हो तुम।"

"दामोदर...।" सिंघानिया ने कुछ कहना चाहा लेकिन कह न पाया।

"ये मेरी शालीनता और पुरानी दोस्ती को लेकर बरती गयी रियायत का नतीजा है, जो तुम आज यहाँ बैठकर अपनी ही रची गयी कहानी सुना रहे हो मुझे।"

"य...ये तुम क्या कह रहे हो दामोदर?"

"अगर तुम मेरी बातों का मतलब अब भी नहीं समझ पाये हो तो इसका सीधा सा अर्थ है कि या तो तुम ढीठ हो या फिर निहायत ही बेवक़ूफ़।"

सिंघानिया खामोश।

"मेरी मासूम बेटी पर घटिया दृष्टि डालने की तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई?"

सिंघानिया के पैरों तले जमीन खिसक गयी।

"चौंक क्यों गये? जब तुम मेरी बेटी का थप्पड़ खाकर उसके ही कमरे में उसे धमकी दे रहे थे तो मैंने वह सब कुछ उसके कमरे के बाहर रहकर सुना, जो तुमने कहा। तुम्हारी गंदी नियत के बारे में पता चलते ही मेरी इच्छा हुयी कि उसी वक्त तुम्हें मौत की गहरी नींद सुला दूँ, लेकिन मासूम बेटे और कविता के मोह की की बेड़ियों ने मुझे जकड़ लिया।"

"ओह।" सिंघानिया कुटिलता से मुस्कुराया- "तो आखिरकार तुम्हें सच्चाई पता चल ही गयी। बाई द वे, क्या करोगे अब तुम?"

"दोबारा कभी तुम्हारी शक्ल नहीं देखना चाहूँगा।"

"हा...हा...हा....।" हैवानियत ने ठहाका लगाया- "कविता का वीजा पासपोर्ट बनवाने में लाखों रूपये खर्च किये है मैंने। उसका क्या?"

"अपनी गंदी जुबान से मेरी बेटी का नाम मत लो।"

"तुम कितने बेवक़ूफ़ हो दामोदर। तुमने ये कभी नहीं सोचा कि तुम्हारे जैसे पोस्टमास्टर की छोटी सी नौकरी करने वाले दरिद्र इंसान से मेरे जैसा सेलिब्रिटी टैग वाला व्यक्ति इतना मेलजोल क्यों बढ़ा रहा है। तुम्हें तो पहले ही समझ जाना चाहिये था कि मेरी दोस्ती की कीमत कविता है।"

"तो तुम कविता के रूप में वह कीमत वसूलना चाहते हो?"

"ऐसा ही समझ लो।"

"दफा हो जाओ यहाँ से।"

"नहीं जाऊँगा।" सिंघानिया बेहयाई के साथ बोला - "कविता को लिये बगैर न तो इस घर जाऊँगा; और न ही हिन्दुस्तान से।"

चटाक। चटाक।

बाहर जोरों की बिजली कड़की और अन्दर दामोदर के दाहिने हाथ ने हवा में लहराकर सिंघानिया के गालों पर कहर बरपा दिया। थोड़ी देर बाद ही उसके दोनों गालों पर दामोदर की उंगलियों के निशान नजर आने लगे।

"यही तुम्हारी औकात है।"

सिंघानिया हतप्रभ रह गया। उसे इस पर यकीन करने में कई सेकेण्ड लग गये कि उसके दोनों गाल पर थप्पड़ पड़े है।

"नहीं।" वह सदमे जैसी हालत में बोला- "ये औकात नहीं है मेरी, औकात तो अब मैं दिखाऊँगा तुम लोगों को।"

क्रोध के कारण उसका चेहरा विकृत हो गया।

"पहले बेटी ने एक गाल पर तमाचा मारा। फिर बाप ने दोनों गालों पर। एक हरामी ने मुझसे मेरी लैब छीन कर, मुँह पर कालिख पोत कर सारे स्टाफ के सामने मेरी इज्जत नीलाम की। नहीं...।" सिंघानिया हांफते हुये गुर्राया- "किसी को नहीं छोडूंगा।"

हालांकि बाहर तेज बारीश थी लेकिन सिंघानिया इतना जोर-जोर से चीख रहा था कि शोर सुनकर कविता और चिपू ड्राइंग हाल में आ गये।

"तुम चिपू को लेकर अन्दर जाओ।" दामोदर सख्त स्वर में बोले।

"लेकिन पापा....।"

"जितना कहा, उतना सुनो।"

दामोदर की डांट सुनकर कविता, चिपू को लेकर फिर से अन्दर चली गयी।

"तू इसी तरह रोते हुये दफा हो जा यहाँ से।"

"आज की रात तुम्हारे जिन्दगी की आखिरी रात होगी दामोदर। मैं भी देखूँगा कि कब तक कविता की पहरेदारी कर सकोगे तुम।"

"इससे पहले कि मैं तुझे घसीटते हुये यहाँ से बाहर निकालूँ, दफा हो जा।" दामोदर चिंघाड़ते हुये सोफे से उठ खड़े हुये।

सिंघानिया बाहर जाते समय पूंछ कटे सांप की भाँति तिलमिला रहा था।

□□□

रात के नौ बज रहे थे।

घबराहट रेहान के ऊपर मुकम्मल तौर पर हावी हो चुकी थी। उसकी कार भले ही तान्या के घर की ओर दौड़ रही थी, लेकिन दिमाग अब भी कविता के घर पर ही ठहरा हुआ था।

"क्या कविता, क्षितिज से मिलने चर्च में जायेगी?" उसके जेहन में बार-बार यही सवाल आ रहा था।

अगर क्षितिज को मालूम था कि कविता के घर में आग लगाने वाली है तो उसने उसके परिवार को बचाने के लिये कोई ठोस योजना क्यों नहीं बनाई? आखिरकार वह चाहता क्या है? वह किस भविष्य-दर्पण की बात कर

रहा था? क्या सचमुच समय ने उससे बातें की थी? अगर हाँ; तो बातें करने के लिये या भविष्य दिखाने के समय ने उसे ही क्यों चुना? विचारों में खलबली मचाए हुये ऐसे ही अनगिनत सवालों को दरकिनार करके रेहान ने अपनी कार तान्या के बंगले के सामने रोकी। बंगले की सारी लाईट्स जल रही थीं।

वह दरवाजे पर पहुँचा। दरवाजा खुला था इसलिये आसानी से अन्दर दाखिल हो गया। ड्राइंग रूम में सन्नाटा था।

"तान्या।"

प्रत्युत्तर में कुछ नहीं सुनाई दिया।

कई दफे आवाज लगाने को बाद भी जब रेहान को कोई जवाब नहीं मिला तो वह सीढ़ियों की ओर बढ़ा। ऊपर पहुँचा। ऊपर के तल पर मौजूद अधिकांश कमरे बंद थे। चूंकि तान्या बंगले में अकेली रहती थी, इसलिये वह रहन-सहन के लिये अधिक कमरों का इस्तेमाल नहीं करती थी।

अचानक कुछ देखकर रेहान ठहर गया। गैलरी के आख़िरी छोर पर एक कमरे के दरवाजे के कपाट आपस में जुड़े हुये थे। दरार से बाहर आती रोशनी इंगित कर रही थी कि अन्दर कोई था।

रेहान ने दरवाज नॉक किया।

कोई जवाब नहीं आया।

"तान्या...क्या तुम अन्दर हो?"

इस बार भी कोई जवाब नहीं।

अंततः उसने दरवाजा खोला और दबे पाँव अन्दर दाखिल हो गया।

"ओह माय गॉड!"

अन्दर मौजूद खौफनाक सच्चाई से रु-ब-रु होते ही रेहान के होठों से सिसकारियां निकल गयीं। वह मानो पाषाण-प्रतिमा में तब्दील हो गया। सर्द आलम में भी उसके जिस्म से पसीने छूटने लगे।

तान्या का बेजान जिस्म फर्श पर औंधे मुंह पड़ा हुआ था। उसके सर से बहता
गाढ़ा खून कालीन को भिगो रहा था। खून के ज़मने की क्रिया प्रारंभ नहीं हुई थी, अर्थात हत्या हुये कुछ ही मिनट गुजरे थे। यदि वह थोड़ा जल्दी पहुंचता तो संभव था कि या तो तान्या की जान बच जाती या फिर उसे हत्यारे का पता चल जाता। पास ही गिरे हुये रिसीवर और क्रेडिल से जाहिर हो रहा था कि मरने से पहले वह किसी से बात कर रही थी।

कमरे की सभी वस्तुएं यथास्थान पर थीं, संघर्ष के जरा भी चिह्न नजर नहीं आ रहे थे। इससे पहले कि रेहान हत्या की वजह पर विचार करता उसकी दृष्टि बुकशेल्फ पर पड़ी। अस्त-व्यस्त किताबें बता रही थीं कि शेल्फ से कुछ निकाला गया था।

हत्या के स्थल पर मौजूद होने के कारण किसी सामान्य इंसान की भांति रेहान के भी छक्के छूट रहे थे, किन्तु थीसिस की तलाश उसे यहाँ पर रुकने को मजबूर कर रही थी।

"कहाँ हो सकती है थीसिस?"

कमरे का मुआयना करती रेहान की निगाहें फर्श पर गयीं। फर्श पर कुछ पड़ा हुआ था। रेहान ने उसे रुमाल की मदद से उठाया। वह इस वस्तु को पहचानता था, और ये भी जानता था कि वह किसकी थी? उसकी आँखों में कामयाबी भरी चमक उभरी। उसने एक नजर बुकशेल्फ पर डाली और उसके कानों में क्षितिज का ये वाक्य गूँज उठा-

'तुम कामयाब होगे। तुम जरूर कामयाब होगे। क्योंकि मुझे भविष्य दर्पण में नजर आया था कि मेरी थीसिस तुम्हारे हाथ में थी। अगर तुम्हें थीसिस तान्या के जरिये नहीं मिलेगी तो किसी और जरिये से मिलेगी; लेकिन मिलेगी जरूर।'

□□□

"कविता।"

दामोदर की आवाज सुन कविता ने शीघ्रता से आँसू पोछे और दरवाजे की ओर पलटी।

"क्षितिज कौन है?" दामोदर का लहजा न तो अधिक सख्त था और न ही सामान्य कहा जा सकता था।

कविता का हलक सूख गया। उसने थूक निगलते हुये दामोदर की ओर देखा।

"जवाब दो कविता।" दामोदर ने कड़े स्वर में कहा- "तुम्हारी खामोशी सच्चाई पर परदा नहीं डाल सकती, क्योंकि रेहान मुझे सबकुछ बता चुका है।
तुमसे मिलकर जाते समय वह मुझसे भी मिला था।"

कविता खामोश। बोलने के लिये कोई लफ्ज ही नहीं थे उसके पास।

"क्षितिज ने आज रात तुम्हें चर्च में बुलाया है न?"

"जब रेहान आपको सब-कुछ बता चुका है तो फिर मुझसे ये पूछने की वजह क्या है पापा?" कविता ने निगाहें झुकाए हुये कहा।

"तुम्हारा फैसला जानना चाहता हूँ मैं।"

"क्या रेहान ने आपको मेरा फैसला नहीं बताया?"

"रेहान के सामने तुमने जो फैसला लिया, वह समाज के डर से लिया गया फैसला था। अगर आज रात मैं तुम्हें चर्च जाने की इजाजत दे दूं, तो क्या तुम चर्च जाओगी?"

"ये..ये कैसा सवाल है पापा?"

"साधारण सवाल है, जिसके जरिये मैं जानना चाहता हूँ कि तुम क्षितिज को पसंद करती हो या नहीं?"

कविता के गालों पर गुलाबी आभा की एक लकीर खींच गयी। वह चाह कर भी कुछ न बोल सकी।

"अगर तुम्हारी माँ आज ज़िंदा होती तो तुमसे ये सवाल मैं नहीं कर रहा होता। लेकिन भाग्य की विडम्बना ने आज मुझे माँ की भूमिका निभाने को विवश किया है। इसीलिये मैं तुमसे पूछ रहा हूँ कि क्षितिज तुम्हें पसंद है या नहीं?"

कविता फिर से खामोश। वह अजीब कश्मकश में उलझी हुई थी। क्षितिज की बेवकूफियां उसे अच्छी लगती थीं। वह तान्या से बुरी तरह चिढ़ता था, ये बात उसे बेहद सुकून देती थी। वह कभी-कभी उसके सपनों में आता था, और कभी-कभी उसके ख्यालों में अक्स

बनकर भी उभरता था। पहनावे और रहन-सहन को लेकर लापरवाह रहने वाले उस लड़के के व्यक्तित्व में कुछ भी ख़ास नहीं था, फिर भी उसने बगैर सोचे-समझे उसे 'मर्चेंट ऑफ़ वेनिस' के उस रोल के लिये फाइनल कर लिया था, जिसके लिये उसे कई राउंड के ऑडिशन के बाद भी कोई उपयुक्त शख्स नहीं मिल पाया था। उसके रोम-रोम में सुखद रोमांच की एक लहर दौड़ गयी थी, जब रेहान ने बारीश वाली रात अंगीठी के सामने पहली दफा उसे क्षितिज की भावनाओं से अवगत कराया था। उस लड़के में कुछ भी ख़ास नहीं था, लेकिन शायद कुछ तो ख़ास था, जो वह चाहकर भी उसके आकर्षण से मुक्त नहीं हो पा रही थी। क्या आकर्षण की यह पराकाष्ठा ही प्रेम की शुरुआत है? कविता उस क्षण इसी सवाल पर विचार कर रही थी, जिस क्षण उसके कानों में फिर से दामोदर का यह वाक्य पड़ा- "क्षितिज तुम्हें पसंद है या नहीं?"

"उसे तो हर कोई पसंद करेगा क्योंकि वह एक अच्छा इंसान है।" कविता ने टालने के लिहाज से कह दिया, क्योंकि वह अभी तक यह निर्णय नहीं कर पाई थी कि क्षितिज के प्रति उसका आकर्षण प्रेम है या कुछ और?

"क्या तुम्हें लगता है कि वह अच्छा इंसान तुम्हें जीवन भर खुश रख सकता है?"

"आखिरकार आप ये सब मुझसे क्यों पूछ रहे हैं?" कविता असहजता के बोझ से झल्ला उठी।

"क्योंकि मुझे क्षितिज पसंद है। हर बाप अपनी बेटी को महफूज बाहों में सौंपना चाहता है और मुझे क्षितिज की

बाहों के रूप में वे महफूज बाहें मिल चुकी हैं। सिंघानिया तुम्हें अपनी वासना का शिकार बनाने के लिये किसी भी हद तक जा सकता है। मेरी बुढ़ी रगों में अब इतनी ताकत नहीं हैं कि मैं सिंघानिया से तुम्हें बचा सकूं, इसलिये मैं तुम्हारी जिम्मेदारी क्षितिज को सौंपना चाहता हूँ। जो लड़का निडर होकर तुमसे प्रेम का इजहार कर सकता है; वह तुम्हें कभी अकेला नहीं छोड़ सकता है।"

"य..ये अप क्या कह रहे हैं?" कविता ने पहली दफा दामोदर की ओर चेहरा उठाया।

"वही जो तुम सुन रही हो। अपनी बेटी के आगे अपनी कमजोरी जाहिर करने वाला मैं शायद दुनिया का एकलौता बाप हूँ। किन्तु सच यही है कि मैं विवश हूँ। सिंघानिया जैसे नीच इंसान से बचने के लिये तुम्हें मेरी नहीं बल्कि क्षितिज के मजबूत बाँहों की जरूरत है। तुम आज रात चर्च जाओगी और क्षितिज को ये सन्देश दोगी मैं उससे मिलना चाहता हूँ।"

"पापा.... ।"

कविता ने लरजते स्वर में कहा और दामोदर की छाती से चिपक गयी।

□□□

रेहान के पैर ब्रेक पर दबते चले गये। टायरों की थोड़ी चीख-पुकार के बाद कार रुक गयी। आगे का दृश्य दिल दहला देने वाला था। कविता का घर धूं-धूं करके जल रहा था। चारों ओर स्थानीय लोगों की भाग-दौड़ जारी थी। फायर बिग्रेड वाले अभी तक नहीं आये थे।

'घर के अंदर कौन-कौन था?'

'ये आग लगी कैसे?'

'दामोदर और चिपू तो घर के अंदर ही है।'

'कोई उन्हें बचाओ।'

इसी तरह की न जाने कितनी चीखें वातावरण में गूँज रही थीं। और रेहान; वह तो हतप्रभ रह गया। क्षितिज की भविष्यवाणी अक्षरशः सही साबित हुयी थी। *'इस परिस्थिति में उसे करना क्या चाहिये?'* इसका निर्णय लेने में उसे कई मिनट लग गये।

'तुम उसके पिता जी को नहीं बचा पाओगे, लेकिन चिपू को बचा लोगे।'

रेहान कार से बाहर आया। वह घटनास्थल से लगभग दो सौ मीटर की दूरी पर था। आकाश में बादल थे। रह-रह कर बिजली भी चमक रही थी।

'काश बारिश हो जाये।'

मन ही मन प्रार्थना करते हुये वह लोगों की नजर बचा कर मकान के पीछे पहुँचा। भीषण आग अभी वहां तक नहीं पहुँची थी।

'अगर वे दोनों पिछले हिस्से में होंगे तो उन्हें अभी तक कोई हानि नहीं पहुँची होगी। मुझे समय नहीं गंवाना चाहिये।'

रेहान बगीचे में से होते हुये बरामदे के छज्जे के नीचे पहुंचा। प्लास्टर रहित दीवार को आपातकालीन परिस्थिति में बरामदे तक पहुँचने के लिये इस्तेमाल किया जा सकता था।

दो असफल प्रयासों के बाद तीसरे प्रयास में रेहान रेल्िंग पकड़कर लटकने में कामयाब हो गया, किन्तु बरामदे तक पहुँच जाने का यह उत्साह ज्यादा देर तक कायम नहीं रह सका, क्योंकि अगले ही पल उसे आभास हो गया कि *'आग मकान के पिछले हिस्से तक नहीं पहुँची थी'* यह उसकी गलतफहमी मात्र थी। ज्यों ही उसके कदम बरामदे के फर्श से टकराए, त्यों ही कविता के कमरे का दरवाजा आग के कारण जर्जर होकर कब्जे से उखड़ कर जमीन पर गिरा।

उसके बाद रेहान ने अपनी जिन्दगी का सबसे डरावना दृश्य देखा। कमरे में आग पूरी तरह से फैल चुकी थी। भयानक लपटों के बीच खड़ा चिपू जोर-जोर से रो रहा था। खांसते-खांसते उसकी हालत खस्ता हो चुकी थी।

कमरे में छलांग लगाने के ख्याल से रेहान के रोंगटे खड़े हो गये, किन्तु जब चिपू की दयनीय हालत पर उसकी दृष्टि पड़ी, तो खुद पर काबू नहीं रख पाया। इष्ट का स्मरण करके उसने कमरे में छलांग लगा दिया। लपटों के बीच से होता हुआ वह सीधा चिपू के पास आकर गिरा। उसने शीघ्रतापूर्वक आग के हवाले हो चुके शर्ट को उतारकर फेंक दिया। देवदूत की तरह अचानक प्रकट हो गये रेहान को देखकर चिपू हैरान रह गया।

"तुम्हारे पापा कहाँ है?" रेहान ने खांसते हुये पूछा।

चिपू ने बिलख-बिलख कर रोते हुये कमरे के बाहर की ओर इशारा किया। रेहान को आग की कई लपटों के उस पार दामोदर का झुलसा हुआ जिस्म नजर आया।

उनके शरीर में लगी आग अपना काम कर रही थी। धुएं के घने गुब्बार फैले होने के कारण रेहान ये अंदाजा नहीं लगा पाया कि वे ज़िंदा थे या मृत्यु को प्राप्त हो चुके थे। दामोदर तक पहुँचने की राह में आग की भयानक और आक्रामक लपटें फ़ैली हुयी थीं, इसलिये फिलहाल रेहान के पास उन्हें बचाने का कोई विकल्प नहीं था। वह अपनी बेबसी पर तड़प उठा।

आग पल-प्रतिपल उग्र होती जा रही थी। मौजूदा हालातों में रेहान को अपनी और चिपू की जान बचानी मुश्किल लग रही थी। उसने कमरे में चारों ओर दृष्टि घुमाई, लेकिन उसे बाहर निकलने के लिये ऐसा कोई हिस्सा नहीं नजर आया, जो आग की चपेट में न हो।

रेहान का आत्मविश्वास डगमगा गया, किन्तु इससे पहले कि मौत के सामने उसके हौसले घुटने टेक देते, उसकी नजर बेडशीट पर गयी। आग बेडशीट तक नहीं पहुँची थी। उसने लपक कर उसे उठाया। वक्त की नजाकत ने मासूम चिपू को होशियार बना दिया था। उसने रेहान के गले में बाहें डाली और अपनी दोनों टाँगे
उसके इर्द-गिर्द लपेट कर उससे चिपक गया।

बेडशीट से अपने समूचे जिस्म को ढकने के बाद रेहान तेजी से बाहर की ओर दौड़ पड़ा। भयानक लपटों को चीर कर बाहर आते ही उसने बेडशीट को एक तरफ उछाल दिया।

जिस पल रेहान ने चिपू को लेकर बरामदे से बगीचे में छलांग लगाई, ठीक उसी उसी पल बरामदे की छत ढह गयी।

□□□

रात के साढ़े दस बज चुके थे। चर्च के प्रार्थना हाल में बैठी कविता के सब्र का बांध टूटता जा रहा था।

“तुम किसका इंतजार कर रही हो बेटा?” पादरी जोसेफ ने पूछा।

“कोई आने वाला है फादर।”

“इतनी रात गये.......?” प्रार्थना हाल के दरवाजे पर हुई दस्तक के कारण फादर के बाकी के अल्फाज हलक में ही दम तोड़ गये।

“मैं देखता हूँ।”

उनके दरवाजा खोलते ही सिंघानिया उन्हें परे धकेलता हुआ, हवा के तेज झोंके की मानिंद अन्दर दाखिल हुआ। कविता को देखते ही वह कुटिलता से मुस्कुराया - “ओह। तो तुम यहाँ हो। क्षितिज का इंतजार कर रही हो?”

सिंघानिया को देखते ही कविता चौंकी। *‘ये यहाँ क्यों आया है?’* ये सवाल उसके जेहन में हथौड़े की चोट की भाँति गूंजा।

“वह अब कभी नहीं आने वाला है। जानती हो क्यों?” सिंघानिया धीमी चाल चलता हुआ कविता के करीब आने लगा।

वह खड़ी हो गयी।

“मैंने उस इस दुनिया से रुख्सत करवा दिया।”

कविता को उसके कथन पर यकीन नहीं हुआ। उसे यही लगा कि ये उसकी किसी नयी कूटनीति का हिस्सा है।

"तुम्हें क्या लगा था?" सिंघानिया किसी हिंसक भेड़िये की भांति गुर्राया- "मैं किसी भावुक प्रेमी की तरह अपनी प्रेमिका की जिन्दगी में किसी और की दखलअंदाजी का कड़वा घूँट हजम कर जाऊँगा?"

"तुमने क्षितिज के साथ क्या किया है? कहाँ है वह?" कविता किसी अनिष्ट की आशंका से काँप गयी।

"वही किया है; जो मुझे उसी समय कर देना चाहिये था, जब वह पहली दफा मुझसे मिला था।"

"तुम ऐसा नहीं कर सकते।" कविता के लिये अब अपने पैरों पर खड़ा रहना मुश्किल हो गया।

"मैं ऐसा कर चुका हूँ।" सिंघानिया ने अट्टहास किया - "पहले तो सोचा था कि सम्मान के साथ तुम्हें अपनी पत्नी बनाऊँगा लेकिन अब ..।"

उसने दांत पीसते हुये जानबूझकर आगे का वाक्य अधूरा छोड़ दिया। अब-तक हुई बातचीत से फादर जोसेफ उसके नापाक इरादे को समझ चुके थे।

"ये क्या बेशर्मी है? क्या तुम इतना भी नहीं जानते कि ये चर्च है?"

सिंघानिया ने फादर को यूं घूरा मानो उसे पहली दफा उनकी मौजूदगी का
एहसास हुआ हो।

"तू खामोश रह बुड्ढे। अगर चर्च में नहीं तो कहीं और। मेरे हाथों इसका बचना नामुमकिन है।"

"मैं तुम्हें ऐसा नहीं करने दूँगा।"

फादर ने हाथ में मौजूद छड़ी को सिंघानिया की ओर लहराया लेकिन उनकी वृद्ध भुजाओ में इतनी ताकत नहीं थी, जो एक शैतान को रोक सकते। सिंघानिया ने छड़ी को हवा में ही थाम लिया और एक तेज झटका देकर फादर को धूल चाटने पर विवश कर दिया।

"तुम यहाँ से चली जाओ।" फादर, कविता को लक्ष्य करके चीखे।

पल भर के लिये ज्ञानशून्य सी हो गयी कविता चेतना के दुनिया में वापस लौटी। वह दरवाजे की ओर भागना चाही, लेकिन दुर्भाग्य ने यहाँ पर भी उसका पीछा नहीं छोड़ा। उसके पैर किसी बेंच के पाए में फंस गये और वह अपने ही वेग में फर्श से जा टकराई। उसके होठों से खून बहने लगा।

"देख लिया तुमने कविता? आज तो ईश्वर भी मेरे साथ है। वह भी नहीं चाहता कि तुम यहाँ से जाओ।"

"नीच! कुत्ते! वहीं पर ठहर जा। मेरे करीब आने की कोशिश भी मत करना।"

"लो ठहर गया।" सिंघानिया सचमुच ठहर गया - "लेकिन मेरे ठहरने का ये मतलब नहीं कि मैंने अपना इरादा बदल दिया।"

"तू ऐसे नहीं मानेगा इडियट। मैं पुलिस को बुलाता हूँ।"

फादर की चेतावनी सुनते ही सिंघानिया का क्रोध भड़क उठा। उसने पैर के एक शक्तिशाली ठोकर से जमीन से उठने के उनके प्रयास को विफल कर दिया। वह इतने पर

ही नहीं ठहरा। पंजों के बल उनके निकट बैठा और उनके लम्बे बाल अपनी मुठ्ठी में जकड़कर सर को बेदर्दी के साथ फर्श से टकरा दिया। उसने इस वहशियाना हरकत को कई बार दोहराया।

ये हृदयविदारक दृश्य देख कविता का अंतर्मन चीत्कार कर उठा। फादर को बेहोश करने के मकसद में कामयाब होने के बाद सिंघानिया ने अपना रुख कविता की ओर किया।

"अब ठीक है। हम दोनों अकेले हो गये।" उसने दोनों हाथ झाड़ते हुये कहा।

"तुम चाहते क्या हो?"

"वही, जो तुम नहीं चाहती।" कविता की बेबसी पर हैवानियत ने जमकर
ठहाका लगाया।

"भगवान से डरो। एक बेबस लड़की की मजबूरी का फायदा मत उठाओ।"

"क्या हुआ? इतनी जल्दी भीगी बिल्ली बन गयी? जब मुझे थप्पड़ मारा था तब तो बड़ी ऊँची-ऊँची बातें कर रही थी। शेरनी बन रही थी तू। अब क्या हो गया? कहाँ गयी तेरी बड़ी-बड़ी बातें?" कविता का चेहरा क्रोध, नफ़रत और घृणा के कारण धधक उठा। जबकि सिंघानिया पूर्ववत लहजे में कहता चला गया- "तूने और तेरे बाप ने मुझे जो थप्पड़ मारे, उन थप्पड़ों का जवाब तो तुझे ही देना होगा न? तेरा थप्पड़ खाने के बाद से मैं एक रात भी चैन से नहीं सो पाया हूँ।"

“तू अब कभी चैन से नहीं सो पाएगा, क्योंकि तूने एक स्त्री का अपमान करने का दुस्साहस किया है।”

“तुम हिंदुस्तानियों की सबसे बड़ी कमजोरी तुम्हारी भावनायें होती हैं। तुम मूर्खों को मौत निगलने को तैयार खड़ी होती है, लेकिन मरते दम तक इसी विश्वास के साथ लिपटे रहते हो कि तुम्हारा भगवान तुम्हें बचा लेगा।” उसने थोड़ा रुककर आगे कहा- “क्षितिज की तरह मैंने भी तुम्हें प्यार करना चाहा; अपना बनाना चाहा; लेकिन बदले में मुझे क्या मिला? तुम्हारी नफरत, तुम्हारी घृणा और तुम्हारा थप्पड़। क्षितिज जैसा सरफिरा अगर रात को तुम्हारे बैडरूम में आकर अपने प्रेम का इजहार करे तो उसका प्यार सच्चा है और यही सब अगर मेरे जैसा सफलता की बुलन्दियों पर बैठा शख्स करे तो गलत है। ऐसा क्यो?”

“इस ‘क्यों’ का जवाब पाने के लिये तुम्हें सही मायने में प्यार का मतलब समझना होगा। पहले ‘प्यार’ और ‘वासना’ में फर्क करना सीखो।”

“हर सच्चे प्यार की आखिरी मंजिल शारीरिक क्षुधापूर्ति ही होती है। हर आदर्श प्रेम संसर्ग के बगैर अधूरा है। कौन है इस दुनिया में जिसे कामाग्नि नहीं जलाती? लोगों के जेहन से झूठे आदर्शों का भय निकाल कर तो देखो दुनिया का हर शख्स शक्तिस्वरूप सिंघानिया बना घूमता फिरेगा। क्षितिज तुम तक पहुँचने के मेरे रास्ते में एक बड़ी दीवार था, बिना उस दीवार को ढहाए मैं तुम तक कैसे पहुंच सकता था? मैं...मैं उसे जिन्दा कैसे छोड़ सकता था कविता?”

क्षितिज के कत्ल की बात दोबारा सुनकर कविता के आँखों के आगे अंधेरा छा गया। उसके हाथ-पांव सुन्न पड़ गये और वह निढ़ाल होकर फर्श पर बैठ गयी। उसकी बेबसी पर सिंघानिया एक बार फिर कुटिलतापूर्वक मुस्कुराया – “सब कुछ तुम्हारे कारण हुआ। अगर तुम शान्ति से मेरा प्रेम निवेदन स्वीकार कर लेती तो ये दिन देखने नहीं पड़ते। तुम्हारे कदमों में दुनिया की सारी खुशियाँ होती। तुम्हारा बाप और छोटा भाई शान की जिन्दगी जीते। क्षितिज को भी मेरे रहमोकरम पर कहीं अच्छी जगह रिसर्च फेलोशिप मिल जाती।” उसने आँसुओं से गीले हो उठे कविता के चेहरे को देखा और आगे कहा – “लेकिन देखो; तुम्हारी एक जिद्द ने तुम्हें इस दुनिया में कितना अकेला छोड़ दिया। आज तुम्हारे पास न तो क्षितिज है और न ही अपना परिवार। तुम्हारे पास सिर्फ तुम्हारी जिन्दगी है, जिसे अब तुम्हें मेरे शर्तों पर जीनी है।”

“म...मेरे प...परिवार को क्या हुआ?”

“जल कर खाक हो गया होगा अब तक। मुझे आग लगाए हुये तो काफी वक्त हो गये। दगशाई के लोग अब दामोदर और चिपू की लाश तलाश रहे होंगे।”

सुनते ही कविता में मानो बिजली सी फुर्ती भर गयी। वह अपनी जगह से तेजी से उठ खड़ी हुई। प्रार्थना हाल से बाहर जाने के लिये दौड़ी ही थी कि सिंघानिया ने उसका हाथ पकड़ लिया। वह गिरते-गिरते बची।

“छोड़ो मुझे।”

"इतनी जल्दी क्या है? अपने बाप और मुँहबोले भाई की जली हुई लाशें कल सुबह भी देख सकती हो। आज रात मैं तुम्हें अपनी वो शर्तें समझाऊँगा, जिन पर तुम्हें अपनी बाकी की जिन्दगी मेरी रखैल बनकर गुजारनी है।"

"कविता को छोड़ दो सिंघानिया।"

हाल के प्रवेश द्वार से आयी नयी आवाज सुन सिंघानिया की गर्दन बरबस ही उस ओर मुड़ गयी। दरवाजे पर रेहान खड़ा था। उसके हाथ में एक बैग था।

"तुम यहाँ क्या कर रहे हो रेहान?"

उसे देखते ही सिंघानिया ने क्रोध से तिलमिला कर कविता का हाथ छोड़ दिया।

"यही सवाल तो मैं आपसे पूछ रहा हूँ। चर्च जैसी पवित्र जगह पर तुम एक लड़की के साथ शैतान की तरह क्यों पेश आ रहे हो?"

"जुबान को लगाम दो रेहान। ये मत भूलो कि तुम मेरे नौकर हो।"

"भाड़ में गयी तुम्हारी दो टके की नौकरी। मुझे तुम्हारे जैसे हर उस नीच इंसान के लिये कोई नौकरी नहीं करनी है, जिसे स्कूल में एक स्त्री का सम्मान करना नहीं सिखाया गया।" रेहान की अंगारे उगलती आंखें देख सिंघानिया के तिरपन कांप गये। रेहान ने आगे कहा- "सही कहा था क्षितिज ने कि तू इंसान की खाल में एक
नरभेड़िया है।"

"क्या बकवास कर रहे हो तुम?"

"क्षितिज कहाँ है?" गुर्राते हुये रेहान, सिंघानिया की बढ़ने लगा।

"वहीं ठहर जाओ रेहान।"

रेहान बढ़ता रहा। सिंघानिया को आभास हो गया कि उसके तेवर बगावती हो गये थे। इससे पहले कि रेहान उसके करीब पहुँच पाता, उसने कब रिवॉल्वर निकालकर कविता की खोपड़ी से सटा दिया, ये रेहान भी न जान पाया।

"अब तो रुकोगे ना तुम?" शैतान ने कहकहा लगाया – "पढ़े-लिखे हो। सूरत से समझदार भी लगते हो, इसलिये अच्छी तरह समझ रहे होगे कि तुम्हारे आगे बढ़ने के दुस्साहस का अंजाम क्या होगा।"

रेहान को रुकना पड़ा। अपनी विजय पर सिंघानिया के होठों पर उसका ट्रेडमार्क बन चुकी कुटिल मुस्कान एक बार फिर थिरक उठी।

"मुझे खुद इस बात का एहसास नहीं है कि इस हरामजादी को अपने बिस्तर तक ले जाने के लिये मुझे अभी और कितने पापड़ बेलने होंगे। कितनी लाशों का ढेर लगाना होगा" सिंघानिया का शिकंजा कविता की गर्दन पर और सख्त हो गया - "पहले तो सोचा था कि झूठे ब्रेन ट्यूमर के इलाज के बहाने इसे अमेरिका ले जाऊँगा। हर ख़्वाहिश शाँति से पूरी करूँगा। लेकिन नहीं, वक्त ने मुझे धोखा दिया। मेरी शांतिप्रिय योजना में छेद हो गया और इसे पता चल गया कि इसके मेडिकल टेस्ट की रिपोर्ट इसकी नहीं बल्कि किसी और की थी। इसके मूर्ख बाप

को भी सबकुछ पता चल गया। इस कमीनी ने क्षितिज के कारण मेरा प्रेम निवेदन ठुकरा दिया। ये भले ही अपनी जिम्मेदारियों का दिखावा करती थी, लेकिन सच्चाई यही थी कि उस सनकी लड़के के प्रेमपाश में ये खुद भी जकड़ चुकी थी। अपने रास्ते में आये उस बेवक़ूफ़ को बेहद खौफनाक और गुमनाम मौत देने की अनोखी साजिश रची मैंने, लेकिन वक्त ने यहाँ भी धोखा दिया मुझे। एक बार फिर मेरी योजना में छेद हो गया और उसे पता चल गया कि मेरी निगाह इस सफ़ेद नागिन पर है। न जाने कैसे मेरे सारे राज जान गया था वह, अगर मैं उसकी कहानी को और लम्बा खींचता तो मेरे सीक्रेट जेनेटिक लैब का राज खुल जाता, इसलिये आनन-फानन में मुझे उसकी कहानी खत्म करनी पड़ी। मरवा दिया मैंने उसे। इस हुस्न की मल्लिका पर मालिकाना हक़ जताने के लिये मुझे इसके बाप और भाई का किस्सा भी ख़त्म करना पड़ा। उन्हें ज़िंदा जलाना पड़ा मुझे। अब, जब इतने पापड़ बेलने के बाद मैं इसे हासिल करने की कगार पर हूँ तो इस बार तू मरने के लिये टपक पड़ा।”

“मौत परवर दिगार का गुलाम है सिंघानिया, तुझ जैसे शैतान का नहीं। इससे पहले कि मेरे हाथ तेरे खून से रंग जायें, तू कविता को छोड़ दे।”

“नहीं। नहीं छोडूंगा। इसे घसीटते हुये यहाँ से लेकर जाऊंगा।”

रेहान के लहू में उबाल आने लगा। हमेशा गंभीर और शांतचित्त रहने वाले उस इंसान के चेहरे पर कविता ने

पहली दफा क्रोध की लालिमा देखी। उसका गौरवर्ण चेहरा रक्तिम हो उठा और आँखों में सिंघानिया के खून की प्यास नजर आने लगी। उसने शीघ्र ही धैर्य पर से नियंत्रण खो दिया और हाथ में लिया बैग खींच कर सिंघानिया पर फेंक दिया।

अहंकार के नशे में चूर सिंघानिया इस हमले के लिये तैयार नहीं था। वजनी बैग लगते ही वह अपना संतुलन खो बैठा। रिवॉल्वर उसके हाथ से छिटककर दूर जा गिरा। हालांकि कविता पर उसका शिकंजा अब भी बरकरार था।

रेहान ने बिना समय गंवाए रिवाल्वर पर कब्जा कर लिया। सबकुछ इतनी जल्दी हुआ कि सिंघानिया को समझने का मौका ही नहीं मिला, और जब वह कुछ समझने के काबिल हुआ तो पाया कि बाजी रेहान के हाथ में जा चुकी थी।

"कविता को छोड़ दो।" रेहान रिवाल्वर की नाल सिंघानिया की ओर रखते हुये गुर्राया।

रेहान हैरान रह गया, जब उसने पाया कि कविता को छोड़ने के बजाय सिंघानिया उसे कवर किये हुये ही कुटिलतापूर्वक मुस्कुराता रहा।

"कविता को छोड़ दो।" रेहान ने चेतावनी दोहरायी।

"पहले ये तो चेक कर ले बेवक़ूफ़ कि रिवॉल्वर के चैम्बर में कुछ है या नहीं।"

रेहान की उंगलियाँ ट्रिगर पर सख्त तो हुईं, किन्तु रिवाल्वर से एक चिंगारी तक नहीं निकली। 'चैम्बर *खाली*

है।' जब-तक रेहान ये समझ पाता, तब-तक सिंघानिया ने कहर ढा दिया।

कविता को एक ओर धकेलकर वह रेहान पर झपटा। रेहान इस अप्रत्याशित हमले के लिये तैयार नहीं था। उसके कुछ समझने तक सिंघानिया उसे जमीन पर गिराकर उसकी छाती पर सवार हो चुका था। उसके चेहरे पर ताबड़तोड़ घूंसे बरसाते हुये वह पागलों की तरह चिल्लाने लगा।

"कविता सिर्फ मेरी है। उसकी खूबसूरती से सिर्फ मैं अपनी भूख मिटाऊंगा।
रास्ते में आने वाले हर शख्स को कीड़े-मकोड़ों की तरह मसल दूंगा।"

सिंघानिया के शक्तिशाली घूंसों के प्रहार से रेहान के नाक से खून की आड़ी-तिरछी रेखाएं बह निकलीं। उस पर दर्जन से भी अधिक घूंसे बरसाने के बाद जब सिंघानिया को लगने लगा कि उसे इतने प्रहार झेलकर उठने में वक्त लगेगा तो उसने बिना देरी किये कविता की बांह पकड़ी और घसीटते हुये प्रार्थना हाल के दरवाजे की ओर भागने लगा।

"रेहान!"

कविता, सिंघानिया की गिरफ्त से छूटने का प्रयास करते हुये चीखी, किन्तु भीषण दर्द के बीच रेहान को केवल उसकी चीखें ही सुनाई पड़ीं। उसकी आँखों के आगे तेजी से अँधेरा घिरने लगा था।

"छोड़ मुझे।"

कविता ने चीखते हुये सिंघानिया के हाथ में अपने दांत गड़ा दिये। मगर शैतान पर कोई फर्क नहीं पड़ा। वह उसे घसीटते हुये चर्च के दरवाजे तक आ गया।

"देखा तूने? हर शख्स हार गया सिंघानिया से। कोई नहीं बचा पाया तुझे। सबकुछ लुट गया तेरा।"

कविता की दुनिया खत्म होने की कगार पर थी, लेकिन उसके चेहरे पर स्वाभिमान की ज्वाला अब भी विद्यमान थी।

"तेरे मंसूबे कभी कामयाब नहीं होंगे। ईश्वर तुझे दुनिया की सबसे बुरी मौत देगा।"

बाहर आने के बाद सिंघानिया, कविता को लेकर कार की ओर बढ़ने लगा।

"मेरी जीत तो हो चुकी है मूर्ख लड़की। अब बस तुझे यहाँ से ले जाने की औपचारिकता निभानी है। तेरा आशिक क्षितिज इस दुनिया से रुख्सत हो चुका है, मेरा मूर्ख दोस्त भी अपने मुंहबोले बेटे को गोद में लिये हुये अंतिम यात्रा पर निकल चुका है। जब-तक मेरा नौकर तुझे बचाने के लिये उठेगा, तब-तक मैं तुझे यहाँ से लेकर दूर जा चुका होऊंगा।"

सिंघानिया कहकहे लगाते हुये कार ड्राइविंग डोर खोलने ही वाला था कि उसके सर पर लाठी का एक भीषण प्रहार हुआ।

"आह!" कराहते हुये वह पीछे पलटा।

पीछे रेहान था, जिसके हाथ में फादर जोसेफ की छड़ी थी। उसका रक्तरंजित चेहरा वीभत्स नजर आ रहा था।

रेहान ने छड़ी का दूसरा वार सिंघानिया की गर्दन पर किया। वह तड़पते हुये जमीन पर गिरा। ऐसा होते ही रेहान ने ठोकरों के प्रहार से सिंघानिया को इस हद तक अधमरा कर डाला कि उसके संभलने तक आराम से पुलिस को बुलाया जा सकता था।

“रिलैक्स कविता। तुम अब सुरक्षित हो।” रेहान ने हांफते हुये कहा- “चर्च में फोन तो है न?”

“ह...हां...है।” कविता का जिस्म अब भी थरथरा रहा था। उसकी निगाहें धरातल पर कराह रहे सिंघानिया पर थीं। उसे संदेह था कि वह दोबारा हमला करेगा।

“ये कैसा बैग है?”

अचानक रेहान ड्राइविंग सीट पर पड़ा बैग देखकर बुरी तरह चौंका। उसने एक नजर सिंघानिया पर डाली। वह दर्द से उबरने की कोशिश कर रहा था।

“क्या हुआ रेहान?”

कौतुहल के वश में होकर रेहान बैग के निकट पहुंचा और एक झटके से उसे खोल दिया।

“ओह माय गॉड!” रेहान का समूचा जिस्म भय से थरथरा उठा।

“क्या है रेहान?” गहरे सस्पैंस में फंसी कविता आगे बढकर बैग को देखने ही वाली थी कि रेहान ने जल्दी से उसका जिप बंद कर दिया।

“क्या बात है रेहान। बैग खोलो। मुझे भी देखना है कि क्या है उसमें।”

"नहीं! तुम पीछे हटो कविता।" रेहान ने उसे पीछे धकेला और बैग को ड्राइविंग सीट पर ही छोड़कर सिंघानिया की ओर पलटा।

रेहान का जिस्म बुरी तरह कांप रहा था। जमीन पर पड़ा सिंघानिया उसकी दशा समझ गया। दर्द के शिकंजे में जकड़ा होने के बावजूद भी वह कुटिलतापूर्वक मुस्कुराया और लड़खड़ाती जुबान में बोला- "बैग में जो भी है, उसे कविता को मत दिखाना रेहान। जीते जी मौत हो जायेगी इस बेचारी की।"

कविता अधीरतापूर्वक बैग की ओर झपटी, किन्तु रेहान उसके और बैग के रास्ते में आ गया।

"वह सच कह रहा है कविता। बैग में जो कुछ भी है, उसे देखने के बाद तुम अपने पैरों पर नहीं खड़ी रह पाओगी।"

"ऐसा.....ऐसा क्या है उस बैग में?"

कविता की बातों पर ध्यान न देते हुये रेहान ने सिंघानिया की ओर देखा। वह
सम्भल चुका था। कुहनी जमीन पर टिकाये हुये आधा उठकर बैठ गया था। वह हंसा। खून से लथपथ उसके चेहरे पर वह हंसी बेहद घिनौनी लगी।

"आखिरकार तूने वही किया न हरामजादे, जो ठान रखा था?" रेहान का लहजा क्रोध से सराबोर था, किन्तु कविता ने उस क्रोध में भी भावुकता और तड़प महसूस की। उसका दिल जोरों से धड़क उठा।

"मजबूरन करना पड़ा रेहान।"

सिंघानिया ने अपनी जगह से उठने की कोशिश की, लेकिन रेहान ने एक जोरदार ठोकर उसकी पसलियों पर जड़ दिया।

"तुझे सजा कानून नहीं मैं दूंगा हरामजादे।" रेहान चीखते हुये उस पर टूट पड़ा- "तुझे ज़िंदा नहीं छोड़ूंगा मैं।"

रेहान किसी पेशेवर हत्यारे की तरह सिंघानिया की गर्दन पर अपने पंजों का दबाव बढ़ाता चला गया, किन्तु अचानक उसे कुछ याद आया। उसने उस दिशा में गर्दन घुमाई, जहाँ कविता खड़ी थी, किन्तु कविता अब वहां नहीं थी।

"रुक जाओ कविता। प्लीज बैग को मत खोलना।" रेहान चीखते हुये उसकी ओर भगा।

इससे पहले कि कविता चेतावनी को अनदेखा करके बैग को खोल पाती, रेहान ने उससे बैग झपटकर दूर उछाल दिया।

"क्या है उस बैग में?" कविता हिस्टीरियाई अंदाज में चीखी।

"पागल मत बनो कविता। मैंने तुम्हें उस बैग को खोलने से मना किया था।" रेहान झुंझलाया।

"ऐसा क्या उस बैग....।" कविता के आगे के लफ्ज वजूद में न आ सके। उसने सिंघानिया को बैग की ओर बेतहाशा दौड़ लगाते देखा।

"वह बैग के साथ भागना चाहता है।"

रेहान भी सिंघानिया की दिशा में पलटा। लेकिन तब-तक वह बैग पर कब्जा जमा चुका था।

"सिंघानिया को मात देना इतना आसान नहीं नौसिखिये डॉक्टर।" सिंघानिया होठों से बह रहे खून पर जीभ फिराते हुये भयानक अंदाज में बोला।

"तुम क्या करोगे उसका?"

"अगर कोई तेरी जीवन भर की मेहनत और कमाई पर कुण्डली मार कर बैठ जाये, तो क्या तू हाथ पर हाथ रखे बैठा रह सकता है?"

रेहान खामोश रहा।

"नहीं न? बस! इसी प्रकार मैं भी नहीं बैठ सकता। तेरा सनकी दोस्त मरने से पहले मेरी उपलब्धियों को एक ताले में बंद कर गया है। उस ताले को खोलने के लिये इस बैग में मौजूद कीमती चीज का मेरे पास होना बहुत जरूरी है। रही बात इस सफ़ेद नागिन की... ।" उसने कविता को देखते हुये दांत पीसा- "तो इसे मैं हासिल कर के ही रहूँगा। आज नहीं तो कल ही सही।"

सिंघानिया बैग को लिये हुये लड़खड़ाते कदमों के साथ कार की ओर बढ़ा।

"तुम नहीं भाग सकते। तुम यहाँ से सीधे पुलिस स्टेशन जाओगे।" रेहान उसकी ओर बढ़ा।

'जब किसी इंसान की शक्ति के साथ उसकी इच्छा-शक्ति भी जुड़ जाती है, तो उसे पराजित कर पाना आसान नहीं रह जाता।' सिंघानिया के सन्दर्भ में यह कथन सही साबित होने जा रहा था। बैग उसके लिये अब कविता से ज्यादा महत्वपूर्ण हो चुका था, इसलिये वह जान की

कीमत पर भी बैग के साथ भागने हेतु संकल्पबद्ध हो चुका था।

रेहान उसकी ओर लपका, किन्तु वह उससे भी दोगुनी तेजी के साथ कार के ड्राइविंग डोर की ओर भागा। रेहान उस तक पहुँच पाता, इससे पहले ही वह ड्राइविंग सीट पर सवार हो चुका था। रेहान के करीब आने पर उसने लात के भीषण प्रहार उसे दूर धकेल दिया। लड़खड़ाता रेहान जब तक संभला तब तक वह कार स्टार्ट कर चुका था।

“एक भयानक जलजला बनकर मैं वापस आऊँगा।”

उसने आखिरी चेतावनी दी और हर गुजरते क्षण के साथ रेहान की पहुँच से दूर होता चला गया।

□

"उस रात मौत भी हैरान रह गयी थी। क्षितिज और तान्या की हत्या के बाद दगशाई की आबोहवा में मानो दहशत घुल गयी थी। अगली सुबह जंगल के आग की तरह ये खबर फ़ैली कि कविता नाम की एक लड़की प्रेम-प्रसंग में पिता की अनुमति न मिलने के कारण अपने ही हाथों घर में आग लगा बैठी। इस खबर को बढ़ावा देने का काम सिंघानिया के हाथों बिके हुये भाड़े के टट्टुओं ने बखूबी किया था।"

रेहान के खामोश होते ही सबकुछ खामोश हो गया। मरियम (कविता) के अश्रुपूरित नेत्र शून्य में ठहरे हुये थे। न तो रेहान के पास उसके लिये कोई लफ्ज थे, और न ही फादर डिकोस्टा के पास क्योंकि दोनों को ही ये एहसास था कि इक्कीस साल पहले घटी घटनाओं को किसी ट्रेपरिकार्डर की भाँति बयां कर देने के बाद कविता के वे जख्म फिर से ताजा हो गये थे, जिन्हें वक्त भी नहीं भर पाया था।

"सब्र से काम लो कविता।" अंततः फादर ने मुंह खोला- "शायद तुम्हारी जिन्दगी को कोई मुकाम हासिल होने वाला है तभी तो घटनायें समय के चक्र में उलझती जा रही हैं।"

कविता ने आँसुओं से गीला चेहरा ऊपर उठाया।

"क्या आपको अब भी उम्मीद है कि खतरनाक लहरों पर हिचकोले खाती नाव के जैसी मेरी जिन्दगी को कोई मुकाम हासिल हो सकता है? क्या औरों की तरह आप भी यही समझते हैं कि वक्त मेरे गहरे जख्मों को भर देगा?

मैं इक्तीस अक्टूबर की वह काली, तूफानी रात कैसे भूल सकती हूँ, जब सब कुछ अचानक हो गया था। इस बात की कल्पना तक नहीं की थी मैंने कि जब अरमानों की टोकरी सर पर लिये चर्च पहुँचूंगी तो वहाँ सिंघानिया नाम का वह वहशी भेड़िया मुझे मेरे परिवार और क्षितिज के गारत होने की खबर सुनायेगा। कितनी मूर्ख थी मैं फादर। वक्त मेरे साथ क्रूर मजाक करता रहा और मैं उस मजाक को अन्त तक नहीं समझ पायी। कितना अचानक हुआ था ये सब।"

"ये सब कुछ अचानक नहीं हुआ था कविता।" रेहान ने खामोशी तोड़ी- "सिंघानिया के खौफनाक षड़यंत्र के बारे में क्षितिज को पहले ही पता चल गया था।"

"अगर ऐसा था तो उसने ये सब क्यों होने दिया? उसने मुझे क्यों नहीं बताया कि मुझे हासिल करने के लिये सिंघानिया दरिन्दगी की सभी सीमाओं को लांघ
जाने वाला है?"

"शायद उसने कोई योजना बनाई थी। उस रात अगर मैं सिंघानिया को रोकने में कामयाब हो गया होता तो कहानी काफी हद तक उसी समय स्पष्ट हो गयी होती।"

"ऐसी भी क्या योजना थी उसकी, जो रूह कंपा देने वाला मेरा प्रारब्ध जानते हुये भी उसने उसे बदलने की कोशिश नहीं की?"

"क्या उसने तुम्हें अपनी योजना के बारे में नहीं बताया था?" डिकोस्टा ने पूछा।

"नहीं। अगर उसने बताया होता, तो आज आप लोगों की तरह मैं भी अँधेरे में न होता। जब वह आखिरी बार मुझसे मिला था तो मैंने उससे कई सवाल पूछे थे, लेकिन हर सवाल के जवाब को वह टाल गया था। बहुत ही अजीब बातें कर रहा था।"

"तो इसका मतलब ये है कि...." फादर डिकोस्टा ने कहा- "तुमने जितना हमें बताया, सिर्फ उतना ही जानते हो। क्षितिज के साथ घटी रहस्यमयी घटनाओं से तुम भी उतने ही अनजान हो जितने कि हम।"

"आपने ठीक समझा फादर। सिंघानिया किस षड़यंत्र के तहत क्षितिज को अपने लैब में ले गया था? क्षितिज के जेहन में आखिर ऐसी कौन सी योजना पनप रही थी, जो उसने सब कुछ जानते हुये भी कुछ भी बदलने की कोशिश नहीं की? इस पूरे मामले में तान्या कैसे शामिल हुई? उसकी हत्या किसने और क्यों की? क्षितिज की थीसिस में ऐसा क्या था जिसके कारण प्रोफ़ेसर शास्त्री मानसिक असंतुलन के शिकार हो गये? ये कुछ ऐसे सवाल हैं, जिनके जवाब क्षितिज की चिता की आग में जलकर राख हो गये।"

"नहीं रेहान।" कविता का लहजा अचानक दृढ़ हो उठा- "एक सवाल का जवाब तुम जानते हो।"

"शायद तुम्हारा संकेत चिपू की ओर है।" रेहान ने शांत लहजे में कहा।

"कहाँ है वह?"

चिपू का नाम ज़ुबान पर आते ही कविता का गला रुंध गया, किन्तु उसे रेहान के चेहरे पर ऐसे कोई भाव नहीं दिखे, जिससे उसे किसी सकारात्मक जवाब की उम्मीद होती।

“मैंने उस रात चिपू को मौत के पंजे से निकालकर प्रोफ़ेसर शास्त्री को सौंप
दिया था।”

“तुम उसे मेरे पास क्यों नहीं ले आये?”

“मैंने वही किया, जो क्षितिज ने मुझे करने के लिये कहा था और उसने जो कुछ करने के लिये कहा था वह सब कुछ उसकी रहस्यमयी योजना का हिस्सा था।”

“उफ्फ!” डिकोस्टा झुंझलाये- “आखिर ऐसी क्या विचित्र योजना थी उसकी, जो सब-कुछ जानते हुये भी उसने खुद को मौत के हवाले तो किया ही; साथ ही कविता की जिन्दगी को भी नरक की आग में झोंक दिया?”

“तो फिर आज की तारीख में चिपू कहाँ है?” फादर डिकोस्टा के सवाल को नजरअंदाज करते हुये कविता ने रेहान से पूछा- “तुमने उसे प्रोफ़ेसर शास्त्री को सौंप दिया था, लेकिन इक्तीस अक्टूबर की सुबह दगशाई में यही खबर फैली थी कि मकान में लगे आग में दामोदर और चिपू जल कर ख़त्म हो गये। उसके लगभग एक हफ्ते बाद ही प्रोफ़ेसर शास्त्री के पागल होने की खबर फैली थी। मैं तो आज तक इसी गलतफहमी में जीती रही कि मेरा मासूम भाई भी नफरत की उस आग में जलकर खाक हो गया।”

“चिपू के बारे में मुझे कुछ नहीं मालूम कविता। ये सवाल तो मुझे भी हैरान कर रहा है कि प्रोफ़ेसर शास्त्री ने चिपू का क्या किया होगा? उनके मेंटल एसाइलम में शिफ्ट होने के बाद चिपू कहाँ गया होगा?”

खामोशी ने एक बार फिर उन तीनों पर धावा बोल दिया। इक्कीस साल पुराने किस्से ने जिन नये सवालों को जन्म दिया था, उनके जवाब किसी को नहीं मालूम थे।

“सिंघानिया के गायब होने के बाद उसके हॉस्पिटल का प्रबंधन अस्त-व्यस्त हो चुका था, इस कारण तुम्हें उसके हॉस्पिटल की प्रैक्टिस छोड़नी पड़ी थी। यूनिवर्सिटी से एमएस की उपाधि लेने के बाद सारी जिन्दगी बनारस में गुजारने की नियत से तुमने दगशाई को अलविदा कह दिया था। फिर इक्कीस साल बाद तुम्हारे यहाँ अचानक प्रकट होने की वजह?”

डिकोस्टा का सवाल सुनकर रेहान ने चौंक कर कविता की ओर देखा। शायद उसे ये उम्मीद नहीं थी कि डिकोस्टा उसके बारे में जानते होंगे।

रेहान ने गहरी सांस लेकर कहना शुरु किया।

“हालांकि उस रात सिंघानिया भयानक जलजला बनकर वापस आने की

चेतावनी देकर चर्च से फरार हो चुका था, किन्तु फिर भी क्षितिज की मौत का दर्द मेरे सीने में किसी तीर के घाव की भाँति टिसता रहा। क्षितिज की रहस्यमयी योजना के अलावा जो दो सवाल मेरे जेहन में उथल-पुथल मचा रहे थे, उनमें से पहला ये था कि सिंघानिया ने क्षितिज के साथ

क्या किया था? और दूसरा ये था कि सिंघानिया का ऐसा कौन सा राज था, जो क्षितिज की निगाहों में आ गया था? इन दो सवालों ने मुझे तब और भी ज्यादा बेचैन कर दिया, जब मैंने सुना कि प्रोफ़ेसर शास्त्री पागल हो गये। इस खबर के आम होने के बाद हर गुजरते दिन के साथ मेरा यह विश्वास मजबूत होता चला गया कि असली राज क्षितिज की थीसिस के पन्नों में ही दर्ज था। मुझे अपनी मूर्खता पर क्रोध आया, क्योंकि एक रहस्यमयी योजना को जानने का अवसर मैंने थीसिस के रूप में गंवा दिया था, किन्तु अब पछताने से कोई फायदा नहीं था। पागल प्रोफ़ेसर से दोबारा थीसिस मिलने की आशा निराधार थी। हालांकि मैंने कोशिश की। इस कोशिश के कारण पुलिस के शक के दायरे में भी आया, किन्तु फिर भी थीसिस दोबारा मेरे हाथ न लगनी थी, सो न लगी।

अब मेरे पास केवल यही एक रास्ता था कि मैं प्रोफ़ेसर शास्त्री के पागलपन के ठीक होने का इंतज़ार करूं, लेकिन ये इकलौता रास्ता भी उस वक्त बंद हो गया, जब मुझे पता चला कि मेंटल एसाइलम वालों ने प्रोफ़ेसर को स्थायी रूप से पागल घोषित कर दिया है। किसी के स्थायी रूप से पागल होने के पीछे कई काम्प्लेक्स रीजन होते हैं। किसी पेशेंट के केस में ऐसा भी हो सकता है कि उच्च स्तर के चिंतन-मनन के कारण उसके दिमागी हारमोंस में अनियमितता उत्पन्न हो गयी हो अथवा नर्व सेल्स के फंक्शन्स प्रभावित हुये हों। मेडिकल स्टूडेंट होने के कारण मुझे ये बात पता थी, अतः प्रोफ़ेसर के सन्दर्भ में मैंने

यह धारणा बना ली कि उनकी दिमागी कोशिकाओं के प्रभावित होने की मुख्य वजह गहन चिंतन है।

क्षितिज के साथ हुई रहस्यमयी घटनाओं को जानने की मेरी जिज्ञासा इतनी प्रबल थी कि मैं कोई ऐसी दवा ईजाद करने के सपने देखने लगा, जो स्थायी रूप से पागल रोगियों के ट्रीटमेंट प्लान में अहम भूमिका निभा सके। मैं किसी ऐसी फार्मास्यूटिकल कंपनी की तलाश करने लगा, जिसकी रिसर्च टीम 'इंसैनिटी' जैसी सायक्याट्रिक डिजीज पर शोध कर रही हो। मेरी तलाश 'अलंकृता फार्मास्युटिकल्स' पर आकर पूरी हुई। मेडिसिनल रिसर्च के क्षेत्र में इस कम्पनी का कद ऊंचा था। किसी नये मेडिसिन की थर्ड फेज तक की क्लिनिकल ट्रायल कराने
और इवैल्यूएशन के बाद उसे मार्केट तक लाने में यह कंपनी खुद सक्षम थी।"

"और तुमने उस कंपनी की रिसर्च टीम को ज्वाइन कर लिया?"

"हाँ! सर्जन बन जाने के बाद अचानक स्ट्रीम चेंज करके मेडिसिनल रिसर्च के फील्ड में जाने का मेरा फैसला मेरे बैचमेट्स को बेहद अजीब लगा था, क्योंकि उन्हें मेरे फैसले के पीछे छिपे मेरे इंटेंशन के बारे में नहीं पता था। उनके अनुसार मेरे पास इससे बेहतर ऑप्शन्स थे। जैसे कि मैं सर्जरी में एडवांस्ड स्टडी के लिये यूएस जा सकता था या फिर किसी अच्छी जगह पर हाई सैलरी पर प्रैक्टिस कर सकता था।"

“ ‘अलंकृता फार्मास्युटिकल्स’ तो शायद वही कंपनी थी न, जो उन्हीं दिनों के आस-पास गंभीर आग दुर्घटना के कारण अचानक बंद हो गयी थी?” डिकोस्टा ने पूछा।

“आपने ठीक समझा फादर। जिस त्रासदी की आप बात कर रहे हैं, वह मेरे कंपनी ज्वाइन करने के एक महीने बाद ही घटी थी। उस त्रासदी के कारण हुई आर्थिक क्षति ने कंपनी की कमर तोड़ दी थी।”

“तो फिर तुम्हारे दवा ईजाद करने के सपने का क्या हुआ?” कविता का स्वर।

“चूर-चूर हो गया। शिमला में कुछ सालों तक एक सर्जन के रूप में प्रैक्टिस करने के बाद मैं बनारस चला गया और दगशाई में घटी घटनाओं को बहुत पीछे छोड़ दिया। मेरे जीवन में तब-तक शान्ति थी, जब-तक कि मेरे पास शैल के एक्सीडेंट का केस नहीं आ गया। एक्सीडेंट के कारण आयी उसकी सीरियस हेड इंजरी को रिकवर करने का मैंने हर संभव प्रयास किया था, लेकिन फिर भी उसे ‘ब्रेन डेथ’ जैसी लाइलाज अवस्था में जाने से नहीं रोक पाया था। फिर मुझ पर एक वज्रपात हुआ और ठहरे हुये जल की तरह शांत मेरे जीवन में भयानक चक्रवात आ गया। बिना किसी स्पेशल ट्रीटमेंट के शैल का ब्रेन फंक्शन रीस्टार्ट हो गया। यदि केवल इतना ही हुआ होता तो मैं इसे चमत्कार मान कर भुला देता और इसका मेरे जीवन पर कोई प्रभाव भी नहीं पड़ता, किन्तु उस वक्त मुझे इलेक्ट्रिक शॉक लगा जब मैंने पाया कि ब्रेन डेथ की अवस्था से

गुजरने के बाद शैल की मेमोरी में कुछ ऐसी घटनायें दर्ज हो गयीं थीं, जो कभी उसकी जिन्दगी का हिस्सा ही नहीं थीं।

होश में आने के बाद हॉस्पिटल में दिये हुये उसके स्टेटमेंट के अनुसार वह सोलन के किसी नर्सिंग होम से लौट रहा था। उसे किसी के द्वारा पीछा किये जाने का डर सता रहा था, साथ ही साथ उसे किसी से मिलने की जल्दी भी थी। वह सोलन के नर्सिंग होम क्या करने गया था? उसे किसके द्वारा पीछा किये जाने का भय था? उसे किससे मिलने की जल्दी थी? इन सारे सवालों के जवाब वह चाह कर भी याद नहीं कर पाया था। और फिर एक शाम उसे दौरा पड़ा और उस दौरे के समय उसने खुद को क्षितिज कहा।"

"क्षितिज!" कविता का लहजा काँप गया।

"ठीक इसी तरह मैं भी उस वक्त चौंका था, जब शैल के दादा-दादी ने मुझे ये बात बताई थी। मैं शैल से मिला और फिर मुझे एक नयी बात पता चली। उसे एक अजीबोगरीब सपना आना शुरू हो गया था, जिसमें उसे क्षितिज की हत्या की घटना से जुड़े दृश्य नजर आते थे। उसे एक चर्च और सरकटी लाश नजर आती थी। उसके इस सपने और होश में आने के बाद उसके दिये हुये बयान को जब मैंने एक साथ रखा तो मुझे क्षितिज की इक्कीस साल पहले कही हुई बात याद आ गयी।

'मैं जा रहा हूँ। मुझे सोलन के एक नर्सिंग होम में पहुँचना है और उस मासूम बच्चे की जान बचानी है, जिसके

माँ-बाप सिंघानिया के षड्यंत्रों का शिकार होकर आज प्राण गंवाने वाले हैं।'

मैं समझ गया कि इक्कीस साल का सफ़र तय कर चुकी पुरानी घटनाओं ने मेरे वर्तमान का दरवाजा खटखटा दिया है। कहीं शैल, क्षितिज का पुनर्जन्म तो नहीं? इस बात की तस्दीक के लिये मैंने शैल से उसका जन्मदिन पूछा। जिसका अंदेशा था वही हुआ। शैल उसी तारीख़ को पैदा हुआ था, जिस तारीख को क्षितिज का क़त्ल हुआ था। इस तस्दीक के बाद मेरे मन में ये विश्वास जरूर जाग जाता कि शैल, क्षितिज का पुनर्जन्म है, अगर मुझे अगले ही पल क्षितिज का एक और कथन न याद आया होता।

'नहीं! मेरा पुनर्जन्म नहीं होगा। लेकिन तू कविता को यही विश्वास दिलायेगा कि मैं पुनर्जन्म लेकर उसके पास आऊँगा। उस जन्म में मेरा और उसका जन्मदिन एक ही होगा। यानि कि इक्तीस अक्टूबर। वह धार्मिक स्वभाव की भावुक लड़की है, इसलिये मेरे पुनर्जन्म पर वह यकीन कर लेगी।'

मेरे जेहन में अब कई सवाल थे। शैल के साथ हो रही घटनायें इस संभावना को प्रबल बना रही थीं कि वह क्षितिज का पुनर्जन्म है, किन्तु इक्कीस साल पहले कही गयी क्षितिज की बातें मुझे शैल को उसका पुनर्जन्म मानने से रोक रही थीं। अब ये जानना मेरे लिये बेहद रोमांचक होने वाला था कि जो लड़का कविता को जानता नहीं; दगशाई कभी गया नहीं; वह उस तक कैसे पहुंचेगा? यदि यह लड़का क्षितिज पुनर्जन्म नहीं है तो फिर इसका क्षितिज

से कौन सा अप्रत्यक्ष सम्बन्ध है? इन सवालों ने मेरे दिमाग की नसों में गर्दिश कर रहे लहू को सर्द कर दिया था। सभी सवालों का जवाब क्षितिज की उसी रहस्यमयी थीसिस में छुपा हुआ था, जिसे मैंने प्रोफ़ेसर शास्त्री को सौंप दिया था और जो उनके पागलपन की वजह बना था। जवाब तलाशने का एक ही जरिया था- प्रोफ़ेसर शास्त्री का इलाज। और इसके लिये मुझे बनारस की प्रैक्टिस को हर हाल में छोड़ना था। मैंने एक योजना की रूपरेखा तैयार की और गुजरे हुये अतीत में जाने के लिये कमर कस ली। योजना के तहत मैंने हॉस्पिटल की अथॉरिटी अपने समकक्ष डॉक्टर खुराना को सौंप दी।

'अलंकृता फार्मास्युटिकल्स' के बंद होने के बाद मैंने उस मेडिसिन के अधूरे रिसर्च के राइट्स खरीद लिये थे, जिस पर उनकी टीम रिसर्च कर रही थी। उन्होंने वे अधिकार मुझे इसलिये खुशी-खुशी बेच दिये थे, क्योंकि उन्हें उस दौर में ऐसा कोई खरीददार नहीं मिल सकता था, जो एक ऐसी मेडिसिन के कांसेप्ट के लाखों रुपये दे सके, जो प्राइमरी फेज के क्लिनिकल ट्रायल से भी कोसो दूर था। मेरे लिये प्रोफ़ेसर शास्त्री के पागलपन का इलाज ढूँढना जरूरी हो गया था। इसीलिये मैं उस मेडिसिन के अधूरे रिसर्च को पूरा करने के उद्देश्य के साथ शिमला चला आया। वहां मैंने अपने फार्म हाउस में छोटी सी प्रयोगशाला बना रखी है। मेरी योजना वहीं रहकर अपनी रिसर्च पूरी करने की थी, किन्तु इसके लिये जरूरी था कि मैं प्रोफ़ेसर शास्त्री को ऑब्जरवेशन के लिये लैब में ही रखूँ।

मैंने एक प्लान बनाया, जिसके अंतर्गत मैंने मेंण्टल एसाइलम के सुपरिंटेंडेंट जोशी के साथ एक सौदा किया। उसे रुपयों का लालच दिया और बदले में एक रात के लिये थर्टीन्थ सेल में पागल प्रोफ़ेसर की जगह उस शख्स को रखने की शर्त मंजूर की, जिसे तीस अक्टूबर की रात मैं एसाइलम में पहुँचाने वाला था। जोशी के साथ मेरा रवैया दोस्ताना था। उसे लगा कि मैं अपने किसी रिसर्च प्रोग्राम के लिये प्रोफ़ेसर शास्त्री को बारह घंटे के ऑब्जर्वेशन में रखना चाहता हूँ, इसलिये उसने मेरा सौदा मंजूर कर लिया। अगर उसे जरा भी भनक होती कि मैं जिस शख्स को एसाइलम में पहुंचा रहा हूँ, वह उसी रात क़त्ल कर दिया जायेगा, तो वह कभी भी मेरी शर्त मंजूर नहीं करता।"

"तो इसका मतलब ये है कि आर्यन को मेंण्टल एसाइलम तुमने पहुँचाया?"

"हाँ।"

"क्या जोशी ने तुमसे कोई सवाल नहीं किया था? क्या उसने पूछा नहीं कि तुम थर्टीन्थ सेल में किसे और किस वजह से शिफ्ट कर रहे हो?"

"पूछा था। मैंने आर्यन की वास्तविक पहचान छुपाकर उसे फीटपाथ पर लुढ़कने वाला शराबी बताकर प्रोफ़ेसर के सेल में शिफ्ट किया था। जोशी का मानना था कि प्रोफ़ेसर के सेल में किसी और को शिफ्ट करने की कोई जरूरत नहीं थी, क्योंकि अगले दिन तो प्रोफ़ेसर को अपने सेल में वापस आना ही था। उसे ये नहीं पता था कि मैंने प्रोफ़ेसर को हड़पने का मन बना लिया था। मैं उन्हें दोबारा

एसाइलम में नहीं भेजने वाला था। तुम कह सकती हो कि मैं जोशी के साथ अपना सम्बन्ध खराब करने पर उतर आया था। उसे मुझ पर शक न हो सके इसलिए मैंने अपने इस कृत्य के पीछे ये तर्क दिया था कि सेल खाली रहने से प्रोफ़ेसर को रेगुलर अटेंड करने वाले वार्डबॉयज को शक हो सकता है।"

"अगर जोशी समझदार होता तो उसे शक उसी समय हो गया होता, जब तुमने उसके सामने ऐसा अजीबोगरीब प्रपोजल रखा था।" डिकोस्टा ने कहा।

"जोशी को शक नहीं हुआ, इसकी वजह ये भी थी कि उसकी नजर में मेरी छवि एक भलमनसाहत इंसान की थी।"

"क्या तुम्हें इसका अनुमान था कि एसाइलम में आर्यन क़त्ल कर दिया जायेगा?"

"जरा भी नहीं। मैंने तो बस कुंठा का शिकार होकर आर्यन को एसाइलम में शिफ्ट किया था क्योंकि क्षितिज के साथ जो कुछ हुआ था उससे तान्या भी जुड़ी हुई थी, और आर्यन उसका करीबी था। साथ ही साथ पुरानी कहानी से ताल्लुक रखने वाला एक आर्यन ही था, जो खुली हवा में सांसें ले रहा था।"

"आर्यन की हत्या किसने की?"

कविता के सवाल पर रेहान थोड़ा विचलित नजर आया।

"मुझे नहीं पता। आर्यन के साथ मेरी फाइट हुयी थी। उसने मुझ पर रिवाल्वर तान दिया था, इसलिये उस पर

काबू पाने के लिये मुझे थोड़ा सा संघर्ष करना पड़ा था। उसे कमजोर करने के लिये मैंने उसी के गन से उस पर एक बुलेट दागी थी, जो उसके सोल्डर को टच करती हुई निकल गयी थी। फिर मैंने उसे बेहोश करने के लिये लिक्विड केटामाइन का इंजेक्शन लगाया था। बस, इतना ही किया था मैंने उसके साथ। उसकी दर्दनाक हत्या ने मुझे भी दहला दिया है। हत्यारा जो कोई भी था, वह प्रोफ़ेसर शास्त्री की हत्या करना चाहता था। उस रात थर्टीन्थ सेल में प्रोफ़ेसर नहीं बल्कि आर्यन था, ये बात केवल मुझे और जोशी को पता थी।”

“यानि कि...।” डिकोस्टा ने कहा- “अगर तुमने प्रोफ़ेसर को एसाइलम से नहीं निकाला होता तो हत्प्राण की जगह आर्यन नहीं बल्कि प्रोफ़ेसर शास्त्री होते।”

“शायद।”

“एसाइलम में हुई आर्यन की अप्रत्याशित हत्या पर जोशी की क्या प्रतिक्रिया थी?”

“उसने हत्या की सुबह मुझे फोन किया था। इस बात के लिये मुझे कोस रहा था कि मैंने उसे बुरी तरह फंसा दिया है। ये सोचकर उसके पैरों तले जमीन खिसकी हुई थी कि मैंने जिसे फ़ीटपाथ पर लुढ़कने वाला शराबी बताया था, असल में वह असिस्टेंट प्रोफ़ेसर डॉक्टर आर्यन दीक्षित था। आर्यन की हत्या से मैं बौखला जरूर गया था, किन्तु मैं जानता था कि जोशी अपनी छवि बचाने का हर संभव प्रयास करेगा। वह पुलिस के सामने ये आसानी से नहीं स्वीकार करेगा कि थर्टीन्थ सेल के पागल को बदलने

में उसका हाथ है, और जब तक वह उक्त अपराध को स्वीकार नहीं करेगा, तब तक मैं सुरक्षित हूँ। इसीलिये मैंने फोन काल के दौरान जोशी से बेहद लापरवाह अंदाज में बात किया था।

सब कुछ ठीक चल रहा था कि तभी एक हादसा हुआ और मेरी योजना एक बार फिर धराशायी हो गयी। एक शाम जब मैं रोजमर्रा के जरूरत की चीजों की खरीददारी करने के बाद फार्महाउस पहुंचा तो आयरन गेट का ताला टूटा हुआ पाया। मेरे होश उड़ गये। चोरी के डर से नहीं बल्कि इस डर से कहीं फार्महाउस में दाखिल होने वाले मेरे लैब तक न पहुँच गये हों। मेरा डर जायज साबित हुआ। आने वाले कितने थे, ये तो नहीं पता चला पाया, किन्तु इतना जरूर पता चल गया कि वे संख्या में जितने भी थे और जो भी थे; मेरी लैब तक पहुंच गये थे। लैब बेसमेंट में था, जिसमें उतरने के लिये किचन से एक गुप्त सीढ़ी थी, जो फर्श पर बिछे कालीन के नीचे ढकी रहती थी। कालीन अपनी जगह से हटा हुआ था और लैब में उतरने वाले जीने का दरवाजा भी खुला हुआ था। फार्महाउस में दाखिल होने वाले बड़े आराम से, बिना किसी रुकावट के मेरी लैब तक पहुंचे थे। जिससे ये जाहिर होता था कि उन्होंने कई दिनों तक मुझे फॉलो किया था। संभव है कि जब मैं फार्महाउस में होता था तब भी फॉलो करने वाले की नजर मुझ पर होती थी। मेन गेट के साथ-साथ सामने पड़ने वाले हर दरवाजे के तालों को तोड़ने के लिये रिवाल्वर प्रयोग में लाया गया था।”

"लैब में पहुँच कर उन्होंने क्या किया था?" कविता का उद्वेलित लहजा।

"लैब की किसी भी वस्तु को हाथ लगाए बगैर भी वे मेरा बहुत बड़ा नुकसान कर गये थे। वे उस फ्लॉपी डिस्क को अपने साथ ले गये थे, जिसमें मेरे रिसर्च का ब्लू प्रिंट था। साथ ही साथ लैब में मौजूद मेरे उस पर्सनल सेलफोन पर भी हाथ साफ़ कर गये थे, जिसके जरिये मैं जोशी और अन्य लोगों से सम्पर्क करता था।"

कविता और फादर डिकोस्टा, रेहान के सनसनीखेज खुलासे पर स्तब्ध होते जा रहे थे, जबकि रेहान आगे कह रहा था- "मैं हैरान था। दूर-दूर तक सोचने के बाद भी ये अनुमान नहीं लगा पा रहा था कि वे कौन थे, जिन्होंने मेरे रिसर्च की फ्लॉपी डिस्क चुराने जैसे घिनौने काम को अंजाम दिया था। फिर कहानी में एक मोड़ आया। राह चलते मुझसे एक इंसान टकराया।"

"कौन था वह?" कविता और डिकोस्टा का समवेत स्वर।

"सिंघानिया। डॉ. शक्तिस्वरुप सिंघानिया। तुम्हारी बर्बादी की वजह और मेरे दोस्त का कातिल।"

"व...वह..? अचानक...इक्कीस साल बाद?"

"वह अचानक दगशाई में नजर क्यों आया था? इसकी वजह मुझे भी नहीं मालूम है। वह शायद जल्दी में था। उसने उस वक्त मुझसे खण्डहर तक जाने के लिये लिफ्ट माँगी थी, जब मैं तुमसे मिलने आ रहा था। मैं इस संभावना पर तुमसे चर्चा करने आ रहा था कि कहीं अतीत से हमारा

कोई दुश्मन वापस तो नहीं आ गया है। सिंघानिया ने सपने में भी नहीं सोचा रहा होगा कि यूं राह चलते मुझसे टकरा जायेगा। मुझे पहचानते ही उसने कार से कूदने की कोशिश की थी लेकिन कामयाब न हो सका था। उसके पास से मैंने अपना सेलफोन बरामद कर लिया, किन्तु फ्लॉपी डिस्क मुझे उसके पास नहीं मिली।"

"उसके पास तुम्हारा सेलफोन था। यानि कि.....यानि कि तुम्हारे फार्म हाउस में हुई चोरी में उसी का हाथ था?" फादर डिकोस्टा ने कहा।

"बेशक।"

"उसने तुम्हारे फोन से क्या किया था?" कविता ने पूछा।

"उसने एक वीडियो रिकॉर्ड करके जोशी को वाट्सएप के जरिये भेजा था। उसी वीडियो से मुझे मालूम हुआ कि वह मेरे रिसर्च की फ्लॉपी डिस्क का सौदा जोशी के साथ करना चाहता था और बदले में मेरी बर्बादी की कहानी लिखने में उसकी मदद चाहता था। जोशी को उस वीडियो से यकीन हो गया था कि सिंघानिया मेरा कोई पुराना रकीब है। सौदे के लिये जोशी खण्डहर में पहुंचा था क्योंकि सिंघानिया ने उसे वहीं बुलाया था। जिस वक्त सिंघानिया मेरे हत्थे चढ़ा था, उस वक्त वह जोशी से ही मिलने जा रहा था। खण्डहर पहुंच कर जोशी ने मेरे सेलफोन पर, जिसे वह सिंघानिया के कब्जे में समझ रहा था, फोन किया था। उस वक्त मैं सिंघानिया को टॉर्चर करते हुये उससे डिस्क का पता उगलवा रहा था। डिस्प्ले

पर जोशी का नंबर देख मैंने आपा खो कर सेलफोन पटक दिया था।”

“सिंघानिया ने जोशी से वाट्सएप के जरिये क्यों बात की? सौदे के लिये उसके पास फोन कॉल बेहतर विकल्प था।”

“इसकी दो वजहें थी कविता। पहली वजह ये कि वाट्सएप पर वीडियो भेजकर वह जोशी को आसानी से ये विश्वास दिला सकता था कि वह मेरा दुश्मन है और मेरा सेलफोन अब उसके कब्जे में है। और दूसरी वजह ये थी कि वह एसाइलम में हुई हत्या से वाकिफ था। वह जानता था कि पुलिस ने जोशी के फोन को ट्रेस कर रखा होगा।”

“ओह!” डिकोस्टा ने कहा- “लेकिन जिस गलती से बचने के लिए सिंघानिया ने ये पैंतरा अपनाया, वह गलती खण्डहर से तुम्हारे सेलफोन पर कॉल करके जोशी तो कर ही बैठा।”

“हाँ!” रेहान ने गहरी सांस ली और कहा- “जोशी से ऐसी गलती इसलिये हुयी क्योंकि परिस्थिति ही ऐसी बन पड़ी थी और ऐसी परिस्थिति केवल इसलिये बनी क्योंकि सिंघानिया खण्डहर नहीं पहुँच सका था। यदि वह खण्डहर पहुंचा होता तो जोशी को इस बात से जरूर आगाह कर देता कि उसके एसाइलम के सभी कर्मचारियों के सेलफोन ट्रेस किये गये हैं, इसलिये बातचीत के लिए मेसेज का प्रयोग करे।”

“आगाह करने जैसा ये छोटा सा काम तो वह वाट्सएप मेसेज के जरिये उसी समय कर सकता था, जब उसने

जोशी से मिलने के लिए स्थान और वक्त मुक़र्रर किया।"

डिकोस्टा के माथे पर बल पड़े।

"लेकिन उसने ऐसा नहीं किया।" कविता ने कहा- "क्योंकि वह जानता था कि तयशुदा वक्त पर उसके खण्डहर न पहुँच पाने की आपातकालीन दशा में ही जोशी उससे संपर्क करने की कोशिश करेगा। और ऐसी कोई आपातकालीन

परिस्थिति उत्पन्न हो जाने पर वह रेहान को फंसाना चाहता था।"

"ओह! यानि कि काफी दूर की सोची थी उस शातिर इंसान ने।"

"हां फादर! मेरा सेलफोन इस्तेमाल करने के पीछे उसका एक मकसद ये भी था।"

"इन बातों से पता चलता है कि सिंघानिया दगशाई में पहले से ही मौजूद था। लेकिन उसे जोशी के बारे में कैसे पता चला? और वह फ्लॉपी डिस्क का सौदा जोशी के साथ क्यों करना चाहता था?"

"सिंघानिया को जोशी के बारे में मालूम था, इसकी एकमात्र वजह यही हो सकती है कि मेरी गतिविधियों पर उसकी नजर थी। मेरे खिलाफ साजिश रचने में वह जोशी की मदद चाहता था, और उस मदद की कीमत उसे मेरी डिस्क सौंप कर चुकाना चाहता था। जोशी ने भी सौदा मंजूर कर लिया था, क्योंकि एसाइलम काण्ड के बाद वह मेरी कमजोर नस की तलाश में था। सौदा पूरा करने और

प्लान डिश्कस करने के लिये ही दोनों ने खण्डहर में मिलना तय किया था।"

"सिंघानिया इक्कीस साल बाद अचानक प्रकट कैसे हुआ? वह इक्कीस सालों के दौरान इतना शक्तिशाली कैसे हुआ कि न सिर्फ तुम्हें फॉलो किया बल्कि तुम्हारी इम्पोर्टेन्ट रिसर्च पर भी हाथ साफ़ कर दिया। सिंघानिया, जोशी से मिल नहीं पाया। फ्लॉपी डिस्क का सौदा हो नहीं पाया। तो इसका मतलब वह डिस्क अब भी सिंघानिया के पास है?"

"पता नहीं। मुझे मेरी फ्लॉपी अब तक नहीं मिल पाई है।"

"तो फिर सिंघानिया का तुमने क्या किया? प्रोफ़ेसर शास्त्री के बारे में तुम्हारा क्या इरादा है? वे तो अब भी तुम्हारे पास ही होंगे न?"

"पूरी कहानी का रुख बदल चुका है कविता। मेरे फार्महाउस में लैब के अलावा एक और भूमिगत कमरा था, जिसके आवागमन का मार्ग मेरी स्टडी से था। सिंघानिया को मैंने उसी अंडरग्राउंड कमरे में बाँध कर रखा था। प्रोफ़ेसर शास्त्री को भी मैंने वहीं रखा था।"

"यानि कि..यानि कि प्रोफ़ेसर को और सिंघानिया को तुमने एक ही जगह रखा था?" रेहान की बात पूरी होने से पहले ही कविता यूं चौंकी मानो रेहान ने ऐसा करके बड़ी मूर्खता कर दी थी।

"लैब के अलावा पूरे फार्म हाउस में वही एक कमरा था जो भूमिगत था। तुम इसे इत्तेफाक कह लो या मेरी मूर्खता

की सजा, जो सिंघानिया ने न जाने कैसे अपने बंधन छुड़ा लिये और प्रोफ़ेसर शास्त्री की हत्या करके पुलिस स्टेशन पहुँच गया। उसने प्रोफ़ेसर के हत्यारे के रूप में मेरा नाम ले लिया। अब मैं कानून की नजर में एक भगौड़ा हत्यारा हूँ।"

"कुल मिलाकर इक्कीस साल पहले की कहानी का रुख ये है कि पागल प्रोफ़ेसर की हत्या हो चुकी है। लापता सिंघानिया अचानक लौट आया है, और तुम्हारे रिसर्च डाक्यूमेंट्स के साथ पुलिस की हिरासत में है।" कविता ने मानो पूरे घटनाक्रम का निचोड़ प्रस्तुत कर दिया।

रेहान ने 'हाँ' में सर हिलाया।

"क्या शैल को दगशाई आने के लिये तुम्हीं ने खत लिखा था?" डिकोस्टा ने पूछा।

"नहीं।"

"तो फिर हैरान हो जाने के लिये तैयार हो जाओ रेहान।"

"मतलब?"

"मतलब ये है कि शैल को जो खत मिला था वह क्षितिज की लिखावट में था। अब शैल के नाम ये खत क्षितिज ने इक्कीस साल पहले तो लिखा नहीं होगा?"

"तो क्या शैल इस वक्त यहीं है?"

"हाँ।"

"यानि कि क्षितिज की इक्कीस साल पहले कही हुई बात सही हुई है? ये लड़का क्षितिज का नया रूप बनकर यहाँ आया है?" रेहान उद्वेलित हो उठा।

"हाँ!" कविता ने भावहीन स्वर में कहा- "भले ही ख़त के बहाने आया, लेकिन आया। तुम्हारे कहे मुताबिक़ मैंने

उसे क्षितिज का नया जन्म मानकर अपनाना चाहा, लेकिन जल्द ही मुझे एहसास हुआ कि क्षितिज ने तुम्हारे जरिये मुझसे दिल्लगी की थी कि वह नया जन्म लेकर मेरी अधूरी ख्वाहिशें पूरी करने आयेगा। यह लड़का क्षितिज नहीं हो सकता, क्योंकि मरने के बाद कोई वापस नहीं आता।" कहते-कहते कविता का थोड़ी देर पहले भावहीन रहा लहजा भावुक हो गया।

"क्षितिज के लिखे हुये ख़त का शैल तक पहुँचना यह साबित करता है कि इक्कीस साल पहले अधूरी छोड़ी गयी कहानी का कोई अहम किरदार अभी भी हमारी नज़रों से ओझल है। प्रोफ़ेसर शास्त्री और आर्यन की हत्या के बाद अब

वही हमें रहस्यों की तह तक पहुंचायेगा।"

"तो इसका मतलब हमें ये पता करना होगा कि ख़त शैल तक कैसे पहुंचा?"

"हाँ! एक बात और....!" रेहान को अचानक जैसे कुछ याद आया- "जब शैल हॉस्पिटल में एडमिट था तो यथार्थ नाम का एक रिसर्चर हॉस्पिटल की एक नर्स से मिला था।"

"किसलिये?"

"उसने शैल के ब्लड का सैम्पल लिया था।"

"क्या तुम उसे जानते हो?"

"नहीं।"

"ये कैसी अजीब हरकत थी रेहान?" कविता झुंझला उठी - "कोई अजनबी आता है और तुम्हारे पेशेण्ट का ब्लड सैम्पल लेकर चला जाता है और तुम...!"

"ये सब कुछ मेरी जानकारी में नहीं हुआ था। नर्स को उसने इस काम के लिये दो हजार रुपये दिये थे। उसे एक रिसर्चर समझ कर नर्स ने सैंपल आसानी से दे दिया, लेकिन जब शैल के केस की रहस्यवादिता सामने आई तो उसने ये तथ्य मुझ पर उजागर कर दिया।"

तीनों लोगों के बीच निस्तब्धता छा गयी।

"तुमने मेरे एक सवाल का जवाब अभी तक नहीं दिया रेहान।" कविता ने अचानक खामोशी तोड़ी- "तुम्हारी सुनायी हुयी कहानी के मुताबिक़ जब तुम तान्या के बंगले पर पहुंचे तो उसकी हत्या हो चुकी थी। फिर थीसिस तुम्हें कैसे मिली? तुम्हें तान्या की स्टडी से क्या मिला था? सिंघानिया के बैग में ऐसा क्या था, जिसे देखने से तुमने मुझे मना किया था"

रेहान, कविता के चेहरे को गौर से देखने लगा। शायद इस बात का निर्णय कर रहा था कि उसके सवालों का जवाब दे या न दे।

क्रमशः